श्रीविष्णुप्रिया-नाटक

प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामी
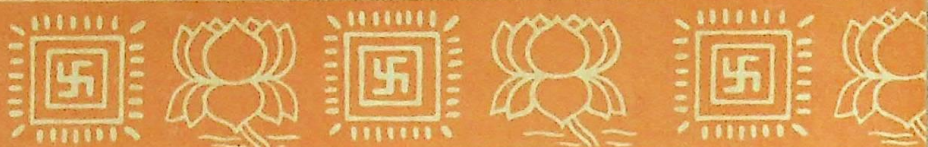
● प्रभुपाद श्रीहरिदासजी गोस्वामी द्वारा रचित निम्न ग्रन्थ (सभी मूल ग्रन्थ बंग-भाषामें हैं) श्रीविष्णुप्रिया गौराङ्ग कुञ्ज, बुड़ा शिबटोला, पो० नवद्वीप (जिला—नदिया, बंगाल) में उपलब्ध हैं। बंग भाषा पढ़ने-समझनेवाले सभी महानुभावोंसे हमारा अनुरोध है कि वे इन मूल गन्थोंको अवश्य पढ़ें।

१ श्रीविष्णुप्रिया-चरित
२ श्रीलक्ष्मीप्रिया-चरित
३ श्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति
४ श्रीविष्णुप्रिया नाटक
५ श्रीविष्णुप्रिया-मङ्गल
६ श्रीविष्णुप्रिया-सहस्रनाम-स्तोत्र
७ गम्भीराय श्रीविष्णुप्रिया
८ श्रीगौराङ्ग-महाभारत
९ शचि-विलाप-गीति
१० श्रीगौर-गीतिका (२ खण्डोंमें)
११ बङ्गालके ठाकुर श्रीगौराङ्ग
१२ श्रीधाम वृन्दावनमें श्रीपाद मुरारि गुप्त प्रतिष्ठित श्रीश्रीनिताई-गौर-श्रीविग्रहकी अद्भुत लीलाकथा
१३ प्राचीन पद-कर्त्ता द्विज बलरामदासजीकी जीवनी व पदावली
१४ महाराज गजपति प्रतापरुद्र नाटक
१५ श्रीजाह्नवा-चरित
१६ सिद्ध श्रीचैतन्यदास बाबाजी
१७ श्रीमद्विश्वरूप-चरित
१८ उपदेश-द्विशतक
१९ श्रीमन्महाप्रभुके शिक्षाष्टककी टीका
२० सार्वभौम-शतकका अनुवाद
२१ श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिया-तत्व-संदर्भ
२२ श्रीचैतन्य-चन्द्रामृतका अनुवाद
२३ वेदान्त-स्यमन्तक
२४ मूर्ख-शतक

प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामी

विरचित

श्री विष्णुप्रिया-नाटक

जय शचिनन्दन जय गौरहरि।
विष्णुप्रिया-प्राणनाथ नदिया बिहारी।।

व्रजका खेल कुलेल मगन मन।
नदियाका रज लुण्ठित तन।।
व्रजका खेल मुरलिका वादन।
नदियाका हरिनाम भजन।।
व्रजका खेल कुसुम वन विहरण।
नदियाका दृगजल वर्षण।।

आर्यावर्त्त प्रकाशन-गृह
९५-ए, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-१२

प्रकाशक—
रामनिवास ढंढारिया,
आर्यावर्त्त प्रकाशन-गृह,
कलकत्ता-१२।

प्रथम संस्करण—२०००

न्यौछावर
रु० ३/७५ पैसे

प्राप्ति स्थान—

- श्रीविष्णुप्रिया गौराङ्गकुञ्ज,
  बुड़ा शिवटोला,
  नवद्वीप (नदिया)।

- श्रीकृष्णचन्द्र,
  गीतावाटिका,
  शाहपुर, गोरखपुर, (उ० प्र०)।

- आर्यावर्त्त प्रकाशन-गृह,
  ९५-ए, चित्तरंजन एवेन्यू,
  कलकत्ता-१२।

- गोपाल ग्रंथालय,
  १८७, दादी सेठ अग्यारी लेन,
  बम्बई-२।

- राधा ग्रन्थ-कुटीर,
  ९८५-ए, गाँधी नगर,
  दिल्ली-३१।

- राजवैद्य पं० श्रीलक्ष्मीनारायणजी,
  प्रेमगली, पुराना शहर,
  वृन्दावन (मथुरा)।

मुद्रक—
मातादीन ढंढारिया,
नेशनल प्रिन्ट क्राफ्ट्स,
९५-ए, चित्तरंजन एवेन्यू,
कलकत्ता-१२ (फोन : ३४-७३२२)।

प्रकाशकीय निवेदन

चैतन्य-वल्लभा तुमि जगत ईश्वरी ।
तोमार दासेर दास हैते वाञ्छा करि ॥

● हमारे यहाँसे प्रकाशित प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामीकी जीवन-कथा ग्रंथमें "ग्रंथ प्रणयन और वैष्णव साहित्य सेवा" प्रकरणमें वर्णन आ चुका है कि किस प्रकार उनके द्वारा वैष्णव साहित्यकी रचना हुई । प्रस्तुत नाटककी रचना राजस्थानके पुष्कर तीर्थके निवास कालमें गौराब्द ४३४, बंगाब्द १३२६, शकाब्द १८४१, बिक्रमाब्द १९७५ में (आजसे ४५-४६ वर्ष पूर्व) हुई थी और उसी वर्ष माघकी पूर्णिमाके दिन इसका प्रकाशन भी हुआ था । मूल ग्रंथ बंग भाषामें गद्यकाव्यके रूपमें है । यह करुण-रसका एक अद्भुत ग्रन्थ है । इसमें प्रकाशित करुण-रसकी सरिताके प्रवाहका कुछ आभास मेदिनीपुरके श्रीआशुतोष सरकारके द्वारा ग्रन्थकारको दिये गये निम्न उपालम्भसे होता है :—

> "हरि हरि ! यह क्या कर डाला ? सुना गया है अमेरिकामें एक प्रकारके हँसानेवाले गैस (laughing gas) का आविष्कार हुआ है जिसके सूँघनेसे लोग हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगते हैं । प्रतीत होता है कि आपका श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक रुदन करानेवाले गैस (weeping gas) के सदृश है । इसको जो भी पढ़ेगा वह रोये बिना नहीं रह सकेगा । इसके प्रति अक्षर और मात्रामें रुदन भरा पड़ा है । बड़े कष्टसे २३ पृष्ठ पर्यन्त पढ़ पाया, और नहीं पढ़ा गया । इन २३ पृष्ठोंमें २३००० अश्रुविन्दु पड़े होंगे । हृदय और पेटमें शोककी तीव्र वेदनाके कारण और क्या पढ़ा जा सकता है ? बाप रे बाप ! आप इतना रुलाना भी जानते हैं ? पूर्वमें ऐसा

अनुमान होता था कि मेरे भण्डारमें और अश्रुविन्दु नहीं रहे; कारण जो कुछ थे, वे सब स्त्री-पुत्रके लिये खर्च कर दिये गये थे। मन-ही-मन प्रतिज्ञा की थी कि यदि कभी रोना होगा तो जगन्माताके लिये ही रोऊँगा। लेकिन बताइये तो सही कि आपने मेरी प्रतिज्ञा भंग करवाकर मुझे इतना क्यों रुलाया ?"
(श्री विष्णुप्रिया-गौराङ्ग पत्रिका, वर्ष ६, संख्या ११-१२, पृष्ठ ४३३-४३४)

●श्री कुसुमसरोवर निवासी निष्किञ्चन श्रीवैष्णवगणोंके प्रमुख श्रीगोपीदास बाबाजीने 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक' पढ़कर श्रीहरिदास गोस्वामी प्रभुको लिखा था--

"विष्णुप्रिया नाटक पढ़कर यह समझमें आया कि यह मनुष्यके द्वारा लिखा हुआ नहीं है। श्रीविष्णुप्रियाजीकी विशिष्ट कृपाका आविर्भाव हुए बिना उनकी मनोवृतिका प्रकाश इस रूपमें कोई नहीं कर सकता। इसके प्रत्येक अक्षर नयन-जल द्वारा लिखे गये हैं। यहाँपर जो कोई भी इस अपूर्व ग्रन्थको पढ़ता है वही रो-रोकर व्याकुल हो जाता है। इस श्रीग्रन्थके द्वारा श्रीविष्णुप्रिया देवीकी विरह-ज्वालाकी स्फुल्लिगकणिकाका बाहर प्रकाश होता है। इससे जगत भष्मीभूत हो जायगा।

हम लोगोंकी बहुत दिनोंकी आशा पूर्ण होगी--ऐसा अब समझमें आ रहा है। हम लोगोंकी परमाराध्या वैष्णवजननी श्रीविष्णुप्रिया देवीके एकान्तानुगत एवं परम प्रियतम दासकी कृपादृष्टि जब हमारे ऊपर पड़ रही है तब भरोसा हुआ है कि श्रीप्रियाजीकी कृपादृष्टि भी हम लोगोंके ऊपर पड़ेगी--इसी आशासे धैर्य रखकर यहाँ पड़ा हुआ हूँ। हम लोग आपके दासानुदास हैं। आप आशीर्वाद करें और शक्तिसंचार करके हम लोगोंपर कृपा करें जिससे हम लोग श्रीरूप रघुनाथके साथ सुर मिलाकर इस श्रीश्रीराधाकुंज तटपर एवं श्रीगिरिराजपुलिनमें रहकर 'प्रसीद हे विष्णुप्रियेश गौर' बोलकर निष्कपटतासे चीत्कार करके रह सकें। जय गौर।"
(श्रीविष्णुप्रिया-गौरांग पत्रिका, वर्ष ९, अंक ६-७, पृष्ठ ७९-८०)

● कुछ वर्षो पूर्व इस ग्रन्थके अवलोकनका अवसर मिला था। तभीसे मनमें यह भगवत्प्रेरणा हुई कि हिन्दी भाषा-भाषियोंको भी इसका रसास्वादन कराया जाय। साधारण अनुवादसे इसके आस्वादनमें वैसी सरसता होनी कठिन है। जिस प्रकारका प्रवाह मूल ग्रन्थमें है उसको उसी रूपमें बिना विकृत होने दिये उसी शैलीके वर्णन द्वारा अनुवादमें सुरक्षित रखना अत्यन्त कठिन कार्य है। भगवत्-कृपासे एक सन्तकी प्रेरणासे उनके किसी प्रतिभाशाली एक भक्तने इस कार्यको हाथमें लिया तथा अन्य कार्योंकी भीड़ रहते हुए भी रात-विरात अवकाश निकालकर इस कार्यको पूरा किया। अनुवादमें कहीं किसी भावकी विकृति न हो जाय इसकी रक्षाके लिए उन्हीं सन्तने एक-एक पंक्ति मूल और अनुवादको स्वयं सुनकर जहाँ कहीं भी भावमें कमी प्रतीत हुई उसको ठीक करा दिया। उसीके फलस्वरूप यह गद्यकाव्य-ग्रन्थ भक्तोंकी सेवामें उपस्थित किया जा रहा है। पूर्ण आशा है कि भावुक भक्तगणोंको ग्रन्थके रसास्वादनसे आनन्दकी अनुभूति होगी।

● इस ग्रंथमें ऐसे व्यक्तियोंके लिये जो बंग भाषाके जानकार तो हैं अथवा समझ सकते हैं लेकिन लिपि नहीं पढ़ सकते--मूल बंगलाका अंश भी देवनागरी लिपिमें दे दिया गया है। प्रत्येक पृष्ठका बाँया स्तम्भ (कालम) तो बंग भाषामें है और दाहिना स्तम्भ हिन्दी भाषामें। बंग भाषाकी प्रत्येक पंक्तिके सामने ही हिन्दी अनुवादकी पंक्ति रखी गयी है जिससे बंग भाषाको अच्छी प्रकार न समझनेवाले भी हिन्दी पढ़कर बंगला अंशके भावोंको हृदयंगम कर सकें। बंग भाषामें उच्चारण और लेखनमें कहीं-कहीं भिन्नता है। एक ही शब्द भिन्न प्रकारसे उच्चारण करनेपर भिन्न अर्थ रखता है जैसे बंग भाषाका "बल" 'बोलो' भी उच्चारण होता है और 'बल' भी। एक 'कहने' के अर्थमें है दूसरेका 'शारीरिक बल'के अर्थमें। इसका भाव आगे-पीछेके सम्बन्धित क्रमसे आसानीसे पता लग जायगा। एक बार थोड़ा अभ्यास हो जानेके पश्चात् प्राय: कठिनाई नहीं होती।

● श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीका जीवन-नाटक लौकिक दृष्टिसे दुःखान्त ही रहा है। लेकिन प्रणालीके अनुसार प्रभुपाद श्रीहरिदासजीने अपने इस नाटकमें करुण रसका तूफान उपस्थित करके भी अन्तमें वृष्टि आदि सिंचनकर इस तूफानको शान्त कर सुखान्त बना दिया है।

● उपरोक्त ग्रंथोंमेंसे "श्रीविष्णुप्रिया सहस्रनाम स्तोत्र", "श्रीविष्णुप्रिया विलाप-गीति" और "श्रीधाम वृन्दावनमें श्रीपाद मुरारि गुप्त प्रतिष्ठित श्रीश्रीनिताई-गौर-श्रीविग्रहकी अद्भुत लीला-कथा' का हिन्दी-अनुवाद हमारे यहाँसे प्रकाशित हो चुका है। "श्रीविष्णुप्रिया चरित" और "श्रीलक्ष्मीप्रिया चरित" का हिन्दी-अनुवाद भी मुद्रित हो रहा है। शीघ्र ही पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकेगा।

● हमारा तो प्रयास है कि उपर्युक्त अन्य ग्रन्थ भी हिन्दी भाषा-भाषियोंके सम्मुख शीघ्र ही उपस्थित किये जाँय। प्रभुकी कृपा हुई तभी यह सब संभव हो सकेगा। करने-करानेवाले तो वे ही हैं। हम तो कठपुतली हैं, जैसा चाहें वे नाच नचा लें।

● यथासाध्य सावधानी बरतनेपर भी मुद्रणमें भूलें रहनी सम्भव हैं। प्रस्तुत पुस्तक मोनो मशीनके महीन अक्षरोंमें कम्पोज होनेके कारण तथा तीव्र गतिकी स्वचालित मशीनोंमें मुद्रित होनेके कारण कुछ शब्दोंकी मात्रायें कहीं-कहीं प्रेसकी असावधानीके कारण टूट गयी हैं जिनकी जानकारी हमें फर्मे छप जानेके पश्चात् ही हो पायी है। दृष्टिमें पड़ जानेवाली अशुद्धियोंको हमने शुद्धिपत्रमें दे दिया है। विज्ञ पाठक, ऐसी अशुद्धियोंके लिये जो हमारी लाचारीके कारण बन पड़ी हैं, हमें क्षमा करनेकी कृपा करेंगे। पाठकवृन्द अशुद्धियोंको शुद्धि-पत्रसे (जो कि पुस्तकके शेषमें है) शुद्ध करके पढ़ेंगे, तो कहीं भ्रम होनेकी संभावना नहीं रहेगी। फिर भी हमारा आग्रह है कि कहीं कोई अशुद्धि पाठक महानुभावोंके ध्यानमें आवे तो हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि अगले संस्करणमें उसे सुधारा जा सके।

रास पूर्णिमा, वि० सं० २०२१
गौराब्द ४७८, शकाब्द १८८६
बंगाब्द १३७१, सन् १९६४ ई०

वैष्णवदासानुदास
रामनिवास ढंढारिया

श्रीविष्णुप्रिया नाटकका संक्षेप
एवं
विषय-सूची

विषय **पृष्ठ संख्या**

विषय | पृष्ठ संख्या

तृतीय अङ्क

● **प्रथम गर्भाङ्क :—**

● **द्वितीय गर्भाङ्क :—**

● **तृतीय गर्भाङ्क :—**

चतुर्थ अङ्क

● **प्रथम गर्भाङ्क :—**

● **द्वितीय गर्भाङ्क :—**

विषय पृष्ठ संख्या

षष्ट अङ्क

● प्रथम गर्भाङ्क :—

● द्वितीय गर्भाङ्क :—

——०——

मङ्गलाचरण

हे गौर-वक्ष-विलासिनी ! हे देवि ! हे विष्णुप्रिये !
कलिकालके इन प्राणियोंकी ओर माँ ! दृग फेरिये ।।
नित्य हाहाकारसे हो रहा अन्तःकरण कातर ।
दग्ध ज्वालामें त्रितापोंके कलेवर क्लेश-जर्जर ।।
मलिन मनकी भावनाएँ, हृदय प्रस्तर-सा कठिन अति ।
प्रेमका होगा उदय किस भाँति उसमें गौरके प्रति ।।
पतित-पावनकारिणी माँ ! मूर्ति तू करुणा विनिर्मित ।
कलि-कलुष-हारी तुम्हारे चरण दोनों राग-रञ्जित ।।
सिवा चरणोंके तुम्हारी नहीं कोई दूसरी गति ।
कृपाकर कलिजनोंको माँ ! दीजिये मंगलमयी मति ।।
सहज स्वाभाविक भजनके राजपथका कर प्रदर्शन ।
शुद्ध करदो हृदय संततिका न जिनके भक्तिका धन ।।
प्रेम-सौरभ नहीं कलिके प्राणियोंके हृदय भीतर ।
वे कुतर्की, प्रेम भक्ति-विहीन, भ्रमपट लोचनों पर ।।
कलिकालके प्राणी अधम तुमको नहीं पहचान कर ।
दुःख पारावारमें हैं डूबते रहते निरन्तर ।।
शान्तिकी तुम मूर्ति माता ! शांति-रस मन-कलश ढालो ।
जान कर संतानको निज अधम, चरणोंमें बसा लो ।।
दूर कर भ्रमका अँधेरा प्रेमभक्ति प्रदान कर दो ।
शक्ति-रूपिणि ! कृपा-प्रतिमे ! कृपा करके शक्ति भर दो ।।
गौरहरिके भजन-पथमें एक माँ ! तेरा सहारा ।
सकल-सुख-भंडार अम्बे ! बस चरण-चिन्तन तुम्हारा ।।
जननि ! कलिके जीव कातर उपरि करुणा-घटा बरसे ।
बिना तव पदके नहीं 'हरिदास'का नाता अपरसे ।।

●

।। श्रीश्रीगौरविष्णुप्रिया जयतः ।।

ग्रन्थकारकी विज्ञप्ति

●

श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीने जीवाधम ग्रन्थकारके केश पकड़कर अपना सुवृहत् चरितसुधा लीलाग्रन्थ लिखवाया। उसके बाद उनकी कृपा-प्रेरणासे "श्रीविष्णुप्रियामङ्गल" श्रीग्रन्थ लिखा गया। पुनः देवीने केश पकड़कर अपना "विलाप गीति" लिखवाया। अब श्रीविष्णुप्रिया नाटक क्यों? इस प्रश्नका उत्तर देनेकी क्षमता जीवाधम ग्रन्थकारमें नहीं है। कृपामय गौरभक्त पाठक-पाठिकावृन्द कृपापूर्वक सम्पूर्ण श्रीग्रन्थका पाठ करके--विचार करके इस प्रश्नके उत्तरका समाधान स्वयं कर लें।

"श्रीश्रीविष्णुप्रिया चरित" श्रीग्रन्थ ४२७ गौराब्दमें जब्बलपुरमें लिखा गया। "श्रीविष्णुप्रिया मङ्गल" श्रीग्रन्थ ४२९ गौराब्दमें मध्यभारत भोपालमें लिखा गया। "श्रीश्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति" इसी साल वृन्दावन धाममें लिखा गया। "श्रीश्रीविष्णुप्रिया नाटक" राजपूताना-अजमेरमें लिखा गया। सुदूर देश अजमेरमें श्रीश्रीगौरविष्णुप्रिया सेवाका प्रचार हुआ। उसी सेवाके फलसे श्रीश्रीविष्णुप्रिया देवीने तुष्ट होकर केश पकड़कर कृपादेश दिया कि उनका नाटक लिखना होगा। कृपामयी गौरवक्षविलासिनी देवीका आदेश एक पक्षके भीतर प्रतिपालित हुआ। अब उनका और क्या आदेश होगा, पता नहीं।

अलमिति विस्तरेण।

राजपूताना-अजमेर,
माघी पूर्णिमा,
गौराब्द ४३४.।
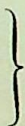
श्रीश्रीविष्णुप्रियादासानुदास,
दीनहीन जीवाधम,
ग्रन्थकार

श्रीश्रीविष्णुप्रिया-वल्लभाय नमः
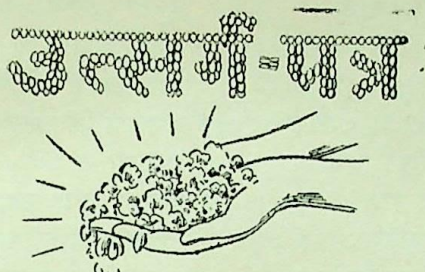
श्रीश्रीविष्णुप्रिया-वल्लभ-श्रीकरकमलेषु

ओहे विष्णुप्रिया-नाथ !
बड़ आशा क'रे,
राजपण्डित सनातनमिश्र महाशय,
सँपेछिलेन कन्या ताँर,
तोमार करेते ।
बड़ आशा क'रे,
स्वामीहारा, पुत्रहारा
दुःखिनी शची माता
बेंधे छिलेन ताँर सुखेर संसार,
विवाह दिये तव
श्रीविष्णुप्रिया सने ।
बड़ आशा क'रे,
सनातन-नन्दिनी देवी विष्णुप्रिया
सँपेछिलेन काय-मन
तोमार चरणे ।
बड़ आशा क'रे,
नदीयार भक्तवृन्द,—तव निजजन,
ह'ये सर्व्वत्यागी,
ल'येछिलेन शरण
चरणे तोमार ।

अहो ! विष्णुप्रिया-नाथ !
बड़ी-बड़ी आशा बाँध,
राजपण्डित सनातनमिश्र महाशयने
सौंपी थी कन्या निज,
तव पाणि-पङ्कजमें ।
बड़ी-बड़ी आशा बाँध,
स्वामी-हीना, पुत्र-हीना,
दुःखिनी शची माँने
पुनः था बसाया संसार निज सुखका,
करके विवाह तव
विष्णुप्रिया देवीसे ।
बड़ी-बड़ी आशा बाँध,
सनातन-सुता विष्णुप्रिया देवीने
अर्पण किया था काया-मन
पावन तव चरणोंमें ।
बड़ी-बड़ी आशा बाँध,
नदियाके भक्त-वृन्द, तुम्हारे स्वजनवृन्द,
करके सर्वस्व-त्याग,
शरणागत हुए थे
चरणोंमें तुम्हारे ।

उत्सर्ग-पत्र

भङ्ग क'रे सकलेर आशा
तुमि ह'ये गृहत्यागी
साजिले संन्यासी;
ज्वालिले विषमानल नवद्वीपपुरे ।
स्नेहमयी जननीर
हृदयेर दुर्व्विसह ताप,
पतिप्राणा विष्णुप्रियार
प्राणघाती सकरुण आर्त्तनाद,
नदीयार भक्तवृन्देर
आर्त्तिपूर्ण विषम हाहाकार,
भीषण कालानल सम,
ज्वलितेछे निशिदिन,—
ज्वलिबेओ चिरदिन,—
करि भस्मीभूत अस्थि-चर्म्म-काय,
निज जनेर तव;
तार मध्ये एक जन
क्षुद्र ग्रन्थकार,—
दुखी, तापी, दुराचार, पुरीषेर कीट ।
तार क्षुद्र हृदयेर
ज्वाला तीक्ष्ण—अतिशय
अमह्य-अदम्य, ताहा;
ताइ उद्गारिल—ए अनलराशि ।
काके दिब इहा ?
कार साध्य करे सह्य
एइ भीषण अनल ?
खुँजिलाम एके-एके
तव निज जने,
साधिलाम मने-मने
महाजनगणे;
केह ना लइल इहा,

चूरकर सभीकी आशा,
तुमने गृहत्यागी हो,
सज लिया संन्यास-वेश;
धधकाया विषमानल नवद्वीप-पुरीमें ।
स्नेहमयी जननीके
हृदयका दुस्सह ताप,
पतिप्राणा विष्णुप्रियाका
प्राणघाती सकरुण आर्त्तनाद,
नदियाके भक्तोंका
आर्त्तिपूर्ण विषम हाहाकार,
भीषण कालानल सम,
जल रहा दिवस-निशि,—
जलेगा भी चिरदिन,—
भस्मीभूत करके अस्थि-चर्म-कायाको,
तुम्हारे निज जनोंके ।
उन्हींमें एक जन
क्षुद्र ग्रन्थकार यह,—
दुःखी, तापी, दुराचारी, पुरीष-कीट,
उसके क्षुद्र हृदयकी,
तीक्ष्ण ज्वाला-अतिशय
असह्य, अदम्य वह;
अतः उगली यह अनल-राशि उसने ।
किसको इसे दूं, भला ?
किसकी सामर्थ्य है, सहन करे
इस भीषण ज्वालाको ?
खोजा एक-एक कर
तुम्हारे निज जनोंमें;
तौला है मन-ही-मन
महाजन-गणोंको;
किसीने लिया न इसे

ताइ दिनु तव करे,——
अग्निर पञ्जर।
लह, श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु !
लह उपहार !
अनलेर राशि इहा,
पुञ्जीकृत हृदयेर ताप इहा,
तुमि विना कार साध्य
करिते निर्व्वाण ?
दितेछे कत जने,——तव करे,
कत-कत प्रीति-उपहार।
लिखेछिले मोर भाग्ये
दिते तव श्रीकर-कमले
एइ विषम अनल।
ओहे विष्णुप्रिया-नाथ !
दुःख नाइ ताते मोर,
बड़ दुःख दियेछ तुमि,
सरला विष्णुप्रियार प्राणे ;
एवे तार कर फल भोग !
लइओ ना अपराध मोर।

अतः दिया तव करमें,——
अनल-पञ्जर।
लो, श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु !
ले लो उपहार !
अनल-राशि यह,
पुञ्जीभूत ताप यह हृदयका;
किसकी सामर्थ्य है तुम्हारे सिवा
कर सके शान्त इसे ?
देते हैं कितने जन,——तव करमें,
कितने-कितने प्रीति-उपहार।
लिखा था मेरे भाग्यमें,
देना तुम्हारे श्रीकरकमलोंमें
यही विषमानल।
अहो ! विष्णु-प्रिया-नाथ !
उसका मुझे दुःख नहीं;
दारुण दिया है दुःख तुमने जो,
सरला विष्णुप्रियाके प्राणोंको ;
अब उसका ही बस भोगो फल,
लाना मत मनमें अपराध मेरा।

श्रीविष्णुप्रिया-विरह-दुःख-कातर

दीन ग्रन्थकार
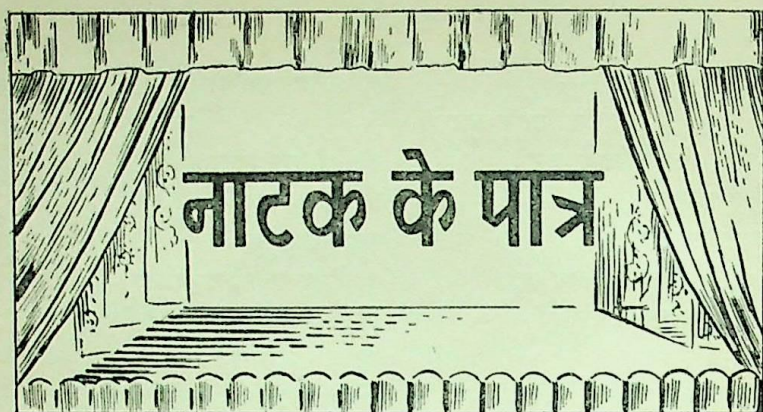
पुरुषपात्र

श्रीगौराङ्ग (निमाई)	...	नदियाके अवतार
गङ्गादास पण्डित	...	श्रीगौराङ्गके शिक्षा-गुरु ।
गदाधर	...	श्रीगौराङ्गके प्रिय भक्त ।
श्रीनित्यानन्द	...	श्रीगौराङ्गके अभिन्न-कलेवर ।
श्रीवास पण्डित	...	श्रीगौराङ्गके प्रिय भक्त ।
ईशान	...	श्रीगौराङ्गके भृत्य ।
चन्द्रशेखर आचार्य	...	श्रीगौराङ्गके मौसा ।

भक्तगण, छात्रगण, एवं नदियाके ब्राह्मण पण्डितगण ।

———o———

स्त्रीपात्र

शचीमाता	...	श्रीगौराङ्गकी जननी ।
श्रीविष्णुप्रिया	...	श्रीगौराङ्गकी गृहिणी ।
काञ्चना	...	श्रीविष्णुप्रियाकी सखी ।
अमिता	...	श्रीविष्णुप्रियाकी सखी ।
मालिनीदेवी	...	श्रीवास पण्डितकी गृहिणी ।
सर्व्वजया	...	चन्द्रशेखर आचार्यकी पत्नी, शचीमाताकी बहिन ।

सखीगण, पड़ोसकी स्त्रियाँ ।

श्रीश्रीगौर-विष्णुप्रिये जयतः

श्रीविष्णुप्रिया नाटक

प्रथम अङ्क ।

(प्रथम गर्भाङ्क)

दृश्य—नवद्वीपे जगन्नाथ मिश्र पुरंदरेर गृह ।
श्रीकृष्ण-प्रेम-विह्वल श्रीगौराङ्ग धरासने आसीन ।
(शचीमातार प्रवेश)

शचीमाता—

केन बाप ! मलिन-वदन,
वसि धरासने काँदितेछ तुमि;
कि दुःख तोमार, चाँद ?
नयने केन हेरि अश्रुधार ?
सोनार अङ्ग धूलि माखा केन ?
आलू थालू चाँचर चिकुर-दाम
पड़ियाछे बदन उपर;
नतमुखे केन काँदितेछ बाप !
भिजेगेछे धरासन,
कर्द्दमाक्त वसनाग्र-भाग;
कि दुःख तोमार मंने,
प्रकाशिये वल बाप !
प्राण काँदे मलिन वदन हेरि तव ।
अभागिनी आमि,
तोमा हेन पुत्रधन पेये,
भुलियाछि सब दुःख ।

दृश्य—नवद्वीपमें जगन्नाथ मिश्र पुरंदरका घर ।
श्रीकृष्ण-प्रेममें विह्वल श्रीगौराङ्ग पृथ्वीपर वैठे हुए ।
(शचीमाता का प्रवेश)

शचीमाता—

क्यों हे लाल ! मलिन-वदन,
बैठे धरापर करते तुम क्रन्दन;
क्या दुःख तुमको, मेरे चाँद ?
नयनोंमें देख रही किसलिये जलधार,
कञ्चन-सा तन सना धूलमें किसलिये ?
कुञ्चित कुन्तल-कलाप तव अस्त-व्यस्त हो
छाया मुख-मण्डलपर;
नतमुख हुए लाल ! क्रन्दन क्यों कर रहे ?
धरतीतल भीग गया,
कीच सना वसन-छोर;
कौन दुःख मनमें तुम्हारे बसा,
निरावरण कहो, लाल !
रोते हैं प्राण मेरे देख म्लान-वदन तव ।
मैं अभागिन,
तुम समान पुत्ररत्न पाकर,
भूली हुई थी सभी दुःख ।

विश्वरूप भाइ तव
वनवासे गेल,
सेइ शोके पिता तोर
पाशरिल देह;
बाछा रे ! सोनार निमाइ चाँद !
तोर मुख चेये ग्रामि
भुलियाछि सर्व्व दुःख-शोक ।
तोमा हेन पुत्रधने पेये,
वैकुण्ठेर लक्ष्मीसमा पुत्रवधू पेये
ए वृद्ध वयसे ग्रामि,
संसारे दियेछि मन ।
नयनेर तारा तुमि मोर,
ग्रन्धेर यष्टि तुमि मोर,
पलके हाराले तोमा
दिशेहारा हइ,
ग्रनाथिनी ग्रामि, ग्रभागिनी ग्रामि,
तुमि मोर ग्रञ्चलेर धन,
दुखिनीर जीवन-सम्बल,
ग्रामार सोनार निमाइ चाँद !
केन काँद तुमि, बाप ?
बल, बल, कि दुःख तोमार ?
प्राण दिब तव दुःख
करिबारे दूर ।
उठ, बाप ! कोले एस,
सम्बर क्रन्दन !

(एइ बलिया शचीमाता पुत्रके क्रोडे तुलिया सस्नेहे मुख-चुम्बन करिलेन । तखन श्रीगौराङ्ग ग्रति कष्टे जननीर मुखेर प्रति चाहिया विषाद भरे कहिलेन)

ग्रग्रज तव, विश्वरूप
वनवासी हो गया ;
उसी शोकमें पिता तेरे
देहसे ग्रतीत हुए ।
मेरे छौना ! सोनेके निमाई ! मेरे चाँद !
मैं देख तेरा मुख
भूल गई हूँ सर्व दुःख-शोक ।
तुम सम पा पुत्ररत्न,
वैकुण्ठकी लक्ष्मी-सी पाकरके पुत्रवधू
मैंने इस बुढ़ापेमें,
जगमें रमाया मन ।
तुम मेरे नयनोंके तारे,
ग्रंधेकी लकड़ी-से, मेरे एक सहारे;
जो न पलकभर तुम्हें देखती,
सूझती दिशाएँ नहीं ।
ग्रनाथिनी मैं, ग्रभागिनी मैं,
तुम मेरे ग्रञ्चलके धन,
दुखियाके जीवन-सम्बल,
कञ्चन-काय निमाई, मेरे चाँद !
क्यों तुम क्रन्दन करते, लाल !
कहो, कहो? क्या दुःख है तुमको ?
प्राणोंकी बलि दूंगी दुःख तव
दूर करने को ।
उठो, लाल ! गोदीमें ग्राग्रो,
करो न क्रन्दन ।

(इस प्रकार कहकर शची माताने पुत्रको गोदमें उठा कर सस्नेह मुख- चुम्बन किया । तब श्रीगौराङ्ग ग्रत्यन्त कष्टसे जननीके मुखकी ग्रोर देखकर विषादमें भरे हुए बोले ।)

श्रीगौराङ्ग—

मागो ! सकलि त जान तुमि;
गया ह'ते एसे, किछु नाहि
भाल लागे मोर;
पेये धन हारायेछि आमि ।
कृष्ण मोर प्राणधन,
कृष्ण मोर जीवन,
कृष्ण मोर पिता, माता, गुरु;
दयामय सेइ कृष्ण दया क'रे
दिला देखा गयाधामे मोरे—
नवीन जलद श्याम,
द्विभुज मुरलीधर,
गोपवेश, वेणु करे,
त्रिभङ्ग बङ्किम ठामे,
दाड़ाइये कदम्बतले,
डाके मोरे निशि दिशि,
मधुर मुरली स्वरे ।
चोखेर उपरे मोर
कृष्णवर्ण एक शिशु नाचिया वेड़ाय ।
बाजाय मुरली मधु स्वरे
माझे-माझे ।
निरन्तर कर्णे शुनि आमि,
मधुर-मधुर सेइ मुरलीर ध्वनि,
मागो ! गृहे आर रइते नारे
मन ।
पेये धन हारा'लाम आमि;
केन एनु गृहे आमि,
गया धाम छाड़ि ?
जेखाने कृष्ण मोरे
दिला दरसन ।

श्रीगौराङ्ग—

माँ ! सभी कुछ हो जानती तुम;
गयासे लौटनेपर कुछ भी नहीं
भाता मुझे;
पाकर निधि हाथमें, खो दी है मैंने ।
कृष्ण मेरे प्राणधन,
कृष्ण मेरे जीवन,
कृष्ण मेरे पिता, माता, गुरुजन;
वे ही दयाधाम कृष्ण करुणा कर
दृग्गोचर हो गये मुझको गया धाममें—
नूतन जलदाभ श्याम,
द्विभुज मुरलीधर,
गोपवेश, करमें वंशी वर;
त्रिभङ्ग भङ्गिमासे ललित, बङ्किम
खड़ा हो कदम्बतले,
मुझको पुकारता अहर्निश,
मधुर मुरली-स्वरमें ।
आँखकी पुतलियोंमें मेरी
शिशु एक कृष्णवर्ण, रहता है नाचता;
फूँक देता मुरलीमें मधुर तान,
रह-रहकर ।
कानोंमें सुनता निरन्तर मैं,
मधुर-मधुर वही ध्वनि मुरलीकी,
मैया ! घरमें अब नहीं रह पाता
मन है ।
पाकर निधि हाथमें, खो दी है मैंने,
क्यों फिर लौट आया घर, मैं
छोड़कर गया धाम,
जहाँपर कृष्णने मुझको
दर्शन दिया ?

मागो ! तुमि कर आशीर्व्वाद,
पाइ जेन कृष्ण धने आमि ।
(विह्वल भावे अन्य दिके चाहिया)
कृष्ण रे ! बाप रे !
कोथा गेले तुमि ?
कोथा गेले देखा पाब तव ?
कृष्ण रे ! प्रभु रे ! मोर प्राणधन !
एक बार देखा दिये,
जुड़ाओ तापित हृदय मोर;
एक बार देखा दिये गयाधामे,
कोथाय लुकाले तुमि, नाथ !
अदर्शने प्राण गेल मोर ।
(शचीमातार प्रति चाहिया)
जाब आमि कृष्ण-अन्वेषणे,
मागो ! दाओ अनुमति ।
दूर-दूरान्तरे,—
पर्व्वत, गहन वने
सागरे वा मरूभू माझारे,
सर्व्वत्रे ढूंढ़िब आमि ।
हाराधने पेते,
प्राण यदि जाय, क्षति नाइ किछु;
कृष्ण बिने तुच्छ प्राण,
राखि किवा फल ?
मागो ! क्षमा कर ।
पुण्यवती तुमि,—
भक्तिमती तुमि,—तव पुण्यबले
कृष्णधने पाब आमि ।
आशीर्वाद कर मागो !
भाग्यहीन पुत्र तव,
जेन कृष्णधने पाइ ।

मैया री ! आशीर्वाद दे तू,
कृष्णरूपी धनको पाऊँ मैं जिससे ।
(विह्वल भावसे दूसरी ओर देखकर)
हे कृष्ण ! हे नाथ !
कहाँ तुम चले गये ?
कहाँ जाऊँ जहाँ तुम्हें देख पाऊँ ?
हे कृष्ण ! हे प्रभो ! हे मेरे प्राणधन !
एकबार दर्शन दे,
शीतल करो मेरे तप्त हृदयको;
एकबार झलक दिखाकर गयामें,
कहाँ छिपे, नाथ, तुम ?
दर्शन बिना प्राण मेरे बिदा हुए ।
(शचीमाता की ओर देखकर)
जाऊँगा मैं कृष्णकी खोजमें,
मैया री ! अनुमति दे ।
दूर देशमें, सुदूर देशमें——
पर्वत प्रदेशमें, गहन वनमें,
सागरमें अथवा मध्य मरुभूमिके
सर्वत्र मैं ढूँढूँगा ।
खोया धन पानेके प्रयासमें
प्राण यदि चले जायें, कुछ भी न क्षति है;
कृष्ण बिना तुच्छ प्राण
रखनेमें लाभ क्या ?
मैया री ! क्षमा कर ।
पुण्यवती तू है,
भक्तिमती तू है——तेरे पुण्यबलसे
कृष्णधन पाऊँगा मैं ।
मैया री ! दे आशीर्वाद,
भाग्यहीन पुत्र तव,
जिससे पाये कृष्णधन ।

गीत

(आमि) कृष्ण अन्वेषणे जाव
दाओ मा! विदाय।
(ऐ) कदम्ब तलाते वसि,
आड़े चेये हासि हासि,
आमार कृष्ण आमार तरे
वेणु वाजाय॥
(से जे) वामे हेले वेणु करे,
डाकूछे मोरे मधु स्वरे,
आय रे नदिया चाँद
आय आय आय।
काल शशीर वंशी शुनि
रइते नारि घरे आमि
आमार कृष्ण अमाय डाके
दाओ मा! विदाय॥

कृष्ण-खोजमें मैं जाऊँगा,
माँ! दे दान विदाका रे।
छिपकर बैठ कदम्ब सहारे,
हँस-हँस मेरी ओर निहारे,
मेरे लिये कन्हैया मेरा,
वंशी मधुर वजाता रे॥
टेढ़े होकर मुरली धारे,
मीठे स्वरमें मुझे पुकारे,
आ जा रे नदियाका चंदा,
आ जा, आ जा, आ जा रे।
कृष्णचन्द्रकी वंशी सुनकर,
मुझसे रहा न जाता घरपर,
मेरा कृष्ण पुकारे मुझको,
माँ दे दान विदाका रे॥

शचीमाता—
सोनार निमाइ चाँद!
वाप आमार! वाछा आमार!
सम्वर रोदन,—स्थिर कर चित,
धैर्य्य धर वाप!
दयामय कृष्ण सर्व्वत्र विद्यमान,
गृहे वसि पावे
तुमि दरशन ताँर;
भाग्यवती आमि,
गर्भे धरि तोमा हेन पुत्रधने;
श्रीकृष्ण भजन कर वाप
गृहे रहि सस्त्रीक हइये;
पिता-पितामह तव,
मातामह आदि जत पूज्य गुरुजन,
छिलेन कृष्णभक्त सकलेइ;
गृहस्थ आश्रमे थाकि,
तारा सब लभियाछेन सद्गति।

शचीमाता—
सोनेके निमाई! मेरे चाँद!
वत्स मेरे! छौना मेरे!
रोओ मत, स्थिर करो चित्त,
धैर्य्य धरो तात!
दयामय कृष्ण सर्वत्र विद्यमान,
घरमें ही रहकर मिलेगा
तुम्हें दर्शन उनका।
भाग्यवती हुई मैं,
गर्भमें धारणकर तुम समान पुत्रधन;
श्रीकृष्ण-भजन करो तात!
घरमें ही रहकर पत्नी-सहित
पिता-पितामह तव,
मातामह आदि जितने भी पूज्य गुरुजन,—
थे सभी कृष्ण-भक्त।
गृहस्थाश्रममें ही रह,
उन सबने सद्गतिको प्राप्त किया।

उच्च वंशे जन्म तव,	जन्म उच्चकुलमें तुम्हारा हुआ,
भक्त-वंशधर तुमि,	भक्त-वंश-दीपक तुम,
श्रीकृष्ण-भजन तव वंशेर करम ।	श्रीकृष्ण-भजन ही कुलाचरण तुम्हारा है ।
कभु नाहि बाधा दिब,	बाधा नहीं दूँगी कभी,
श्रीकृष्ण-भजने आमि ।	श्रीकृष्ण-भनमें मैं ।
तबे एकमात्र अनुरोध,	किंतु अनुरोध एकमात्र यह--
गृहे रहि भज कृष्ण	घरमें रह भजो श्रीकृष्णको
सस्त्रीक हइये;	पत्नी-सहित ।
वंशेर प्रदीप तुमि,	वंशके प्रदीप तुम,
कुलेर माणिक तुमि,	कुलके माणिक्य तुम,
उज्ज्वल कर बाप पितृ-मातृ-कुल;	पितृ-मातृ-कुलको उज्ज्वल करो, तात;
गृहे रहि श्रीकृष्ण-भजनानन्दे	घरमें रह कृष्ण-भजनानन्दसे
तुष्ट कर मन;	तुष्ट करो मनको;
जननीर राख अनुरोध ।	जननीका स्वीकार करो अनुरोध ।
(ऊर्ध्व दृष्टे कर जोड़े श्रीकृष्ण निकटे प्रार्थना)	(आकाशकी ओर देखते हुए कर जोड़-कर श्रीकृष्णसे प्रार्थना)
हे कृष्ण ! करुणासिंधु !	हे कृष्ण ! करुणा-सिन्धु !
स्वामी निले,	स्वामीको बुला लिया,
पुत्र वनवासे दिले,	सुतको वनवास दिया,
अवशिष्ट सबे मात्र आछे एक जन,	बचा केवल एक जन--
मोर प्राणेर निमाइ चाँद	मेरे प्राणोंका निमाई चाँद,
जीवन-सर्व्वस्व;	जीवन-सर्वस्व ।
बड़ अभागिनी आमि,	महा अभागिनी मैं
अनाथिनी मोर सम नाइ केह,	कोई नहीं मुझ-सी अनाथिनी है,
एइ पृथ्वीते;	इस वसुमतीपर ।
हे कृष्ण करुणासिन्धु !	हे कृष्ण ! करुणासिन्धु !
कर जोड़े मागि वर	हाथ जोड़ मागूँ वर,
तोमार चरणे,	चरणोंमें पड़ तुम्हारे--
सुस्थ चित्ते घरे राख	सुस्थिर-चित्त कर रक्खो घरमें
मोर विश्वम्भरे ।	मेरे विश्वम्भरको ।

किछु नाहि चाहि आमि,	कुछ भी नहीं चाहती मैं,
बिना एइ वर ।	इस वरके अतिरिक्त ।
हे कृष्ण ! हे दयामय !	हे कृष्ण ! हे दयामय !
करुणासागर !	करुणाके सागर हे !
दाओ हे सुमति प्रभु	प्रभु हे ! दो सुमति ऐसी
पुत्रधने मोर,	मेरे पुत्रधनको,
से गृहे रहि भजूक तोमारे ।	जिससे वह घरमें रह भजन तुम्हारा करे ।
(प्रस्थान)	(प्रस्थान)
श्रीगौराङ्ग—(निज मने)	**श्रीगौराङ्ग**— (मन-ही-मन)
जानि ना, कि इच्छा कृष्णेर;	पता नहीं, चाहते क्या श्रीकृष्ण ;
दुखिनी जननी मोर,	दुःखकी मारी मेरी मैया,
पुत्र बिना किछु नाहि जाने,	पुत्रके सिवा कुछ नहीं जानती ;
प्राणसमा प्रियतमा पति बिना,	प्राणसमा प्रियतमा भी स्वामीको छोड़कर
किछु नाहि बूझे;	जानती न बूझती कुछ;
सुकठिन स्नेहेर बन्धन,	कितना कठिन स्नेह-बन्धन,
पतिप्राणा कामिनीर	पति-प्राणा कामिनीका
सुदृढ़ प्रणय-पाश,	सुदृढ़ प्रणयपाश;
केमने वा छिन्न करि,	कैसे उसे तोड़ूँ मैं ?
कि करि उपाय ?	कौन-सा उपाय करूँ ?
संसार-बन्धने आर,	सांसारिक बन्धन अब
मन नहीं माने;	मन मेरा करता स्वीकार नहीं ।
कृष्णप्रेम, सब चेये बड़;	कृष्णप्रेम सबसे बड़ा
कृष्ण-प्रेम-वन्या-जले,	कृष्ण-प्रेमकी बाढ़में
पितृस्नेह, मातृस्नेह, भार्य्याप्रेम,	पितृ-स्नेह, मातृ-स्नेह, भार्य्या-प्रेम,
सब भेसे जाय;	हो जाते विलीन सभी,
संसार-सुख हय विषमय वोध;	विषमय प्रतीत होता है लौकिक-सुख ;
श्रीकृष्ण-भजन तरे	श्रीकृष्ण-भजन-पथमें,
प्रतिकूल संसार-बन्धन ।	कण्टकसम बन्धन संसारके ।
सर्व्वत्यागी हये कृष्ण ना भजिले	सर्व-त्यागी होकर, किये बिना कृष्ण-भजन
गोलोकेर निधि,—प्रेमधन,—	गोलोक-सम्पदा—प्रेम-निधि,—
प्राप्ति नाहि हय ।	प्राप्त नहीं होती ।

ह'ब गृहत्यागी श्रीकृष्णेर तरे,	भवन-त्याग करूँगा लिये श्रीकृष्णके–
ह'ब सर्व्वत्यागी,––जेइ जाहा बले ।	सर्व-त्याग करूँगा, कोई चाहे कहे कुछ ।
जगत-संसार, माता-परिवार,	जगत-संसार तथा, जननी परिवार तथा,
धन, जन, बन्धु––ऐहिक सम्पद,	धन-जन, भाई-बन्धु, सम्पदा यहाँकी सभी,
धर्म्म, कर्म्म, याग, यज्ञ, व्रत, आचरण–	धर्म-कर्म, याग-यज्ञ, व्रत-पालन,
सर्व्व त्यजि श्रीकृष्ण-भजने	परित्याग कर सबका, श्रीकृष्ण-भजनको
मन चाय;	ललकता है मन ।
कृष्णेर इच्छा इहा,	यही श्रीकृष्ण-इच्छा-
कि करिब आमि ?	फिर मैं क्या करूँगा ?
पूर्ण हउक इच्छा ताँर,	पूरी हो उनकी चाह,
इच्छामय तिनि;	वे ही हैं इच्छामय ;
ए संसारे आमि नट,	इस जगमें मैं हूँ नट,
तिनि सूत्रधार ।	वे हैं सूत्रधार ।
के आमि ?	वास्तवमें कौन मैं ?
कि सम्बन्ध कृष्ण सने मोर ?	कृष्णके साथ मेरा सचमुच सम्बन्ध क्या ?
माया वशे भूले गेछि;––	भूल गया माया-वश;
राक्षसी-पिशाची माया सर्व्वभावे	राक्षसी-पिशाची भव-मायाने पूर्णतया
ग्रासियाछे मोरे;	ग्रस लिया मुझको ;
साध करे परियाछि गले,	ललककर मैंने भी डाल ली गलेमें
माया-फाँस ।	मायाकी फाँसी ।
कृष्णदास आमि––	'मैं हूँ श्रीकृष्ण-सेवक'––
भूले गेछि एकेबारे ।	एकदम भूल गया;
कृष्ण भूलि हइयाछि	भूलकर कृष्णको बन गया
संसारेर दास ।	दास संसारका ।
गुरु-कृपा-बले,––बुझियाछि एबे––	गुरुकी कृपासे,––जान लिया अब है––
सार कथा,––सार तत्व,	सार कथा, सार तत्व––
सर्व्वत्यागी हये, कृष्ण ना भजिले	सर्वस्व त्यागकर कृष्ण-भजन किये बिना
प्राप्ति नाहि हय ।	होती नहीं प्राप्ति है ।
मोर सब एक दिके,––	मेरा सब एक ओर,
आर कृष्ण एक दिके,––	और कृष्ण एक ओर ।

सर्व्वत्यागी ह'ये	होकर सर्वत्यागी मैं
करिब श्रीकृष्ण-भजन;—	करूँगा श्रीकृष्ण-भजन—
ध्रुव ए संकल्प मोर;	यही मेरा दृढ़ निश्चय।
कृष्ण रे ! प्रभु रे ! बाप रे !	कृष्ण हे ! प्रभु हे ! तात हे !
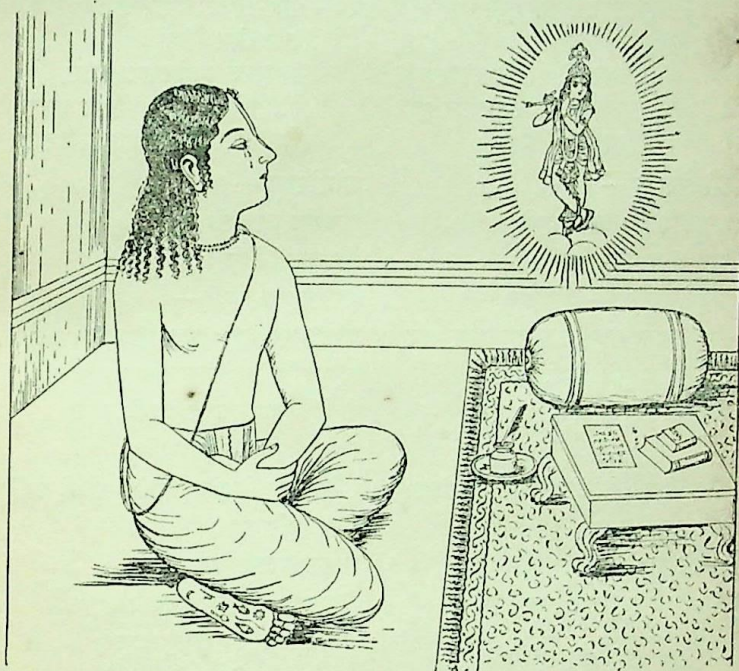
हृदे मोर दाओ बल,	हृदयमें दो बल मेरे,
शक्ति दाओ मने,	मनमें दो शक्ति भर,
दुश्छेद्य संसार, बन्धन ह'ते,	दुश्छेद्य बन्धनसे जगके
अविलम्बे जेन मुक्त हइ।	जिससे अविलम्ब मुक्त हो जाऊँ।
(प्रस्थान)	(प्रस्थान)

—:o:—

प्रथम अङ्क ।

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गेर टोल वाड़ी ।
पड़ुयागण आसीन ।
(प्रेमोन्मत्त श्रीगौराङ्गेर प्रवेश, पूंथि राखिया पड़ुयागणेर उत्थान एवं श्रीगौराङ्गके अभिवादन)

श्रीगौराङ्ग—

छात्रगण ! आज ह'ते
पाठ बन्ध तोमादेर;
अनुरोध मोर—
भज कृष्ण, कह कृष्ण, लह कृष्ण-नाम ।
हरि बलि पुथि बाँध,
उच्चकण्ठे बल "हरि बोल" ।

देख ! सूत्र-वृत्ति-टीका माझे,—लेखा
केवल हरिनाम;
अक्षरे-अक्षरे देख,
विद्यमान श्रीकृष्ण स्वयं ।
सर्व्वकाल सत्य कृष्णनाम ।
अज-भव आदि सबे,
कृष्णेर किंकर ।
सर्व्व शास्त्रे सार कहे,
कृष्णपद भक्ति धन;
ज्ञानी अध्यापक,—कृष्णेर मायाय
मुग्ध सबे;
ताइ तारा देय अन्य पाठ,
छाड़ि कृष्ण नाम, सूत्र-वृत्तिर

दृश्य—श्रीगौराङ्गकी पाठशाला ।
विद्यार्थीगण बैठे हैं ।
(प्रेमोन्मत्त श्रीगौराङ्गका प्रवेश, पोथी रखकर विद्यार्थीगणका उठना और श्रीगौराङ्गका अभिवादन करना)

श्रीगौराङ्ग—

छात्रगण ! आजसे
बंद तुमलोगोंका पठन-पाठन;
मेरा यह आग्रह है—
भजो कृष्ण, कहो कृष्ण, कृष्णनाम लो
कहकर 'हरि हरि' पुस्तकको बाँध दो,
बोलो उच्च स्वरसें "हरि बोल,
हरि बोल ।"

देखो! सूत्र, वृत्ति, टीका-सभीमें तो लिखा है
केवल हरिनाम ;
अक्षर-अक्षरमें देखो
विद्यमान श्रीकृष्ण स्वयं ।
सर्वकाल सत्य श्रीकृष्णनाम ।
अज, भव आदि सभी—
किंकर कन्हैयाके ।
सार यही वर्णित सर्व शास्त्रोंमें—
कृष्ण-पद-पङ्कजमें भक्ति, ही धन है ।
कृष्णकी मायासे ज्ञानी अध्यापक
सभी मोहित हैं ;
इसीसे पढ़ाते वे भिन्न वस्तु,
कृष्णनाम छोड़कर सूत्र और वृत्तियोंका

अन्य व्याख्या करे;	करते विपरीत अर्थ ।
पड़ियाओ सर्व्व शास्त्र	सर्वशास्त्र पढ़कर भी
दुर्गति तादेर;	दुर्गति ही मिलती उन्हें;
ना बुझे शास्त्रेर मर्म,	समझ नहीं पाते हैं, शास्त्रके मर्मको
गर्द्दभेर प्राय तारा	गर्दभ-समान वे
शास्त्र बहि मरे;	शास्त्रोंका बोझ लादे मरते हैं;
पड़िया-शुनिया लोक	पढ़-लिखकर दुनिया यह
गेल छारेखारे ।	मिल गयी धूलमें ।
हाहाकार घरे-घरे,	मच रहा घर-घरमें हाहाकार,
कारओ मने नाहि शान्ति,	शान्ति नहीं मनमें किसीके भी ;
वञ्चित हइल सबे, निजकर्मफले	निज कुटिल कर्मोंके फलस्वरूप सभी वञ्चित हुए
कृष्णप्रेम महाधने ।	कृष्णप्रेमरूपी महान् सम्पत्तिसे ।
ब्रह्मादि देवतागण, कृष्ण नामे——	ब्रह्मादिक देवतागण, कृष्णनाम
उन्मत्त, विह्वल;	ले-लेकर विह्वल, उन्मत्त बने;
छाड़ि हेन कृष्ण नाम,	ऐसा कृष्ण-नाम छोड़,
करे लोके अन्य मन;	लोगोंका मन जाता अन्य ओर;
धन-कुल-विद्या-मदे	धन-कुल-विद्या-मदसे
उन्मत्त ताहारा ;	हो रहे हैं पागल वे ।
कृष्णनाम——हरिनाम,——कि जे वस्तु,	वस्तु क्या है कृष्ण नाम, हरि नाम——
तारा जानिबे केमने ?	जानेंगे कैसे वे ?
छात्रगण ! तुमि सबे	छात्रगण ! तुम सबका
बालक-स्वभाव;	बालक-स्वभाव है;
सत्य वचन कहि, सुन मन दिया——	कहता हूँ सत्य वचन, मन देकर सुनो उसे—
तोमरा भजिले कृष्ण ए बाल्य-वयसे,	इस बाल्यकालमें ही कृष्ण-भजनसे तुम्हारे
बाल-भाषे अकपटे डाकिले ताँहारे;	बाल-भाषासे बिना कपट उन्हें पुकारनेपर
दरशन दिबेन दयामय	दर्शन देंगे दयालु
श्रीकृष्ण आमार ;	मेरे श्रीकृष्णचन्द्र;
बालबन्धु तिनि, बाल्यसखा तिनि,	वे हैं बाल-बन्धु, वे बाल-सखा,
भक्तवर प्रह्लाद ध्रुवेर कथा,	भक्तवर प्रह्लाद तथा ध्रुवकी कथा,

तोमरा शुनियाछ सबे;
बालमति शिशुप्राण,
श्रीकृष्ण-भजनोपयोगी,
महाजन-वाक्य इहा, शास्त्रसम्मत ।

तुम सबने सुनी है ;
बाल-मति शिशु-जीवन,
श्रीकृष्ण-भजनोपयोगी--
महाजन-वाक्य यह है, शास्त्र-सम्मत ।

गीत

छेले कालइ हरिनामेर
अधिकारेर मूल,
मने रयना (तखन) विषय-बेड़ा,
(जड़े) बुद्धि थाके स्थूल ।
यूवा-वृद्धेर चिन्ता नाना ॥
(तादेर) शीघ्र जाय ना (सत्) पथे आना
मने रय विषयेर टाना,
तादेर स्वस्वरूप हय भूल ॥
कचि मन कोमल सहजे,
सरल मन सहजे मजे
बालक प्राणेर व्याकुल डाके
व्रजेर काल बँधु हय आकुल ।
छेले काले भजले हरि,
कृपा करेन वंशीधारि
आहा। से केमन सुशोभा,
(फोटे येन) चारा गाछे फूल ॥
(पडुयागणेर प्रति पुनराय चाहिया)

श्रीगौराङ्ग—
छात्रगण ! कि इच्छा तोमादेर—
बल प्रकाश करिये;
श्रीकृष्ण-भजने तुल्य अधिकार,
बाल-वृद्ध-युवार—नाहि कालाकाल,
ध्वंशशील मानव-जीवन,
कलि-जीवेर अल्प परमायु ।
अनित्य ये देह;
आज आछे—
काल ना थाकिते पारे ।

जमता हरि-नामाधिकारका
जड़ बचपनमें ही केवल।
तव न विषयका बन्धन मनमें,
होती भोली बुद्धि सरल ॥
युवा-वृद्धको चिन्ता नाना,
उन्हें कठिन सत्पथ पर लाना,
रहता मन विषयोंमें साना,
जाती स्मृति स्वरूपकी टल ॥
अपरिपक्व मन सहज सुकोमल,
सहज सरल मन जाता है ढल,
बालक-प्राणाकुल पुकार पर
हो उठता साँवलिया विह्वल ॥
वचपनमें हरिको भजनेपर,
करते कृपा मधुर - मुरलीधर ।
कैसी दिव्य अहा! वह शोभा,
क्षुपपर हो खिल उठा कुसुम-दल ॥
(पुनः विद्यार्थियोंकी ओर देखकर)

श्रीगौराङ्ग --
छात्रगण ! इच्छा क्या तुम्हारी है ?
कह डालो खोलकर ।
श्रीकृष्ण-भजनमें तुल्य अधिकार है
बाल, वृद्ध, युवाका--कालका विचार नहीं,
ध्वंसशील जीवन है मानवका
कलियुगके प्राणियोंकी होती अल्पायु परम।
देह यह अनित्य है
आज तो वर्तमान है—
कल रहे, न रहे ।

नाहि प्रयोजन मुहूर्त्त-विलम्बे,	वाञ्छित विलम्ब नहीं क्षण भरके भी लिये,
कह कृष्ण, भज कृष्ण, लह कृष्ण-नाम;	कहो कृष्ण, भजो कृष्ण, रटो कृष्ण-नाम;
अहर्निशि कर सबे	अहर्निश करो सभी
नाम-संकीर्त्तन ।	नाम-संकीर्तन ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।	हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।	हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।
प्रधान छात्र—	**प्रधान छात्र—**
गुरुदेव ! आपनि आमादेर पिता-माता,	गुरुदेव ! आप हमारे पिता-माता,
भाइ-बँधु, सकलि । आपनाके भिन्न	भाई-बन्धु, सभी कुछ हैं । आपके अति-
आमरा आर काहाकेओ जानि ना ।	रिक्त हम और किसीको नहीं जानते ।
आपनार आदेश आमादेर शिरोधार्य्य ।	आपका आदेश हमारे सिरमाथे ।
(एइ वलिया "हरिवोल" वलिया	(यों कहकर "हरिवोल" कहते हुए
छात्रगण पूंथिर डोर वाँधिल)	छात्रोंने पुस्तकोंके वस्ते बाँध लिये ।)
श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग—**
एस वाप ! कोले करि तोमादेर	आओ तात ! तुमको ले गोदमें
जुड़ाइ जीवन ।	शीतल करूँ जीवनको ।
हरि-नामे रति-मति	हरिनामके प्रति रति-मति
बहु भाग्ये हय;	होती बड़े भाग्यसे;
महाभाग्यवान तुमि सबे,	वड़े भाग्यशाली हो तुम सब,
कृष्णेर दयित;	कृष्णके प्यारे हो ;
एस, सबे मिलि करि	आओ, सब मिलकर करें
कृष्ण-नाम-संकीर्तन ।	कृष्ण-नाम-संकीर्तन ।
(खोल-करताल-योगे नृत्य ओ कीर्त्तन)	(खोल एवं करतालके साथ नृत्य और कीर्त्तन)
हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।	हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः ।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः ।।	यादवाय माधवाय केशवाय नमः ।।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ।।	गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन ।।
(गङ्गादास पण्डितेर प्रवेश)	(गङ्गादास पण्डितका प्रवेश)
श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग—**
करि प्रणिपात चरणे तोमार, गुरुदेव !	गुरुदेव! चरणोंमें आपके करता प्रणाम हूँ ।
गङ्गादास—	**गङ्गादास—**
विश्वम्भर ! करि आशीर्व्वाद,—	विश्वम्भर ! आशीर्वाद देता हूँ—

चिरजीवि रह,
विद्यालाभ हउक तोमार ।

श्रीगौराङ्ग—

आचार्य्य ! कर आशीर्व्वाद मोरे,
कृष्ण-पाद-पद्मे जेन रति-मति रहे ।
इहा भिन्न अन्य आशीर्व्वाद
नाहि चाहि आमि, गुरुदेव !
विद्यालाभे बाड़े अभिमान,
श्रीकृष्ण-भजने मति नाहि हय;
हेन विद्याधने किवा लाभ, बल ?

गङ्गादास—

ताइ हबे, बाप विश्वम्भर !
एकटि कथा बलिते एसेछि आमि,
शुन मन दिया :
ब्राह्मणेर अध्ययन-अध्यापना
नहे अल्प भाग्य;
मातामह तव चक्रवर्त्ती नीलाम्बर,
जगन्नाथ मिश्र पुरंदर पिता तव,
उभये पण्डित, उभयेइ भक्तराज,
सर्व्व लोके जाने ।
तुमिओ परम योग्य वंशधर,
विद्याधने धनी ।
उपदेश मोर—
अध्ययन-अध्यापना ना छाड़िओ, बाप !
तव पिता, पितामह, मातामह आदि
छिलेन अध्यापक-शिरोमणि;
भक्ति-धर्म्मे ताँहादेर छिल ना कि रति ?
बुद्धिमान तुमि, ज्ञानवान तुमि—
इहा बुझि, कर अध्ययन आर अध्यापना ।

होओ चिरजीवी,
विद्यालाभ तुमको हो ।

श्रीगौराङ्ग—

दीजिये, आचार्य ! मुझे ऐसा आसीस आप !
कृष्ण-पद-पद्मोमें जिससे रति-मति रहे ।
इसके सिवा अन्य आशीर्वाद
मैं नहीं चाहता हूँ, गुरुदेव !
विद्यालाभ होनेसे बढ़ता है अभिमान,
श्रीकृष्ण-भजनमें होती नहीं मति है;
ऐसे विद्यालाभसे, कहिये भला, लाभ क्या ?

गङ्गादास—

तथास्तु । तात ! विश्वम्भर !
आया हूँ कहने मैं एक बात,
सुनो लगा मनको :
विप्र-जातिके लिये पढ़ना-पढ़ाना
नहीं अल्पभाग्य-विषय ।
नीलाम्बर चक्रवर्ती नाना तुम्हारे,
पिता तुम्हारे पुरंदर जगन्नाथ मिश्र,
दोनों ही पण्डित थे, दोनों ही भक्तराज,
सभी लोग जानते हैं ।
तुम भी हो उनके परम योग्य वंशधर,
विद्याविभवके धनी ।
उपदेश मेरा यह—
पढ़ना-पढ़ाना तात ! त्यागना न तुम;
तव पिता, पितामह, मातामह आदि
अध्यापक-शिरोमणि थे;
क्या न भक्ति-धर्ममें उनकी अनुरक्ति थी ?
तुम हो बुद्धिमान्, ज्ञानवान् तुम हो—
ऐसा विचार कर पढ़ो-पढ़ाओ तुम ।

एइ सब छात्रमण्डली	सारी छात्र-मण्डली यह
तोमा गतप्राण;	तुमम गतप्राणा है ।
दूर-दूरान्तर ह'ते, छाड़ि पिता-माता,	दूर-दूरान्तरसे, त्याग पिता-माताको,
छाड़ि गृहवास, एइ नवीन वयसे	घर-बार छोड़, इस छोटी अवस्थामें
आसियाछे तव काछे करिते पठन ।	पढ़नेको आये हैं तुम्हारे पास ।
शिक्षा दाओ कृष्णभक्ति इहादेर,	शिक्षा दो इन्हें कृष्ण-भक्तिकी,
आर कर अध्यापना;	और अध्यापन करो;
तुमि ओ बालक एबे,	तुम भी हो बालक अभी,
कर अध्ययन, बाप विश्वम्भर !	अध्ययन करो, तात विश्वम्भर हे !
एइ मोर अनुरोध ।	मेरा अनुरोध यही ।
श्रीगौराङ्ग--	**श्रीगौराङ्ग--**
आचार्य्य ! गुरुदेव !	आचार्य ! गुरुदेव !
श्रीचरण-प्रसादे तव, एइ नवद्वीपे	कृपासे आपके श्रीचरणोंकी, इस नवद्वीपमें
के पारे जिनिते मोरे विद्या-युद्धे ?	कौन जीत सकता मुझे विद्याके युद्धमें ?
विद्याबले बलीयान आमि	विद्याके बलसे बना बलशाली मैं
तव कृपा-बले;	आपकी कृपासे ।
किंतु नाइ भक्ति-बल मोर;	भक्ति-बल किंतु नहीं मुझमें है ।
विद्यार गौरवे ह'ये अभिमानी,	विद्याके गौरवसे भरा अभिमानमें
बेड़ाइ सगर्व्वे एइ नदीया नगरे ।	घूमता सगर्व हूँ नदिया नगरमें इस ।
कारओ नाहि ग्राह्य करि,	मानता किसीको नहीं;
सूत्र-वृत्ति-टीका जत,	सूत्र-वृत्ति-टीकाएँ जितनी भी,
विद्याबले नियत खण्डन-मण्डन करि ।	विद्यावलसे सदैव करता हूँ खण्डन-मण्डन
कार साध्य नवद्वीपे जिनिबे आमारे ?	किसके वशमें है मुझे जीतना नवद्वीपमें ?
शुष्क तर्क ओ विचार ल'ये	शुष्क तर्क एवं विचार-विनिमय द्वारा
करि वृथा वाक्य-व्यय निशि-दिन ।	करता हूँ अहर्निश वाणीका व्यर्थ व्यय ।
गुरुदेव ! आर नाहि भाल लागे इहा ।	गुरुदेव ! अब नहीं अच्छा यह लगता है ।
संसारे आसिया कृष्ण ना भजिनु,	आकर संसारमें भजा नहीं कृष्णको,
ना लइनु सर्व्वविघ्नहारी कृष्ण-नाम;	न तो लिया सर्व-विघ्नहारी श्रीकृष्ण-नाम;
विद्यार गौरवे, शुष्क विचार ओ तर्के,	विद्याके गौरवमें, शुष्क विचारों तथा तर्कोंसे
हृदि मन हइल कठिन ।	हृदय और मन कठोर हो गये हैं ।

कठिन हृदयासने बल देव! बल, बल——
व्यथाहारी श्रीकृष्णधनेर,
कोमल चरणस्पर्श हइबे केमने ?
व्यथा जे लागिबे——
ताँर कोमल पद-कोकनदे।
तिनि बसिबेन केन कठिन हृदयासने ?
रसिक-शेखर कृष्ण रसेर आकर;
निरस हृदये ताँर नाहि हय अधिष्ठान।
(ऊर्ध्वे चाहिया)
हे कृष्ण करुणासिन्धु!
आमार कि ह'बे उपाय ?
विद्या-अभिमान दिये,
सरस हृदय मोर करिले कठिन;
एवे मनागुने ज्वले
पुड़े मरि।
कृपा कर, कृपानिधि!
अभिमान-शून्य ह'ये,
तव पदे जेन करि हे आश्रय।
(गङ्गादास पण्डितेर प्रति चाहिया कर जोड़े)
गुरुदेव! तव पदे मिनति आमार——
आर ना बलिओ तुमि
भक्तिशून्य विद्याधन अर्ज्जिते आमाय,
वृथा ओ शुष्क तर्क-विचार-गर्त्ते
डूबिते आबार।
तव पदे एइ मोर शेष निवेदन।

कठिन हृदयासनपर कहो देव! कहो,कहो—
व्यथाहारी प्रियतम श्रीकृष्णका
कोमल चरणस्पर्श किस प्रकार होगा ?
व्यथा जो होगी——
उनके सुकोमल पद-कोकनदको।
कैसे वे बैठेंगे कठिन हृदयासनपर ?
कृष्ण, रसिक-शेखर वे, रसके निधान हैं;
नीरस हृदयमें नहीं उनका होगा निवास
(ऊपर देखकर)
हे कृष्ण! कृपासिन्धो!
मेरा क्या उपाय होगा ?
विद्या-अभिमान दे,
सरस हृदय मेरा कठिन बना दिया;
अब तो मनस्ताप-ज्वालामें
जलकर प्राण विदा ले रहे।
कृपा करो, कृपा-निधि!
होकर अभिमान-रहित
जिससे तुम्हारे चरणोंमें ले सकूँ आश्रय हे!
(गङ्गादास पण्डितकी ओर देखकर तथा हाथ जोड़कर)
गुरुदेव! चरणोंमें आपके विनती है मेरी,—
अब नहीं कहियेगा आप
भक्ति-शून्य विद्याधन अर्जन करनेको मुझे
व्यर्थके तथा शुष्क तर्क-विचारोंके गर्तमें
पुनः डूबनेके लिये।
आपके चरणोंमें मेरा यही अन्तिम निवेदन है।

गीत

कृष्ण हे! प्रभु हे!
हृदय - मन्दिरे मोर
उदय हओ हे।

कृष्ण हे! प्रभो हे!
मेरे हृदय-गगन में होकर
उदित चन्द्रसम आओ।

उषर हृदि मोर
सरस कर हे ॥
हृदय-मन्दिरे बस,
विथरिये प्रेम-रस;
कठिन प्राण मोर
कोमल कर हे।
अभिमाने भरा हृदि
(तुमि) कोमल कर यदि,
तवे आसि हृदि माझे
नृत्य कर हे।
तापित प्राण मोर
शीतल कर हे ॥

गङ्गादास—

बाप विश्वम्भर ! निमाइ !
के तुमि ? बूझिते ना पारि।
तव मुखे श्रीकृष्ण कहेन कथा,
हेन मने लय;
अथवा तुमिइ सेइ कृष्णधन !
किछु बूझिते ना पारि।
बड़ सुख पाइलाम आजि
तव मुखे उच्च भक्ति-तत्त्वेर
शुनिया व्याख्यान;
प्रकृत भक्तिर पथ,
प्रकृत भजन-पन्था,
तुमि मोरे देखाइले आजि,
बाप विश्वम्भर !
तुमि मोर गुरु,
तुमि पथप्रदर्शक;
नाहि आमि तव गुरु एइ काजे।
भक्ति-शिक्षा दिये तुमि
कृतार्थ करिले मोरे।
तोमा ह'ते एइ उच्चभक्ति-तत्त्व

मेरे ऊसर हृदय-स्थलमें
बरस उसे सरसाओ ॥
हृदय-भवनमें बैठो आकर,
प्रेम-सुधासे उसको दो भर;
कुलिश समान कठिन प्राणोंको
मेरे मृदुल बनाओ।
अभिमान-भरा मम अन्तस्तल,
तुम इसे बना दो यदि कोमल,
तब हृदय-वेदिकापर मेरे
तुम आकर रास रचाओ।
संतप्त त्रितापोंसेमेरे
प्राणोंको तुरत जुड़ाओ ॥

गङ्गादास—

तात विश्वम्भर ! निमाई !
कौन तुम ? समझ मैं पाता नहीं।
मुखसे तुम्हारे श्रीकृष्ण ही बोलते हैं,
मनमें यही जँचता है;
अथवा तुम्हीं हो वे प्यारे श्रीकृष्ण !
कुछ भी समझ पाती नहीं।
महासुख आज मैंने पाया है
मुखसे तुम्हारे उच्चभक्ति-तत्त्वका
व्याख्यान सुनकर;
वास्तविक भक्ति-पथ,
वास्तविक भजन-मार्ग,
तुमने दिखाया है मुझे आज,
वत्स विश्वम्भर !
तुम्हीं मेरे गुरु,
तुम्हीं पथ-प्रदर्शक हो;
नहीं मैं तुम्हारा गुरु इस कार्यमें।
भक्तिकी शिक्षा प्रदानकर तुमने
कर दिया कृतार्थ मुझे।
द्वारा तुम्हारे इस उच्चभक्ति-तत्त्वका

हइबे प्रचार पृथिवीते;	होगा प्रचार पृथ्वीतलपर;
भक्ति-रसे डूबिबे जगत,	भक्ति-रस-सिन्धुमें डूबेगा संसार,
हरिनामे भरिबे भुवन,	भुवन हो उठेगा व्याप्त हरिनामसे,
कृष्णनामे तारिबे संसार ।	तारोगे विश्वको तुम कृष्णनामसे ।
चिरजीवि होश्रो, श्राशीर्व्वाद करि;	चिरजीवी होश्रो तुम, देता हूँ श्राशीर्वाद;
सुखे कर बाप ! श्रीकृष्ण-भजन ।	सुखसे करो तात ! भजन श्रीकृष्णका ।
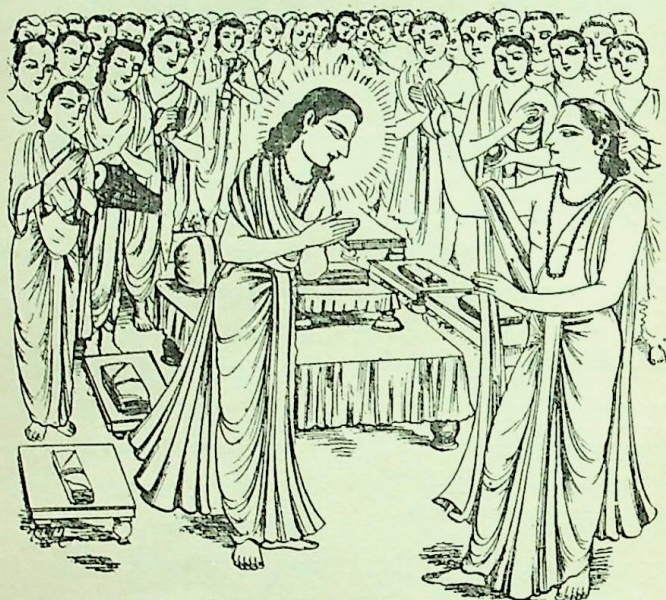
श्रीगौराङ्ग--	**श्रीगौराङ्ग--**
गुरुदेव ! प्रणिपात तव पदे	गुरुदेव ! प्रणाम तव चरणोंमें
कोटि-कोटि मोर;	कोटि-कोटि मेरा है;
शिरे धरि तव श्राशीर्व्वाद	सिरपर धरकर तुम्हारा श्राशीर्वाद
सफल हइब श्रामि श्रीकृष्ण-भजने ।	सफल मैं हूँगा श्रीकृष्ण-भजनमें ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।	हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।	हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।
(उभयेर प्रस्थान)	(दोनोंका प्रस्थान)

प्रथम अङ्क

(तृतीय गर्भाङ्क)

दृश्य : श्रीगौराङ्गेर अन्तःपुरे शयन-कक्ष । श्रीगौराङ्ग धरासने आसीन— विनत वदन नयने प्रेमधारा । (श्रीविष्णुप्रिया देवीर प्रवेश ।)	दृश्य—श्रीगौराङ्गके अन्तःपुरका शयन-कक्ष । श्रीगौराङ्ग पृथ्वीपर बैठे हुए हैं, मुख नीचे झुका हूआ है, नयनोंसे प्रेमाश्रु झर रहे हैं । (श्रीविष्णुप्रिया देवीका प्रवेश ।)
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
केन नाथ ! विनत आनने,	किसलिये नाथ ! विनत-वदन,
भूमितले बसि करिछ रोदन, ?	पृथ्वीपर बैठकर करते हैं अश्रुपात, ?
शुनि मध्ये-मध्ये,	सुनती हूँ बीच-बीचमें तथा,
हा हुताश-ध्वनि,—	आर्त्तध्वनि ऐसी यथा लगी हो विकट आग;
दीर्घश्वास पड़े घने घन ।	दीर्घ निःश्वास निकलते हैं अधिकाधिक ।
तुमि नाथ ! राजराजेश्वर,	तुम नाथ ! राजराजेश्वर हो,
चरणेर दासी तव, राजराजेश्वरी;	चरणोंकी दासी मैं राजराजेश्वरी;
कि दुःखे काँदिछ, बल ?	कर रहे क्रन्दन किस दुःखसे, बताओ तो ।
केह कि दियेछे मने व्यथा ?	किसीने क्या मनको दुखाया है ?
खुले बल, हृदयेश !	स्पष्ट कहो, हृदयेश !
विरस वदन तव हेरिते ना पारि;	देख नहीं सकती हूँ विरस तुम्हारा मुख;
नयने सलिल हेरि,	नयनोंमें देखकर सलिल-विन्दु,
विदरे पराणि,—	प्राण होते विदीर्ण,
दीर्घश्वास शेल सम	दीर्घ निःश्वास करते सेल सम
वाजे बुके ।	छातीपर आघात ।
बल, बल, प्राणनाथ !	बोलो, बोलो, प्राणनाथ !
कि दुःख तोमार ?	दुःख क्या तुमको है ?
पतिप्राणा रमणीर, पति-दुख विना,	पतिप्राणा रमणीको, पति-दुःखके सिवा,

अन्य दुःख आर किछु नाइ;
पति-सुखे सर्व्व सुख,
पति-दुःखे जगत आँधार ।
चरणेर दासी आमि तव,
प्राण दिये तव दुःख करिब मोचन;
बल, बल, प्राणनाथ!
कि दुःख तोमार?

श्रीगौराङ्ग—

(विनत वदने, आपन मने)

कृष्ण रे! बाप रे!
कोथा गेले पाब दरशन;
तव अदर्शने प्राण जाय मोर,
देखा दिये बाँचाओ जीवने ।
चोखेर ऊपरे मोर,
तव रूप अपरूप भासे निरन्तर;
वृन्दाविपिन माझे,
कदम्बेर मूले हेरि,
त्रिभङ्ग-बङ्किम ठामे,
मोहन मुरली करे,
दाँड़ाये आछ तुमि गोप-शिशुरूप ।
धरि धरि करि आमि,
धरिते ना पारि तोमा;
दुइ बाहु प्रसारिये वृथाय दौड़ाइ,—
श्यामसुन्दर हे!
यशोदा-नन्दन हे!
एक बार देखा दिये पराण जुड़ाओ;
देखा यदि ना पाइ तव
राखिब ना ए जीवन ।
तोमा बिना सब शून्य, सकलि आँधार ।
तुमि पिता, तुमि माता,

अन्य दुःख और नहीं कुछ भी;
पतिके ही सुखमें सर्वसुख,
पतिके दुःखमें जगत् अन्धकारमय ।
चरणोंकी दासी मैं तुम्हारी हूँ,
प्राणोंकी भेंट दे दुःख तव मिटा दूँगी,
बोलो, बोलो, प्राणनाथ !
दुःख क्या तुमको है ?

श्रीगौराङ्ग—

(नीचे मुख किये, स्वगत)

हे कृष्ण ! हे तात !
जानेपर पाऊँगा दर्शन कहाँ ?
प्राण मेरे जा रहे हैं बिना तुम्हें देखे,
देकर दर्शन बचाओ मम जीवनको ।
आँखोंके ऊपर मम
अद्भुत तुम्हारा रूप नाचता रहता सदा;
वृन्दाविपिन मध्य,
देखता कदम्ब तले,
मुद्रा त्रिभङ्गी ललित,
मोहनी मुरलिकाको करमें लिये,
खड़े हुए तुम हो गोप-शिशुरूप धरे ।
बार-बार करता प्रयास मैं पकड़नेका,
तुम्हें पकड़ पाता नहीं;
फैला युग बाहोंको दौड़ता वृथा ही हूँ,—
श्यामसुन्दर हे !
यशोदा-नन्दन हे !
एकबार दर्शन दे प्राणोंको शीतल करो;
प्राप्त नहीं करूँगा दर्शन तुम्हारा यदि
रखूँगा नहीं इस जीवनको ।
बिना तुम्हारे सब सूना, सब तिमिर-ग्रस्त ।
तुम्हीं पिता, तुम्हीं माता,

तुमि भार्य्या,——तुमि बन्धु,—	तुम्हीं भार्य्या, तुम्हीं बन्धु,
तुमि मोर जीवन-सम्बल ।	मम जीवन-सम्बल तुम्हीं ।
हे कृष्ण करुणासिन्धु !	हे कृष्ण करुणासिन्धु !
दया करे देखा दाओ एक बार;	दया कर दर्शन दो एक बार;
आर ना सहिते पारि विरह-वेदना ।	और सह सकता नहीं वेदना विरहकी ।
कोथा गेले देखा पाब तोमा,	पाऊँगा दर्शन तुम्हारा कहाँ जानेपर——
के वा बले दिबे मोरे;	कौन मुझे देगा बता;
केइ वा आछे हेन बन्धु,	आह ! कौन बन्धु ऐसा है,
ए संसारे मोर ?	मेरा इस संसारमें ?
(भूमि-लुण्ठित हइया क्रन्दन)	(पृथ्वीपर लोटकर क्रन्दन करना)
श्रीविष्णुप्रिया——	**श्रीविष्णुप्रिया——**
ए कि ? बाह्यज्ञान शून्य ह'ये	यह क्या ? बाह्यज्ञान-शून्य हुए
कि जे बलेन,——किछु नाहि बुझि;	बोलते हैं क्या-क्या, कुछ भी समझती नहीं?
आमि जे दाँड़ा'ये काछे,	मैं जो खड़ी पासमें,——
से ज्ञान ओ नाइ ताँर ।	इसका भी ज्ञान नहीं इनको है ।
कि करि ? कि क'रे बुझाइ एबे ?	क्या करूँ ? कैसे समझाऊँ अब ?
आमि त बालिका, अधमा स्त्रीजाति;	मैं तो बस बालिका, अधमा स्त्रीजाति;
कृष्णप्रेम——कृष्ण-विरह-तत्व,	कृष्णप्रेम, कृष्ण-विरह-तत्त्व
कि बुझिब आमि ?	समझूँगी क्या मैं ?
मन-व्यथा इँहार,	मनोव्यथा इनकी,
बुझिबार शक्ति नाइ मोर;	समझनेकी शक्ति नहीं मुझमें है;
स्वतन्त्र पुरुष इनि,	ये हैं स्वतन्त्र पुरुष,
आमि अबोधिनी नारी ।	नारी अबोधिनी मैं ।
कृष्णप्रेमे विह्वल,—पागल इनि;	कृष्णप्रेममें विह्वल,——पागल हैं ये;
बुझितेछि,—अन्य कथा	समझती हूँ,——अन्य बात
नाहि जावे काने एखन इँहार ।	नहीं इनके कानोंमें जायेगी इस समय ।
कृष्ण-कथा कहि,	कहकर कृष्ण-कथा,
श्रीकृष्ण-विरह-ज्वाला निवारिते हबे ।	कृष्ण-विरह-ज्वालाको होगा बुझाना ।
किंतु,—आमि जानि ना जे,—	किंतु, मैं तो नहीं जानती हूँ
कृष्णकथा रसमयी वाणी;	कृष्ण-कथारूपी रसमयी वाणी ।

कृष्णनाम शुनियाछि, इँहारइ वदने,
'हरेकृष्ण' नामे मधु क्षरे
बुझियाछि इहारि कृपाय ।
'हरेकृष्ण' नामे सर्व्वापद हरे,
सर्व्व विघ्न जाय दूरे,
शुनियाछि साधु-मुखे इहा ।
एइ विपद-समये,
एक बार श्रीहरि-स्मरण करि,
'हरेकृष्ण' बलि डेके देखि,
यदि ताते इँहार हय वाह्यज्ञान;

(श्रीविष्णुप्रिया देवीर श्रीगौराङ्गेर भूमि-लुण्ठित देहे धीरे - धीरे हस्त प्रदान, ताँहार कर्णविवरे 'हरेकृष्ण' नाम तिनवार दान, ताँहार वाह्यज्ञान-प्राप्ति)

श्रीगौराङ्ग—

(धीरे-धीरे उठिया बसिया)

के तुमि ? विष्णुप्रिये ?
आहा कि मधुर नाम,
शुनाइले आजि मोरे तुमि;
पिपासित कर्ण मोर करिले शीतल !
तव मुखे 'हरेकृष्ण' नाम शुनि
जुड़ाइल मन-प्राण मोर;
भाग्यवती तुमि,—भक्तिमती तुमि
नामरूपी कृष्णचन्द्र विराजेन
तोमार जिह्वाय;
जिह्वा तव कृष्ण-नाम-गाने रत;
तुमि कृष्णदासी;
कृष्णदास ह'ते,
बड़ वाञ्छा हइयाछे मोर;
बल बिष्णुप्रिये ! बल, बल—

कृष्ण-नाम सुना है, इन्हींके मुखसे,
'हरे कृष्ण' नामसे मधु झरता है—
जान पायी हूँ इन्हींकी कृपासे ।
हरता है विपदा सब 'हरेकृष्ण' नाम
होते सब विघ्न दूर—
सुना है साधुओंके मुखसे यह ।
इस विपत्-कालमें
एक बार श्रीहरिका स्मरणकर—
'हरे कृष्ण' बोल—पुकारकर देखूँ तो,
इससे लौट आता है बाह्य-ज्ञान इनका क्या!

(श्रीविष्णुप्रिया देवीका श्रीगौराङ्गके भूमि - लुण्ठित तनपर धीरेसे हाथ रखना, उनके कर्ण-कुहरोंमें 'हरेकृष्ण' नामका तीन बार उच्चारण करना और उनको वाह्य-ज्ञानकी प्राप्ति ।)

श्रीगौराङ्ग—

(धीरे-धीरे उठते हुए बैठकर)

कौन तुम ? विष्णुप्रिया ?
अहा ! कैसा मधुर नाम,
सुनाया आज तुमने मुझे;
प्यासे मम कानोंको शीतल कर दिया !
मुखसे तुम्हारे 'हरेकृष्ण' नाम सुन
शीतल हुआ मेरा प्राण, मेरा मन;
भाग्यवती तुम हो, भक्तिमती तुम,
नामके रूपमें विराजते श्रीकृष्णचन्द्र
जिह्वा तुम्हारी पर ।
कृष्ण-नाम-गान-रत जिह्वा तुम्हारी है;
तुम कृष्णदासी हो;
कृष्णदास बननेकी
लालसा प्रबल मुझमें जगी है ।
बोलो, विष्णुप्रिये ! बोलो, बोलो—

वाञ्छा मोर हबे कि पूरण ?	लालसा मेरी होगी क्या पूर्ण ?
वाञ्छा-कल्पतरु कृष्ण,	वाञ्छा-कल्पद्रुम कृष्ण—
सर्व्वलोके बले,—सर्व्व शास्त्रे कय,	सभी लोग कहते, बताते सब शास्त्र हैं ।
विष्णुप्रिये ! कृष्ण-कृपापात्री तुमि,	विष्णुप्रिये ! कृष्ण-कृपा-पात्री तुम,
कृष्णप्रिया तुमि,—बल, बल,	कृष्णप्रिया तुम,—बोलो, बोलो,
कृष्ण कि कृपा करिबेन मोरे ?	कृष्ण कृपा करेंगे मुझपर क्या ?
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
प्राणेश्वर ! जीवन-सर्व्वस्व !	प्राणेश्वर ! जीवन-सर्वस्व !
कृष्ण आमि नाहि जानि,—	जानती नहीं हूँ मैं कृष्णको,
कृष्ण-कृपा नाहि बुझि,—	समझती नहीं हूँ कृष्ण-कृपा-मर्मको;
सुधु मात्र जानि आमि तोमार चरण ।	एकमात्र विदित मुझको तुम्हारे चरण !
पाइयाछि पतिकृपा,	पतिकृपा पायी है,
बुझियाछि पतिप्रेम,	समझा है पति-प्रेम,
शिखियाछि पतिसेवा;	सीखी है पति-सेवा;
कृष्णकृपा, कृष्णप्रेम,	कृष्ण-कृपा, कृष्ण-प्रेम,
कृष्ण-सेवा-सुखानन्द	कृष्ण-सेवा-सुख तथा कृष्ण-सेवानन्दका
अनुभवि इथे;	करती हूँ इसमें ही अनुभव ।
तुमि मोर प्राणवल्लभ,	तुम मेरे प्राणवल्लभ,
तुमि मोर कृष्णधन;	तुम मेरे कृष्णधन;
तव सेवाय पाइ कृष्ण-सेवानन्द ।	सेवामें तुम्हारी प्राप्त करती कृष्ण-सेवानंद,
तव प्रेमे कृष्णप्रेम शिक्षा करि आमि;	सीखती हूँ कृष्णप्रेम, प्रेममें तुम्हारे मैं ।
तुमि कृष्ण-दरशन चाओ,	कृष्ण-दर्शन चाहते तुम,
आमि चाइ निशिदिन तव दरशन ।	निशिदिन चाहती मैं दर्शन तुम्हारा हूँ ।
कृष्ण-सङ्ग-सुख-आशे,	कृष्ण-साहचर्य-सुख-आशामें
तुमि हयेछ उन्मत्त;	तुम हो उन्मत्त हुए;
पागलिनी आमि,	दीवानी मैं हूँ,
तव प्रेम-सुख-लालसाय ।	तव-प्रेमानन्द-लालसाकी ।
उन्मत्त, विह्वल तुमि	उन्मत्त, विह्वल तुम
कृष्ण-प्रेम-सुधा-रसे;	कृष्ण-प्रेम-सुधा-रससे;
कृष्ण-प्रेम-रस-सिन्धु	कृष्ण-प्रेम-रस-सिन्धु

उछलि उछलि बहे	उछल-उछलकर लेता हिलोरें है
हृदये तोमार;	हृदयमें तुम्हारे ।
पतिप्रेमे पागलिनी आमि,	पति-प्रेमोन्मत्ता मैं;
पति-प्रेम-सुधा-धारा	पति-प्रेम-सुधा-धारा
नियत सिञ्चित करे आमार पराण;	सींचती निरन्तर है प्राणोंको मेरे ।
तोमाते, आमाते, नाथ !	तुममें और मुझमें, नाथ !
किछु भिन्न नाइ,—नाहि भेदाभेद;	कुछ भी अन्तर नहीं, नहीं भेदाभेद;
तुमि जारे कृष्णप्रेम बल,	कहते हो कृष्णप्रेम जिसे तुम,
आमि तारे बलि पतिप्रेम;	कहती मैं पतिप्रेम उसको ।
तुमि मोर पति,	तुम मेरे प्राणपति,
देव-देव, परम ईश्वर;	देव-देव, परमेश्वर;
तुमि मोर गति अन्तकाले;	हो अन्तकालमें तुम्हीं मेरी गति,
तुमिइ मोर कृष्ण, जगतेर नाथ,	तुम्हीं मेरे कृष्ण, तुम्हीं मेरे जगन्नाथ;
मोर सन्मुखे विद्यमान ।	मेरे सम्मुख विद्यमान ।
तोमार श्रीकृष्ण-भजन	तुम्हारा श्रीकृष्ण-भजन
आर आमार श्रीपति-भजन,	एवं मम पति-भजन—
एक वस्तु,—कभु भिन्न नहे ।	एक वस्तु, भिन्न नहीं कभी भी ।
बुझे देख विचारिया,	समझो इसे, देखो विचारकर,
बुद्धिमान तुमि ।	बुद्धिमान तुम हो ।
एस नाथ ! हृदिभरा	आओ नाथ ! हृदयमें हिलोरते
प्रेमसिन्धु दिये,	प्रेमसिन्धुका,
बुक भरा भालबासा,—	छातीमें लहराते अनुरागका,
प्रतिदान दिये,	देकर प्रतिदान
तोमारे भजिब आमि;	तुम्हें मैं भजूँगी;
काय-मन-वाक्ये,—	काया, मन, वाणीसे,
सेविब तोमारे नाथ !	सेवा करूँगी तुम्हारी नाथ !
तुषिब तोमार मन सर्व्वभावे,	मनको तुम्हारे सब विधि दूँगी संतोष,
केन अकारण दुःख कर नाथ !	क्यों फिर अकारण दुःख करते हो, नाथ ?
एस प्राणेश्वर ! एस हृदयेश !	आओ प्राणेश्वर, पधारो हृदयेश !
तुमि मोर कृष्ण,	तुम्हीं मेरे कृष्ण,

तुमि प्राणपति,	तुम्हीं प्राणपति,
विष्णुप्रिया हबे कृष्णप्रिया,——	विष्णुप्रिया होगी कृष्णप्रिया
तव वाक्य हइबे सफल ।	होगी तुम्हारी वाणी सत्य ।
(श्रीगौराङ्गके भूमिशय्या हइते उठाइया प्रेमभरे हृदये धारण)	(श्रीगौराङ्गको भूमिशय्यासे उठाकर प्रेममग्न हृदयसे लगाना)
श्रीगौराङ्ग——	**श्रीगौराङ्ग——**
विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !	विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
तुमि भूल बुझियाछ,——	तुमने नहीं समझी है सही बात—
क्षुद्र जीव आमि,	क्षुद्र प्राणी मैं हूँ,
मायाबद्ध संसारेर कीट ।	मायाबद्ध कीट संसारका ।
पूर्व्व कर्म्मफले ए संसारे	पूर्व कर्मफलसे इस जगमें
तुमि नारी, आमि तव पति ।	तुम हुई नारी, मैं बना तुम्हारा पति ।
पितृ-पुरुषेर सुकृतिर बले	पितृकुल-पूर्वजोंके पुण्य-प्रतापसे
विप्रवंशे लभि जन्म,	करके प्राप्त जन्म विप्रकुलमें
श्रीकृष्ण-भजने	श्रीकृष्ण-भजनके प्रति
मोर हइयाछे रति ।	उपजी रति मुझमें है ।
बुझियाछि,——गुरु-कृपा-वले	गुरुकी कृपासे समझा है——
छाया मात्र, किछु नहे, संसार असार ।	संसार है असार, कुछ भी नहीं है— बस, छाया मात्र ।
श्रीकृष्ण-भजन बिना,	श्रीकृष्ण-भजन बिना,
श्रीकृष्ण-चरण बिना,	श्रीकृष्ण-चरण बिना,
अन्य काम्य धन ए संसारे	अन्य वाञ्छनीय धन इस संसारमें
नाहि आछे किछु;	कुछ भी नहीं है;
सर्व्वत्यागी नाहि ह'ले,	सर्व्वत्यागी हुए बिना,
ना करे दया कृष्णचन्द्र;	करते नहीं दया कृष्णचन्द्र;
ताइ हय मने वाञ्छा—	इसीलिये उठती है मनमें चाह—
ह'ये सर्व्वत्यागी करि श्रीकृष्ण-भजन ।	श्रीकृष्ण-भजन करूँ सर्वत्यागी होकर ।
तुमि साध्वी-सती नारी,	तुम साध्वी-सती नारी
सर्व्वभावे कर पूर्ण,	सब विधिसे करो पूर्ण
एइ वाञ्छा मोर ।	मेरी इस वाञ्छाको ।

श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
प्राणेश्वर ! हृदय-वल्लभ !	प्राणेश्वर ! हृदयवल्लभ !
पति तुमि,—गुरु तुमि,—	पति हो तुम, गुरु हो तुम,
चरणेर दासी आमि तव;	चरण-दासी मैं तुम्हारी;
आमा सने कपटता	मेरे साथ करना दुराव कुछ
शोभा नाहि पाय ।	शोभा नहीं देता है ।
सर्व्वत्यागी हबे तुमि, श्रीकृष्णभजन तरे	होगे सर्व्वत्यागी तुम, श्रीकृष्ण-भजन हेतु,
एइ तव साध ?	यही तो तुम्हारी साध ?
नाथ ! बुके मोर हात दिये	नाथ ! हाथ छातीपर मेरे रख
एक बार भेबे देख देखि,	देखो तो एक बार सोचकर,
के तुमि ?	कौन हो तुम ?
मने-मने बुझे देख,	मन-ही-मन परख देखो—
बले काज नाइ,	कहनेका काम नहीं,
कि तुमि ?	क्या हो तुम ?
कि हेतु आविर्भाव तव एइ नदीयाय ?	हुआ आविर्भाव क्यों तुम्हारा इस नदियामें?
निर्व्विकार परम पुरुष तुमि,	निर्विकार परम पुरुष तुम हो,
पद्मपत्रे जलवत् संसारे निर्लिप्त;	पद्मदलपर जलके समान जगसे निर्लिप्त;
तुमि सर्व्वत्यागी, तुमि सर्व्वभोगी,	तुम सर्वत्यागी तथा सर्वभोगी तुम हो,
सर्व्वजीवे तुमि विद्यमान;	तुम्हीं सब जीवोंके भीतर विराजमान;
के तोमारे चिनिते पारे,	तुमको पहचान कौन सकता है,
तुमि ना चिनाले ?	जो न तुम कराओ बोध ?
कृपा करि, चरणेर दासी बले,	करुणा कर चरणोंकी दासी जान
करेछ ग्रहण ए अभागीरे;	किया है ग्रहण इस अभागिनीको ।
कृपा करे, हे बहुवल्लभ !	बहुजनवल्लभ हे ! कृपा कर
श्रीचरण-तले मोरे दियेछ आश्रय ।	श्रीचरण-तलमें दिया मुझे आश्रय है ।
चिनेछि तोमाय आमि, तव कृपा-बले ।	जाना तुम्हें मैंने है तुम्हारी ही कृपासे ।
भाग्यवती आमि,	भाग्यशालिनी हूँ मैं;
छल ना करिह मोर सने नाथ ।	छल नहीं करना नाथ ! मेरे साथ ।
तुमि जाहा,—आमि जानि,	तुम जो हो, जानती मैं,
आमि जाहा,—तुमि जान;	मैं जो हूँ, जानते उसे तुम;

तुमि आमि भिन्न नहि,	तुम और मैं भिन्न नहीं,
नाहि भेदाभेद, तोमाते-आमाते नाथ !	नहीं भेदाभेद, नाथ ! मेरे-तुम्हारे बीच।
तुमि सर्व्वत्यागी हबे,	सर्वत्यागी बनोगे तुम,
भाल कथा—	ठीक है;—
किंतु आमि सर्व्वमध्ये नहि;	किंतु मैं नहीं उस 'सर्व' में ;
तोमा मध्ये आमि,—	अन्तस्में तुम्हारे मैं,—
आमा मध्ये तुमि,—	तुम मेरे अन्तस्में,—
सर्व्व भूते तुमि-आमि विद्यमान।	तुम और मैं विद्यमान सब भूतोंमें ।
सत्य कथा,—शास्त्र-कथा,	सत्य वचन,—शास्त्र-वचन,
से अंश रूपे,—	उसी अंश-रूपमें,—
अंशरूपिणी आमि तव सेथा;	तुम्हारी अंशरूपिणी मैं तत्र-तत्र ।
पूर्णरूपे परिपूर्ण, परम पुरुष तुमि	पूर्णतया परिपूर्ण, परम पुरुष तुम,
श्रीकृष्ण स्वयं ।	स्वयं श्रीकृष्ण ।
तव कृपा-बले भाग्यवती आमि,	तुम्हारे कृपाबलसे भाग्यवती मैं हूँ,
पतिरूपे पाइयाछि तोमा ।	पाया है तुम्हें पतिरूपमें ।
आमि पूर्ण शक्ति तव,	तुम्हारी पूर्ण शक्ति मैं,
कृपावशे तुमि मोर प्राणपति,	कृपावश बने तुम मेरे प्राणपति,
हृदय-ईश्वर ।	हृदय-ईश्वर ।
सर्व्वत्यागी ह'ले तुमि,	सर्वत्यागी बनकर भी तुम
छाड़िते नारिबे मोरे ।	छोड़ नहीं मुझको सकोगे ।
शक्ति-शक्तिमान,	शक्ति-शक्तिमान्—
एके दुइ,—दुये एक,	एकके ही दो रूप, दो होकर भी एक,
विच्छेद नाहिक हेथा ।	सम्भव नहीं है विच्छेद यहाँ ।
परिपूर्ण घन आनन्दस्वरूप तुमि आमि;	परिपूर्ण, घन, आनन्द-स्वरूप तुम और मैं;
सकलि त जान तुमि नाथ !	सब कुछ तो जानते हो तुम, नाथ !
तबे केन कर छल आमा सने ?	तब क्यों करते हो छल मुझसे ?
लोक-शिक्षा तरे,	लोक-शिक्षणके लिये,
प्रेमभक्ति शिखाइते कलि-जीवे,	प्रेमभक्ति सिखलाने कलियुगके जीवोंको
एस नाथ ! दुइ जने मिलि,	आओ नाथ ! दोनों जने मिलकर,
अनासक्त भावे थाकि संसार-आश्रमे,	अनासक्त भावसे, रहकर गृहस्थाश्रममें

लौकिकी लीलाय श्रीकृष्ण-भजन करि ।	लौकिकी लीलामें करें श्रीकृष्णभजन ।
देखुक जगत-जीव प्रेम-पूजा,—	देखें संसारी-जन प्रेम-पूजा,
तारा शिखुक प्रेमेर भजन-रीति	सीखें वे प्रेमकी भजन-रीति
इहा ह'ते;	माध्यमसे इस;
प्रेम-पूजा, प्रेम-भक्ति, प्रेमेर संसार	प्रेम-पूजा, प्रेम-भक्ति, प्रेमकी गृहस्थी,
देखुक जगत-जन ।	देखें जगत-जन ।
तुमि हे प्रेमिक वर,	हे परम प्रेमिक ! तुम
प्रेमवशे वशीभूत, प्रेमेर अधीन,	वशीभूत प्रेमके, प्रेमाधीन,
बुझाओ जगत-जीवे,	जगतके जीवोंको बता दो,
कि सुन्दर प्रेमेर संसार !	कितनी अभिराम गृहस्थी प्रेमकी !
ओहे प्रेममय ! प्रेमेर ठाकुर !	प्रेमके ठाकुर अहो ! अहो प्रेममय !
कृपा करि भासाइया प्रेम-वन्या	कृपाकर बहाकर प्रेमबहियाको
जगतेर प्रति गृहे गृहे,	जगत्के घर-घरमें,
प्रेममय कर त्रिजगत ।	कर दो त्रिलोकीको प्रेममय ।
शीतल हउक विश्व,	शीतल हो उठे विश्व,
प्रेमेर तरङ्ग उठुक प्रति जीव-हृदे ।	प्रेमकी तरङ्ग उठे, हृदयमें एक-एक जीवके।
कर प्रेमदान नाथ ! स्थावर-जङ्गमे;	करो प्रेम-दान नाथ ! सकल चराचरको;
उठुक प्रेमेर तुफान ए मर जगते	प्रेमका तूफान उठे इस मर्त्य जगमें ।
विश्वनाथ ! विश्वप्रेम शिक्षा दाओ जीवे,	विश्वनाथ ! विश्व-प्रेम-शिक्षा दो जीवोंको,
प्रेमधर्म दाओ शिक्षा विश्ववासी जीवे,	प्रेमधर्म-शिक्षा दो विश्ववासी जीवोंको ।
कर जुड़ि तव पदे नाथ !	हाथ जोड़ चरणोंमें नाथ ! तव
ए मोर विनति;	यही मेरी विनती है—
गृहे रहि कर एइ प्रेमलीलारङ्ग,	घरमें रह करो यही प्रेमलीला-रङ्ग ।
कृपा करि, लीलामय ! लह मोरे साथे;	कृपा कर लीलामय ! साथमें मुझेको लो;
सर्व्वभावे सहाय हइब आमि तव,	सब विधि बनूँगी सहायिका तुम्हारी मैं,
एइ काजे ।	इस कार्यमें ।
आमि तव चरणेर दासी	मैं तुम्हारी चरण-दासी,
श्रीचरणसेवा बिना	सिवा श्रीचरणोंकी सेवाके
किछु नाहि जानि ।	जानती कुछ और नहीं ।

श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग—**
विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !	विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
बुझियाछ सारतत्त्व तुमि;	समझा है सार तत्त्व तुमने;
तव मुखे कृष्णधन मोर,	मुखसे तुम्हारे मेरे प्यारे श्रीकृष्णने
शिखालेन मोरे,	समझाया मुझे है—
शक्ति-शक्तिमाने अभेद-तत्व ।	शक्ति-शक्तिमान्‌का अभेद-तत्त्व ।
कृष्णतत्त्व, जीवतत्त्व, प्रेमतत्त्व—	कृष्ण-तत्त्व, जीव-तत्त्व, प्रेम-तत्त्व—
सबइ एकाधारे;	सभीका है एक आधार;
भाग्यवती तुमि, पुण्यवती सति,	भाग्यवती तुम हो, पुण्यवती सती हे !
शास्त्रे बले—पतिप्राणार पति-प्रेम	शास्त्रमें कहा है, पतिप्राणा नारीका पति-प्रेम
जगते आदर्श,—	जगत्‌का आदर्श,—
मधुर भाव, श्रेष्ठ भजनपन्था ।	मधुर भाव ही है श्रेष्ठ भजन-मार्ग ।
नारी-शिरोमणि तुमि,	नारी-शिरोमणि तुम,
प्रेममयी तुमि,	प्रतिमा तुम प्रेमकी,
श्रीकृष्णेर कृपापात्री,	श्रीकृष्ण-कृपापात्री
सर्व्वभावे तुमि सति !	सभी भांति, तुम सती !
विष्णुप्रिये ! तुमि यदि कृपा कर मोरे	विष्णुप्रिये ! करो कृपा मुझ पर यदि तुम
पाब आमि अनायासे कृष्णधने ।	अनायास पाऊँगा मैं श्रीकृष्णधनको ।
दाओ तुमि अनुमति, अकपटे मोरे	दे दो तुम अनुमति बिना दुराव मुझे,
जाब आमि कृष्ण-अन्वेषणे;	जाऊँगा मैं श्रीकृष्णकी खोजमें;
वृद्धा जननी मोर,	वृद्धा जननीको निज,
सँपि जाब तोमार करेते ।	सौंप कर जाऊँगा तुम्हारे कर-युगलमें ।
पतिसेवापरायणा तुमि,	पतिसेवा-परायणा तुम,
पतिर जननी पूजनीया तव;	पतिकी जननी तुम्हारी पूजनीया ।
पतिसेवा परिवर्त्ते,	पतिकी सेवाके बदलेमें,
पतिर मातृसेवा कर तुमि,	पति-जननीकी सेवा करो तुम,
पतिर आदेशे;	पतिकी आज्ञासे ।
साध्वी सति तुमि,	साध्वी हो सती ! तुम,
पति-आज्ञा सर्व्वभावे पालनीय तव ।	सब विधिसे पति-आज्ञा-पालन उचित तुम्हें ।
विष्णुप्रिये ! आमार सेवार चेये	विष्णुप्रिये ! मेरी सेवाकी अपेक्षा

आमार मातृसेवा बड़;
तुमि मोर मातृसेवा कर सयतने।
तुष्ट हब आमि,
तुष्ट हबेन श्रीकृष्ण तोमार प्रति;
विष्णुप्रिये! दाओ अनुमति।

श्रीविष्णुप्रिया—

प्राणनाथ! जीवन-सर्व्वस्व!
दु:खिनीर हृदय-रतन!
तबू छल नाहि छाड़,
अबला बालिका सने;
शठ-शिरोमणि तुमि
सर्व्वलोके जाने,
किंतु नाथ! कृपा क'रे जाके
अङ्कते दियेछ स्थान,
अधिकारी करियाछ चरणसेवाय,
तार सने एत छल नाहि शोभा पाय।
शत-शत कठिन परीक्षाय
उत्तीर्ण हयेछे ए दासी,
युग-युगान्तरेर
कठोर साधना बले;
कृपावशे जारे तुमि करियाछ
चरणेर दासी,
तार सने एत छल शोभा नाहि पाय।
पुन: पुन: परीक्षार से पात्री नहे तव;
तुमि त सकलि जान
अन्तर्य्यामी हृदय-ईश्वर;
केन तबे कर छल जेने-शुने?
मनोभाव तव
प्रकाशिये बल नाथ! लीलामय तुमि,
कि लीला करिते साध हयेछे ए बार?

बड़ी है सेवा मम माताकी,
करो सयत्न तुम सेवा मम माताकी।
हूँगा संतुष्ट मैं,
होंगे श्रीकृष्ण भी तुम्हारे प्रति संतुष्ट।
विष्णुप्रिये! अनुमति दो।

श्रीविष्णुप्रिया—

प्राणनाथ! जीवन-सर्वस्व!
दुखियाके हृदय-रत्न!
अब भी नहीं छोड़ते छल
बलहीना बालिकासे;
शठोंके शिरोमणि तुम—
सभी लोग जानते हैं;
किंतु नाथ! कर अनुकंपा जिसे
अङ्कमें है दिया स्थान,
किया अधिकारी है चरणोंकी सेवाका,
उसके प्रति इतना छल शोभा नहीं देता।
शत-शत कठिन परीक्षामें
उत्तीर्ण हुई है दासी यह,
युग-युगान्तरकी
साधना कठोरके प्रतापसे;
कृपावश जिसे तुमने किया है
चरणोंकी चेरी,
उसके प्रति इतना छल शोभा नहीं देता।
पुन:-पुन:परीक्षाकी पात्री नहीं वह तुम्हारी
तुम तो हो जानते सभी कुछ
अन्तर्यामी हृदयेश्वर!
करते हो छल तब किसलिये जान-बूझ?
मनोभाव अपना
प्रकट कर बोलो नाथ! लीलामय तुम हो,
कौन लीला करनेकी साध हुई है इस बार।

लीला-सहायिनी आमि तव,
भूलिया कि गेछ नाथ ताहा ?
बल, बल लीलामय !
कि इच्छा तोमार ?
कि खेला खेलिबे तुमि
एबार धराय ?

श्रीगौराङ्ग—

(अन्यमनस्क भावे अन्य
दिके चाहिया)

आर छल शोभा नाहि पाय
विष्णुप्रियार सने ।
विष्णुप्रिया पूर्ण शक्ति मोर,
शक्तिहारा ह'ये कि खेला खेलिब आमि ?
नाम-प्रेम विलाइते हवे
एइ कलियुगे,
अयाचित भावे सर्व्व जीने;
निज गुप्तवित्त गोलोकेर धन—प्रेम,
पावे आचण्डाले कलियुगे;
कलिहत जीव कालवशे
विपन्न सतत;
जर्ज्जरित दुःखतापे हृदय तादेर,
उपद्रुत रोग-शोके,
हाहाकार प्रति घरे-घरे;
पाषाणेर रेखा मत
हृदये तादेर,
दुःख-शोक-चिन्ता-रेखा,
रयेछे अङ्कित सतत ।
आहा ! गात्रे वेत्राघात मत
तादेर सर्व्व हृदय भरि
क्षत अगणन ।

लीला-सहायिका तुम्हारी मैं,
भूल क्या गये हो नाथ ! इसको ?
बोलो, बोलो लीलामय !
इच्छा क्या तुम्हारी है ?
कौन खेल खेलोगे तुम
इस बार पृथ्वीपर ?

श्रीगौराङ्ग—

(अन्यमनस्क भावसे दूसरी
ओर देखते हुए)

और छल शोभा नहीं देता
विष्णुप्रियासे ।
विष्णुप्रिया पूर्णशक्ति है मेरी
शक्ति रहित होकर मैं खेलूंगा कौन खेल ?
नाम-प्रेम वितरित करना होगा
इस कलियुगमें,
बिना मांगे सम्पूर्ण जीवोंको;
मेरी गुप्तसम्पदा, धन गोलोकका—प्रेम,
पायेंगे कलियुगमें चण्डालतक ।
कलिकालहत प्राणी कालके प्रभावसे
विपन्न सदा;
जर्जरित दुःख-तापसे हृदय उनका,
व्यथित रोग-शोकसे,
हाहाकार प्रत्येक घर-घरमें ।
पत्थरकी लीक सम
हृदयपर उनके
दुःख-शोक-चिन्ता-रेखा
रहती है अङ्कित नित्य ।
आह ! वेत्राघात सम तनपर,
उनके समस्त हृद्देशमें
घाव अनगिने हैं ।

त्रितापेर ज्वाला तादेर	उनकी त्रिताप-ज्वाला
करिबारे दूर,—	दूर करने के लिये,—
शान्तिवारि सिञ्चिते	शान्ति-जलधारासे सींचनेको
हृदये तादेर,—	हृदय उनका,—
नामरूपी भगवान,	नामरूपी भगवान
प्रेमरूप महोषधि,	प्रेमरूपी महौषधिको,
कृपा करि दिबेन तादेर स्वहस्ते ।	करुणा कर देंगे उनके निज हाथमें ।
क्षत हवे दूर,	घाव भर जायेंगे,
ताप-ज्वाला सब जावे दूरे,	होगी समस्त ताप-ज्वाला दूर,
हृदि-प्राण हइबे सरस;	हृदय-प्राण होंगे सरस ।
तबे प्रेम संचारिबे हृदये तादेर ।	होगा तब प्रेमका संचार हृदयमें उनके ।
हबे एइ लीलाय करुणार	जायगी करुणा लुटायी इस लीलामें
छड़ाछड़ि,	खुले हाथ,
कृपार अविश्रान्त वृष्टि;	होगी कृपाकी वृष्टि अविरल ।
दु:खी-तापी जीवेर करुण-क्रन्दने—	दु:खी-परितप्त प्राणियोंके करुण-क्रन्दनसे—
तादेर हाहाकार आर्त्तनादे,	उनके हाहाकारपूर्ण आर्तनादसे,
कृपा-परवश ह'ये,	कृपा-वशीभूत होकर,
श्रीकृष्ण स्वयं दिबेन दरशन	श्रीकृष्ण देंगे दर्शन स्वयं
नर-वपु धरि;	नर-देह धारणकर;
नदीयाय आविर्भाव ताँर	नदियामें अवतार उनका
एइ लीला पुष्टि तरे ।	इस लीलाकी परिपुष्टि-हेतु ।
आमि साजिब संन्यासी,	लूँगा मैं संन्यासी बाना,—
धरि भिखारिर वेश,	धरकर भिखारी-वेश,
कृष्ण-कृष्ण बलि	"कृष्ण, कृष्ण" कहते हुए,
काँदिया बेड़ाब द्वारे-द्वारे;	रोते हुए घूमूँगा घर-घर,
लीला-सहायिनी विष्णुप्रिया मोर,	लीला-सहचरी मेरी विष्णुप्रिया,
पति-विरह-सागरे झम्प दिबे,	पति-वियोग-वारिधिमें कूदकर पड़ेगी जा
पागलिनी मत ।	पगली-सी ।
माता मोर पुत्र-शोके ह'ये शोकाकुला,	माता मम शोकाकुल पुत्र-शोकमें हो,
सकरुण आर्त्तनादे	सकरुण आर्तनादसे

जागा'बेन कलिजीवे	प्रबुद्ध करेंगी कलिजीवोंको
मोह-निद्रा ह'ते;	मोहमयी निद्रासे;
उठिबे जगते विषम करुणध्वनि,	उठेगी जगतमें विषम करुणध्वनि,
प्रिया-मुखे आर मातृ-मुखे ।	प्रियाके मुखसे तथा जननी-मुखसे ।
करुण रसे भरिबे भुवन ,	भरित हो उठेगा विश्व करुण-रससे,
करुण स्वरे काँदिबे पृथिवी,	सकरुण स्वरसे क्रन्दन करेगी धरा,
स्थावर-जङ्गम नाहि जाबे बाद ।	चर और अचर—कुछ भी बचेगा नहीं ।
भक्ति-स्वरूपिणी विष्णुप्रिया,	भक्ति-स्वरूपिणी विष्णुप्रिया
एइ लीलाय सहायिनी हबे मोर ।	सहचरी मेरी बनेगी इस लीलामें ।
शुभ संयोग,	शुभ संयोग यही !
परामर्श उपयुक्त बटे ।	परामर्श उचित है ।
(श्रीविष्णुप्रियार प्रति)	(श्रीविष्णुप्रियाके प्रति)
विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !	विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
आर ना करिब छल,—	और न करूँगा छल,—
आर ना लुकाइव तव काछे किछु,—	और नहीं रखूँगा गुप्त तुमसे कुछ,—
स्वकर्णे शुनिते चेयेछ तुमि,	सुनना चाहा है तुमने कानोंसे अपने,
एवार नदीयाय कि खेला खेलिव आमि?	इस बार करूँगा मैं नदियामें खेल कौन ?
बलि, शुन् तबे,—	कहता हूँ, सुनो तब,—
कठोर से वाणी,—कठिन से कथा,	वचन कठोर वह,—कथा वह कठोर
शुनिले दुःख पाबे मने;	सुनकर पाओगी दुःख मनमें;
कोमल हृदये तव	कोमल हृदयमें तव
शेल सम विंधिबे से कथा,	सेलके समान वह कथा बिंध जायगी
जानि आमि इहा ।	जानता हूँ इसे मैं ।
किंतु विष्णुप्रिये ! तुमि शुनिते चेयेछ,	किंतु विष्णुप्रिये ! चाहा है सुनना तुमने,
से कठोर वाणी,—से निदारुण कथा,	वाणी कठोर वह, कथा अति दारुण वह;
ताइ मोर मुख ह'ते बाहिरिबे आजि ।	मेरे मुख-द्वारसे बाहर अतः होगी आज ।
भेवेछिनु मने,—	सोचा था मनमें,—
बलिब ना निज मुखे सेइ	कहूँगा नहीं निज मुखसे वह
प्राणघाती वाणी;	प्राणघाती वचन;
किंतु, तुमिइ ब'लाले मोरे,	तुम्हींने किंतु कहलाया मुझसे है ।

दोष नाइ मोर, विष्णुप्रिये !
बलेछ त तुमि,—
तुमि-ग्रामि एक;
जेनेछ त तुमि,
के तुमि,—के ग्रामि ?
कि हेतु मोर एइ ग्रवतार;
काज नाइ ग्रार लुकोचूरी ।
ग्रार ढाकाढाकि तोमाते-ग्रामाते ।
मन कथा बलि तबे,
शुन विष्णुप्रिये ! धैर्य्य धरि—
शिखा-सूत्र मुड़ाइये,
साजिब कपट-संन्यासी ग्रामि;
कमण्डलु करे निये,
परणे कोपीन परि,
बेड़ाइब, भिक्षाकरि, द्वारे-द्वारे
दुःखी-तापी जगत जीवेर ।
गोलोकेर धन—प्रेम
जने-जने बिलाइब जेचे-जेचे
केह नाहि जाबे बाद;
ब्राह्मण-चण्डाल, पाषण्डी-दुर्ज्जन,
पापी, तापी, दुराचार,
स्त्री-शूद्र, स्थावर-जङ्गम—
केह नाहि जाबे बाद ।
युगधर्म्म नामब्रह्म करिब प्रचार;
हरिनाम-सङ्कीर्त्तन-महायज्ञे
ग्राहुति दिब नदीयार
ए सुख-सम्पद ।
मोर गोलोकेर परिकर सबे
ग्रवतीर्ण कराइया धराधामे,
तबे ग्रासियाछि ग्रामि,

दोष नहीं मेरा है, विष्णुप्रिये !
कहा है तुम्हींने तो,—
तुम ग्रौर मैं दोनों एक ही हैं;
जान तो लिया ही तुमने,—
कौन तुम, कौन मैं ?
किस हेतु मेरा यह ग्रवतार ।
ग्रब नहीं काम लुकाचोरीका,
ग्रौर तोप-ढाँक मेरे तुम्हारे बीच ।
मनकी बात कहता हूँ तब,
विष्णुप्रिये ! सुनो, धारणकर धैर्यको—
शिखा-सूत्र त्यागकर,
बनूँगा कपट-संन्यासी मैं;
हाथमें कमण्डलु ले,
परिधान रूपमें कौपीन धारणकर,
माँगता हुग्रा भिक्षा घूमूँगा द्वार-द्वार
दुःखी ग्रौर संतप्त संसारी जीवोंके ।
गोलोक-सम्पदा—प्रेमको
जन-जनमें बाँटूंगा ग्रनुरोध कर-कर—
कोई भी नहीं वञ्चित रह जायगा;
ब्राह्मण-चण्डाल पाखण्डी-दुर्जन,
पापी, तापी, दुराचारी,
स्त्री-शूद्र, स्थावर-जंगम—
कोई भी नहीं वंचित रह जायगा ।
करूँगा प्रचार युगधर्म नामब्रह्मका;
हरिनाम-संकीर्तन-महायज्ञमें
होम दूँगा नवद्वीपकी
इस सुख-सम्पत्तिको ।
गोलोकके ग्रपने परिकर-वृन्दको
भेज धराधामपर,
तब हूँ ग्राया मैं

कार्य्य-सिद्धि तरे ।
कलियुगे
एइ नाम-प्रेम-प्रचार-लीलाय,
प्रधान सहाय मोर तुमि, विष्णुप्रिये !
सिद्ध नाहि हबे,
नाम-प्रेम-दान-कार्य्य ऐश्वर्य्य-भावेते,
ताइ काँधे करि भिक्षा झुलि
भिखारिर वेशे, देशे-देशे भ्रमि,
बिलाइब नाम प्रेम याचिया-याचिया,
प्रति घरे-घरे ।
काँदिया-काँदिया द्वारे-द्वारे फिरि,
जीवेर हाते धरि दिब,
गोलोकेर धन,—प्रेम;
स्वयं दिब तादेर प्रेम-आलिङ्गन ।
नाम-संकीर्त्तन-यज्ञे,
आचण्डाले दिब अधिकार;
विचार ना करिब जाति-कुल,
पूर्ण अधिकार दिब कलियुगे,—
स्त्री-शूद्रे विग्रह-सेवाय ।
करुण क्रन्दन छले,
शिखाइब जगत-जीवे
श्रीकृष्ण-चरणे आत्म-निवेदन ।
सर्व्वपाप-प्रायश्चित-सार
हृदयेर अनुतापानले,
शिखाइब कलि-जीवे,
पाप-क्षयेर उत्कृष्ट उपाय ।
स्वयं आचरिये,
शिक्षा दिब सर्व्वभावे
कलिजीवे
भक्तिधन किसे लभ्य हय;

कार्य-सिद्धि हेतु ।
कलियुगमें
इस नाम-प्रेमकी प्रचार-लीलामें,
सहचरी प्रधान मेरी तुम्हीं विष्णुप्रिये !
सिद्ध नहीं होगा,
नाम-प्रेम-दान-कार्य ऐश्वर्य-भावसे;
इसीलिये कंधेपर भिक्षाकी झोली रख,
वेशमें भिखारीके देश-देश घूमकर,
बाँटूँगा नाम-प्रेम अनुरोध कर-कर
प्रत्येक घर-घरमें ।
रो-रोकर घूमकर द्वार-द्वार
प्राणियोंके हाथमें धर दूँगा,
गोलोक संपदा—प्रेम;
दूँगा स्वयं प्रेम-परिरम्भण उन्हें ।
नाम-संकीर्तन-यज्ञमें
चण्डालतकको दूँगा अधिकार;
करूँगा विचार नहीं जाति या कुलका,
पूर्ण अधिकार दूँगा कलियुगमें
स्त्री-शूद्रगणको भी विग्रह-सेवाका ।
करुण क्रन्दनके मिससे,
सिखाऊँगा संसारी जीवोंको
श्रीकृष्ण-चरणोंमें आत्मनिवेदन ।
सर्व-पाप-प्रायश्चित-सार है,
हृदयका अनुतापानल ही;
सिखाऊँगा कलियुगके प्राणियोंको
पाप-नाशका उपाय उत्कृष्ट यह ।
स्वयं आचरण कर
सब विधि सिखाऊँगा
कलियुगके प्राणियोंको—
भक्ति-धन कैसे प्राप्त होता है ।

भक्तवेश धरि,	भक्त-वेश धारणकर,
भक्तवशी भगवाने,—प्रेमानन्दे	भक्त वशीभूत भगवानका प्रेमानन्दमें भर
भक्तिभावे करिब भजन	भक्तिभावपूर्वक भजन करूँगा
जीव-शिक्षा हेतु;	जीवोंकी शिक्षा हेतु।
विष्णुप्रिये! तुमि मोर	विष्णुप्रिये! तुम्हीं मेरी
लीला-सहायिनी;	सहचरी इस लीलामें।
तुमिओ आमार मत	तुम भी समान मेरे
गृहे रहि मोर,—एइ नदीयाय,—	रहकर मम गृहमें,—इस नवद्वीपमें,—
आमार विरह-व्यथा,	मेरी विरह-व्यथाको,
दृढ़ करि हृदे भरि सति!	दृढ़ता से हृदयमें धारणकर, हे सति!
उठाओ विरहेर करुण क्रन्दनध्वनि	विरहकी उठाओ करुण क्रन्दन-ध्वनि,
जगत व्यापिया;	जगत्-व्यापिनी।
साजि विरहिणी-साजे,	धरकर विरहिणी-वेश
ज्वालि दाओ विरहेर विषम अनल,	सुलगावो विरहकी विषम आग,
प्रति कलिहत जीव-हृदे।	प्रत्येक कलिहत जीवके हृदयमें।
बिरहेर दारुण व्यथाय,	विरहकी दारुण व्यथासे,
विरहिणी-हृदयेर तप्त दीर्घश्वासे,	विरहिणी-हृदयके तप्त-दीर्घ श्वासोंसे
आलोड़ित हइबेक जीवेर हृदय,	आलोड़ित उठेगा हो जीवधारियोंका हृदय
व्यथित हइया आमा तरे	व्यथित होकर मेरे लिये,
काँदिया आकुल हबे तारा तखन;	रो-रोकर आकुल वे होंगे तब;
करुण विरह-विलाप-गीते,	करुणा भरे विरह-विलाप-गीतोंसे,
तादेर हृदये हबे	उनके हृदयोंमें होगा
मोर तरे प्रेमेर सञ्चार;	मेरे लिये प्रेमका संचार;
तबे तारा शिखिबे,	तभी वे सीखेंगे,
अकपटे डाकिते आमारे।	निष्कपट भावसे मुझको पुकारना।
तबे तारा मुक्त हबे	तभी मुक्त होंगे वे
शोक दुःख ह'ते;	शोक तथा दुःखसे।
एइ जे भजन पथ,—सर्व्वश्रेष्ठ इहा,—	भजन-मार्ग यह जो,—सर्वश्रेष्ठ यही है।
कलि-जीव बड़इ दुर्व्बल,	कलियुगका प्राणी बड़ा ही दुर्बल है,
कलिर भजन ताइ केवल रोदन;	कलिमें भजन अतएव केवल रोदन है;

दुर्व्वलेर इहा बिना आर,
कि आछे सम्बल ?
विष्णुप्रिये ! तुमि लीलासहायिनी मोर,
प्रतिश्रुत हइयाछ, सहाय हइबे तुमि,
सर्व्वभावे एइ मोर करुण लीलाय;
साध्वी सति तुमि,
असाध्य किछुइ नाइ तव त्रिजगते ।

दुर्बलका इसके बिना और
कौन-सा सहारा है ?
विष्णुप्रिये ! लीलासहचरी तुम्हीं मेरी हो
वचन दिया है, सहायिका बनोगी तुम,
सब प्रकार मेरी इस करुण लीलामें;
साध्वी हो, सती ! तुम,
कुछ भी असाध्य नहीं तुमको त्रिलोकीमें, ।

विष्णुप्रिये ! बुके धर बल,
हृदे धर शक्ति,
एखन दाओ अनुमति ।

(प्रियाजीर हस्त धारण, श्रीविष्णुप्रिया देवीर कम्पित कलेवरे भूमिते उपवेशन ओ क्रन्दन)

विष्णुप्रिये ! वक्षःस्थलको दृढ़ करो,
हृदयमें धारण करो शक्ति,
दे दो अब अनुमति ।

(प्रियाजीका हाथ पकड़ना—श्रीविष्णुप्रिया देवीका कम्पित कलेवरसे भूमि पर बैठना और रोना।)

श्रीगौराङ्ग—(निज मने)
मायामय ए संसार,
मायाजाले अभिभूत सबे;

श्रीगौराङ्ग—(स्वगत)
मायामय यह संसार,
सभी अभिभूत मायाजालसे;

ज्ञानी ओ अज्ञानी,	ज्ञानी और अज्ञानी,
उदासी ओ संसारी,	विरक्त तथा संसारी,
धनी ओ निर्धनी, नारी ओ पुरुष--	धनी और निर्धन, नारी और पुरुष—
विष्णुमायाजाले बद्ध सकलेइ ।	विष्णुमायाजालमें फँस रहे सभी हैं ।
मोह-माया-जाले जड़ित ए संसार ।	मोह-माया-जालमें जकड़ा यह संसार ।
मायामय भगवान,--	मायामय भगवान्,--
मायिक रूपे कृपा करि,	मायामय रूपसे कृपा कर,
जखन नरवपु करेन धारण,	जिस समय करते हैं नर-देह धारण,
ताँर मायामयी शक्ति हन	मायामयी शक्ति उनकी बनती है,
योगमायारूपे	योगमायारूपसे
भगवान ओ जीवेर मिलन सहाय ।	भगवान और जीवके मिलनमें सहायिका ।
पूर्ण शक्ति मोर विष्णुप्रिया,	पूर्ण शक्ति मेरी हैं विष्णुप्रिया ।
जीवेर सहित मोर,	जीवोंके साथ मेरे
एइ महा सम्मिलने, आर अबाध मिलने	इस महासम्मिलनमें और निर्बाध मिलनमें
नामयज्ञ-अनुष्ठाने--	नामयज्ञरूपी अनुष्ठानमें,
प्रधान सहायक तिनि ।	सहायिका प्रधान वे ।
नरवपु धरि,	मानव-तन-धारिणी
वैकुण्ठेर लक्ष्मीभाग्ये	वैकुण्ठकी लक्ष्मीके भाग्यमें
संकीर्तन महारासलीला,	संकीर्तन-महारासलीलाका
ना हइल दरशन;	दर्शन था नहीं;
ऐश्वर्य्यमय लीलासहायिनी तिनि ।	ऐश्वर्यमयी लीला सहायिका वे ठहरीं ।
करि परामर्श मोर सने	करके परामर्श मेरे साथ
करिलेन ताइ, लीला-सम्वरण ।	कर लिया इसीलिये लीलाका संवरण ।
किंतु ताँर साध बड़ छिल	किंतु साध उनकी प्रबल थी--
दरशने संकीर्त्तन-महारासलीला;	संकीर्तन-महारास-लीलाके दर्शनकी;
ताइ निज प्रयोजने--	इसलिये अपने उस प्रयोजनसे,
आर आमार इच्छाय,--	और मेरी इच्छासे,
मिलिलेन विष्णुप्रिया सने ।	विलीन हुईं विष्णुप्रिया-रूपमें ।
विष्णुप्रिया पूर्ण शक्ति मोर	विष्णुप्रिया पूर्ण शक्ति मेरी हैं,
ह्लादिनी-सारभूता,	ह्लादिनी-सारभूता,

पराभक्ति-स्वरूपिणी	पराभक्ति-स्वरूपिणी ।
भक्तितत्त्व, प्रेमतत्त्व,	भक्तितत्त्व, प्रेमतत्त्व,
सर्व्वभावे हबे प्रचारित एइ युगे	सभी भाँति होगा प्रचारित इस युगमें
विष्णुप्रिया ह'ते ।	विष्णुप्रियाद्वारा ।
लौकिकी लीलाय पतिविरहिणी इनि,	लौकिकी लीलामें पतिविरहिणी ये,
भगवत-विरह-दुःख-शिक्षा दिते जीवे,	भगवत्-विरह-दुःख सिखाने जीवोंको,
मोर सने नदीयाय,	मेरे साथ नदियामें
अवतार इहार ।	अवतार इनका ।
लोक-चक्षे, लीलार उद्देशे,	लोक-दृष्टिमें, लीला-उद्देश्यसे,
कुलेर कामिनी इनि;	बनी कुलकामिनी ये;
आमिओ पण्डितवर नदीयार माझे ।	मैं भी बना पण्डितवर नदियामें ।
नरवपु धरि, नरेर स्वभावे,	नर-देह धारणकर मानव-स्वभाव ले
लौकिकी लीला पुष्टि तरे	लौकिकी लीलाकी पुष्टिके हेतु
विरहिणी विष्णुप्रिया विषादिनी आजि	विरहिणी विष्णुप्रिया विषादिनी बनी आज
आमि संन्यासी साजिब बले ।	जान संन्यासी वेश धारण करूँगामैं ।
जे भावे जे मोरे भजना करे,	करता है भजन मेरा जो भी जिस भावसे ।
आमि तारे भजि सेइ भावे;	मैं भी उसे भजता हूँ उसी भावसे ।
इहा मोर गीता-वाक्य ।	गीतामें यही मैंने कहा है ।
एबे मिष्ट वाक्ये	इस समय मधुर वचनावलीसे
तुष्ट करि	करता हूँ संतुष्ट
प्राणप्रिये आलिङ्गन दिये;	देकर आलिङ्गन प्राणप्रियाको;
योगमाया तुमि मोर हओ गो सहाय ।	अरी ! योगमाया! तुम मेरी सहायिका बनो
(श्रीविष्णुप्रियादेवीके करे धरिया सादरे उत्तोलन एवं पालंके वसिया रसभरे कथोपकथन)	(हाथ पकड़कर श्रीविष्णुप्रियाको सादर उठाना, और पर्य्यङ्कपर बैठकर सरस वार्तालाप)
श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग—**
प्राणप्रिये ! विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !	प्राणप्रिये ! विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
पागलिनी तुमि;	पगली हो तुम तो ।
छाड़ि, तोमा समा पतिप्राणा भार्य्या,	छोड़कर तुम समान पतिप्राणा भार्याको,
त्यजि शोकाकुला वृद्धा जननी,	त्यागकर शोकाकुला जराजीर्ण जननीको,

कोथा जाब आमि ?	कहाँ मैं जाऊँगा ?
प्राणेर आवेगे कि जे बलियाछि,	आवेगमें प्राणोंके क्या-क्या कह डाला है,
किछु नाइ मने;	कुछ भी नहीं याद है ।
व्यथा पाइयाछ कोमल प्राणे तुमि,	व्यथित हुई हो तुम, भीतर मृदुल प्राणोंके
विष्णुप्रिये !	विष्णुप्रिये !
कृष्णप्रेम उन्मत्त करियाछे मोरे	पागल बना दिया है मुझे कृष्ण-प्रेमने,
वाक्य मोर जानिओ प्रलाप,	वचनोंको मेरे जानना प्रलाप मात्र;
पागल ह'येछि आमि,—	पागल हुआ हूँ मैं,
पागलेर कथाय	पागलकी बातोंसे
वृथा केन व्यथा पाओ मने ?	मनमें क्यों वृथा व्यथा पाती हो ?
छाड़ि तोमा समा भक्तिमती भार्य्या	छोड़कर तुम-जैसी भक्तिमती भार्याको
कोथा जाब आमि भक्ति अर्ज्जन तरे ?	कहाँ मैं जाऊँगा भक्ति प्राप्त करनेको ?
भक्ति स्वरूपिणी तुमि,	भक्ति-स्वरूपा तुम,
भक्तिदात्री तुमि,	तुम भक्ति-दात्री;
गृहे रहि,—तव ठाँइ	गृहमें रह, तव समीप
करिब शिक्षा प्रेमभक्ति आमि,	प्रेम-भक्ति सीखूँगा मैं ।
प्रियतमे ! शान्त कर चित्त	प्रियतमे ! शान्त करो चित्त;
एस, प्रेम भरे देह आलिङ्गन ।	आओ, आलिङ्गन दो सप्रेम ।
क्षमा करो, प्रिये ! पागलेर कथाय	क्षमा करो प्रिये ! पागलकी बातोंसे
यदि दुःख पेये थाक मने ।	यदि दुःख पाया है मनमें ।
(चिबुक धरिया मुख-चुम्बन)	(चिबुक पकड़कर मुख-चुम्बन)
श्रीविष्णुप्रिया !	**श्रीविष्णुप्रिया—**
(लज्जित भावे)	(लज्जित भावसे)
प्राणेश्वर ! हृदय-रतन !	प्राणेश्वर ! हृदयरत्न !
दुखिनीर जीवन-सम्बल !	दुःखिनीके जीवन-सम्बल !
तव वाक्ये आश्वासित हल मोर प्राण;	वचनसे तुम्हारे आश्वासित हुए हैं मेरे प्राण
तिरपित हल मोर उद्वेलित चित;	शान्त हुआ है मेरा उद्वेलित चित्त,
देहे मोर प्राण आसिल ।	लौट आये प्राण मेरे तनमें ।
हृदयेश ! आमि तव चरणेर दासी,	हृदयेश ! दासी मैं तुम्हारे चरणोंकी,
तव प्रेम भिखारिणी;	भिखारिन प्रेमकी तुम्हारे;

पद-सेवा भिन्न तव, अन्य धर्म नाहि मोर।
तिल मात्र तव अदर्शन,
युग-युगान्तर हय बोध मोर मने;
पलके हाराइ तोमा;
अभागिनी चरणेर दासी छाड़ि
त्यजि नदीयार ए सुख-सम्पद,
ना जाइओ कोथा, प्राणनाथ !
गृहे रहि दुइ जने,
प्रेम-भक्ति-योगे
समर्पिये मन-प्राण,
श्रीकृष्ण-भजन करिब प्रेमानन्दे ।
गृहस्थ-आश्रमे रहि,
सस्त्रीक हइये कर श्रीकृष्ण-भजन ।
पालन करह जननीर उपदेश;
विघ्न नाहि दिब आमि
तोमार भजने,
ए कथा तुमि जानिह निश्चित ।
सहधर्म्मिणी आमि तव,
तोमार भजनेर सहायिनी हब आमि ।

श्रीगौराङ्ग—

विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
पूर्ण हबे तव इच्छा, इच्छामयी तुमि;
तव इच्छा अपूर्ण ना रबे ।
रात्रि हइयाछे,
एखन एस, करिगे शयन,

(पुष्पशय्योपरि, प्रियाजीके पुष्पहारे सज्जितकरण,—श्रीगौर विष्णुप्रिया युगले शयन)

पटाक्षेप ।

सिवा पद-सेवा तव, अन्य धर्म मेरा नहीं।
तुम्हें बिना देखे पलमात्र समय,
युग-युगान्तर-सा लगता है मेरे मन;
पलकान्तरमें ही खो बैठती हूँ तुमको ।
छोड़कर चरणोंकी दासी अभागिनीको,
त्यागकर नदियाकी सुख-सम्पदा यह,
नहीं जाना कहीं, प्राणनाथ !
घरमें ही रहकर दोनों जन,
प्रेम-भक्ति-योगमें
लगाकर मन-प्राण,
प्रेमानन्दपूर्वक करेंगे श्रीकृष्ण-भजन ।
रहकर गृहस्थाश्रममें
सस्त्रीक रहकर करो श्रीकृष्ण-भजन ।
पालन करो जननीका उपदेश;
विघ्न नहीं डालूंगी मैं
भजनमें तुम्हारे,
निश्चित मान लो यह बात तुम ।
तुम्हारी सहधर्मिणी मैं,
भजनमें तुम्हारे बनूंगी सहायिनी मैं ।

श्रीगौराङ्ग—

विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
पूर्ण होगी तव इच्छा, इच्छामयी तुम हो;
इच्छा अपूर्ण न रहेगी तुम्हारी ।
अधिक रात हो गयी है,
आओ, अब शयन करें ।

(पुष्पशय्याके ऊपर प्रियाजीको पुष्पहारसे शृंगार धारण कराना श्रीगौराङ्ग और विष्णुप्रिया दोनोंका शयन।)

पटाक्षेप ।

द्वितीय अङ्क

(प्रथम गर्भाङ्कः)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन । श्रीविष्णुप्रिया गृहकोणे विरस वदने आसीना ।

(काञ्चनार प्रवेश)

काञ्चना—

प्रिय सखि ! एकाकिनी बसि केन
विरस बदने गृहकोणे ?
केन आनमना सखि ?
प्रफुल्ल बदन तव म्लान
हेरि केन आज ?
फुल्ल कमलिनी मत तुमि,
सतत प्रफुल्ल;
सदा हास्यमुखी तुमि
आज केन हास्य नाहि मुखे ?
बसे आछ मलिन वदने,
गृहकार्य्य सब रयेछे पड़िया,
देखि,—वृद्धा शाशुड़ी तव
एकाकिनी गृह-कार्य्य-रता;
केन ? कि हेतु विरस वदन तव ?
सखि ! प्रकाशिये बल मोरे !

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! कि आर बलिब ?
बलिते विदरे बुक,
हृदि फेटे जाय;
रात्रिशेषे देखेछि कुस्वप्न एक,

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन । श्रीविष्णुप्रिया घरके कोनेमें म्लानमुख बैठी हैं ।

(काञ्चनाका प्रवेश)

काञ्चना—

प्रिय सखी ! एकाकिनी बैठी हो क्यों
घरके कोनेमें विरस-वदन ?
क्यों हो अनमनी तुम ?
तुम्हारे प्रफुल्ल आननको म्लान
क्यों देखती हूँ आज ?
फूली कमलिनी समान तुम,
रहती प्रफुल्ल सतत;
सदा हँसमुखी तुम,
आज किसलिये नहीं हँसी मुखमण्डल पर ?
बैठी हो आज मुख म्लान किये,
पड़ा हुआ सारा गृह कार्य है
देखती हूँ—वृद्धा तुम्हारी सास
अकेली गृह-कार्यमें रत हैं;
क्यों, किस कारणसे उतरा तुम्हारा मुख ?
सखि ! कहो सब खोलकर मुझसे ।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! और क्या कहूँ ?
कहनेसे फटती है छाती—
होता है विदीर्ण हृदय;
शेष हो चुकी थी रात जब देखा दुःस्वप्न एक

महा भयंकर !	महा भयंकर ।
प्राणेश्वर मोर,--गुणमणि मोर,	मेरे प्राणेश्वर, गुणमणि मेरे,
तोमादेर नदीया नागर,--	तुम्हारे नदियाके नागर,
नदे छाड़ि करेछेन पलायन ।	नदियाको छोड़ पलायन कर गये ।
नदे बासी बलितेछे सबे--	नदियावासी सभी इस प्रकार कह रहे हैं-
भ्राता तार विश्वरूप	उनके भाई विश्वरूप
डेकेछेन ताँरे;	बुला रहे हैं उन्हें;
जननीर अनुमति लये	माताकी अनुमति ले
भ्रातृ अन्वेषणे तिनि	भाईको खोजने वे
गियेछेन दूर देशे चले;	गये हैं दूर देश चले ।
केह केह बलितेछे,	कोई-कोई कह रहे हैं--
गृहत्यागी ह'ये तिनि	होकर उन्होंने गृह-त्यागी
सेजेछेन यति;	कर लिया है धारण वेश यतिका;
नदीयाय पड़ेछे विषम हाहाकार ।	नदियामें मचा है विषम हाहाकार ।
देखि एइ स्वप्न भयंकर,	देखकर स्वप्न यह भयंकर,
सखि ! निद्रा भाङ्गि गेल;	सखि ! निद्रा गई टूट;
उठि शय्यापाशे बसि,	उठकर बैठ शय्या-पार्श्वमें,
केंदे मरि ।--	रो-रो वे रही प्राण ।
प्राणेश्वरे जागानु चकिते;	घबराकर जगाया प्राणनाथको,
आलस्य भङ्ग करि उठिलेन तिनि;	आलस्यको त्याग उठ पड़े वे;
स्वप्न-वृत्तान्त तिनिशुनि मोर मुखे	स्वप्न-वृत्तान्त वे सुन मेरे मुखसे,
कत क्षण रहि स्तब्धभावे,	कुछ देर स्तब्ध रह,
हासिया कहिलेन मोरे गुणमणि-	हँसकर मुझसे बोले मेरे गुणमणि--
स्वप्न कभु सत्य हय ?	स्वप्न कभी होता सत्य ?
स्वप्नेर कथा अलीक चिरकाल ।	होती असत्य चिरकाल बात स्वप्नकी ।
प्रिय सखि ! मन किंतु	प्रिय सखि ! मनको न किंतु
बुझिल ना मोर,	बोध हुआ मेरे,
प्राणे जेन विंधेछे विषम शेल;	प्राणोंमें मानो धँसा हो विषम सेल;
उठियाछे हृदे अशान्तिर तरङ्ग-निचय ।	उरमें अशान्ति का उठा है तरङ्ग-जाल ।
गियेछिनु गङ्गास्नाने प्राते	गयी थी गङ्गा नहाने प्रातःकाल,

शाशुड़ीर सने;	सङ्गमें सासके;
अमङ्गल-चिह्न जत हेरिनु चारि दिके;	जितने अमङ्गल-चिह्न देखे मैंने चारों ओर;
सेइ ह'ते नाचितेछे,	तबसे ही फड़क रहा
दक्षिण नयन मोर।	दक्षिण नयन मेरा।
अस्थिर हयेछे चित-मन;	हो रहा अस्थिर मेरा चित्त-मन।
सखि! कि जानि, कि आछे	सखि! क्या जानूं, क्या है
कपाले मोर;	मेरे कपालमें,
अभागिनी आमि;	अभागिनी हूँ मैं।

गीत

सखि रे।	सखि रे।
के जाने आमार कि आछे भाले?	क्या जाने क्या लिखा भाग्यमें मैं अपने ले आयी।
ए हेन नदीयापुर उदास लागे॥	एक उदासी-सी सारे नदिया भरमें है छायी॥
नाचिछे दक्षिन आँखि, सकलि उदास देखि, ना जानि कि हय बुझि, विधिर पाके।	फड़क रहा है दक्षिण लोचन, पड़ते दीख उदास सभी जन, नहीं जानती नियति-नटी ने लीला कौन रचायी।
अमङ्गल-चिह्न हेरि; सकल नदीया भरि, बड़ दागा लेगेछे गो हृदय माझे॥	अशुभ चिह्न नदिया भर छाये, मुझे दीख पड़ते मुँह बाये; विपुल वेदना अन्तस्तलमें कोई आलि समायी॥

काञ्चना—	**काञ्चना—**
प्राणसखि! विष्णुप्रिये!	प्राणसखि! विष्णुप्रिये!
अलीक स्वप्न हेरि	मिथ्या स्वप्न देखकर,
वृथा व्याकुलित केन कर चित्त;	वृथा व्याकुल किसलिये चित्त करती हो?
गुणमणि, गौराङ्ग नागर,	गुणमणि, गौराङ्ग नागर,
प्रेमाधीन तव;	प्रेमाधीन हैं तुम्हारे;
मोरा सबे इहा भाल रूपे जानि।	भलीभाँति जानती हैं बात यह हम सब।
तुमिओ त जान सखि।	तुम भी तो सखि! जानती हो,
प्राणवल्लभ तव,—	प्राणवल्लभ तव,

तोमा छाड़ि,—	त्यागकर तुमको,
तिलेक रहिते नारे कोथा,	लवमात्र भी रह सकते न कहीं;
असम्भव ताँर पक्षे	असम्भव है उनके लिये,
नदीयार ए सुख-सम्पद छाड़ि,	नदियाकी यह सुख-सम्पदा छोड़,
छाड़ि तोमा हेन प्रणयिनी,	तुम समान प्रणयिनीको त्यागकर,
जाइते अन्यत्र ।	चले जाना अन्यत्र ।
छाड़ि विष्णुप्रिया,	त्याग विष्णुप्रियाको,
विष्णुप्रिया-वल्लभ,	विष्णुप्रिया-वल्लभ वे
केमने जाइबे दूर देशे,	किस प्रकार जायेंगे दूर देश—
मोरा ताहा लइब बुझिया;	हम भी लेंगी यह बात समझ ।
सखि ! स्थिर कर मन,	सखि ! स्थिर करो मनको,
वृथा दुःखे चित्त केन कर	दुःखसे वृथा क्यों कर रही चित्तको
विषादित ।	विषादयुक्त ।
चल,—कुसुम-कानन गिये,	चलो, जाकर पुष्प-वाटिकामें,
तुलि फूल,—नव नव	नये-नये फूल चुनकर
गाँथिगे माला, नदीयानागर तरे,	गूँथेंगी माला हम नदियानागरके लिये;
शीघ्र आसिबेन गुणमणि तव	गुणमणि तुम्हारे शीघ्र आयेंगे
गङ्गा-स्नान ह'ते ।	गङ्गा-स्नानसे ।
चल विष्णुप्रिये !	चलो विष्णुप्रिये !
विष्णुगृह साजाइते हबे ।	होगा सजाना विष्णुमन्दिरको ।
(अमितादि सखिगणेर प्रवेश)	(अमितादि सखियोंका प्रवेश)

समवेत गीत

(आजि) फूल साजे साजाइव	अपनी सखी सजायेंगी
सखि रे मोरा ।	हम कुसुम-आभरण लेकर ।
प्राण भरे प्रणयिनी हेरिवे गोरा ॥	प्रिया प्रणयिनीको देखेंगे
	नदियानागर जी भर ॥
फूलेर वलय दिव,	कुसुमोंके कङ्कण बाँधेंगी,
फूल हारे साजाइव,	नवसुमन-हारसे साजेंगी,
कवरी बाँधिये दिव गोरा-मन-चोरा ।	गौर-हृदय हर ले—गूथेंगी
	वेणी ऐसी सुन्दर ।

काने दिव कान फूल,
दुलिवे फूलेर दुल,
फूलेर नूपुर पाये दिव दुइ जोड़ा।

फूल साजे फूलेश्वरी भुलावे गोरा॥

कनफूल कान पहनायेंगी,
रच फूल-हिंडोल झुलायेंगी,
पुष्प - रचित दो जोड़ा
नूपुर बाँधेंगी पैरोंपर॥
फूलोंसे सज कुसुम-ईश्वरी
मोहेगी प्राणेश्वर।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! सखि अमिते !
जत किछु बल तुमि सबे,—
मन मोर ना माने प्रबोध,
कि जानि मन मोर,

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! सखि अमिते !
चाहे बात जितनी तुम सब कहो,
होता नहीं मनको प्रबोध मेरे;
क्या जाने मन मेरा,
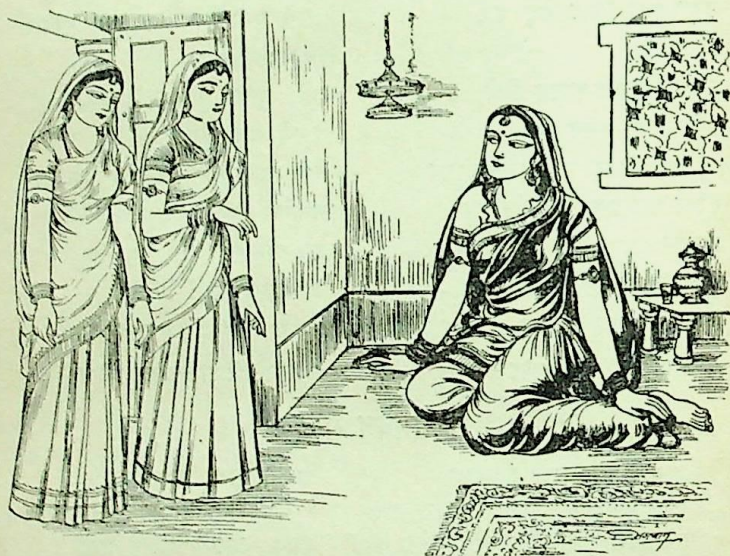
केन आजि एतइ चञ्चल,
किछु नाइ भाल लागे—
इच्छा हइतेछे,—एकाकिनी गृहे बसि
अञ्चले वदन झाँपि,

किसलिये अस्थिर इतना आज;
कुछ भी सुहाता नहीं;
इच्छा हो रही है, घरमें अकेली बैठ,
अञ्चलसे वदन ढाँप,

करिते नीरवे रोदन ।	करनेकी चुपचाप रुदन ।
काञ्चने ! प्रिय सखि !	काञ्चने ! प्रियसखि !
तुमि सबे जाओ गृहे,	जाओ तुम लोग घर ।
एकाकिनी एइ गृहे कोणे बसि	अकेली इस घरमें कोनेमें बैठकर
किछु क्षण प्राण भरि	जी भरकर कुछ समय
काँदिते बड़ इच्छा हइयाछे मने ।	रोनेकी बड़ी इच्छा हो रही है मनमें ।
गुणमणि आसिबेन गृहे जबे	गुणमणि आयेंगे घर जब,
तुमि सबे आसिओ तखन ।	तुम सब आना तब ।
काञ्चना--	**काञ्चना--**
सखि विष्णुप्रिये !	सखि विष्णुप्रिये !
तुमि बड़ अबोधिनी बाला;	बड़ी भोली भामिनी तुम;
अलीक स्वप्नकथाय करिया विश्वास	मिथ्या स्वप्न-वार्तापर विश्वास करके,
मनागुने ज्वले	जलकर मनोज्वालामें,
मरितेछ अकारण ।	देती हो अकारण प्राण !
सरला बालिका तुमि,	बालिका सरल तुम,
सरल विश्वास तव;	सरल विश्वास तव;
गुणमणि गौराङ्ग नागर,	गुणमणि गौराङ्ग नागर,
तव प्रेमाधीन,—	तुम्हारे प्रेमाधीन,--
तुमि ताहा जान वा ना जान,	तुम इसे जानो या न जानो,
मोरा ताहा जानि भाल रूपे ।	भलीभाँति जानती हैं हम इसे ।
विष्णुप्रिये !	विष्णुप्रिये !
वृथा दुःखे कर केन	वृथा दुःखसे करती हो किसलिये
मन उचाटन ।	उच्चाटन मनका ।
चित्ते यदि पाओ सुख,	चित्तमें यदि मिले सुख,
गृहे बसि रोदन करिते एकाकिनी	घरमें बैठ करनेसे रुदन एकाकिनी,
ताइ कर तुमि सखि !	करो तुम वही सखि !
तव सुखे	सुखमें तुम्हारे
वादी नाहि हब मोरा केह,	न हम सब कोई भी होंगी बाधिका,
किंतु सखि ! सत्य कथा बलि,	किंतु सखि ! कहती हूँ सत्य बात—
ए भावे राखिया तोमा हेथा,	छोड़ इस दशामें तुम्हें यहाँ,

गृहे जेते मन नाहि सरे;	मन नहीं करता घर जानेको
किंतु अनुरोधे तव,	किंतु अनुरोध जब तुम्हारा है,
चलिलाम मोरा,	विदा हुई हम सब,
फिरिया आसिया पुन,	लौटकर फिरसे
देखि जेन सखि !	देखें सखि ! जिससे
फुल्लमने गोरासने करिछ विहार,	सङ्ग गौराङ्गके करतीविहार सानन्द मन
प्रेमानन्दे हासि मुखे ।	भरी प्रेमानन्दमें, मुख पर हँसी लिये तुमको
(प्रस्थान)	(प्रस्थान)
(शचीमातार प्रवेश)	(शचीमाताका प्रवेश)
शचीमाता--	**शचीमाता---**
बोमा आमार ! मा लक्ष्मि आमार !	बहू मेरी ! लक्ष्मी मेरी !
एकाकिनी केन बसि गृहे कोणे ?	एकाकिनी बैठी हो क्यों गृह-कोणमें ?
विषादिनी केन तुमि आजि ?	किसलिये विषाद भरी आज तुम ?
गङ्गा-स्नान करि,	गङ्गास्नान करके
निमाइ आसिबे एखनि,	आयेगा निमाई अभी,
विष्णुगृहे पूजार सज्जा,	मन्दिरमें पूजाकी तैयारी
किछु नाहि देखि,—	कुछ नहीं देखती हूँ ।
त्वरा करि जाओ मागो !	शीघ्रतासे जाओ लली !
निमाइयेर पूजार सज्जा,	निमाईके पूजाकी तैयारी,
सब ठीक कर गिया,	जाकर सब करो ठीक;
पाकशाले आमि,	पाकशालामें मैं
भोगेर रन्धने व्यापृत	भोग-रन्धनमें हूँ लगी,
निमाइयेर आसिबार हयेछे समय ।	निमाईके आनेका समय हो गया है ।
(श्रीविष्णुप्रिया देवीर शचीमाताके प्रणामकरण)	(श्रीविष्णुप्रिया देवीका शचीमाताको प्रणाम करना)
श्रीविष्णुप्रिया--	**श्रीविष्णुप्रिया--**
(मन भाव गोपन करिया)	(मनोभावोंको छिपाते हुए)
मागो ! जाओ तुमि,	माँ ! जाओ तुम,
जाइतेछि आमि पूजागृहे;	जाती हूँ मैं पूजाघरमें,
स्वच्छन्द नहे आजि देह मोर,	स्ववश नहीं मेरा शरीर आज,

ताइ ब'सेछिनु गृहे एकाकिनी ।

(शचीमातार प्रस्थान)

श्रीविष्णुप्रिया—

(मने-मने)

कि आर बलिब माके ए सकल कथा
बलिले, दुःख पाबेन मने तिनि;
ए कथा बलिते कि पारि ?
बलिबार कथा नहे इहा;
मने-मने राखि ए दुःखभार,
मनागुने ज्वले
पुड़े मरि,
तबु भाल;
कारओ प्राणे ना दिब उद्वेग;
बुके धरि एइ दुःख-भार,
निर्ज्जने बसि एकाकिनी
करिब नीरवे रोदन;
शुनिबे ना केह,-जानिबे ना केह,
हृदयेर आगुन ज्वलिबे हृदये;
दुःख दिते नाहि चाइ
कारओ मने आमि ।
आपनार दुःख आमि
आपनि सहिब ।
आपनार मनागुने—
आपनि पुड़िब ।
जाँर कथा,
बलियाछि ताँर काछे,
जा करेन तिनि, लब माथा पाति ।
दासी आमि,—प्रभु तिनि,
नहि स्वतन्त्र आमि ताँहा ह'ते ।

(प्रस्थान)

इसीलिये बैठी थी घरमें एकाकिनी ।

(शचीमाताका प्रस्थान)

श्रीविष्णुप्रिया––

(स्वगत)

और क्या कहूँगी भला माँको ये बातें सब,
कहनेसे दुःख वे पायेंगी मनमें;
कह भी क्या सकूँगी बात यह ?
कहनेकी बात ही नहीं है यह;
मनमें ही रखकर यह दुःखभार,
जलती-सुलगती मनोज्वालामें
प्राणोंको होम करूँ
तभी ठीक;
किसीके प्राणोंको दूँगी उद्वेग नहीं;
हृदयमें दुःखभार रखकर यह
सूनेमें बैठकर अकेली
चुपचाप आँसू गिराऊँगी;
सुनेगा न कोई, जानेगा न कोई,
हृदयकी ज्वाला हृदयमें ही जलेगी;
देना नहीं चाहती दुःख
किसीके भी मनको मैं ।
मैं निज दुःखको
आप ही सहूँगी ।
अपनी मनोज्वालामें,
सुलगूँगी स्वयं ही ।
जिनकी बात,
उनको ही कर दी है निवेदित मैंने;
जो कुछ वे करेंगे, लूँगी सिर माथे ओढ़ ।
दासी मैं,––स्वामी वे;
नहीं है स्वतंत्र सत्ता उनसे मेरी ।

(प्रस्थान)

द्वितीय अङ्क ।

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवने ठाकुरघर ।
(श्रीविष्णुप्रिया देवी पूजार
सज्जाय व्यापृता,—
गङ्गास्नान करिया श्रीगौराङ्गेर
गृहे प्रत्यागमन,
ईशानेर चरण-धौतकरण)

दृश्य—श्रीगौराङ्गगृहमें देवालय ।
(श्रीविष्णुप्रिया देवी पूजाकी
तैयारीमें व्यस्त हैं,—
गङ्गास्नान करके श्रीगौराङ्गका
घर लौटना,
ईशानका चरण-प्रक्षालन करना ।)

श्रीविष्णुप्रिया—
(पट्टवस्त्र, श्रीगौराङ्गेर हाते दिया)

प्राणेश्वर !
कि हेतु विलम्ब आजि
गङ्गास्नाने ?
पूजार समय तव हइल अतीत;
पथ पाने चेये ब'से आछि आमि ।
छाड़ि भोगेर रन्धन,
स्नेहमयी जननी तोमार,
कत बार गिये राजपथे,
एक दृष्टे पथ पाने चेये,
छिलेन दाँड़ा'ये,
तोमार आशाय ।
कि हेतु विलम्ब एत,
बल, बल, नाथ !

श्रीविष्णुप्रिया—
(श्रीगौराङ्गके हाथमें पाटम्बर देकर)

प्राणेश्वर !
हुआ विलम्ब किस कारण आज
गङ्गास्नानमें ?
पूजाका समय तुम्हारा बीत गया;
पथकी ओर देखती हुई बैठी हूँ मैं ।
भोगका रन्धन छोड़,
स्नेहमयी जननी तुम्हारी,
राजपथपर जा-जाकर कितनी बार,
एकटक पथको निहारते,
रहीं खड़ी,
तुम्हारी प्रतीक्षामें ।
किस हेतु इतना विलम्ब हुआ,
बोलो-बोलो नाथ !

श्रीगौराङ्ग—
(विह्वल भावे)

विष्णुप्रिये ! कि बलिब आमि ?
यमुनार तीरे देखि यशोदानन्दन,

श्रीगौराङ्ग—
(विह्वल भावसे)

विष्णुप्रिये ! क्या बताऊँ मैं ?
देखा यमुनाके तीर यशोदानन्दनको,

श्रीदाम-सुदाम-सुबलादि सखावृन्द साथे,	श्रीदाम, सुदाम, सुबलादि सखावृन्द साथ
अगणन धेनु वत्स ल'ये,	गो, गोवत्स अगणित लिये
करिछेन गोठेते बिहार ।	गोष्ठमें विहार कर रहे थे ।
धवली श्यामली गाइ,	धवली, श्यामली गाय
वत्ससह उर्द्ध पुच्छ तुलि,	बछड़ोंके साथमें ऊँचे उठाये पूँछ,
दौड़िछे उधात्त हये चारिदिके;	दौड़ रहीं चारों ओर उछल-उछलकर;
गोठ ह'ते हतेछे विच्छिन्न	गोठसे हो रही है विच्छिन्न,
कत वत्स,—कत गाभी ।	कितने वत्स,—कितनी गायें ।
फिराइते से सकल धेनु-वत्स	लौटानेको उन सब गाय-बछड़ोंको
आमि ताइ गियेछिनु गोठे ।	मैं भी गया था वहींपर गोठमें ।
शुनिलाम वंशीध्वनि मधुर,	सुनी मैंने वंशीध्वनि मधुर-मधुर
छुटिलाम गाभी सने,—	दौड़ पड़ा गायोंके साथ,—
जेदिके बाजिछे मुरलीर ध्वनि,	जिस ओर उठी वह वंशी-ध्वनि;
गिये देखि कोथा किछु नाइ	जाकरके देखा तो कहीं कुछ नहीं था,
वंशी आर नाहि बाजे,	और नहीं बज रही थी वंशी,
कोथाय लुकायेछे वंशीधारी	किस जगह गये थे छिप मुरलीधर
राखालेर राज ।	गोपाल-चूड़ामणि ।
छुटि-छुटि यमुनार तीरे-तीरे	दौड़-दौड़ यमुना किनारे-किनारे
ढुँड़िलाम कत,—काँदिलाम कत	कितना खोजा, कितना किया चीत्कार,
किंतु ना पानु दरशन ताँर;	मिला नहीं दर्शन किंतु उनका ।
बल, बल, विष्णुप्रिये !	बोलो, बोलो विष्णुप्रिये !
कोथा गेल वंशीधारी राखालेर राज,	कहाँ गये मुरलीधर गोपाल-चूड़ामणि,
कोथा गेले देखा पाब ताँर ?	कहाँ जानेपर मिलेगा दर्शन उनका ?
(ठाकुरघरे मुरलीधारी श्रीकृष्ण-विग्रह-दर्शने श्रीमूर्त्तिर प्रति चाहिया)	(पूजाघरमें मुरलीधारी श्रीकृष्ण-विग्रहका दर्शन करके श्रीमूर्तिके प्रति देखकर)
ऐ जे मोहन मुरली करे,	अहा ! वही मोहन मुरली लिये हाथमें,
त्रिभङ्ग बङ्किम ठामे,	त्रिभङ्ग बङ्किम मुद्रासे
दाँड़ाये रयेछे घरे,	खड़े हैं घरमें,
मोर मनचोरा, हाराधन	मेरे मनके चोर, खोये हुए धन ।

ओहे राखालेर राज !
गोष्ठ छाड़ि, पलाये एसेछ बुझि तुमि ।

शिशु तुमि,
क्षुधा बुझि पाइयाछे तव ।
अथवा पिपासित तुमि बुझि ।
गोठेते प्रखर रौद्रेर ताप
सहिते ना पारि,
आसियाछ मोर गृहे करिते विश्राम ।
वेश करियाछ,—प्राणधन तुमि,
सोनामणि तुमि,—यादुमणि तुमि,
यशोदा मातार तुमि अञ्चलेर निधि;
नन्देर दुलाल ! एस, कोले करि तोमा,
जुड़ाइ जीवन ।

(बाहू प्रसारिया विग्रह-धारणोद्योग)

श्रीविष्णुप्रिया—

(शशव्यस्ते हस्त धरिया)

कर कि, कर कि नाथ !
पागल हयेछ नाकि तुमि ?
मागो ! कोथा तुमि ?—
भय होय मने मोर,
तव पुत्रे देखि ।

श्रीगौराङ्ग—

विष्णुप्रिये !
शीघ्र गिया जननीके बल,
क्षीर, सर, नवनी ल'ये आसिते हेथाय;
नन्देर नन्दन आजि,
एसेछेन गोष्ठ ह'ते मोर गृहे

अहो ! गोपालराज !
लगता है गोठ छोड़
आये हो भाग तुम ।
बच्चे ही तो ठहरे तुम !
लगता है भूख लगी तुमको है,
अथवा प्यासे तुम दीखते हो ।
गोठमें धूपकी प्रखर गर्मी,
सहनेमें असमर्थ होकर तुम,
आये हो मेरे घर करने विश्राम ।
अच्छा किया,—प्राणधन तुम हो
स्वर्णमणि तुम हो, यदुमणि तुम,
मैया यशोदाके अञ्चल-निधि तुम हो;
नन्दके दुलारे ! आओ, गोदमें लेकर तुम्हें
शीतल करूँ जीवनको ।

(भुजाओंको फैलाकर विग्रहको
आलिङ्गन करनेकी चेष्टा)

श्रीविष्णुप्रिया—

(आतुरतासे हाथ पकड़कर)

करते हो क्या नाथ ! करते हो क्या ?
पागल तो नहीं हो गये हो तुम ?
ओ माँ ! कहाँ हो तुम ?—
उठ रहा डर मेरे मनमें
पुत्रको तुम्हारे देख ।

श्रीगौराङ्ग—

विष्णुप्रिये !
शीघ्र जाकर जननीसे बोलो—
दूध, मलाई, मक्खन लेकर आनेको यहाँ;
नन्दनन्दन आज,
आये हैं गोष्ठसे मेरे घर

परिश्रान्त हये;	परिश्रान्त होकर;
बड़ क्षुधा पेयेछे ताँहार।	बड़ी भूख लगी है उनको।
एस विष्णुप्रिये ! एस गो जननी !	आओ विष्णुप्रिये ! अरी मैया आ !
त्वरा करि ल'ये क्षीर-सर-ननी।	जल्दीसे लेकर दूध, मलाई, मक्खन।
(श्रीविष्णुप्रिया देवीर ताड़ाताड़ि शचीमाताके आह्वान)	(श्रीविष्णुप्रिया देवीका जल्दी-जल्दी शचीमाताको पुकारना)
(शचीमातार प्रवेश)	(शचीमाताका प्रवेश)
श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग—**
मागो ! दयामयी जननी आमार !	ओ माँ ! दयामयी माँ मेरी !
तव भक्तिबले देख आजि,	देखो, आज भक्तिके प्रभावसे तुम्हारे,
नन्दनन्दन यशोदार प्राणधन,	नन्दनन्दन, यशोदाके प्राणधन,
गोष्ठ ह'ते मोर गृहे	गोष्ठसे अपने घर
आसि विद्यमान।	आकर उपस्थित हैं।
मागो ! क्षुधाय कातर कृष्ण,	माँ ! क्षुधासे कृष्ण हुए कातर हैं,
परिश्रान्त धेनु चराइये;	थककर गोचारणसे;
क्षीर-सर-नवनी दे, मा शीघ्र करि !	मलाई, मक्खन, दूध, दे माँ जल्दीसे !
मागो ! तुमि यशोमती माता,	माँरी ! तू ही माता यशोदा,
अञ्चलेर निधि तव, गृहेर माणिक,	गोदीके धन तुम्हारे, गृहके रत्न,
क्लान्त ह'ये एसेछे गृहेते।	क्लान्त होकर आये हैं घरमें।
शचीमाता—	**शचीमाता—**
(कर जोड़े श्रीविग्रहेर प्रति चाहिया)	(हाथ जोड़कर श्रीविग्रहकी ओर देखते हुए)
हे नारायण ! हे मधुसूदन !	हे नारायण ! हे मधुसूदन !
रक्षा करो तुमि देव,	रक्षा करो देव ! तुम
सर्व्वापद ह'ते आमार निमाइ चाँदे;	सभी आपदाओंसे मेरे निमाई-चन्द्रको;
किछु आमि बुझिते ना पारि,	कुछ भी समझ मैं पाती नहीं—
कि भाव ताहार।	क्या भाव उसका है।
गया ह'ते एसे बाछा,	गयासे लौटकर आनेपर लाल मेरा
केमन जेन ह'ये गेछे;	क्या जाने कैसा बन गया है।
देखियाछि कृष्णभक्त,	देखा है कृष्णके भक्तोंको,

भक्तिओ देखियाछि
इष्ट प्रति गुरुजनेर,
किन्तु आमार निमायेर मत,
ए अद्भुत भाव,
देखि नाइ कोथा।
कि व्याधि हइल सोनार बाछार मोर,
किछु नाहि बुझि।
नारायण हे! मधुसूदन हे!
कृपा करि, रक्षा कर निमाये आमार;
सुमति दाओ ताके,
गृहे रहि सुस्थ मने भजुक तोमारे।

(क्रन्दन)

(श्रीगौराङ्गेर प्रति)

बाप विश्वम्भर! सोनार निमाइ चाँद!
अतीत द्वितीय प्रहर वेला,
ठाकुरेर भोग-राग सकलि प्रस्तुत;
विष्णुपूजा कर तुमि बाप!
प्रसाद पाइये सुस्थ कर शरीर तोमार;
देख बाप! बालिका बोमा आमार,
करे नाइ जलस्पर्श एयावत्,
तुमि बाप! ना पेले प्रसाद,
सबे उपवासी रबे।

श्रीगौराङ्ग—

(वाह्यज्ञान पाइया सचाकिते)

मागो! हइयाछे एत बेला,
बुझि नाइ आमि।
दाओ वस्त्र, करि परिधान;
समापन करि विष्णुपूजा,
प्रसाद पाइब एखनि।

भक्ति भी देखी है
गुरुजनोंकी उनके इष्टदेव प्रति;
पर अपने निमाई-सा
इस प्रकार अद्भुत भाव,
देखा नहीं कहीं भी।
कौन व्याधि लगी मेरे सोनेके लालको,
समझमें न आता कुछ।
नारायण हे! मधुसूदन हे!
कृपाकर रक्षा करो मेरे निमाईकी;
उसको सुमति दो,
घरमें रह स्वस्थ मनसे भजन तुम्हारा करे।

(क्रन्दन)

(श्रीगौराङ्गसे)

तात विश्वम्भर! सोनेके निमाई चाँद!
बीत गया दूसरे पहरका समय,
भोग-राग सारा भगवानका प्रस्तुत है;
विष्णु-पूजा करो तुम तात!
ग्रहणकर प्रसादको स्वस्थ करो अपना तन;
देखो लाल! बालिका बहूने मेरी,
किया नहीं जलस्पर्श अबतक;
लिये बिना प्रसाद तुम्हारे तात!
सभी लोग उपवास करेंगे।

श्रीगौराङ्ग—

(वाह्यज्ञान प्राप्तकर चकित हो)

माँ! इतना समय हो गया,
जाना नहीं मैंने।
वस्त्र दो, धारण करूँ;
सम्पन्नकर विष्णु-पूजा
प्रसाद पाऊँगा अभी।

शचीमाता—
बोमा ! दाओ वस्त्र शीघ्र करि,
आमि जाइ भोगेर गृहेते ।
(प्रस्थान)
(श्रीविष्णुप्रिया देवीर पतिहस्ते वस्त्रदान श्रीगौराङ्गेर शुष्क वस्त्र परिवर्तन करण)
(ठाकुरघरे प्रवेश)

शचीमाता—
बहू रानी ! वस्त्र दो जल्दीसे;
मैं हूँ जाती भोगवाले घरमें ।
(प्रस्थान)
(श्रीविष्णुप्रिया देवीका पतिके हाथोंमें वस्त्र देना—श्रीगौराङ्गका बदलकर सूखे वस्त्रोंको पहनना)
(पूजा-घरमें प्रवेश करना)

गीत

दया कर दयानिधि, नन्दकुलचन्द्र ।
ना जानि पूजन आमि आर मन्त्र-तन्त्र ॥
जानि शुधु प्राणवँधु, तुया मुखचन्द्र ।
प्रेमे माखा, ढल-ढल, आनन्दकन्द ॥
आर जानि, तुमि शुधु करुणार सिन्धु ।
पतित-पावन प्रभु, तुमि दीनवन्धु ॥

हे नन्दगोप - कुल-चन्द्र !
दयानिधि ! करो दया ।
नहीं जानता मन्त्र-तन्त्र,
पूजा - विधान या ॥
प्राण-सुहृद मुख-चन्द्र,
तुम्हारा मैं जानूँ, बस ॥
प्रभा-पूर्ण, आनन्दकंद,
अति भरा प्रेम-रस ॥
और जानता तुमको,
केवल करुणा-सागर ।
तुम्हीं पतित पावन हे,
स्वामी। दीनवंधु-वर ॥

श्रीगौराङ्ग—
आहा ! कि रूप;
मोर कृष्णधन, रूपेर माणिक,
हेन रूप नाहि त्रिजगते ।
मोर कृष्णधन रूपेर सागर
अपरूप रूप ताँर,
वर्णनार नहे वस्तु,—
देखिबार वस्तु ताहा;
चक्षु जार आछे, से देखे जा'क एसे;

श्रीगौराङ्ग—
अहा ! कैसा रूप !!
मेरे कृष्णरूपी धन रूपके मणि हैं;
ऐसा रूप नहीं त्रिलोकीमें ।
मेरे श्रीकृष्ण रूपके सागर हैं,
अपूर्व रूप उनका है,
वर्णनातीत वस्तु,—
दर्शनीय वस्तु यही;
आँखें हों जिसे, वह देख जाय इसे आकर ।

गीत

(तोरा) रूप देख्बि यदि, आय।

रूपेर सागर वहे मोर आङ्गिनाय॥

चरणे नूपुर दिये,
त्रिभङ्ग बकिम ह'ये,
आमार कृष्ण आमार घरे
नाचिये बेड़ाय।
मुनिजन-मन हरे वदन-शोभाय॥

(श्रीगौराङ्ग गान करिते-करिते काँदिया आकुल हइलेन। नयन-जले एवं नासिकार धाराय ताँहार परिधान-वस्त्र सिक्त हइल। तिनि पूजार आसने बसिलेन ना)

(श्रीविष्णुप्रियार प्रति कातर स्वरे)

विष्णुप्रिये ! अन्य वस्त्र कर आनयन;
नयनेर जले ओ नासिकार धारे
परिधान-वस्त्र मोर हयेछे अशुद्ध;
कि करि करिब पूजा
अशुद्ध वसन परि ?

श्रीविष्णुप्रिया—

प्राणवल्लभ ! लह एइ वस्त्र,
पुनः कर परिधान;
एइ विष्णुगृहे बसि,
कर पूजा प्रतिदिन तुमि,
ए कि भाव देखि आज तव ?
काँदितेछ केन नाथ ! तुमि ?
दुखसिन्धु जेन तव उठेछे उछलि;

आओ, यदि हो तुम्हें:
रूपका करना दर्शन।
रूप-सिन्धु ले रहा,
हिलोरें मेरे आँगन॥
चरणोंमें मणि-नूपुर पहरे;
छवि वंकिम, रूप त्रिभङ्ग धरे;
घूम-घूमकर करे कृष्णमम,
मम गृह नर्तन।
मुख-शोभासे मुनिजनका भी,
लेते हर मन॥

(श्रीगौराङ्ग गान करते-करते रोकर आकुल हो उठते हैं। नयनोंके जल-से एवं नासिकाकी धारासे उनका वस्त्र भींग जाता है। वे पूजाके आसनपर बैठे नहीं।)

(श्रीविष्णुप्रियाके प्रति कातर स्वरसे)

विष्णुप्रिये ! लाओ वस्त्र दूसरा,
नयनोंके जलसे तथा नासिकाकी धारासे
परिधान-वस्त्र मेरा हो गया अशुद्ध;
पूजन करूगा मैं किस प्रकार
पहनकर अशुद्ध वस्त्र ?

श्रीविष्णुप्रिया—

प्राणवल्लभ ! वस्त्र लो यह,
पुनः धारण करो ।
इसी विष्णु-मन्दिरमें बैठकर,
प्रतिदिवस पूजा किया करते हो तुम,
यह कैसा भाव आज देखती तुम्हारा हूँ ?
रो रहे हो किसलिये स्वामी ! तुम ?
दुःख-सिन्धु मानो तुम्हारा उठा है उमड़;

नारायण-पूजा-काले,	भगवान् नारायणकी पूजाके समय
आनन्दे पूर्ण हय मन,—	होता पूर्ण मन आनन्दसे,
सर्व्वदुःख जाय दूरे,—	सर्व दुःख हो जाता दूर है ।
ना पारि बुझिते,—विष्णुगृहे बसि,	नहीं समझ पाती हूं,—बैठ विष्णुमन्दिरमें
दुखसिन्धु तव केन उछलिल	दुःख-सिन्धु किसलिये उमड़ा तुम्हारा
आजि ?	आज ?
कृपा करि, बल यदि नाथ !	कृपाकर कहो यदि नाथ !
कारण इहार,	इसका हेतु,
यथासाध्य प्रतिकार करिबे ए दासी,	यथासाध्य प्रतिकार करेगी दासी यह,
प्राण दिये;	प्राणपणसे ।
श्रीगौराङ्ग—	**श्रीगौराङ्ग**—
(वस्त्र-परिधान करिते-करिते)	(वस्त्र बदलते-बदलते)
विष्णुप्रिये ! कि बुझाब तोमा ?	विष्णुप्रिये ! समझाऊँ क्या तुम्हें ?
कि बुझिबे वा तुमि ?	समझोगी भी क्या तुम ?
कहिबार कथा नहे इहा,	कहनेकी बात ही नहीं यह,
बुझाबार शक्ति नाइ मोर ।	शक्ति नहीं मुझमें समझानेकी ।
प्रणय आस्पदे,—हृदयेर प्राणधने,	प्रणय-आस्पदकी, हृदय-प्राणधनकी
पूजा काके बले ? बुझिते ना पारि ।	पूजा किसे कहते हैं?—समझ नहीं पाता हूं।
गन्ध-पुष्प-तुलसी आदि,	गन्ध, पुष्प, तुलसी आदि—
पूजा-उपचार देखि,	पूजा-उपकरण देख,
केँदे मरि आमि;	रो-रोकर मरता मैं;
मने पड़े	स्मृति होती है—
प्राणधनेर वदनकमल!,—	प्राणधनके आनन-अरविन्दकी,
मने पड़े मृदु हाँसि ताँर ।	स्मृत होती है—मृदु मुस्कान उनकी ।
काने शुनि जेन ताँर मधुर वचन;	कानोंमें सुनता हूं मानो उनके मधुर वचन,
ताइ नयनेर वारि,	इसीलिये नयनोंके जलको
नाहि पारि निवारिते;	रोक नहीं पाता हूं;
धारा बहे अविरल दुनयने;	धारा अविरल बह रही युगल नयनोंसे;
मन्त्र नाहि आसे मुखे,—	मुखमें नहीं उठता मन्त्र—
ध्यान-धारणा सब, दूरे चलि जाय ।	ध्यान-धारणा समस्त दूर भाग जाते हैं ।

साक्षाते हेरि आमि प्राणधन मोर	साक्षात् देखता मैं निज प्राणधनको,
यशोदा-जीवने ।	यशोदा-जीवनको ।
गोप वेश, वेणु करे,	गोपवेश, मुरली लिये हाथमें,
पीताम्बर-परिधान,	पीताम्बर धारण किये,
त्रैलोक्येर सर्व्व सौन्दर्य्यसिन्धु ल'ये	समस्त सौन्दर्य-सिन्धु
	त्रिलोकीका समेटे हुये,
सन्मुखे विद्यमान मोर,	सम्मुख उपस्थित हैं मेरे ।
सुन्दर,—अतीव सुन्दर	सुन्दर, अतीव सुन्दर,
सर्व्व माधुर्य्यमय अपरूप रूप हेरि,	सर्व माधुर्यमय, अप्रतिम रूप देख,
भूले जाइ पूजा,—भूले जाइ मन्त्र;	भूल जाता पूजाको, भूल जाता मन्त्र,
फूल जले,	फूल और जलसे
प्राणधने आराधिते	करना आराधना प्राणधनकी
मन नाहि चाय ।	मन नहीं चाहता ।
स्तव-स्तुति आप्तजने,	स्तव-स्तुति आप्त जनके प्रति
शोभा नाहि पाय ।	शोभा नहीं देती है ।
विष्णुप्रिये । प्रियतमे !	विष्णुप्रिये ! प्रियतमे !
प्रेमपूजा सब चेये बड़,	प्रेम-अर्चा सबसे बड़ी,
प्रेममय कृष्णधने, भालबासि आमि	प्रेममय कृष्णधनको करता हूँ प्यार मैं
प्राण दिये !	प्राणपणसे ।
प्रेम भरे, प्राणवल्लभ बलि,	प्रेमपरिपूर्ण हो, 'प्राणवल्लभ' शब्दसे,
डाकि ताँरे कत सुख पाइ;	उनको पुकारकर कितना सुख पाता हूँ !
ताइ एइ प्रेम-पूजार	इसीलिये इस प्रेम-पूजाका
करेछि आयोजन ।	किया है आयोजन ।
उपचार एइ पूजार,	उपकरण ये हैं इस पूजाके——
हृदि भरा भालबासा,	हृदयमें भरा हुआ अनुराग,
बुकभरा प्रेमराशि,	हृत्तलको प्लावित करती प्रेमराशि,
अर्ध्य तार नयनेर जल;	नयन-नीर अर्घ्य उसका;
प्रणय-अञ्जलि दिये, प्रीति-पुष्पहारे,	प्रणयकी अञ्जलि से, स्नेह-सुमन मालासे,
प्रणय-आस्पदे साजाइते हबे,	प्रणयास्पदको सज्जित करना होगा ।
प्रणय-बन्धने बाँधा,	प्रणय-बँधनमें बँधे,

प्रीतिर निगड़े बद्ध,	प्रीतिकी बेड़ीमें जकड़े हुए,
प्रेममय यशोदा-दुलाल;	प्रेममय यशोदा-दुलारे हैं ।
शिखितेछि आमि, एइ महापूजा,—	सीख रहा मैं यही महापूजा,
एइ प्रेम-पूजा गुरुर आदेशे ।	यही प्रेमपूजा, गुरुके आदेशसे ।
प्रेम-भक्ति-साधने पथे,	प्रेमाभक्ति-साधनके पथमें
अनुराग-भजने प्रथम सोपाने,—	अनुराग-भजनके प्रथम सोपानपर,
नवीन पथिक आमि;	यात्री नवीन मैं;
गुरु-कृपा-बले,	गुरु-कृपा-बलसे
अधिकारी ह'ले एइ प्रेम सेवाय,	अधिकारी होनेपर इस प्रेम-सेवाका,
प्राप्ति हबे, गोलोकेर धन—प्रेम ।	प्राप्त होगा गोलोक-धन—प्रेम ।
सेइ प्रेमेर भजने कृष्णधन	उसी प्रेम-भजनसे कृष्ण-धन
पाब शेषे ।	पाऊँगा अन्तमें ।
चिरदिन तिनि प्रेमेर अधीन;	सदा वे प्रेमके आधीन;
एबे प्रेमशून्य हृदि मोर,	अभी तो प्रेमशून्य हृदय मेरा
प्रीति-शून्य पराण आमार;	प्रीति-शून्य प्राण मेरे,
ताइ काँदितेछि अविरत दुःखे ।	इसीलिये रो रहा हूँ अविरत दुःखसे ।
(पुनराय पूजार आसने उपविष्ट हइया पूजा करिबार चेष्टा-करण)	(फिर पूजाके आसनपर बैठकर पूजा करनेकी चेष्टा करना)
श्रीविष्णुप्रिया—(निज मने)	**श्रीविष्णुप्रिया**—(स्वगत)
भगवाने प्रेम, भालबासा, प्रीति,	प्रेम, प्यार, प्रीति भगवानमें,
का'के बले जानि ना त आमि;	किसको कहा जाता है, जानती नहीं मैं तो,
बुझिब कि रूपे मर्म्म ए सकल कथार ?	समझूँगी कैसे मैं मर्म इन बातोंका ?
नयनेर जले	नयनोंके जलसे होती है
प्रेमपूजा भगवाने—	प्रेमपूजा भगवानकी—
नुतन तत्व शिखिनु आजि,	नयी बात सीखी है आज,
इँहार निकटे आमि ।	इनके समीप मैंने ।
गुरु इनि, दासी आमि;	गुरु हैं ये, मैं दासी;
हृदयेर धने,—प्राणेश्वरे,	हृदयके धन, प्राणेश्वरका
करिते हबे अश्रुजले आवाहन ।	करना होगा अश्रुजलसे आवाहन ।

ग्राज इङ्गिते, प्राणवल्लभ मोर
दिलेन एइ शिक्षा मोरे ।

(नेपथ्ये शचीमातार ग्राह्वान)

शचीमाता—

बउमा !
ह'ल कि निमायेर पूजा समापन ?
बहुक्षण भोग हयेछे प्रस्तुत,—
सब जे शीतल ह'ये गेल ।

श्रीविष्णुप्रिया—

ना मा !
पूजा एखनग्रो हय नाइ शेष;

श्रीगौराङ्ग—

(पुनराय पूजार ग्रासन त्याग करिया काँदिते-काँदिते बाहिरे ग्रागमन)

(श्रीविष्णुप्रियार प्रति)

विष्णुप्रिये !
पूजा नाहि ह'ल ग्राज,
पुनराय तितिल वस्त्र नयनेर नीरे,
नासिकार धारे तितिल उत्तरीय मोर,
पुनराय वस्त्र ल'ये एस;

(पुनराय वस्त्र दान)

श्रीगौराङ्ग—

(वस्त्र-परिवर्त्तन करिया श्रीविग्रहेर प्रति चाहिया)

मरि मरि !
कि सुन्दर बदनेर ग्राभा,
ग्राहा ! कि वा शोभा हेरि,
सोनार नूपुर परा चरण-युगेर ।
सुवलित बाहुयुगे
ग्रङ्गद-वलय किवा शोभे मनोहर;

ग्राज संकेतसे मेरे प्राण-वल्लभने
दी है यह शिक्षा मुझे ।

(नेपथ्यमें शचीमाताका पुकारना)

शचीमाता—

बहूरानी !
हुई सम्पन्न क्या पूजा निमाईकी ?
बहुत देरसे भोग तैयार है,
वह सब ठंढा हो गया है ।

श्रीविष्णुप्रिया—

नहीं माँ !
ग्रबतक भी हुई नहीं पूजा समाप्त ।

श्रीगौराङ्ग—

(पुनः पूजाका ग्रासन त्यागकर रोते-रोते बाहर ग्राना)

(श्रीविष्णुप्रियाके प्रति)

विष्णुप्रिये !
पूजा नहीं हुई ग्राज;
पुनः वस्त्र भीग गया नयनोंके जलसे,
नासिकाकी धारासे सिक्त उत्तरीय मेरा,
ग्राग्रो वस्त्र पुनः लेकर ।

(फिर वस्त्र देना)

श्रीगौराङ्ग—

(वस्त्र-परिवर्तन करके श्रीविग्रहकी ग्रोर देखकर)

बलिहार ! बलिहार !
कितनी मनोरम है मुख-ग्राभा !
ग्रहा ! कैसी ग्रपूर्व शोभा देख रहा—
धारण किये स्वर्ण-मञ्जीर पद युगलमें;
गोल-गोल बाहु-युगलमें
ग्रङ्गद-वलयकी कैसी मनोहारी शोभा;

पीन वक्षस्थले,
भृगुपद-चिह्न किवा शोभा धरे;
एस मोर कृष्णधन, हृदय-रतन,
बुके धरि जीवन जुड़ाइ;
(दुइबाहु प्रसारिया श्रीविग्रहके वक्षे
धारण ओ क्रन्दन)

पीन वक्षस्थलपर
भृगुपद-चिह्नकी शोभा अपार छायी।
आओ मेरे कृष्णधन ! हृदयरत्न !
छातीसे लगाकर शीतल करूँ प्राणोंको।
(दोनों बाँहोंको फैलाकर श्रीविग्रहको
छातीसे लगाना और क्रन्दन करना)
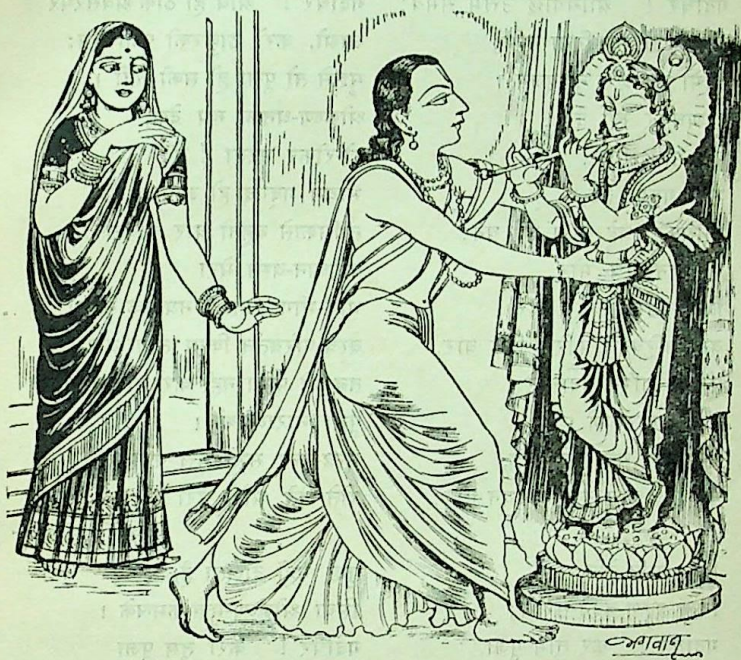
श्रीविष्णुप्रिया—(भय पाइया)
मागो ! मागो ! कि करेन इनि ?
ठाकुर धरिया वक्षे,
करिछेन रोदन।
मागो ! शीघ्र करि एस;

श्रीविष्णुप्रिया—(डरकर)
माँ ! माँ ! कर क्या रहे हैं ये !
ठाकुरजीको वक्षसे लगाकर
कर रहे हैं रोदन।
माँ ! जल्दीसे आओ;

भय लागे मोर,
देखि इँहार आश्चर्य्य व्यवहार;
(प्रस्थान)

(गदाधरेर प्रवेश)

श्रीगौराङ्ग—

(वक्ष हते श्रीविग्रह नामाइया)
गदाधर ! आसियाछ उत्तम समय;
विष्णुपूजा कर गिया तुमि;
आमा ह'ते ह'ल ना पूजन ।
कृष्णधनेर रूप देखे,
केँदे मरि आमि;
भावे गद्गद हइ,
नासिकाय बहे धारा घने घन;
परिधान-वस्त्र मोर,
भिजे जाय नयनेर नीरे ।
वस्त्र-परिवर्तन करिनु तिन बार,
तबुओ नारिनु सदाचारे
पूजिते नारायणे ।
मन्त्र-तन्त्र सब भूले गेछि,
केँदे-केँदे अन्ध ह'ल दु'नयन मोर;

किछु नाहि हेरि,
बिना कृष्ण-वदन-सरोज;
गदाधर ! कर तुमि पूजा,
आमि देखि द्वारे बसि,
कृष्णधने मोर ।

(शचीमातार प्रवेश)

श्रीगौराङ्ग—

मागो ! पूजा आर नाहि हबे
आमा दिये;

डर मुझे लग रहा,
देखकर इनका अद्भुत व्यवहार ।
(प्रस्थान)

(गदाधरका प्रवेश)

श्रीगौराङ्ग—

(छातीसे श्रीविग्रहको उतारकर)
गदाधर ! आये हो ठीक अवसरपर
जाओ, करो ठाकुरकी पूजा तुम;
मुझसे तो पूजा हो सकी नहीं ।
श्रीकृष्ण-धनका रूप देख,
रो-रोकर मरता हूँ मैं;
भावमें गद्गद हो जाता हूँ ।
नासिकासे बहती धार अविरल;
परिधान-वस्त्र मेरा
भीग-भीग जाता है नयनोंके नीरसे ।
वस्त्र-परिवर्तन किया तीन बार,
तब भी पाया नहीं कर आचार सहित
पूजा नारायणकी ।
मन्त्र-तन्त्र सभी भूल गया हूँ,
रोते-रोते आँखें मेरी हो गयीं
निर्ज्योति दोनों;
कुछ नहीं दीखता है,
सिवा श्रीकृष्ण-मुख-कमलके ।
गदाधर ! करो तुम पूजा
देखता हूँ बैठकर मैं द्वारपर
अपने कृष्णनिधिको ।

(शचीमाताका प्रवेश)

श्रीगौराङ्ग—

माँ ! पूजा अब नहीं होगी
मुझसे;

जननि ! तव गृहेर देवता,	जननी ! देवता तुम्हारे घरके,
साक्षात नन्दनन्दन,	साक्षात् नन्दनन्दन,
गोप-वेश, वेणु करे,	गोप-वेश, मुरली लिये करमें,
नयनेर कोने चेये । नन्दनन्दन कृष्ण	नयनोंके कोनेसे देख रहे । नन्दनन्दन कृष्ण
आमा सने कत रङ्ग करे;	मेरे साथ कितना खेल करते हैं;
मनचोरे धरि-धरि करि,	चलता हूँ बार-बार पकड़ने चितचोरको,
धरिते ना पारि;	पकड़ नहीं पाता हूँ ।
लुको चुरि क'रे लुकाय कोथाय,	लुका-छिपी करके कहीं छिप जाते हैं,
धरा नाइ देय मोरे;	पकड़में मेरी आते नहीं;
नयनेर जले बुक भेसे जाय,	नयनोंके जलमें डूब-डूब जाती है छाती,
केंदे मरि मनेर आवेगे;	रो-रोकर मरता हूँ मनके आवेगसे ।
परिधान-वस्त्र मोर हय अश्रुसिक्त,	परिधान-वस्त्र मेरा हो जाता है अश्रुसिक्त,
नासा मोर झरे अविरत;	नाक मेरी झरती है अविरत;
ताते पूजा नाहि हय ।	इसीसे पूजा नहीं हो पाती ।
करिनु मागो ! वस्त्र-परिवर्तन	माँ ! वस्त्र-परिवर्तन तो किया
बार-बार, तिन बार—	बार-बार, तीन बार—
पुत्रवधु जाने तव ।	पुत्रवधू जानती तुम्हारी है ।
तोमार नारायण,	तुम्हारे नारायणकी
आज ह'ते पूजिबे गदाधर ।	आजसे किया करेंगे पूजा गदाधर ।
अभाजन आमि,	निश्चय अपात्र मैं
आमा ह'ते ह'ल ना पूजन ।	मेरे द्वारा हो सकी न पूजा ।
गदाधर—	**गदाधर—**
प्रेमयोगे प्रेमपूजा कर तुमि प्रभु,	करते हो प्रेमपूजा प्रेमयोगसे प्रभु तुम,
जीव-शिक्षा तरे;	जीवोंको शिक्षा-प्रदान करनेके लिये;
स्वयं आचरिये शिक्षा दाओ तुमि	स्वयं आचरणकर देते हो शिक्षा तुम
कलिहत जीवे	कलिहत जीवोंको
अनुराग-भजन-पद्धति ।	अनुराग मय भजनपद्धतिकी ।
प्रेमपूजा, प्रीतिर भजन	प्रेम-पूजा, प्रीति-भजन
शिखाइते जगज्जीवे,	सिखानेको जगत्के प्राणियोंको
अवतार तव प्रभु,	अवतार हुआ है प्रभु ! तुम्हारा

एइ नदीयाय ।
प्रकृत भजन-पन्था
कृपा करि शिक्षा दिले तुमि
आजि मोरे;
उच्च अधिकारे अधिकारी क'रे
कृतार्थ करिले मोरे ।

शचीमाता--

बाप् विश्वम्भर ! बाप् गदाधर !
किछुइ ना बुझि आमि
तोमादेर ए सकल कथा;
जाओ बाप् गदाधर !
साङ्ग कर नारायण-पूजा आजि;
काल हते क'र तुमि पूजा ।
वेला तृतीय प्रहर हइल अतीत,
बाछा मोर पायनि प्रसाद,
बालिका वधुमाताओ उपवासी एतक्षण;
सोनार निमाइ मोर, गया ह'ते एसे,
उन्मत्त भावे,
कि जे करे,-कि जे भावे,--
कि जे बले,
किछुइ ना बुझि आमि;
बाप् गदाधर !
तुमि तार सङ्गे थेक अनुक्षण ।
जाओ बाप् ! साङ्ग करि
नारायण-पूजा
निमाइके करि सङ्गे
शीघ्र करि एस प्रसाद पाइते ।

(प्रस्थान)

इस नदियामें ।
यथार्थ भजन-पथकी
कृपा करके शिक्षा दी तुमने
आज मुझे;
उच्च अधिकारका अधिकारी बनाकर
किया कृतार्थ मुझे ।

शचीमाता--

तात विश्वम्भर ! तात गदाधर !
कुछ भी नहीं समझती मैं
बातें तुमलोगोंकी ये सब;
जाओ, तात गदाधर !
साङ्ग सम्पन्न करो नारायण-पूजा आज,
कलसे करना तुम्हीं पूजा ।
तीसरे पहरका समय भी गया बीत,
लालने मेरे प्रसाद नहीं ग्रहण किया,
बालिका बहूरानी भी निराहार अबतक है ।
सोनेका निमाई मेरा गयासे आनेपर
उन्मत्त भावसे
क्या वह करता है, क्या वह सोचता है,
क्या वह कहता है,--
कुछ भी नहीं समझती मैं ।
तात गदाधर !
तुम उसके साथ रहो प्रतिक्षण ।
जाओ तात ! साङ्ग सम्पन्नकर
नारायण-पूजा
निमाईको साथ ले
जल्दीसे आ जाओ प्रसाद ग्रहण करनेको

(प्रस्थान)

द्वितीय अङ्क ।

(तृतीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गेर शयनकक्ष;
काल—शेष रात्रि ।
श्रीविष्णुप्रिया देवी पालङ्के शयाना,
निद्राभङ्गे शय्यापार्श्वे स्वामीके
ना देखिया—

दृश्य—श्रीगौराङ्गका शयनकक्ष,
समय—रात्रिका पिछला पहर ।
श्रीविष्णुप्रिया देवी पलँगपर सोई हैं,
निद्राभङ्ग होनेपर शय्यापर स्वामीको
न देखकर—

श्रीविष्णुप्रिया—

कइ ? तिनि कइ ?
कोथा गेलेन तिनि शय्या छाड़ि ?
एइ काल रात्रिशेषे,
एइ भावे शय्यात्याग,
लक्षण भाल नाहि बुझि ।
कपाल भाङ्गिल बुझि मोर,
स्वप्न बुझि हइल सफल ।
ना––ना––ताओ कि ह'ते पारे,
गुणमणि मोर ना बलि आमाके,
करिबेन एइ निदारुण काज—
स्वप्न-अगोचर ।
ना,—ना,—ताँहा हते एइ काज
हबे ना कखन ।
परिहास क'रे––छल क'रे,
बुझि तिनि आछेन लुकाये गृहकोणे ।
देखि आलो ज्वालि,
खुँजि प्राणनाथे;
(वाति ज्वालन एवं गृहकोण
अन्वेषण)

श्रीविष्णुप्रिया—

कहाँ ? अरे, कहाँ वे ?
कहाँ चले गये वे शय्या छोड़कर ?
इस समय, पिछले पहरमें,
इस प्रकार शय्या-त्याग !
लक्षण शुभ दीखते नहीं ।
फूट गया भाग मेरा, लगता है मुझे;
मेरी जान सपना सच होकर ही रहा ।
नहीं नहीं, यह भी क्या हो सकता है ?
गुणमणि मेरे मुझको कहे बिना
करेंगे भला, यह अतिशय दारुण कार्य—
स्वप्नमें भी असम्भव ।
नहीं, नहीं, उनके द्वारा यह कार्य
कभी नहीं होगा ।
परिहासपूर्वक,––छल करके,
लगता है छिप गये हैं घरके कोनेमें वे ।
देखूँ जलाकर दीप,
खोजूँ प्राणनाथको ।
(वत्ती जलाना एवं घरके कोने-कोनेमें
खोजना)

कइ, गृहेते तिनि त नाइ,--	कहाँ ! घरमें तो नहीं हैं वे—
देखि पालङ्केर नीचे,	देखूँ पलँगके नीचे भी,
पाइ यदि खुँजे ताँरे ।	शायद खोज पाऊँ उन्हें ।
(पालङ्केर निम्नदेश अन्वेषण)	(पलँगके नीचे खोजना)
कइ ? तिनि जे एखानेओ नाइ,	कहाँ ? वे तो यहाँ भी नहीं,
देखितेछि द्वार वद्ध बाहिर हइते,	देखती हूँ द्वारको बंद बाहरकी ओरसे
खुले जाइ आङ्गिनाय,	खोल चलूँ आँगनमें
देखि गिया, गुणमणि यदि,	देखूँ जाकर, गुणमणि यदि
परिहास छले, आछेन दाँड़ाये बाहिरे ।	परिहासके मिससे बाहर खड़े हों ।
(द्वार उन्मुक्त करिया बाहिरे गमन)	(द्वार खोलकर बाहर जाना)
कइ ? एखानेओ देखि ना त ताँरे,--	कहाँ ? यहाँ भी तो देखती न उनको हूँ,--
शेष रात्रि,	रात्रिका पिछला पहर है,
एखनओ आछे अन्धकार;	छाया अंधकार अब भी;
नीरवता चारि दिके,	नीरवता चारों ओर,
मध्ये-मध्ये शुधु मात्र शुनि	बीच-बीचमें सुन पड़ता है केवल,
शृगालेर रव,—अमङ्गल-चिह्न;	शब्द शृगालका,—अमङ्गल-सूचक;
काँपितेछे भये हृदि मोर ।	काँपता है भयसे हृदय मेरा ।
जाइ,—त्वरा करि, डाकि गिये माके;	जाऊँ, फिर जल्दीसे माँको पुकारूँ मैं;
दुइ जने मिलि,	दोनों जने मिलकर,
खुँजि ताँरे गृहे ओ बाहिर ।	खोजें उन्हें घरके भीतर और बाहर भी ।
(शचीमातार गृहद्वारे कराघात एवं क्रन्दन)	(शचीमाताके कमरेके दरवाजेको हाथसे पीटना और रोना)
मागो ! उठ उठ,	माँ ! उठो-उठो,
उठ त्वरा करि;	उठो जल्दीसे;
पुत्र तव गृहे नाइ,	तुम्हारे पुत्र घरमें नहीं,
शून्य गृहे एकाकिनी आमि ।	मैं हूँ अकेली सूने घरमें ।
भय पाइ मने, आइनु तोमार काछे;	मनमें भयभीत हो, आयी हूँ तुम्हारे पास;
द्वार खोल मागो !	द्वार खोलो, माँ !
कपाल भाङ्गिल बुझि मोर;	जान पड़ता फूट गया भाग्य मेरा ।
(शचीमातार अर्द्धनग्नावस्थाय द्वार-उन्मोचन एवं बाहिरे आगमन)	(शचीमाताका अर्द्धनग्नावस्थामें द्वार खोलना और वाहर आना)

शचीमाता—
वउमा ! कि ? कि वलिले तुमि ?
निमाइ आमार नाइ गृहे !
एइ रात्रिशेषे बाछाधन
कोथा गेल तोमाके एकाकिनी रेखे ?
सोनार निमाइ चाँद, वाप्रे आमार,
दुखिनी जननी फ़ेलि;
ना वलि काहाके किछु,
कोथा गेलि तुइ ?
चल, चल, वउमा !
अग्रे तार घर खुँजे आसि;
त्वरा करि चल, ना कर विलम्ब आर।
(उभये एकत्रे प्रदीप हस्ते शयनकक्षे गमन एवं अन्वेषण)

श्रीविष्णुप्रिया--(काँदिते-काँदिते)
मागो ! खुँजियाछि आमि सब आगे,
नाहि देखि ताँहारे कोथाओ;
तवे गियेछिनु तव काछे।
अभागिनी आमि,
भेङ्गेछे कपाल मोर,
जनमेर तरे;
बुझेछि आमि, गियाछेन तिनि
नवद्वीप छाड़ि ।
(क्रन्दन एवं भूमितले उपवेशन)

शचीमाता—
वउमा ! धैर्य्य धर,
काँदिओ ना तुमि,
निमायेर आमार अकल्याण हवे;
चल, दुइ जने गिये खुँजि
गृहेर वाहिरे ।

शचीमाता —
बहूरानी ! क्या ? क्या कहा तुमने ?
मेरा निमाई घरमें नहीं है !
रातके इस पिछले पहरमें प्यारा लाल
कहाँ गया तुमको अकेली छोड़ ?
सोनेके निमाई चाँद ! वत्स मेरे !
दुःखिनी जननीको त्याग,
कहे बिना किसीको कुछ,
कहाँ तुम चले गये ?
चलो, चलो, बहूरानी !
पहले उसके कक्षमें ही खोज लें;
जल्दीसे चलो, अब करो न विलम्ब और।
(दोनोंका हाथमें दीपक लिये एक साथ शयनकक्षमें जाना और खोजना)

श्रीविष्णुप्रिया —(रोते-रोते)
माँ ! खोज लिया है सर्वत्र मैंने पहले ही,
नहीं उनको देख पायी कहीं भी;
तभी तो गयी थी तुम्हारे पास ।
अभागिनी हूँ मैं,
फूट गया भाग्य मेरा,
जन्म भरके लिये;
जान गयी मैं, चले गये वे
नवद्वीप छोड़कर ।
(रोना और पृथ्वीतलपर बैठ जाना)

शचीमाता—
बहू माँ ! धैर्य धरो,
रोओ मत तुम,
निमाईका मेरे अकल्याण होगा;
चलो दोनों जने जाकर खोजें
बाहर भवनके ।

दाँड़ाइये द्वारे,	द्वारपर खड़ी हो,
उच्चैःस्वरे डेके देखि	ऊँचे स्वरसे देखूँ पुकारकर,
बाप् विश्वम्भर थाके यदि	लाल विश्वम्भर हो यदि
लुकाये कोथाओ ।	छिपा कहींपर ।
(दुइ जने मिलिया प्रदीप हस्ते समस्त आङ्गिना अन्वेषण, बहिर्द्वारे गिया शचीमातार क्रन्दन)	(दोनोंका हाथमें दीपक लिये हुए समस्त आँगनमें खोजना, द्वारके बाहर जाकर शचीमाताका क्रन्दन करना)
शचीमाता—	**शचीमाता—**
निमाइ ! निमाइ ! बाप् विश्वम्भर !	निमाई ! निमाई ! बेटा विश्वम्भर !
कोथा गेले तुमि ?	कहाँ गये तुम ?
बाप् धन ! फिरे एस गृहे;	लालमणि ! लौट आओ घरमें;
शेष रात्रि काले	निशाके पिछले पहरमें,
माघेर एइ दारुण शीते,	माघमासके इस दारुण शीतमें
गेछ कि गङ्गास्नाने बाप् ?	गये हो क्या गङ्गास्नान हेतु, लाल ?
बाप् रे ! निमाइ रे !	लाल रे ! निमाई रे !
कोथा गेलि तुइ,	कहाँ गया तू,
दुखिनी जननी फेलि ?	दुःखिनी जननीको त्याग ?
बाप्धन, प्राणधन, अञ्चलेर निधि,	लालमणि ! प्राणधन ! अञ्चलनिधि !
तिल अदर्शने पलके हाराइ तोमा;	तिल मात्र पलकान्तर अदर्शनसे खो बैठती हूँ तुम्हें;
केन बाप् ! निदारुण एत तुइ	वत्स ! क्यों इतना हुआ निर्मम तू
वृद्धा शोकातुरा जननीर प्रति ?	वृद्धा, शोकातुरा जननीके प्रति ?
विष्णुप्रिया, सरला अबला बाला,	विष्णुप्रिया, सरला, अबला बाला
तोमा भिन्न किछुइ ना जाने;	जानती सिवा तुम्हारे कुछ भी नहीं;
तार प्रति एत केन अकरुण ?	उसके प्रति इतने अकरुण क्यों ?
तुमि बाप् ! एस बाप् चले एस !	लाल तुम ! आओ तात ! चले आओ !
यदि तुमि लुकाये थाकह कोथाओ ।	यदि तुम हो छिपे कहीं भी ।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
मागो ! काँपितेछे मोर	माँ ! काँप रहा मेरा
सर्व्व अङ्ग थर-थर,	सकल अङ्ग थर-थर,

देह ह'ते निरन्तर बाहिरिछे	शरीरसे निकल रहा निरन्तर
काल घाम;	मरण-काल-जैसा स्वेद;
शुष्क कण्ठ,—शुष्क तालु,	शुष्क कण्ठ, शुष्क तालु,
वाक्य नाहि सरितेछे मुखे।	वाक्य नहीं मुखसे निकलता है।
दाँड़ाइते ना पारि ग्रामि,—	पाती न रह खड़ी मैं,—
शुइ ग्रामि हेथा।	सोती हूँ यहीं मैं।
(ग्राङ्गिनाये पतन)	(ग्राँगनमें गिर पड़ना)
शचीमाता—	**शचीमाता—**
हाय! हाय! कि ह'ल ग्रामार?	हाय, हाय! क्या हुई दशा मेरी?
केह नाहि हेथा, काके डाकि ग्रामि?	कोई नहीं यहाँ, किसको पुकारूँ मैं?
कि करे बुझाइ बौमाके?	कैसे समझाऊँ बहू माँको?
हा विधातः! ए वृद्ध वयसे,	हा विधाता! इस वृद्धावस्थामें,
ग्रभागिनीर दग्ध कपाले	ग्रभागिनीके झुलसे कपालमें
एइ कि लिखियाछिले?	यही क्या लिखा था?
(कपाले कराघात, ग्रो वहिर्द्वारे उपवेशन)	(कपालको हाथसे पीटना ग्रौर वाहरी द्वारपर वैठना)
(नदियार व्राह्मण पण्डितगणेर प्रातः-स्नाने गमन एवं शचीमातार प्रश्न)	(नदियावासी व्राह्मण पण्डितगणोंका प्रातःस्नानके लिये जाना एवं शचीमाताका उनसे पूछना)
शचीमाता—	**शचीमाता—**
ग्रोगो! तोमरा के? ग्रामार निमाइ चाँद के कि तोमरा देखेछ? बाछा ग्रामार रात्रिशेष माघेर एइ दारुण शीते कोथाय गेल? ग्रोगो! तोमरा यदि तारे गङ्गास्नाने देखिते पाग्रो, तोमादेर पाये धरि, ताके बल तोमार मा तोमाके ना देखे पागलिनीर मत द्वारे व'से काँदछेन ग्रार माथा कूट्छेन।	ग्रहो! कौन हो तुम? मेरे निमाई चाँदको तुमलोगोंने देखा है क्या? मेरा लाल रात्रिके पिछले पहरमें माघके इस दारुण शीतमें कहाँ चला गया? सुनो, तुमलोग यदि उसको गङ्गा-स्नान करते देख पाग्रो तो, तुम्हारे पैर पकड़ती हूँ, उससे कहना—तुम्हारी माँ तुमको न देखकर पगलीकी भाँति द्वारपर बैठी रोती ग्रौर माथा कूटती हैं।

प्रथम ब्राह्मण--
मा ! तुमि स्थिर हओ, धैर्य्य धर,
एखनि आमरा गिए निमाइ पण्डितके
यदि देखिते पाइ, तोमार निकट एने
हाजिर करे दिब ।

शचीमाता--
बाबा ! तोमरा बेंचे थाक,
चिरजीवी हओ, आमार निमाइके एने
दाओ ! ताके ना देखे आर आमि
स्थिर थाकते पाच्चिने । निमाइ रे !
बाप् रे ! तुइ कोथाय गेलि रे !
शीघ्र आय, आर दुःख दिस्ने बाप् !

द्वितीय ब्राह्मण--(मने-मने)
पुरन्दरपत्नीर कि प्रगाढ़ पुत्रस्नेह !
एइ स्नेहेर शतांशेर एकांशओ
यदि भगवाने अर्पित हय, ताहा हइले
स्वयं भगवान तुष्ट हये दर्शन देन ।
आहा ! एइ दुखिनी वृद्धार पुत्रटि
बद्ध पागल । ब्राह्मण पण्डितेर
छेले विद्या शिक्षा करिया एमन जे
हस्तीमूर्ख हय--ताहा पूर्व्वे आमरा
जानिताम ना, एइ प्रथम देखिलाम ।
पुरन्दरपत्नी बड़इ अभागिनी

(प्रस्थान)

(श्रीवास पण्डितेर प्रवेश)

श्रीवास--
मा ! भोर रात्रिते माघेर एइ दारुण शीते
तुमि दुयारे बसे केन ?
कि हयेछि मा ?

प्रथम ब्राह्मण--
माँ ! तुम स्थिर होओ, धैर्य धरो,
हमलोग अभी जाकर निमाई पण्डितको
यदि देख पायेंगे तो तुम्हारे निकट लाकर
उपस्थित कर देंगे ।

शचीमाता—
बाबा ! तुम जीते रहो, चिरजीवी
हो, मेरे निमाईको ला दो । उसको
देखे बिना अब मैं चैन नहीं पा रही ।
निमाई रे ! लाल रे ! तू कहाँ गया
रे ! शीघ्र आ, और दुःख न दे, मेरे
लाल !

द्वितीय ब्राह्मण—(स्वगत)
पुरन्दर-पत्नीका कितना प्रगाढ़ है पुत्रस्नेह !
इस स्नेहके शतांशका एक अंश भी
यदि श्रीभगवान्में अर्पित हो तो
स्वयं भगवान तुष्ट होकर दर्शन दें ।
अहा ! इस दुःखिनी वृद्धाका पुत्र
नितान्त पागल है ! ब्राह्मण पण्डितका
पुत्र विद्या पढ़कर ऐसा वज्रमूर्ख हो सकता
है--यह हम पहले नहीं जानते थे, ऐसा
पहले ही पहल देखा है। पुरन्दरपत्नी
बड़ी अभागिनी है ।

(प्रस्थान)

(श्रीवास पण्डितका प्रवेश)

श्रीवास--
माँ ! प्रातमुखी रातमें, माघके इस दारुण
शीतमें तुम द्वार पर क्यों बैठी हो ?
क्या बात है माँ ?

शचीमाता—(काँदिते-काँदिते)
पण्डित श्रीवास !
भाङ्गा कपाल अभागिनीर
भेङ्गेछे आबार ।
ऐ देख,—शून्य करि गृहे मोर,
आँधार करिया घर-द्वार,
आँधार घरेर माणिक,--
सोनार निमाइ चाँद आमार,
रात्रिशेषे चलि गेछे कोथा ?
खुँजिलाम गृहद्वार,--अङ्गन-बाहिर,
पाठा'लाम लोक गङ्गातीरे,
कइ ? एखनओ त आसिल ना,
घरे फिरे निमाइ आमार ।
ऐ देख,--सोनार बौमा आमार,
मृतवत धुलाय लुटाय अङ्गिनाय पड़ि;
(विष्णुप्रियार प्रति चाहिया)
बाछारे ! कि दारुण दुःख तुमि
सहितेछ प्राणे ?
राजराणी तुमि,--
अनाथिनी, भिखारिणी मत
धुलाते शयान आजि;
हा दग्ध कपाल मोर !
देखिते हइल ए पोड़ा नयने--
एइ निदारुण दृश्य आजि;
प्राण फेटे जाय,
बुकेर माझे ज्वले भीषण अनल !
निमाइ रे ! बाप् रे !
कोथाय आछिस तुइ ?
देखे जा,--एक बार एसे,
कि दशा ह'येछे दुखिनी मायेर तोर;

शचीमाता--(रोते-रोते)
पण्डित श्रीवास !
अभागिनीका फूटा कपाल
पुनः फूट गया ।
यह देखो, सूना कर घर मेरा,
डुबा अन्धकारमें घर-बार,
अँधेरे घरका माणिक्य,--
सोनेका निमाई चाँद मेरा,
रात्रिके पिछले पहरमें कहाँ चला गया ?
खोज चुकी घर-द्वार, आँगनमें, बाहर भी,
भेजा लोगोंको गंगाके तीरपर ।
कहाँ ? अब भी तो आया नहीं,
घरपर लौटकर निमाई मेरा ।
देखो यह, स्वर्णकी प्रतिमा बहू माँ मेरी
मृतवत् धूलमें पड़ी है आँगनमें गिरकर
(विष्णुप्रियाकी ओर देखकर)
लाली रे ! दारुण दुःख कितना तुम
प्राणोंपर झेल रही ?
तुम जो राजरानी,--
अनाथिनी, भिखारिणी सम
धूलमें पड़ी हो आज;
हाय ! झुलसा हुआ भाग्य मेरा ।
देखना पड़ा इन जली आँखोंसे
यह महा दारुण दृश्य आज;
प्राण फटे जाते हैं,
छातीमें जलती है भीषण आग !
निमाई ! लाल रे !
कहाँ है तू ?
देख जा एक बार आकर,
क्या दशा हुई है दुखिया माँकी तुम्हारी;

राजराणी बौमा आमार	राजरानी बहू माँ मेरी
मृतवत पड़िये रयेछे भूमितले ।	मृतवत् पड़ी हुई है पृथ्वीपर ।
मुखे तार वाणी नाइ;	मुखमें उसके वचन नहीं,
प्राण तार आछे कि ना आछे देहे—	प्राण उसके हैं अथवा नहीं शरीरमें—
के बलिते पारे ?	कौन कह सकता है ?
उठिवार शक्ति नाइ मोर,	उठनेकी शक्ति नहीं मुझमें है,
केमने बा जाइ तार काछे ।	कैसे भला, जाऊँ उसके समीप ।
(द्वारदेशे पतन)	(दरवाजेपर गिर पड़ना)
(श्रीवास पण्डित शशव्यस्ते शचीमातार शुश्रूषाय व्यस्त हअोन)	(श्रीवास पण्डितका अत्यन्त आतुर होकर शचीमाताकी शुश्रूषामें लगना)
(मालिनीर सह प्रतिवेशिनीगणेर प्रवेश)	(मालिनीके साथ पड़ोसी स्त्रियोंका प्रवेश)
श्रीवास—	**श्रीवास**—
(मालिनीर प्रति)	(मालिनीसे)
हइयाछे सर्व्वनाश !	हो गया सर्वनाश,
नवद्वीपचन्द्र चलि गेछेन नवद्वीप छाड़ि;	नदिया-चाँद चले गये छोड़कर नदियाको;
जाअो शीघ्र करि,—जल आन,—	जाओ जल्दीसे,—जल लाओ,—
मूर्च्छिता हये छेन गौराङ्ग-जननी ।	मूर्च्छित हो गयी हैं गौराङ्ग-जननी ।
देख गिये शीघ्र करि	देखो जा शीघ्रतासे
श्रीविष्णुप्रिया कि आछेन जीविता ?	श्रीविष्णुप्रिया बची है क्या जीवित ?
(जलहस्ते ईशानेर प्रवेश)	(हाथमें जल लिये ईशानका प्रवेश)
(श्रीविष्णुप्रियाके क्रोड़े लइया मालिनी देवीर उपवेशन)	(श्रीविष्णुप्रिया देवीको गोदमें लेकर मालिनीदेवीका बैठना)
ईशान—	**ईशान**—
(काँदिते-काँदिते)	(रोते-रोते)
पण्डित ! बड़ भाग्यहीन आमि,	पण्डित ! बड़ा भाग्यहीन मैं,
अधम कुक्कुर ।	अधम कुक्कुर ।
कोले पिठे क'रे,	गोदमें बिठाकर, पीठपर चढ़ाकर,
मानुष करेछि आमि नदीयार चाँदे	बड़ा किया है मैंने नवद्वीपचन्द्रको
शिशुकाल ह'ते;	शैशव अवस्थासे;
महापापी आमि,—नराधम आमि,	महापापी मैं—नराधम मैं,

उपयुक्त शास्ति मोर हइल एबार।	उचित दण्ड मुझको मिला इस बार।
एखन काके देखि आमि ?	अब किसको सँभालूँ मैं,
किवा करि आमि ?	अथवा करूँ ही क्या ?
नदे छाड़ि गियाछेन नदीयार राजा,	नदियाको छोड़ गये नदियाके राजा,
नदीयार राणी धूलाय लुण्ठिता,—	धूलमें लोट रही हैं नदियाकी रानी
राजमाता पथेर भिखारिणी आजि,	राजमाता हुई हैं पथकी भिखारिन आज,
शून्य गृहद्वार जेन गिलिवारे चाहे।	सूना घर-द्वार मानो निगल जाना चाहता।
सब अन्धकार,—सब म्रियमाण,	सर्वत्र अन्धकार,— सभी म्रियमाण,
नवद्वीपचन्द्र गियाछेन चलि,	चले गये नवद्वीपचन्द्र
नवद्वीप छाड़ि;	नवद्वीप छोड़कर;
आर नाहि फिरिवेन गृहे !	अब नहीं लौटेंगे घरमें।
आर ना हेरिब ताँर रातुल चरण,	अब नहीं देखूँगा उनके अरुण चरणोंको,
आर नाहि भाग्ये हवे मोर	और नहीं मिलेगा सौभाग्य मुझे
धौत करिते ताँर चरण युगल।	प्रक्षालित करनेका उनके युगल चरणको।
शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित सेवा	शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित सेवा
बहु भाग्ये पेयेछिनु आमि,	मैंने प्राप्त की थी बड़े भाग्यसे,
ताँर कृपाबले;	उनकी कृपाशक्तिसे;
मोर पापे,	अपने पापोंसे
एवे वञ्चित हइनु ताते।	वञ्चित हुआ उससे अब।
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)
(शचीमातार मूर्च्छाभङ्गे उत्थान)	(शचीमाताका मूर्च्छाभङ्ग होनेपर उठना
शचीमाता—	**शचीमाता—**
कइ निमाइ ? कोथाय निमाइ ?	कहाँ निमाई ? निमाई कहाँ ?
विश्वम्भर ! बाप्रे ! कोथा गेले तुइ ?	विश्वम्भर ! लाल रे ! कहाँ गया तू ?
(श्रीवास पण्डितेर हात धरिया काँदिते-काँदिते)	(श्रीवास पण्डितका हाथ पकड़कर रोते-रोते)
पण्डित श्रीवास ! जाओ तुमि,	पण्डित श्रीवास ! जाओ तुम,
ना कर विलम्ब तिलार्द्ध आर;	न करो विलम्ब क्षणार्द्धका भी और;
जेखानेते पाओ, सोनार निमाइचाँदे,	जहाँ पाओ सोनेके निमाई चाँदको

घ'रे ल'ये एस निकटे ग्रामार ।
तुमि सबे प्रियजन तार
सबे मिले कर ग्रन्वेषण ग्रविलम्बे,—
कोथा गेल बाप् विश्वम्भर ?

(शचीमाताके मालिनी देवीर क्रोड़े करण)

मालिनी—

दिदि ! शान्त कर मन, रोदन संवर,
क्रन्दनेर स्वर तव,
यदि जाय काने,
विष्णुप्रिया पुनः हबे ग्रचेतन;
बहु कष्टे मूर्च्छा भङ्ग ह'येछे ताहार ।
तुमि यदि दिदि ! धैर्य्य नाहि धर,
ना संवर रोदन,
रक्षा करा हबे भार,
श्रीविष्णुप्रियार प्राण ।

शचीमाता—

भगिनी ! जाग्रो तार काछे तुमि,
हेथा ग्रामि रहि एकाकिनी;
ग्रामि गेले दुःख तार, बाड़िबे द्विगुण,
बाड़िबे ग्रन्तर ज्वाला,—
बाड़िबे हृदयेर व्यथा शतगुणे तार ।
ग्रार ग्रामि काँदिब ना,—
ग्रार ना करिब हाहाकार पथे ब'से,
सुधु ग्रामि ब'से थाकि पथपाने चेये,
यदि पाइ निमाइ चाँदेर दरशन ।

(भक्तगण सह श्रीनित्यानन्देर प्रवेश)

पकड़कर लाग्रो यहाँ पास मेरे !
तुम सब प्रियजन हो उसके,
सब मिलकर खोजो ग्रविलम्ब,—
कहाँ गया मेरा लाल विश्वम्भर ?

(मालिनी देवीका शचीमाताको गोदमें लेना)

मालिनी—

दीदी ! शान्त करो मन, रोना बंद करो,
क्रन्दन-स्वर तुम्हारा,
यदि पड़ेगा कानोंमें,
विष्णुप्रिया पुनः होगी ग्रचेतन;
बड़ी कठिनाईसे मूर्च्छा टूटी है उसकी ।
तुम यदि दीदी ! धैर्य नहीं धरोगी,
ग्राँसू नहीं रोकोगी,
कठिन बन जायगा बचाना,
विष्णुप्रियाके प्राणोंको ।

शचीमाता—

बहिन ! जाग्रो पास उसके तुम,
यहाँ मैं बैठी हूँ ग्रकेली;
मेरे वहाँ जानेसे दुःख उसका होगा दूना,
बढ़ेगी ग्रन्तर्ज्वाला,—
बढ़ेगी हृदय-व्यथा शतगुनी उसकी ।
ग्रब मैं ग्रौर न रोऊँगी,—
ग्रौर हाहाकार करूँगी न पथमें बैठकर;
केवल मैं बैठी हूँ पथको निहारती,
कदाचित् देख पाऊँ निमाई चाँदको ।

(भक्तगणके साथ श्रीनित्यानन्दका प्रवेश)

गीत

श्रीनित्यानन्द—	**श्रीनित्यानन्द—**
व्रज छाड़ि, भाइ कानाइ	आज छोड़कर व्रजको मथुरा
आजि गेछे मथुराय।	गया कन्हैया भैया।
यशोमती माता काँदे	रही द्वारपर खड़ी-खड़ी है
दुयारे दाड़ाइ॥	विलख यशोदा मैया॥
व्रजवासी नारी - नरे,	व्रजवासी सारे नारी-नर,
सवाइ काँदे उच्चैःस्वरे,	फूट-फूट रोते ऊँचे स्वर,
राखाल वालक डाके	रहे पुकार गोपवालकगण
भाइरे कानाइ।	कान्हा कहाँ, वताओ।
खूंजते तारे जाव सवे,	उसे खोजने चलो, चलेंगे,
आय तोरा आय॥	आओ रे तुम आओ॥
(शचीमाताके देखिया)	(शचीमाताको देखकर)
एकि ? शचीमातार चोखे	यह क्या ? शचीमाताकी आँखोंमें
नाइ जल,	जल नहीं,
निष्पन्द शरीर;	निष्पन्द शरीर;
वाक्य नाहि मुखे,	वाणी नहीं मुखमें,
चेये आछेन पथपाने, उदास नयने।	देख रहीं पथकी ओर उदास नयनोंसे।
आमि जे दाँड़ाये काछे,	मैं जो खड़ा पासमें,
से ज्ञानओ नाइ ताँर।	उसका भी ज्ञान उन्हें नहीं।
हाहाकार चारि दिके	हाहाकार चारों ओर,
आर्त्तनाद गृहेर भितरे,	आर्तनाद भीतर गृहके,
पथ माझे महा कोलाहल;	पथमें महा कोलाहल;
कर्णे ताँर किछु नाहि जाय;	कानोंमें उनके किंतु कुछ नहीं जा रहा है।
ना कोन ज्ञान ताँर;	नहीं कोई ज्ञान उन्हें;
सुधु अनिमेष चोखे,	केवल नयनोंसे अनिमेष
चेये आछेन पथपाने,	देख रही हैं पथकी ओर
पागलिनी मत गौराङ्ग-जननी।	पगली समान गौराङ्ग-जननी।
निमाइ आसिबे फिरि गृहेते आबार,	निमाई आयेगा लौटकर घरको पुनः,
एइ आशे,—बुक बाँधि,	यही आशा बाँधकर
ब'से आछेन शचीमाता,	बैठी हैं शचीमाता,

पथपाने चेये ।	निहारतीं पथकी ओर ।
पुत्रस्नेहेर पराकाष्ठा इहा,	पुत्र-स्नेहकी यही पराकाष्ठा,
वात्सल्यभाव-समुद्रेर सीमा इहा;	वात्सल्य-भावोदधि की सीमा यह;
एइ स्नेहवशे,	इसी स्नेह-वश
हयेछिलेन बद्ध प्रेमपाशे,	हुए थे बद्ध प्रेम-पाशमें,
नन्दनन्दन यशोदामातार काछे ।	नन्दनन्दन माता यशोदाके समीप ।
यशोदानन्दन जेइ,—	यशोदानन्दन जो,—
शचीर नन्दन सेइ;	शचीनन्दन भी वही;
मा यशोदा जिनि, शचीमाता तिनि ।	माँ यशोदा जो, शचीमाता भी वे ही ।
ल'ये द्वापरेर जत सब परिकर,	साथ ले द्वापरके जितने सब परिकर थे,
नन्दनन्दन हरि,	नन्दनन्दन हरि
नदीयाय अवतीर्ण,—लीला तरे;	नदियामें अवतरित,—लीला हेतु;
ताइ एइ लीला अभिनय ।	इसीलिये अभिनय इस लीलाका ।
कलिहत जीवेर कठिन हृदय	कलिग्रस्त जीवोंका कठिन हृदय
द्रवाइते सकरुण लीला रसे,	द्रवित करनेके लिये लीलारस सकरुणसे,
लीलामय श्रीगौराङ्गेर	लीलामय श्रीगौराङ्गका
एइ प्राणघाती लीला-अभिनय ।	यह प्राणघाती लीला-अभिनय ।
सबइ जानि,—सकलि बुझि;	सभी जानता हूँ, समझता भी हूँ सब;
किंतु प्रभुर	किंतु प्रभुकी
मोहकरी वैष्णवी मायावशे,	मोहकरी वैष्णवी मायावश,
एखन अभिभूत सबे ।	इस समय अभिभूत सभी ।
भगवानेर लौकिकी लीला,—	भगवान्‌की लौकिक-लीला
लोक शिक्षा तरे	लोक-शिक्षाके लिये;
अतएव करणीय इहा ।	अतएव सम्पन्न होना उचित है इसका ।
(शचीमातार गलदेशे बाहु-वेष्टन करिया स्नेह भरे)	(शचीमाताके गलेमें बाँह लपेटकर स्नेहपूर्वक)
मागो ! संवर रोदन, सुस्थ कर चित्त,	माँ ! बंद करो क्रन्दन, स्वस्थ करो चित्त,
हृदे धर बल;	हृदयसे धैर्य धरो;
छुटियाछे चारि दिके भक्तवृन्द सबे	छूटे हैं चारों ओर भक्तवृन्द सब-के-सब
तव पुत्रे अन्वेषणे,—	खोजनेके लिये तुम्हारे पुत्रको ।

आमिओ जाइतेछि ।	**मैं भी जा रहा हूँ ।**
जेखानेते पाइ,	**पाऊँगा जहाँ भी**
धरिया आनिब तव पुत्रे	**पुत्रको तुम्हारे, पकड़कर लाऊँगा**
तव काछे;	**तुम्हारे पास;**
वाक्य मोर करह विश्वास ।	**बातपर मेरे करो विश्वास ।**
निन्यानन्द आमि—	**नित्यानन्द हूँ मैं—**
गौराङ्गेर अभिन्नहृदय ।	**अभिन्नहृदय गौराङ्गका ।**
शचीमाता—(सचकिते)	**शचीमाता**—(चकित भावसे)
ओके ? बाप् निताइ ।	**कौन वह ! लाल निताई ?**
एसेछ,—एस बाप् धन,	**आये हो ? आओ, प्रिय वत्स !**
कोले एस,—	**गोदीमें आओ,**
जुड़ाओ मोर तापित हृदय ।	**शीतल करो तप्त हृदय मेरा ।**
निताइ !	**निताई !**
कइ, आमार निमाइ कोथाय ?	**कहाँ, मेरा निमाई कहाँ है ?**
एका कोथा तारे फेलि,	**छोड़ अकेले कहाँ उसको**
तुइ एलि एथा ?	**आया तू यहाँ है ?**
छोट भाइ तोर,	**लघु भ्राता तेरा,**
दूधेर छेले निमाइ आमार;	**दुधमुहा निमाई मेरा;**
निश्चिन्त छिनु आमि,	**निश्चिन्त थी मैं**
रेखे तारे तोर काछे ।	**तेरे पास रख उसे ।**
निशिदिन थाकित से	**निशिदिन रहता वह**
सङ्गे-सङ्गे तोर ।	**साथ-साथ तेरे ।**
कोथा तारे रेखे एलि बाप् ?	**कहाँ उसे रख आये, तात ?**
बल मोरे शीघ्र करि,	**कहो मुझे जल्दीसे,**
निमायेर आदर्शने प्राण फेटे जाय;	**निमाईको देखे बिना प्राण फटे जाते हैं;**
निमाइरे ! बाप्रे !	**निमाई रे ! लाल रे !**
श्रीपाद नित्यानन्द तोर,	**श्रीपाद नित्यानन्द तेरे,**
दाँड़ाये दुयारे;	**खड़े द्वारपर**
एस बाप विश्वम्भर !	**आओ, लाल विश्वम्भर !**

कर अभ्यर्थना तारे मधुभाषे ।
नित्यानन्द छिल तव प्राण,
तुमि छिले नितायेर प्राण,
एकिला निताये हेरि एबे,
गेल मोर सब आशा दूरे,—
प्राण मोर बड़इ कठिन ।
(क्रन्दन)

करो अभ्यर्थना उनकी मधुर वाणीसे ।
नित्यानन्द थे तुम्हारे प्राण,
तुम थे प्राण निताईके;
देख निताईको अकेले अब
टूट गयी सब आशा मेरी—
प्राण मेरे बड़े ही कठोर हैं ।
(क्रन्दन)

गीत

श्रीनित्यानन्द—

जाछि मोरा, आनते गोरा,
हृदय - रतन ।
आनबो तारे, हाते धरे,
(मागो) सुस्थ कर मन ।
जे खाना ते थाक्ना केन,
(तारे) आनबो घरे निश्चय जेन,
पाये पड़ि मागो, तुमि,
कर ना रोदन ॥
(प्रस्थान)

श्रीनित्यानन्द—

हम जा रहे हैं जा रहे,
गौराङ्ग लाने जा रहे,
हृदय रम्य-रत्न-रुचिकर ।
हमलोग उन्हें लायेंगे,
पकड़कर हाथ लायेंगे,
जननी करो मन सुस्थिर ॥
जहाँ कहीं भी पायेंगे,
पकड़कर हाथ लायेंगे,
पैर पड़ूँ, जननी ! तुम
अब न करो रोदन फिर ॥
(प्रस्थान)

द्वितीय अङ्क ।

(चतुर्थ गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन, शून्य शयन-कक्षे शून्य शय्या। धरासने श्रीविष्णुप्रिया अधोवदने उपविष्ट—नयने नीर - धारा।

(सखी काञ्चना ओ अमितार प्रवेश)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन, शून्य शयनकक्षमें शून्य शय्या। पृथ्वीपर श्रीविष्णुप्रिया अधोवदन बैठी हैं। आँखोंसे अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है।

(सखी काञ्चना तथा अमिताका प्रवेश)

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये ।
हृदिभरा विषादेर प्रतिमूर्ति ल'ये,
कि'जे भाव तुमि,
निशिदिन शून्य गृहे बसि,
बुझिते ना पारि।
दिन-दिन जीर्ण-शीर्ण,
हेरि देह तव,–भय हय मने ।
गेछे काल ह'ये आहा ! सोनार वरण;
प्राणरक्षा तव हइयाछे भार ।
सखि नष्ट करि,—
गौराङ्ग-विलासेर वस्तु,—देह तव,—
किवा हवे फल ?
भजनयोग्य एइ देह तुमि,
ना करिओ पात सखि !
वृथा शोके;
किछु दिन परे गुणमणि तव,—
आसिबेन फिरि नदीयाय;

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये !
हृदयमें भरे विषादकी प्रतिमा बनी
क्या सोचती रहती हो तुम,
निशिदिन सूने भवनमें बैठ,
समझ नहीं पाती हूँ ।
दिन-दिन जीर्ण-शीर्ण
देखकर तुम्हारा तन,भयभीत होता मन ।
काली पड़ गयी है, आह! स्वर्णकान्ति;
प्राणरक्षा तुम्हारी हो रही कठिन ।
सखि ! नष्ट करनेसे
गौराङ्ग-विलास-वस्तु,—तनको अपने
क्या लाभ ?
भजनके योग्य इस तनको तुम
करना न नष्ट सखि !
व्यर्थके शोकमें ।
कुछ दिन पीछे, गुणमणि तुम्हारे
आयेंगे लौट नदियाको ।

तुमि विरहिणी,—तिनिओ विरही,—
उभयेर मनोभाव-स्रोत,
एक टाना भावे,—
एकइ उद्देश्य,—
चलियाछे समभावे
एकइ लक्ष्य स्थले,
असीम-अनन्त-अगाध,—
प्रेम-समुद्रेर माझे ।
सखि ! तुमि भाव जाके,
से भावे तोमाके;
निशिदिन तुमि नाम जप जाँर
गुण जाँर गाओ तुमि,—
तिलार्द्धेर तरे जाँर जन्य
हृदय ना पाओ सोयास्ति,
ताँरओ भाव एइ रूप ।
अवस्था ताँहार तोमा चेये
किछु नहे भाल ।
भावितेछ तुमि गृहे वसि,
काँदितेछ तुमि गृहेर भीतरे,
बलितेछ दुःख निज परिजने;
गुणमणि तव,
प्रिया-विरह-शोकेते हइये कातर,—
भ्रमितेछे देश-देशान्तरे,—
फिरितेछे केंदे-केंदे द्वारे-द्वारे.—
छल करि तव नाम ल'ये ।
नाहि काछे, निज जन ताँर,—
मनदुख प्रकाशिये बलिते ना पारि,
अन्तरे गुमुरे मरे;
झरे अश्रुधारा दु'नयने अविराम ।
लाज भये देशे ना फिरिते पारे;

तुम विरहिणी, वे भी विरही,
दोनोंका मनोभाव-स्रोत
एक ही भावसे खिंचे,
एक ही उद्देश्य लिये,—
बहा है समान भावसे
एक ही लक्ष्यस्थलकी ओर,—
असीम, अनन्त, अगाध,
प्रेम-समुद्र बीच ।
सखि ! सोचती हो तुम जिनको,
सोचते हैं वे तुमको;
निशिवासर तुम नाम जपती हो जिनका
गाती तुम गुण जिनका,
तिलार्द्ध भी जिनके लिये
हृदयमें न पाती हो शान्ति,
उनका भी भाव इसी रूप ।
उनकी दशा अपेक्षा तुम्हारी
लेश नहीं अच्छी है ।
चिन्ता करती हो तुम घरमें रहकर,
रोती हो तुम घरके भीतर,
कहती हो दुःख अपना परिजनोंसे ।
गुणमणि तुम्हारे
प्रिया-विरहके शोकसे कातर हो,
भटक रहे हैं देश-देशान्तरमें,—
घूमते हैं रोते-रोते द्वार-द्वार,
लेते बहानेसे नाम तेरा ।
निजजन उनके न पास हैं—
मनोदुःख स्पष्ट कहनेमें असमर्थ
भीतर ही वे घुटते रहते हैं;
झरती अश्रुधारा युगनयनोंसे अविराम ।
लज्जाके मारे नहीं लौट पाते देश;

संकटे पड़ेछे गुणमणि	सङ्कटमें पड़े हैं गुणमणि ।
सखि ! स्थिर कर मन,	सखि ! स्थिर करो मनको,
प्राणवल्लभ तव,—विरह—कातरे,—	प्राणवल्लभ तव, विरह-कातर,
शीघ्र आसिबेन फिरि पुन: नदीयाय ।	शीघ्र ही आयेंगे लौट नदियाको ।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
सखि ! प्रियसखि ! काञ्चने !	सखि ! प्रिय सखि ! काञ्चने !
जत किछु बल,—सब जाय भेसे	जो कुछ भी कहती हो,—सब बह जाता है
प्रबल वन्यार जले	प्रबल जल-प्लावनमें
भासमान शुष्क काष्ठ मत ।	बहती हुई सूखी लकड़ीके समान ।
किछु नाहि भाय मने,	कुछ नहीं मनको सुहाता है
बिना दरशन ताँर ।	बिना उनका दर्शन किये ।
सखि ! एइ सेइ घर,—	सखि ! घर है यह वही,—
सेइ खाट,—से बालिस,—	वही खाट, तकिया वही,
सेइ ताँर सुखशय्या,—	वही उनकी सुख-शय्या,
सेइ सब द्रव्य-सम्भार;	वही सब द्रव्य-सम्भार,
ताँर गलार सेइ,—बासि फूलमाला,	उनके गलेकी वही,—बासी फूलमाला
रयेछे एखनओ सखि, ओइ,—	पड़ी है अबतक सखि ! वह,
शय्यापरि ओइ,—देख चेये,—	वहीं उसी शय्यापर—देखो दृष्टि फेर उधर
कइ ? मोर गुणमणि कइ ?	कहाँ ? मेरे गुणमणि कहाँ ?
प्राणवल्लभ कइ ?	प्राणवल्लभ कहाँ ?
कोथा मोर प्राणेश्वर ?	कहाँ मेरे प्राणेश्वर ?
तिनि बिना सब शून्य हेरि ।	उनके बिना मुझे सूना सब लगता है ।

गीत

कोथा तुमि गेले नाथ !	नदियाको तुम नाथ !
नदीया छाड़ी ।	छोड़कर कहाँ सिधारे ?
शून्य हेरि तोमा विना,	सब सूना घर - द्वार
ए घर - बाड़ी ॥	दीखता विना तुम्हारे ॥
जे दिके फिराइ आँखि ।	दृष्टि जिधर भी ले जाती हूँ
गौरहारा धरा देखि	गौर-विहीन मही पाती हूँ,

पशु पाखी सकलेरइ
नयने वारि।
वृक्ष-लता-तृण काँदे,
ना हेरे नदेर चाँदे,
फुकारि फुकारि काँदे
कुलेर नारी॥
शिशु ते ना स्तन खाय
गाभी ते ना गोठे जाय,
उठेछे रोदन - ध्वनि,
हृदि विदारी।
केन तुमि गेले नाथ!
नदीया छाड़ि॥

विकल सकल पशु-पक्षि-
वृन्द भी आँसू ढारे।
वृक्ष-लता-तृण करते क्रन्दन,
न कर प्राप्त नदिया-विधु दर्शन,
फूट-फूटकर कुल-ललना
घरमें चिक्कारे॥
स्तनमें शिशुगण मुँह न लगायें,
नहीं गोठमें जाती गायें,
रही रुदन-ध्वनि ऐसी
उठ, जो हृदय विदारे।
नदियाको तुम नाथ।
छोड़ किसलिये सिधारे॥

काञ्चना--

विष्णुप्रिये! प्रिय सखि।
यथार्थ बलेछ तुमि;
नदेवासी,—बाल-वृद्ध-युवा,—
कुलेर कामिनी,—
सकलेइ शोकेते आकुल।
बिने गोरा गुणमणि,
नदीया आँधार।
किंतु सखि! नदेवासीर
सब चेये बेशी दुःख,—
भयावह देखे तव दशा,—
आर जननीर मनदुःख भेवे;
ह'येछेन नदीयार राजा देशत्यागी;
वृद्धा जननी ताँर आछेन गृहेते;
आछे घरे बालिका रमणी ताँर।
नदेवासीर ऊपर,
सखि! गुणमणि तव,
दिये गेछेन बड़इ विषम भार।
भूलि गौराङ्ग-विरह-ज्वाला

काञ्चना--

विष्णुप्रिये! प्रियसखि!
ठीक कहती हो तुम;
नदियावासी,—बाल, वृद्ध, युवा,—
कुल-ललना-गण,—
सभी शोकाकुल।
बिना गौराङ्ग गुणमणिके--
नदियामें अन्धकार।
किंतु सखि! नदियावासियोंको
सबकी अपेक्षा अधिक दुःख है,
देखकर तुम्हारी भयावह दशा,
और जननीका मनोदुःख सोचकर।
हुए हैं नदियाके राजा देशत्यागी,
वृद्धा जननी उनकी घरमें वर्तमान
है घरमें बालिका रमणी उनकी।
नदियावासियोंपर
सखि! गुणमणि तुम्हारे
डाल गये हैं बड़ा ही विषम भार।
भूलकर गौराङ्ग-विरह-ज्वाला

एबे नदेवासी नरनारी,	इस समय नदियावासी नर-नारी
गौराङ्ग-जननी ओ घरणीर शोके,	गौराङ्ग-जननी तथा गृहिणीके शोकसे
घोर शोकाकुला ।	घोर शोकाकुल हैं ।
प्रिय सखि ! पतिर आदेश तव,--	प्रिय सखि ! पतिका आदेश तव,
कर ताँर मातृसेवा ।	उनकी माताकी करो सेवा ।
तुमि यदि काँदिबे दिवानिशि	तुम यदि रोओगी दिन-रात,
पति-आज्ञा पालिबे केमने ?	पति-आज्ञा पालोगी किस प्रकार ?
धैर्य्य धर,—धैर्य्यवती तुमि सखि !	धैर्य धरो,—धैर्यवती तुम सखि !
शोकाकुला शाशुड़ीर चेये मुखपाने;	शोकाकुल सासके मुखकी ओर देखकर ।
विष्णुप्रिये !	विष्णुप्रिये !
संवर दुःख-ताप-ज्वाला,	सहन करो ज्वाला दुःख-तापकी ।
उठ सखि ! एस बाहिरेते एस !	उठो सखि ! आओ चलो बाहर ।
श्रीविष्णुप्रिया--	**श्रीविष्णुप्रिया--**
चल सखि !	चल सखि !
बसे आछि बहुक्षण हेथा,	बैठी हूँ बहुत कालसे यहाँ,
गेछि भूले,	गयी भूल,
दुखिनी मायेर कथा, एकेबारे ।	दुःखिनी माँकी बात सर्वथा ।
ह'लेम् अपराधी चरणे ताँहार,	बनी अपराधिनी चरणोंके प्रति उनके,
अपराध ह'ल पति-पदे मोर;	अपराध बना पति-चरणोंके प्रति मेरा ।
सखि ! भाग्यक्रमे तुमि,	सखि ! सौभाग्यसे तुमने,
आसिये हेथाय,	आकर यहाँ,
दिले शिक्षा कर्त्तव्य मोर;	सिखाया मुझे कर्तव्य मेरा;
बाँधिले मोरे चिर-ऋणे तुमि,	बाँध लिया मुझको चिर-ऋणमें तुमने ।
चल सखि ! जाइ मार काछे एबे ।	चलो, सखि ! चलें माँके पास अभी ।
(शचीमाता आङ्गिनाय शाकेर क्षेते वसिया शाक तुलिते छिलेन, ताँर निकट गमन)	(शचीमाता आँगनमें शाकके खेतमें बैठकर शाक तोड़ रही थीं, उनके निकट जाना)
श्रीविष्णुप्रिया !	**श्रीविष्णुप्रिया—**
बेला-अवसान प्राय,	दिन लगभग बीत चला,
चल, घरे चल;	चलो, चलें घर;

असमय बसि हेथा,	असमयमें बैठ यहाँ,
तुलिछ केन मागो तुमि,	तोड़ रही किसलिये माँ तुम,
एत शाक आजि ?	इतना शाक आज ?
सकालेर काज इहा,	प्रातःकालीन कार्य यह,
हयेछे संध्या एखन;	हो रही संध्या अब;
चल, मागो, चल घरे ।	चलो, माँ, घर चलें ।
शचीमाता—	**शचीमाता—**
(काहाकेओ लक्ष्य ना करिया आपन मने)	(किसीको भी लक्ष्य किये बिना ही स्वगत)
शाके निमायेर अतिशय प्रीति;	शाकसे निमाईको बड़ी प्रीति;
बुनेछि ताइ आङ्गिनाय आमि,	बोया है इसीलिये आँगनमें मैंने,
नानाविध शाक;	नानाविध शाक;
निज हस्ते प्रतिदिन,	अपने हाथ प्रतिदिन,
करेछि सेचन कत जल !	सींचा है कितना जल !
देख देखि, कि सुन्दर,	देखो तो सही कितना सुन्दर
जन्मेछे क्षेते मोर शाक !	उगा है खेतमें मेरे साग !
निमाइ आमार शाक भालबासे;	निमाईको मेरे भाता है शाक;
यत्न करे, ताइ आजि	यत्नसहित इसीलिये आज,
बाछि-बाछि, तुलितेछि शाक मनमत ।	बीन-बीन तोड़ा है शाक रुचिके अनुसार ।
राँधिब प्रीतीर सहित;	राँधूँगी प्रीतिसहित;
निमाइ मोर, बड़ शाक प्रिय;	निमाई मेरा, बड़ा शाक-प्रेमी है;
दिये ठाकुरेर भोग पाइबे प्रसाद ।	लगा भोग ठाकुरको पायेगा प्रसाद ।
बेला ह'ल, जाइ,	विलम्ब हो गया, जाती हूँ
बलि बऊमाके गिये—	कहती हूँ बहू माँसे जाकर—
रन्धनेर करिते उद्योग ।	रन्धनकी करनेको तैयारी ।
आसिबार हयेछे समय निमायेर,	आनेका हो गया है समय निमाईके,
गङ्गास्नान ह'ते,	गङ्गास्नानसे;
करि पूजा-समापन,	कर पूजा सम्पन्न,
बलिबे एखनि आसि बाछा,	कहेगा लाल आकर अभी

पेयेछे बड़ क्षुधा, मागो !
दाओ प्रसाद मोरे ।

काञ्चना—(मने-मने)
आहा ! पागलिनी हयेछेन
गौराङ्ग-जननी;
पुत्र नाहि घरे,–
से ज्ञान नाइ ताँर,—
दिवा-अवसान प्राय,–
सूर्य्य डुबु-डुबु,—
भाविछेन मा जननी,—
पुत्रेर ताँर स्नानेर समय एइ,—
ठाकुरेर भोगेर समय एइ,—
शाके बड़ प्रीति जानि
निमाइ चाँदेर;
तुलेछेन यत्न करि, शाक राशि-राशि;
लक्ष्य नाइ,—ज्ञान नाइ,—
दिवा कि रजनी ।
एकि देखि ? उजाड़ करिया क्षेत
तुलेछेन शाक दश-बिश झुड़ि;
गृहे जेन महोत्सव-काल;
पुत्रशोके पागलिनी शचीमाता;
गौर-माता ह'ये गौर-हारा,
हयेछेन एकेबारे उन्मादिनी;
ए दृश्य सहिते के पारे ?
(क्रन्दन)
(श्रीविष्णुप्रियार प्रति)
विष्णुप्रिये ! प्रिय सखि !
देख देखि, कि दशा हयेछे शचीमार !
भजितेछिले पतिधने तुमि,
ताँर शयनकक्षे वसि,

लगी है बड़ी भूख, माँ !
दो प्रसाद मुझ को ।

काञ्चना—(स्वगत)
आह ! पगली हो गयी हैं
गौराङ्ग-जननी ।
पुत्र नहीं घरमें,—
यह ज्ञान नहीं उनको,—
दिवसका अवसान निकट,—
सूर्य अब डूबा, तब डूबा,—
सोचती हैं माँ जननी—
पुत्रके उनके स्नानका समय यही,
भगवान्‌के भोगका समय यही ।
शाकके प्रति बड़ी रुचि जानकर
निमाई चाँदकी,
तोड़ा है यत्न सहित शाक राशि-राशि;
ध्यान नहीं, ज्ञान नहीं,—
दिन है या रात ।
यह क्या मैं रही देख ? खेतको उजाड़कर
तोड़ा है शाक दस-बीस टोकरी,
घरमें हो मानो महोत्सव कोई,
पगली शचीमाताने पुत्रशोकमें;
गौर-माता होकर गौर बिना,
हो गयी हैं उन्मादिनी सर्वथा,
यह दृश्य सह सकता है कौन ?
(क्रन्दन)
(श्रीविष्णुप्रियाके प्रति)
विष्णुप्रिये ! प्रिय सखि !
देखो, देखो, क्या दशा हुई है शचीमाकी !
भजती थी अपने पतिधनको तुम,
बैठकर उनके शयनकक्षमें,

एकभावे;
शाशुड़ी तव बसि आङ्गिनाय,
शाकेर क्षेत माझे,
अनन्यभावे भजितेछेन पुत्रधने ताँर ।
तोमरा उभयेइ, गौर-पागलिनी;
वृद्धा जननीर भार,
समर्पिया तव हस्ते, हइये निश्चिन्त,
गियेछेन नदे छाड़ि, तव गुणमणि ।
एखन तोमार,—
सर्व्वापेक्षा प्रधान,
ओ गुरुतर कर्त्तव्य कर्म्म,
शोकाकुला वृद्धा शाशुड़ीर सेवा
एवं पतिर आदेश-पालन ।
सखि ! तिल मात्र,
ना छाड़िबे सङ्ग ताँर;
कि जानि, कखन कि करेन तिनि,
किछु बला नाहि जाय ।
प्राण यदि जाय ताँर,—एइ भावे,—
गुणमणि तव कि भाविबेन मने,
बल देखि, सखि ?
नदीयाय पुनरागमन—
असम्भव हबे ताँर पक्षे ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(अनेक क्षण नीरवे क्रन्दन करिया)

प्रिय सखि काञ्चने !
उपयुक्त शिक्षा दिले आजि तुमि मोरे,
चिर-ऋणे बाँधिले आमाय ।
स्वार्थपर आमि चिरदिन,
भूलि पति-आज्ञा,
कर्त्तव्य कर्म्म करि अवहेला,

एकाग्र मनसे;
सास तुम्हारी बैठकर आँगनमें
शाकके खेतमें,
भजती हैं अपने पुत्ररत्नको अनन्य भावसे ।
तुम दोनों ही हुई पगली गौरके निमित्त ।
वृद्धा जननीका भार,
सौंप तुम्हारे हाथोंमें, होकर निश्चिन्त,
गये हैं नदिया छोड़, गुणमणि तुम्हारे;
इस समय तुम्हारा,
सबसे प्रधान,
तथा गुरुतर करणीय कर्म—
शोकाकुल वृद्धा सासकी सेवा है
एवं यही है पति-आज्ञाका पालन ।
सखि ! क्षण भर भी
छोड़ना मत सङ्ग उनका;
क्या पता किस समय क्या कर डालें वे,
कुछ कहा जाता नहीं ।
प्राण यदि चले जायँ उनके, इसी प्रकार,
गुणमणि तुम्हारे मनमें क्या सोचेंगे ?
बताओ तो, सखि !
नदियामें फिर आना
असम्भव हो जायगा उनके लिये ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(बहुत देरतक नीरव क्रन्दन करके)

प्रियसखि काञ्चने !
उपयुक्त शिक्षा दी आज मुझे तुमने,
चिर-ऋणमें बाँध लिया मुझको ।
स्वार्थपरायण मैं सदा ही,
भूल पति-आज्ञाको,
कर्त्तव्य कर्मकी कर अवहेलना,

गियेछिनु आमि पतिर भजने ।
पतिर भजन चेये,
पतिर आज्ञा बलवान,
मातृसेवा ताँर सर्व्वाग्रे कर्त्तव्य,——
तार पर आर किछु—-
इहा तुमि शिखाइलेन मोरे सखि !
तव मुखे गुणमणि मोर
शिखालेन इहा मोरे ।
आर ना भूलिब,—आर ना काँदिब,
करि पतिर मातृसेवा,
पतिर आज्ञा करिया पालन,
करिब तुष्ट पतिधने आमि,——
तव उपदेशे,——
तुमि मोर गुरु एइ काजे ।
(शचीमातार निकटे गिया)
मागो ! चल गृहे,
संध्या हइल उत्तीर्ण,
दिते हबे प्रदीप विष्णुगृहे ।

शचीमाता—

(अर्द्धवाह्यावस्थाय)
ओके ? बउमा ?
जाओ, वेला ह'ल,
रन्धनेर उद्योग करगो सत्वर ।
वाछि-वाछि आज आमि,
तुलेछि शाक भाल-भाल;
निमाइ आमार, बड़ शाक भालबासे ।
करि शाकेर घंट
फूलबड़ि दिये,
ठाकुरेर भोग दिब आजि;
प्रसाद पाइबे विश्वम्भर ।

गयी थी करने मैं पतिका भजन;
पतिके भजनसे
पतिकी आज्ञा बलवती है,
उनकी जननीकी सेवा सबसे प्रमुख कर्म,—
उसके बाद और कुछ—
तुमने सिखाया यह मुझको सखि !
मुखसे तुम्हारे गुणमणिने ही मेरे
सिखाया यह मुझको ।
अब और नहीं भूलूँगी, और नहीं रोऊँगी,
कर सेवा पतिकी माँकी,
पालनकर पतिकी आज्ञाका,
तुष्ट प्राणधनको करूँगी मैं,
तुम्हारे उपदेशसे;
गुरुस्थानीया तुम मेरी इस काममें ।
(शचीमाताके निकट जाकर)
चलो, माँ, घर,
संध्या व्यतीत हुई,
प्रदीप्त करना है दीप विष्णुमन्दिरमें ।

शचीमाता—

(अर्द्धवाह्य अवस्थामें)
अरे कौन ? बहू माँ ?
जाओ,, विलम्ब हो गया,
रन्धनका उद्योग करो सत्वर ।
चुन-चुनकर आज मैंने,
तोड़े हैं शाक, अच्छे-अच्छे;
निमाई मेरा बहुत ही शाकप्रिय है ।
प्रस्तुत कर बहुमेल शाक
फूलवड़ीके योगसे,
लगाऊँगी भोग आज ठाकुरको,
पायेगा प्रसाद विश्वम्भर ।

जाश्रो मागो, त्वरा करि, ज्वालगे उनान् ।
श्रामि जाइ गङ्गास्नाने ।

(घड़ा लइया गमनोद्योग)
(श्रीविष्णुप्रिया देवी शचीमातार
हात धरिया वसाइलेन)

श्रीविष्णुप्रिया—(स्वगत)
हा हत विधि ! हा श्रदृष्ट !
कुक्षणे जनम मोर हयेछिल भवे;
ए दृश्य हइल ताइ देखिते नयने ।
सहिते ना पारि श्रार ए दुःख-यन्त्रणा;
मार कथा ह'ले मने,——
भुले जाइ निज दुःख,
श्रात्महारा हइ;
दिवा-निशि-ज्ञान नाहि ताँर ।
गृहे नाइ तिनि,——
श्राज दश दिन हल,——
नदे छाड़ि गुणमणि गेछेन चलिया,
मार मने नाइ ताहा;
देन नाइ श्रन्न-जल मुखे,
श्राज दश दिन ह'ते;
धन्य तिनि,–धन्य ताँर पुत्रस्नेह,
धन्य ताँर शक्ति शरीरधारणे ।
(शचीमातार चरण धरिया क्रन्दन)
मागो ! चेये देख देखि—
संध्या हइल उतीर्ण;
हयेछे समय विष्णुगृहे
दीप ज्वालिबार ।
घरे गिये चेये देख एक बार,
रयेछे राँधा भोग प'ड़े एखनश्रो तथाय,
खाय नाइ केह,—ना तुमि,–ना श्रामि ।

जाश्रो बेटी ! शीघ्रतासे जलाश्रो चूल्हेको,
मैं गङ्गास्नानको जाती हूँ ।

(घड़ा लेकर जानेकी तैयारी)
(श्रीविष्णुप्रिया देवीने शचीमाताको
हाथ पकड़कर वैठा लिया)

श्रीविष्णुप्रिया——(स्वगत)
हा हत विधि ! हा श्रदृष्ट !
कुक्षणमें जन्म मेरा हुश्रा संसारमें,
यह दृश्य इसीलिये देखना पड़ा नेत्रोंसे;
सह नहीं पाती श्रौर यह दुःख-यन्त्रणा ।
माँकी बात श्रानेपर मनमें,
भूल जाती श्रपना दुःख,
श्रात्मविस्मृत होकर;
रात्रि-दिनका ज्ञान नहीं रहता उन्हें ।
घरमें नहीं हैं वे,
श्राज दस दिन हो गये,
नदिया छोड़ गुणमणि चले गये,——
माँको यह भान नहीं;
लेतीं नहीं श्रन्न-जल मुखमें,
श्राज दस दिनसे ।
धन्य वे, धन्य उनका पुत्रस्नेह,
धन्य उनकी शक्ति देह-धारणकी ।
(शचीमाताके चरण पकड़कर रोना)
माँ ! देखो तो श्राँख खोल—
संध्या विगत हुई,
समय हो गया है विष्णुमन्दिरमें
दीप जलानेका ।
घरमें चलकर ध्यानसे देखो जरा एक बार-
राँधा भोग पड़ा है श्रभीतक वहीं,
खाया नहीं किसीने,—न तुमने, न मैंने ।

हेरि ए दशा तव,	देख यह दशा तव,
प्राण फेटे जाय मोर;——	प्राण फटे जाते हैं मेरे;
इच्छा हय पदे तव,	इच्छा होता है,——चरणोंमें तुम्हारे
राखि मोर माथा,	रखकर अपना मस्तक,
त्यजिते पराण :	प्राण-त्याग करनेकी।
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)
काञ्चना—	**काञ्चना—**
मागो ! चेये देखो एकबार,	माँ ! आँख खोलकर देखो एक बार—
अनाथिनी विष्णुप्रिया तव,	अनाथिनी विष्णुप्रिया तुम्हारी
हये भूमि-लुण्ठित	भूमिपर लोटती
पड़ि तव पदतले, काँदिछे नीरवे;	चरणोंमें तुम्हारे पड़, रो रही चुपचाप;
से तोमार निमायेर प्रियतमा,	है वह तुम्हारे निमाईकी प्रियतमा।
कत साधेर वउमा तोमार,	कितनी आशाओंकी केन्द्र बहू माँने तुम्हारी
दारुण पति-विरह-ज्वाला,	पति-विरहकी दारुण ज्वालाको
करि तुच्छ ज्ञान,	तुच्छ मान,
करियाछे साध,—सेविवे तोमाके,	की है कामना, सेवा तुम्हारी करनेकी
तव पुत्रेर आदेशे।	तव सुत आदेशसे।
अभागिनी,—वञ्चित हयेछे से,——	अभागिनी, वञ्चिता हुई है वह
भाग्यदोषे पतिसेवा-काजे;	भाग्यदोषसे पतिसेवा-कार्यसे;
करि पतिर मातृसेवा,	पतिकी जननीकी सेवा करके
यदि से किछु सुख पाय मने,	यदि वह पाये सुख मनमें कुछ भी,
से सुखे,—मागो !	उस सुख से,—माँ !
ना कर वञ्चित तारे।	करो न वञ्चित उसे।
उठ मा ! संवर ए भाव;	उठो माँ ! संवरण करो यह मनोभाव;
नदीया-नागर गौराङ्गसुन्दर,	नदिया-नागर गौराङ्गसुन्दर
शीघ्र आसिबेन फिरि पुनः नदीयाय।	शीघ्र आयेंगे पुनः लौट नदियामें।
(शचीमातार वाह्य प्राप्ति)	(शचीमाताको वाह्यज्ञान-प्राप्ति)
शचीमाता—	**शचीमाता——**
वउमा ! लक्ष्मी मेये !	बहू माँ ! लक्ष्मी-सी सुता मेरी !

केन मागो ! भूमिते लुण्ठित तुमि;
वक्षेर धन तुमि, वक्षे एस मोर ।
(वक्षे धारण करिया)
निमायेर स्थान इहा,--
बड़ प्रिय तुमि बाछा,
मोर निमायेर;
तार स्थान, तुमि एबे कर अधिकार ।
तुमि भिन्न,
नारिबे जुड़ाइते अन्य केह,
पुत्र-विरहानले सदा दह्यमान
एइ तप्त हृदि मोर ।
(अन्य दिके चाहिया)
बोमाके ल'ये वक्षे,
दुर्निवार पुत्र-विरह दुःख,--
निमायेर अदर्शन-ज्वाला,--
यदि हय दूर,
पाइ मने यदि, किंचित् सोयास्ति—
देखि चेष्टा करि ।
विष्णुप्रिया निमायेर प्रियतमा,--
तार भालवासा-पात्री;
ल'ये वक्षे तारे जुड़ाइ पराण ।
एस, बौमा ! वक्षेर धन तुमि
वक्षे एस मोर ।
(वक्षे धारण, मुखचुम्बन ओ क्रन्दन)
(पट-परिवर्तन)

किसलिये बेटी ! भूमिपर लोट रही तुम;
हृदयकी निधि तुम, आओ मेरे हृदयमें ।
(हृदयसे लगाकर)
निमाईका स्थान यह--
मेरी दुलारी ! अतिशय प्यारी है तू
मेरे निमाईकी;
अब करो ग्रहण तुम्हीं उसके स्थानको ।
तुम्हें छोड़
अन्य कोई शीतल कर सकेगा नहीं
पुत्र-विरहानलसे सर्वदा दह्यमान
मेरे इस तप्त हृद्देशको ।
(दूसरी ओर देखकर)
बहू माँको लगाकर हृदयसे
दुर्निवार दुःख पुत्रके वियोगका,
निमाईको न देखनेकी ज्वाला,
कदाचित हो जाय दूर,
मनको मिल जाय कहीं, थोड़ी-सी शान्ति—
देखती हूँ चेष्टा करके ।
विष्णुप्रिया प्रियतमा निमाईकी,
उसकी प्रीति-पात्री;
लगाकर हृदयसे उसे, शीतल प्राण करलूँ ।
आओ बहू माँ ! हृदयकी निधि तुम
मेरे वक्षसे आ लगो ।
(छातीसे लगाकर मुख चूमना और रोना)
(पट-परिवर्तन)

तृतीय अङ्क ।

(प्रथम गर्भाङ्क)

दृश्य—नदीयार प्रशस्त राजपथ
भक्तगण-सङ्गे श्रीनित्यानन्द ।

श्रीनित्यानन्द—

शान्तिपुरे अद्वैतभवने,—
राखि नदीयार चाँदे;
ताँहारेइ आदेशे,
एसेछि आमि नदीयाय,
लइते गौराङ्ग-जननीरे
शान्तिपुरे ।
बल, बल, भक्तगण !
शचीमातार अवस्था किरूप ?

चन्द्रशेखर आचार्य्य—

कि आर बलिब श्रीपाद !
आज द्वादश दिवस गत,
जलबिन्दु देन नाइ
शचीमाता मुखे;
पागलिनी मत,—
ह'ये बाह्यज्ञानशून्य आछेन बसिये,
चाहि एक दृष्टे पथपाने,—
ताँर निमाइ चाँद आसिबे बलिया ।
विष्णुप्रिया अर्द्धमृता—
ताँर प्राणरक्षा भार;
गौराङ्ग-भवने जाओया हइयाछे दाय;
पड़ेछि मोरा सबे विषम संकटे ।

दृश्य—नदियाका प्रशस्त राजपथ
भक्तगणके साथ श्रीनित्यानन्द

श्रीनित्यानन्द—

शान्तिपुरमें अद्वैताचार्यके घर
छोड़ नदिया-चाँदको,
उन्हींके आदेशसे
आया हूँ मैं नदियामें—
ले जानेके लिये गौराङ्ग-जननीको
शान्तिपुर ।
बोलो, बोलो, भक्तगण !
दशा शचीमाताकी कैसी है ?

चन्द्रशेखर आचार्य—

और क्या कहूँ, श्रीपाद !
आज बीते बारह दिन,
जलकी एक बूंद भी दी नहीं
शचीमाताने मुखमें;
पगलीकी भाँति,
बाह्यज्ञान-शून्य हुई बैठी हैं,—
पथकी ओर एकटक लगाये दृष्टि,
उनका निमाई चाँद आयेगा जानकर यह ।
विष्णुप्रिया अर्द्धमृता,—
उनकी प्राणरक्षा कठिन ।
जाना गौराङ्ग-भवनमें हुई है समस्या एक,
पड़े हैं हमलोग सभी विषम संकटमें ।

श्रीनित्यानन्द--

देखितेछि सब,--
बुझितेछि सब,--
पड़ेछे हाहाकार, नदीयार घरे-घरे,
भक्तगण जीवन्मृत सबे ।
गौर-हारा ह'ये,
हयेछे तारा एकेबारे दिशेहारा ।
गभीर विषादेर छाया,
रयेछे अङ्कित जेन प्रतिमुखे;
म्रियमाण सबे नदेवासी नरनारी;
पशुपक्षी, वृक्षलता, सकले नीरव ।
गङ्गाय तरङ्ग नाइ,--
तीरे नाइ जनकोलाहल;
निस्तब्ध आकाश-देश,
समीरणे नाहि जेन प्राण;
आश्चर्य्य परिवर्त्तन प्रकृतिर
हेरि चारि दिके;
शचीमाता जे आछेन बाँचिया,--
से केवल कृष्ण-कृपा-बले ।
श्रीविष्णुप्रिया जे रेखेछेन प्राण,--
से केवल गौराङ्ग-कृपाय ।
जाब केमने आमि गौराङ्ग-भवने,--
पुत्रविरह-व्याकुला शचीमातार काछे,--
ताइ भावितेछि मने-मने ।
कथा छिल ताँर सने,--
निमाइचाँदे एने दिब पुनः नदीयाय;
श्रीकृष्णेर इच्छा नहे ताहा ।
गौराङ्ग-जननीके,--एबे जेते हबे
पुत्र-दरशने शान्तिपुर-धामे ।
एइ ताँर पुत्रेर आदेश;

श्रीनित्यानन्द--

सब कुछ रहा हूँ देख,
सब कुछ हूँ समझ रहा,—
मचा है हाहाकार नदियाके घर-घरमें;
भक्तगण जीते ही मृतक समान सभी ।
होकर गौराङ्ग बिना
बन गये हैं लोग वे सर्वथा विमूढ़-चित्त ।
छाया विषादकी गभीर
अङ्कित है मानो मुखपर प्रत्येकके ।
म्रियमाण नदियानिवासी नरनारी सब;
पशु-पक्षी, वृक्ष-लता-नीरव सभी ।
गङ्गामें तरङ्ग नहीं,
तटपर न जनकोलाहल,
निस्तब्ध नभप्रदेश,
समीरमें प्राण ही न मानो रहा;
आश्चर्यजनक परिवर्त्तन प्रकृतिमें
देखता हूँ चारों ओर ।
शचीमाता बची हैं जीवित जो,--
वह केवल कृष्ण-कृपा-बलसे ।
श्रीविष्णुप्रियाने जो धारणकर रखें हैं प्राण,
वह केवल गौराङ्ग-कृपासे ।
जाऊँ कैसे मैं गौराङ्ग भवनमें,
पुत्र-विरह-व्याकुला शचीमाताके पास,—
यही सोचता हूँ मन-ही-मन ।
कहा था उनसे,--
ला दूँगा पुनः निमाई चाँदको नदियामें;
श्रीकृष्णकी इच्छा नहीं--वैसा हो ।
गौराङ्ग-जननीको अब जाना होगा
पुत्र-दर्शनके लिये शान्तिपुर-धाममें; —
यही उनके पुत्रका आदेश है ।

आमि दास,—तिनि प्रभु,—	मैं दास, वे प्रभु—
ताँर आज्ञापालन हेतु,	आज्ञापालन हेतु उनके,
एसेछि पुनः नदीयाय;	आया हूँ पुनः नदियामें;
ता' ना ह'ले	अन्यथा,
गौरशून्य नवद्वीपे	गौरशून्य नदियामें
कार साध्य आने मोरे ।	कौन ला सकता था मुझे ।
आर एक बड़इ कठिन, निठुर	और एक बड़ा ही कठिन, निठुर
आदेशवाणी ताँर,—	उनका आदेश-वचन,
वज्रसम,—शेलसम—बाँधि बुके,	वज्रसम, सेलसम, छातीपर रखकर
एनेछि अति कष्टे;—	लाया हूँ अत्यन्त कष्टसे;
नित्यानन्देर भाग्ये छिल लेखा इहा ।	यही लिखा था भाग्यमें नित्यानन्दके ।
एइ वज्रसम निदारुण वाणी,—	यही वज्रसम निदारुण वाणी,
एइ कठोर आदेश प्रभुर,—	यही कठोर आदेश प्रभुका,
शुनाइते ह'बे काके ?	होगा सुनाना,—किसको ?
ताँर सर्व्वापेक्षा प्रियतम निजजने,	उनके सर्वाधिक प्रियतम निजजनको,—
गौरवक्षविलासिनी, श्रीविष्णुप्रियाके ।	गौरवक्षविलासिनी, श्रीविष्णुप्रियाको !
हा हतविधि !	हा हतविधि !
एइ कि लिखेछिले तुमि भाले मोर ?	लिखा था क्या तुमने यही मेरे कपालमें ?
ना,—ता,—ह'बेना—ह'बेना—	नहीं,—वह,—होगा नहीं,—होगा नहीं,
नित्यानन्द ह'ते एइ काज;	नित्यानन्दद्वारा यह काज ।
एइ दुःखेर समय,—	इस दुःखके समयमें,—
एइ विपद-समये,—	इस विपदाकी घड़ीमें,—
सेइ प्राणघाती निदारुण वाणी	वह प्राणघाती, निदारुण वाणी
शुनाइव केमने आमि,	सुनाऊँगा किस प्रकार मैं,
दुर्ज्जय पति-विरहानले दग्धा,—	दुर्निवार पतिविरहानल-दग्ध हुई,
बालिका वधूरे ?	बालिका वधूको ?
हा गौराङ्ग ! गौरहरि !—	हा, गौराङ्ग ! गौरहरि !
कि काज दियेछ प्रभु मोरे ?	क्या काम सौंपा है मुझे तुमने ?
तुमि स्वतन्त्र ईश्वर,—प्रभु मोर,—	तुम ईश्वर स्वतन्त्र,—प्रभु मेरे,
तोमा पक्षे सब शोभा पाय;	शोभा देता है तुमको तो सभी कुछ ।

क्षुद्र जीव आमि--	क्षुद्र जीव हूँ मैं,
नहि योग्य तव दासानुदास ह'ते;	नहीं योग्य बननेके दासानुदास तव ।
चरणेर भृत्येर उपर,--	चरणोंके भृत्यपर,--
पदानत दासेर उपर,--	पदावनत सेवकपर,--
केन प्रभु, कर	किसलिये करते हो प्रभु !
तुमि एत अत्याचार ?	तुम अत्याचार इतना ?
कि विषम संकटे तुमि,	कैसे विषम संकटमें तुमने,
फेलेछ आमारे प्रभु—	दिया है डाल प्रभु मुझको—
भेवे देख देखि !	देखो तो मनमें विचार जरा !
उभय संकट मोर,	दोनों ओर संकट मुझे,
जाइ कोन दिके ? ना पाइ भाविया ।	जाऊँ किस ओर ? नहीं सोच पाता हूँ।
(किछु क्षण नीरवे चिन्ता)	(कुछ देर नीरव रहकर सोचना)
बुझिलाम, सार कथा—	समझ गया, सार बात,—
आज्ञा बलवान तव,	आज्ञा बलवान तुम्हारी
सर्व्वापेक्षा	सबसे अधिक ।
पालिब आज्ञा तव सर्व्वभावे आमि,--	पालूँगा आज्ञा तुम्हारी मैं सब विधिसे,
जा थाके कपाले मोर ।	जो कुछ भी भाग्यमें हो मेरे ।
(भक्तगणेर प्रति)	(भक्तोंसे)
शुन सब भक्तगण ! प्रभुर आदेश,--	सुनो सब भक्तगण ! आदेश प्रभुका,--
शान्तिपुरे अद्वैतभवने--	शान्तिपुरमें अद्वैताचार्यके घर
रयेछे ताँर अधिष्ठान;	ठहरे हुए हैं वे;
ल'ये शचीमाके भक्तगण साथे	लेकर शचीमाताको साथ भक्तगणके
जेते हबे मोरे आजइ सेथाय ।	जाना होगा मुझे वहाँ आज ही ।
नदेवासी बाल-वृद्ध-	नदियानिवासी बाल-वृद्ध-
युवा, नारी,—	युवा नर-नारीको,
शान्तिपुरे जेते,--प्रभु दरशने;	शान्तिपुर जानेमें,--प्रभुके दर्शन निमित्त,
कारओ बाधा नाइ;	किसीको बाधा नहीं,--
केवल एक जन छाड़ा,--	छोड़कर, बस, एक ही व्यक्तिको,--
एक मात्र विष्णुप्रिया छाड़ा;	छोड़कर एकमात्र विष्णुप्रियाको ।
कि निदारुण प्राणघाती वाणी !	कितनी निदारुण प्राणघाती वाणी,

कि कठोर आदेश !	कैसी कठोर आज्ञा,
शुनाइते हबे इहा ताँर बालिका वधूरे;	होगी सुनानी यह, नन्ही-सी वधको उनकी।
बल, बल, भक्तगण !	बोलो, बोलो, भक्तगण !
एइ गुरुभार मोर,	मेरा गुरु भार यह,
केह कि तोमरा पारिबे लइते ?	कोई क्या ले सकेगा तुममेंसे ?
श्रीवासपण्डित-प्रमुख भक्तगण—	**श्रीवासपण्डित-प्रमुख भक्तगण—**
(शिरे हाथ दिया काँदिते-काँदिते)	(सिरपर हाथ रख रोते-रोते)
श्रीपाद ! प्राण गेलेओ ए काज	श्रीपाद ! प्राण चले जानेपर भी यह काम,
करिते नारिब मोरा केह।	कर नहीं पायेगा कोई भी हममेंसे।
वज्रपात हउक शिरोपरे,	वज्रपात भले हो माथेपर,
कालानले पुड़ि देह,	कालानलमें दग्ध हो देह यह,
होक छारखार;	बने भले भस्मनिचय;
मुख ह'ते आमादेर,	मुखसे हमारे किंतु
हेन वाक्य ना हबे बाहिर।	ऐसी बात बाहर न निकलेगी।
श्रीपाद नित्यानन्द !	श्रीपाद नित्यानन्द !
तुमि ओ गौराङ्ग,—	तुम और गौराङ्ग,
एक वस्तु, भिन्न काया;	दो देह, एक तत्त्व;
तुमि ओ स्वेच्छामय, स्वतन्त्र पुरुष।	तुम भी हो स्वेच्छामय, स्वतन्त्र पुरुष।
उपयुक्त पात्र बुझि प्रभु,	जानकर प्रभुने उपयुक्त पात्र,
दियेछेन एइ गुरु भार तोमार उपर।	दिया है ऊपर तुम्हारे यह गुरुभार।
शुनि निदारुण कठोर आदेश प्रभुर,—	सुनकर निदारुण कठोर आदेश प्रभुका
काँपिछे विषम तरासे देह-प्राण।	भयसे विषम कम्पित हो रहे हैं देह-प्राण।
कि जानि कि हबे	क्या जाने क्या होगा
आजि शची-आङ्गिनाय,	आज शचीके आँगनमें,
शुनिबेन जबे इहा विष्णुप्रिया	सुनेंगी जब इसे श्रीविष्णुप्रिया
आर गौराङ्ग जननी !	और गौराङ्ग-जननी !
श्रीनित्यानन्द—	**श्रीनित्यानन्द—**
भक्तगण ! जानि आमि,	भक्तगण ! जानता हूँ मैं,
तुमि सबे नाहि ल'वे मोर दुःखभार,—	तुमलोग लोगे नहीं दुःख-भार मेरा;

दुःख नाहि ताते मोर,—	दुःख नहीं इससे मुझे,
वेंधेछि पाषाणे बुक आमि—	बाँध लिया छातीपर पत्थर है मैंने—
प्रभु-आज्ञा करिते पालन ।	प्रभु-आज्ञा-पालन करनेके लिये ।
अकर्त्तव्य यदिओ एइ काज,	अकरणीय यद्यपि यह कार्य,
तबुओ करिते हवे,	तब भी करना होगा;
जेहेतु प्रभुर आज्ञा बलवान ।	कारण, बलीयसी प्रभुकी आज्ञा ।
आर विचारेर नाहि प्रयोजन;	अब और सोचनेका कोई प्रयोजन नहीं;
चल, सबे मिले जाइ,	चलो, सब मिलकर चलें
एबे गौराङ्गभवने ।	अब गौराङ्ग-गृहमें ।
(भक्तगण सह श्रीगौराङ्ग-भवने गमन)	(भक्तगणके साथ श्रीगौराङ्ग-भवनको जाना)
श्रीनित्यानन्द—	**श्रीनित्यानन्द—**
(द्वारदेशे शचीमाताके देखिया)	(द्वारपर शचीमाताको देखकर)
मागो ! एसेछि आमि,	माँ ! आया हूँ मैं,
ल'ये तव पुत्रेर संधान,	लेकर तव पुत्रकी खोज-खबर;
शान्तिपुरे अद्वैतभवने—	शान्तिपुरमें घरमें अद्वैतके
एसेछि राखिया तव पुत्रधने ।	आया हूँ रखकर तुम्हारे पुत्र-धनको ।
मागो ! पुत्रेर आदेश तव,	माँ ! आदेश तव पुत्रका—
जेते हवे शान्तिपुरे तोमा	होगा तुम्हें शान्तिपुर जाना
पुत्र-दरशने ।	पुत्रदर्शनके लिये ।

गीत

एनेछि शान्तिपुरे निमाइ ध'रे,	चलो शान्तिपुर, मैं लाया हूँ गौरचन्द्रको वहाँ पकड़कर;
(मागो !) तुमि चल त्वरा करे ॥	चल मैया, तू चल री, सत्वर ॥
(तोमार) निमाइ बलेछे मोरे,	लाया यह आदेश निमाईका तव, सिर धर—
निये एस जननीरे;	ले आओ मैयाको सादर ॥
आर जत नदेवासी सङ्गे करे ।	सङ्ग लिये जितने नदियावासी नारी - नर ।
(मागो !) तुमि चल शान्तिपुरे ॥	चल री । जननि ! शान्तिपुर-पथ-पर ॥

शचीमाता—

निमायेर आमार,
मधुमाखा नाम,
कार मुखे शुनि आजि ?
एजे नितायेर स्वर,--
चिर-परिचित मोर !
बाप् रे ! निताइ रे !
निमाइ कोथाय मोर ?
कोथा रेखे एलि तारे बाप्धन ?
स्वर शुनि चिनिलाम तोरे ।
'मा' बले निमाइ आमार
कइ डाकिल ना त मोरे
मधु भाषे ?
तबे कि से आसे नाइ ?
निताइ रे ! बाप् रे !
तारे तुइ कोथा रेखे एलि ?
शीघ्र एने दे बाछारे आमार,
कोले करि पराण जुड़ाइ ।
शून्य करि मोर गृह,
चले गेछे बाप्धन मोर--
आजि बार दिन ह'ल ।
एक-एक दण्ड क'रे,
कत प्रहर गेल,--
दिन गेल कत !
आशा पथ तार,--
एक दृष्टे चेये आछि आमि,--
एइ दुयारे बसिये;
कइ ? कोथा मोर हाराधन,
जीवनेर जीवन सोनार निमाइ चाँद ?
निताइ ! निताइ ! कइ तुइ ?

शचीमाता—

मेरे निमाईका,
मधु-मिश्रित नाम,
मुखसे मैं किसके आज सुन रही ?
यह तो निताईका स्वर है--
चिर-परिचित मेरा !
वत्स रे ! निताई रे !
कहाँ निमाई मेरा ?
कहाँ उसे छोड़कर आये, प्रिय वत्स ! तुम ?
स्वर सुनकर पहचाना तुमको ।
'माँ' कहकर मेरे निमाईने,
कहाँ ! पुकारा तो नहीं मुझको—
मधुमिश्रित स्वरसे ?
तब क्या वह आया नहीं ?
वत्स रे ! निताई रे !
उसको तुम कहाँ छोड़ आये ?
शीघ्र ला दो लालको मेरे,
लेकर गोदीमें शीतल करूँ प्राण ।
सूनाकर मेरा घर,
चला गया प्रिय लाल मेरा—
हुये आज बारह दिन ।
एक-एक घड़ी करके,
बीत गये कितने प्रहर,--
गये बीत दिन कितने !
आशामें पथ उसका,
एकटक बिछाये आँख देखती मैं,--
बैठी हुई बस, इसी द्वारपर ।
कहाँ ? कहाँ है मेरा खोया धन,
जीवनका जीवन, सोनेका निमाई चाँद ?
निताई ! निताई ! कहाँ तू ?

कोथा तुइ ?	कहाँ तू ?
कोथा मोर प्राणेर निमाइ ?	कहाँ निमाई मेरे प्राणोंका अवलम्ब ?
(गलदेश जड़ाइया धरिया क्रन्दन)	(गलेसे लिपटकर रोना)
शचीमाता— (काँदिते-काँदिते)	**शचीमाता**—(रोते-रोते)
तुइ निताइ !	अरे निताई !
आमार निमाइ कोथाय बाप् ?	मेरा निमाई कहाँ है वत्स ?
तारे तुइ कोथा रेखे एलि ?	उसे तुम कहाँ छोड़ आये हो ?
बुक जे फेटे गेल मोर	छाती तो फट गयी मेरी
तार अदर्शने ।	उसे बिना देखे ।
निमाइ रे ! बाप् रे !	निमाई रे ! लाल रे !
एकबार देखा दियेजा बाप् विश्वम्भर !	एकबार दरस दिखा जा, बेटा विश्वम्भर !
श्रीनित्यानन्द—	**श्रीनित्यानन्द**—
मागो !	माँ !
आछेन शान्तिपुरे अद्वैतभवने	हैं शान्तिपुरमें अद्वैतके घर
पुत्रवर तव;	पुत्ररत्न तव;
एसेछि आमि हेथा, ताँहार आदेशे,	आया हूँ यहाँ मैं उनके आदेशसे,
लइते तोमारे तथाय ।	ले जानेको तुम्हें वहाँ ।
चल, मागो ! चल; शीघ्रकरि चल,	चलो माँ ! चलो, शीघ्रतासे चलो,
पुत्रदरशने तव;	दर्शन करने निज पुत्रका;
उठ मागो उठ,	उठो ! उठो !
बड़ क्षुधा पेयेछे आमार,	बड़ी भूख लगी है मुझको,
मागो ! करगे रन्धन;	माँ ! रन्धन करो;
प्रसाद पाइब आमि ।	पाऊँगा प्रसाद मैं ।
अभुक्त अतिथि तव गृहे आजि ।	भूखा अतिथि आज घरमें तुम्हारे है ।
शचीमाता—	**शचीमाता**—
निताइ रे ! बाप् रे ! कि बलिलि ?	निताई रे ! वत्स रे ! क्या कहा ?
शान्तिपुरे एसेछे निमाइ मोर ?	शान्तिपुर आया है निमाई मेरा ?
आमाके जेते हबे सेथा ?	जाना होगा मुझे वहाँ ?

केन ? कि दोषे दोषी
नदेवासी तार काछे बाप् !

क्यों ? किस अपराधसे अपराधी बने हैं
नदिया-निवासी उसके निकट तात !

श्रीनित्यानन्द—
मागो ! किछु नाहि जानि आमि;
दिबेन उत्तर इहार पुत्र तव,
जबे तुमि जाबे शान्तिपुरे ।
आमि दास,—तिनि प्रभु,--
हयेछे आदेश ताँर,
ल'ये जेते शान्तिपुरे तोमा--
नदेवासी बहुलोक
गौरदरशने जाबे तोमा सङ्गे ।
जाओ, मागो ! शीघ्र करि,
करह रन्धन,–ठाकुर-भोगेर तरे
पेयेछि क्षुधा बड़ मोर ।

श्रीनित्यानन्द—
माँ ! कुछ भी नहीं जानता मैं;
देंगे इस बातका उत्तर तुम्हारे पुत्र ही,
जाओगी शान्तिपुर जब तुम ।
मैं दास,--वे प्रभु,--
हुआ है आदेश उनका
ले जानेका शान्तिपुर तुम्हें;
नदियानिवासी बहुत लोग
गौरदर्शनके लिये जायँगे तुम्हारे साथ ।
जाओ शीघ्रतासे, माँ !
करो रसोई भगवान्‌के भोग-हेतु
मुझे लगी है भूख बहुत ।

शचीमाता—
(अन्य दिके चाहिया निजमने)
श्रीपाद नित्यानन्द,
अतिथि मोर गृहे आजि,
क्षुधित तिनि,--
जाइ,--अतिथिर सेवा आगे करि गिये ।
निमाइ गृहे थाकिले आजि
कत समादरे,
तुषित से नित्यानन्दे ।
बड़ भाग्य मोर,
श्रीपाद नित्यानन्द भिक्षा याचे मोर गृहे ।
(धीरे-धीरे उठिया गृहाभिमुखे प्रस्थान)

शचीमाता--
(अन्य दिशाकी ओर देखकर स्वगत)
श्रीपाद नित्यानन्द
अतिथि आज मेरे घरमें,
भूखे वे,—
चलूँ, जाकर अतिथि-सेवाकार्य पहिले करूँ।
निमाई घरपर यदि होता आज,
कितने समादरसे
वह परितुष्ट करता नित्यानन्दको ।
अहोभाग्य मेरा,
श्रीपाद नित्यानन्द माँग रहे भिक्षा घर मेरे।
(धीरे-धीरे उठकर घरकी ओर जाना)

श्रीनित्यानन्द—(स्वगत)
आज बार दिन हल,--
देन नाइ जलबिन्दु मुखे,

श्रीनित्यानन्द--(स्वगत)
आज हुए बारह दिन
लिया नहीं जलकण भी मुखमें

गौराङ्गजननी,—
खाओयाइते हवे ताँके सर्व्वाग्रे,—
तबे अन्य काज मोर ।
श्रीविष्णुप्रिया देवी—
शुनितेछि आछेन मृतवत् पड़े धरासने
सेइ दिन हते,
ताँर जीवन संकट ।
ताँर उपर प्रभुर प्राणघाती
निदारुण वाणी
शुनाइते हवे ताँके;
जानि ना ताँर कि आछे कपाले ?
हवे आमा हते एइ अपकार्य्य;
गौराङ्गेर इच्छा इहा,—
इच्छामय तिनि,—
इच्छा ताँर हइबे पूरण ।
आमि नट,—तिनि सूत्रधार,
एइ भावे नाचाइया मोरे
यदि ताँर हय सुख मने,
लीला-पुष्टि हय ताँर,—
करिब ए कार्य्य शतबार आमि,
प्रभु तिनि,—आमि ताँर आज्ञावह दास,
विचारेर नाहि प्रयोजन ।

(प्रस्थान)

गौराङ्गजननीने,
सर्वप्रथम उनको खिलाना होगा,—
तब अन्य कार्य मेरा;
श्रीविष्णुप्रियादेवी—
सुनता हूँ मृतवत् पड़ी हैं पृथ्वीपर
उसी दिनसे,
उनका जीवन है संकटमें ।
इसपर भी प्रभुकी प्राणघाती
निदारुण वाणी
सुनानी होगी उन्हें;
पता नहीं भाग्यमें क्या उनके लिखा है ?
होगा मेरे द्वारा यही अपकार्य ।
गौराङ्गकी इच्छा यही,—
इच्छामय वे,—
होगी पूर्ण इच्छा उनकी ।
मैं नट, वे सूत्रधार,
इसी भाँति मुझको नचानेमें
यदि हो सुख उनके मनमें,
लीला-पुष्टि होती हो उनकी,
शतबार करूँगा मैं कार्य यह ।
प्रभु वे हैं, मैं उनका आज्ञाकारी दास,
सोचने-विचारनेका कोई प्रयोजन नहीं ।

(प्रस्थान)

तृतीय अङ्क

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—भक्तगणेर सहित शचीमातार शान्तिपुर-यात्रा।

(वाहिर्वाटिते भक्तवृन्द-समागम—द्वारे दोला दण्डायमान;—प्रतिवेशिनीसह शचीमाता आङ्गने आसीना)

श्रीनित्यानन्द—

मागो ! करेछि सकल उद्योग,
दोला दाँड़ाये द्वारे,——
समागत भक्तवृन्द,——
जावेन सङ्गे ताँरा तव,
गौराङ्ग-दरशने शान्तिपुरे ।
नदेवासी नरनारी,
जावे बहु जने;——प्रस्तुत सकलेइ;
मागो ! तुमि त्वरा करि एस !

शचीमाता—

निताइ ! चल वाप् ।
जाइतेछि आमि,
सङ्गे निये वौमाके ।
(अन्य दिके चाहिया)
मालिनी दिदि । भगिनी सर्व्वजया !
लये एस वौमाके, हेथा,
(नित्यानन्देर प्रति)
निताइ ! कर किंचित अपेक्षा वाप् !
ह'तेछि प्रस्तुत आमि ।

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन, भक्तगण-सहित शचीमाताकी शान्तिपुर-यात्रा।

(घरके वाहरी हिस्सेमें भक्तवृन्द एकत्रित हैं; द्वारपर पालकी रखी है; पड़ोसिनके साथ शचीमाता आँगनमें वैठी हैं ।)

श्रीनित्यानन्द

माँ ! कर ली है सब तैयारी,——
पालकी खड़ी है द्वारपर,
एकत्रित भक्तवृन्द
जायेंगे सङ्ग वे तुम्हारे सब
गौराङ्ग-दर्शन हेतु शान्तिपुर ।
नदियावासी नर-नारी,
जायेंगे बहुत लोग,—सभी प्रस्तुत हैं,
माँ ! अविलम्ब आओ तुम ।

शचीमाता——

निताई ! चलो तात !
आ रही हूँ मैं,
बहू माँको लेकर साथ ।
(दूसरी ओर देखकर)
मालिनी दीदी ! भगिनी सर्वजया !
ले आओ यहाँ बहू माँको ।
(नित्यानन्दसे)
करो तात किंचित् प्रतीक्षा
हो रही हूँ प्रस्तुत मैं ।

श्रीनित्यानन्द—(नतमुखे मने-मने)	**श्रीनित्यानन्द**--(नतवदन स्वगत)
सेइ निदारुण प्राणघाती वाणी ;——	अति दारुण प्राणघाती वाणी वह,
प्रभुर सेइ कठोर आदेश,——	प्रभुका कठोर वह आदेश,——
मुखेते ना सरे वाक्,——	मुखसे न निकलती बात,
बलिते ना चाय मन,——	कहना न चाहता मन ; —
हाय ! तबु बोलितेइ हबे ।	हाय ! कहना ही होगा, तब भी ।
भेवेछिनु मने-मने, शचीमाता	मनमें यह सोचा था, शचीमाता
बुझि मोर अन्तर-वेदन ; ——	समझकर अन्तर्वेदना मेरी,
अनुभवि मोर हृदयेर व्यथा,——	हृदय-व्यथाको अनुभवकर मेरी,
ए विषम संकट ह'ते,	इस विषम संकटसे
करिबेन उद्धार मोरे	करेंगी उद्धार मेरा,
निज गुणे ;	स्थिति समझकर स्वयं ही ।
किंतु, ता'त ह'ल ना,——	किंतु हुआ वह तो नहीं,——
तिनि जेते चान शान्तिपुरे	वे जाना चाहती हैं शान्तिपुर
ल'ये बौमाके साथे ।	लेकर बहूमाँको साथ ।
एइ परामर्श,——के दिल ताँहारे ?	ऐसी सलाह किसने उन्हें दी ?
किवा करि आमि——बुझिते ना पारि ।	क्या करूँ मैं,—समझ नहीं पाता हूँ ।
चले ना विलम्ब आर त'ए काजे ;	और अब विलम्ब सम्भव नहीं इस काममें,
आजइ जेते हबे मोरे ।	आज ही प्रस्थान करना होगा मुझे ।
(किछु क्षण चिन्ता करिया)	(कुछ क्षण सोचकर)
प्रभु-आज्ञा बलवान,——	प्रभु-आज्ञा बलवान्,
पालिब सर्व्वथा ताहा ;	सर्वथा पालूँगा उसे ;
हृत्-पिण्ड, जाय छिड़े जाक्,——	हृदय-पिण्ड होता है विदीर्ण, तो हो जाय ;
बाजुक् प्राणे शेलेर आघाते,——	प्राणोंपर बज उठे आघात सेलोंका,
पड़ुक माथाय मोर वज्राघात शत,——	वज्राघात शत-शत पड़े माथेपर मेरे,——
आज्ञा-अवहेला प्रभुर,	प्रभु-आज्ञा-अवहेलन
करिते ना पारि आमि ।	कर सकता नहीं मैं ।
(अवनत वदने शचीमातार प्रति)	(नतमस्तक हुए शचीमातासे)
मागो ! चरणे धरिये तव	माँ ! चरण तुम्हारे पकड़
करि निवेदन कर जोड़े ; ——	करता निवेदन हूँ हाथ जोड़,

बौमाके राखि नदीयाय,	छोड़ बहूमाँको नदियामें
एकाकिनी चल तुमि	चलो अकेली ही तुम,
पुत्र-दरशने ।	पुत्र-दर्शनके लिये ।
संन्यास-धर्म्म	संन्यासधर्मका
करेछेन आश्रय पुत्र तव,	आश्रय लिया है पुत्रने तुम्हारे,
संन्यासीर धर्म्म नहे स्त्रीमुख-दर्शन ।	स्त्री-मुख-दर्शन न धर्म संन्यासीका ।
मागो ! वलि आर एक कथा--	माँ ! करता हूँ निवेदन एक और बात,
शुन मन दिया;	सुनो मन देकर,--
गिये शान्तिपुरे पुत्रवधू तव,	शान्तिपुर जाकर पुत्रवधू तुम्हारी
पड़िवेन विषम विपाके;	पड़ेंगी विषम विपत्तिमें;
तुमिओ मागो ! ल'ये ताँके	तुम भी माँ ! ले जाकर उनको
व्यतिव्यस्त हबे ।	पड़ोगी उलझनमें ।
सब दिक करि विवेचना,	करके विचार सब ओरसे
निवेदि चरणे तव,	तव पाद-पद्मोंमें करता निवेदन हूँ,--
चल तुमि एकाकिनी मोर साथे ।	चलो अकेली ही तुम साथ मेरे ।
शचीमाता--(काँदिते-काँदिते)	**शचीमाता**--(रोते-रोते)
श्रीपाद नित्यानन्द ! बुद्धिमान तुमि,--	श्रीपाद नित्यानन्द ! बुद्धिमान तुम हो,
निमायेर अग्रज तुमि,--पूज्य तुमि,--	निमाईसे बड़े तुम, पूज्य तुम;
बल देखि बाप !	बोलो तो सही तात !
मोर शिरे दिये हाथ--	सिरपर धर मेरे हाथ--
कि क'रे ए कथा,	किस प्रकार यह बात,
ए निदारुण प्राणघाती कथा,	यह निदारुण प्राणघाती बात,--
वलिव बौमाके आमि ?	कहूँगी मैं बहूमाँको ?
कि क'रे बुझाइव ताँके ?	किस प्रकार उसको समझाऊँगी ?
नदेवासी नरनारी सबे जावे,	नदियावासी नर-नारी सब जायँगे,--
निज जन,--पर जन,--	अपने या पराये हों,--
केह नाहि जावे वाद;	कोई नहीं बच रहेगा ।
एइ देख,	यह देखो !
लोके लोकारण्य पथ,--	झुंड-झुंड लोग उमड़ पड़े पथपर,
नदीयाय केह नाहि आर;	अब कोई नहीं रहा नदियामें ।

नित्यानन्द ! स्थिर भावे	नित्यानन्द ! स्थिर चित्तसे,
विवेचना क'रे देख तुमि,	कर देखो विवेचना तुम्हीं—
ए काज आमा ह'ते हइबे केमने ?	यह कार्य बनेगा मेरे द्वारा किस प्रकार ?
तुमि यदि आमि ह'ते	तुम यदि 'मैं' होते
करिते कि ? बल त आमाय ?	करते क्या ? कहो तो मुझे ?
राखि नदीयाय बौमाके,	छोड़ नदियामें बहूमाँको
पारिब ना जेते आमि ।	जा नहीं सकूँगी मैं ।
श्रीनित्यानन्द—	**श्रीनित्यानन्द**—
मागो ! सब बुझि आमि,—	माँ ! समझता हूँ सब मैं,
सब जानि आमि;	जानता मैं सभी कुछ;
किंतु जानिया-बुझिया करिब कि ?	किंतु करूँगा क्या, जानकर समझकर ?
बुद्धि,—विवेचना-शक्ति,—	बुद्धि, विवेचना-शक्ति,
विवेक ओ विचार,—	विवेक, विचार तथा
मानुषेर कर्त्तव्य कर्म्म जाहा किछु आछे;	पालनीय कर्त्तव्य जो कुछ है मानवका,
आर धर्म्म,—	और धर्म,—
वेदधर्म्म,—लोकधर्म्म,—	वेद-धर्म, लोक-धर्म,
आत्मधर्म्म ओ परधर्म्म,—	आत्म-धर्म, पर-धर्म तथा
करेछि चिरतरे समर्पण मागो !	दिया है सबको समर्पितकर सदाके लिये माँ!
तव पुत्रवर पदे;	तुम्हारे पुत्ररत्नके चरणोंमें ।
प्रभु तिनि,—जगत-पालक,—	प्रभु वे हैं,—जगत्पालक,—
क्षुद्रबुद्धि सेवक आमि ताँर,—	क्षुद्रबुद्धि सेवक मैं उनका,
आज्ञावह भृत्य आमि,—	आज्ञाकारी चाकर मैं,—
आज्ञा ताँर बलवान सर्व्व काजे ।	उनकी आज्ञा प्रधान सब कामोंमें ।
मागो ! बलिते फेटे जाय बुक,—	माँ ! कहते हुए छाती विदीर्ण होती,
शुन तबे,—तव पुत्रेर आदेश—	सुनो तब,—निज सुतका आदेश—
एका **श्रीविष्णुप्रिया** छाड़ा	एक सिवा **श्रीविष्णुप्रियाके**
शान्तिपुरे जेते,—दरशने ताँर,—	शान्तिपुर जाना, उनके दर्शन निमित्त,
कार ओ नाहि माना ।	किसीके लिये निषेध नहीं ।
आछे निगूढ़ रहस्य एइ लीलारङ्गे ताँर,	है निगूढ़ रहस्य उनकी इस लीलामें,
आछे निगूढ़ उद्देश्य,—	निगूढ़ उद्देश्य है

मूले एइ आदेशवाणीर ।
मागो ! धैर्य्यवती तुमि, गौराङ्ग-जननी,
कर मन स्थिर;
सुस्थचित्ते विचारिये देख एक बार,
एखन पुत्र-आज्ञा
सर्व्वभावे पालनीय तव ।

शचीमाता—

(आश्चर्य भावे अन्य दिके चाहिया)

किछु नाहि बुझि,—
कि जे बले नित्यानन्द !—
पुत्र-आज्ञा पालनीय मोर !
एकि कथा ? एकि विधि ?
कोन शास्त्रे बले इहा ?
अवधूत पागल नित्यानन्द,—
एकि कथा बले मोरे ?
माता आमि,—पुत्र मोर निमाइ,—
लोके बलुक,—जेइ जाहा,—
नित्यानन्द जाहाइ बुझुक,—
स्नेहेर पात्र आज्ञाधीन पुत्र मोर निमाइ,
पुत्र-आज्ञा ना चलिबे जननीर काछे ।

(श्रीनित्यानन्देर प्रति)

नित्यानन्द ! एइ निदारुण कठोर वाणी
आनिओ ना आर तुमि मुखे;
विष्णुप्रिया जाबे मोर साथे ।

श्रीनित्यानन्द—(स्वगत)

कि विपम संकटे,
फेलिलेन प्रभु आजि मोरे,
बुझिते ना पारि;
प्रभुर वात्सल्यमयी जननी इनि;
भजेन गौराङ्ग-धने

मूलमें इस आदेश-वाणीके ।
माँ ! धैर्यवती तुम हो, गौराङ्ग-जननी हो,
मनको स्थिर करो ।
सुस्थिर चित्तसे विचारकर देखो एकबार,
इस समय पुत्र-आज्ञा
सर्वविधि पालनीय तुम्हारे लिये ।

शचीमाता--

(साश्चर्य दूसरी ओर देखती हुई)

कुछ नहीं समझ पाती हूँ,--
कह क्या रहा है नित्यानन्द ?—
पुत्र-आज्ञा पालनीय मेरे लिये !
यह, भला, कैसी बात ? कैसा विधान यह?
कौन-सा शास्त्र कहता यह ?
अवधूत, पागल नित्यानन्द,--
यह क्या बात कह रहा है मुझे ?
माता मैं,--बेटा निमाई मेरा,
लोग कहें,--जैसा जो चाहे,--
नित्यानन्द समझे कुछ भी,--
स्नेहपात्र, आज्ञाधीन पुत्र निमाई मेरा,
नहीं चलेगी पुत्रकी आज्ञा जननीके आगे

(श्रीनित्यानन्दसे)

नित्यानन्द ! यह निदारुण, कठोर वाणी
अब तुम लाना न मुखपर;
विष्णुप्रिया साथ मेरे जायगी ।

श्रीनित्यानन्द—(स्वगत)

किस विषम संकटमें
डाल दिया आज मुझे प्रभुने,--
समझ नहीं पाता हूँ ।
वात्सल्यमयी जननी ये प्रभुकी
गौराङ्ग वरका करती भजन हैं,

शुद्ध वात्सल्यभावे ।	शुद्ध वात्सल्यभावसे;
ऐश्वर्य्येर गन्ध नाहि इथे ।	ऐश्वर्य-गन्ध नहीं रञ्चमात्र यहाँ ।
मोर पक्षे	यह ठीक है कि मेरे लिये
प्रभु-आज्ञा बलवान बटे;	प्रभु-आज्ञा ही बलवान् है;
किंतु शचीमातार पक्षे,	किंतु शचीमाताके लिये
स्नेहेर बन्धन बड़ ।	स्नेह-बन्धन प्रधान है ।
प्रेमपाशे बेन्धेछेन इनि	इन्होंने प्रेमपाशमें लिया है बाँध
जगतपतिरे;	विश्वपतिको;
सङ्गे ल'ये पुत्रवधू—	पुत्रवधूको संग लेकर
फिराइबेन संन्यासी पुत्रके गृहे पुनः	लौटा लायेंगी संन्यासी पुत्रको घर पुनः—
एइ वाञ्छा ताँर ।	यही उनकी लालसा है ।
अभिभूत मा जननी वैष्णवी मायाय,—	अभिभूत है माता श्रीवैष्णवी मायासे,
ना बुझेन किछु पुत्रेर ऐश्वर्य्य तिनि;	जानतीं न रञ्चमात्र एश्वर्य पुत्रका वे ।
गौराङ्ग हे ! नवद्वीपचन्द्र हे !	गौराङ्ग हे ! नवद्वीपचन्द्र हे !
कृपा करि जननीर,	कृपाकर जननीकी
करि माया दूर,—कर दिव्य चक्षुदान ।	कर माया दूर, करो दिव्य चक्षुदान ।
देखुन तिनि,—तुमि कि वस्तु ?	देखें वे—तुम हो तत्त्व कौन ?
कि हेतु तव एइ लीला-अभिनय ?	किसहेतु तुम्हारी इस लीलाका अभिनय ?
(शचीमातार प्रति)	(शचीमातासे)
मागो ! सर्व्वज्ञा तुमि,	माँ ! सर्वज्ञा तुम हो ।
सब तुमि जान,—	सब कुछ तुम जानती हो,
सब तुमि बुझ,—	सब कुछ तुम समझती हो—
पुत्र तव नहे गृही,—संन्यासी ओ नहे; —	पुत्र तव गृहस्थी नहीं, संन्यासी भी नहीं,
धर्म्माधर्म्म,—सुख-दुःखेर,—भाल-मन्देर,—	धर्माधर्म, सुख-दुःख, भला-बुरा,—
सर्व्वातीत तिनि ।	सबसे अतीत वे ।
जगज्जीव माया-मोहे ह'ये विजड़ित	माया-मोहसे विजड़ित हो जगत्के जीव
गेछे भूले कालवशे स्व-स्वरूप;	कालके प्रवाहमें भूल गये निज स्वरूप;
हयेछे विस्मरण	हो गया विस्मृत है
तारा सम्बन्ध कृष्ण सने ।	कृष्णके साथ अपना सम्बन्ध उन्हें ।
कृष्ण सने—कृष्णदासेर,—	कृष्णके साथ कृष्णके दासक

बुझाइते नित्य सम्बन्ध;
तव गर्भे मागो! जीवबन्धु, जगत-जीवन
श्रीगौराङ्ग चाँदेर उदय ।
मागो! नयन मुदिया तुमि,
करि चित्त स्थिर;—
देख देखि एक बार,
संसारेर एइ नाटचशाले,
गौराङ्ग-जननीरूपे—
केन आविर्भाव तव ?
के तुमि? कि हेतु हेथा?
के तव पुत्र?
के तव पुत्रवधू ?
के हेतु नदीयाय ए संसार तव ?
नवद्वीप-लीला-अभिनये
गौराङ्गजननी ओ घरणी—
लीलामय श्रीगौराङ्गेर
प्रधान सहाय ।
मागो! करि नयन मुद्रित
एक बार देख देखि,
कार आज्ञा पालितेछ तुमि ?

शचीमाता—
(स्तम्भितेर न्याय चक्षु मुद्रित करिया ध्यानमग्न; किछु क्षण परे)

निताइ !
आर किछु बलिबार नाइ मोर,—
राख बाप् निमायेर कथा
सर्व्वभावे;
तार जाते हय सुख,—
जाते तार हय धर्म्मरक्षा,—
ताइ मोर अवश्य कर्त्तव्य एखन ।

नित्य सम्बन्ध समझानेको
गर्भसे तुम्हारे माँ! जीवबन्धु, जगज्जीवन
श्रीगौराङ्ग चन्द्र हुए उदित ।
माँ! आँखें मूँदकर तुम,
स्थिरकर चित्तको,
देखो तो एक बार,—
इस विश्वरूपी नाट्यशालामें,
गौराङ्गजननीके रूपमें
हेतु क्या तुम्हारे आविर्भावका ?
कौन तुम ? किस हेतु यहाँ तुम ?
कौन, भला, पुत्र तव ?
कौन पुत्रवधू ?
किसलिये नदियाका यह तुम्हारा संसार ?
नवद्वीप-लीलाके अभिनयमें
गौराङ्ग-जननी और गृहिणी,
लीलामय श्रीयुत गौराङ्गकी
सहायिका प्रधान ये ।
माँ! लोचन निमीलितकर
एकबार देखो तो,—
किसका आदेश तुम पालन कर रही हो ?

शचीमाता—
(स्तम्भित-सी हुई आँखोंको बंद करके ध्यानमग्न हो जाती हैं; कुछ क्षणोंके पश्चात्)

निताई !
अब कुछ कहना नहीं मुझको,
रक्षा करो तात! निमाईके वचनकी
सभी भाँति ।
उसको जिससे मिले सुख,
उसकी धर्मरक्षा हो जिससे,—
इस समय कर्तव्य वही निस्संदेह मेरे लिये ।

बलि गिये बौमाके,	जाकर कहूँ बहूमाँको,
एइ निदारुण प्राणघाती वाणी;	अति दारुण प्राणघाती वाणी यह।
आहा ! सरला बालिका से जे,	बालिका वह सरला आह !
त्रिजगते स्वामीभिन्न,—	त्रिभुवनमें स्वामीको छोड़
केह नाहि तार।	कोई नहीं उसका।
दुर्व्विषह पतिविरहज्वाला,—	दुस्सह पति-विरह-ज्वाला
सहिते छे अभागिनी बाला—	बाला अभागिनी वह सहती है,
शुधु मोर चेये मुख पाने।	देख-देख मेरे मुखकी ओर, बस।
केमने राखि तारे एकाकिनी नदीयाय,—	किस प्रकार छोड़ उसे एकाकिनी नदियामें
जाब आमि शान्तिपुरे।	जाऊँगी मैं शान्तिपुर ?
(मालिनी-काञ्चना प्रभृति प्रतिवेशिनी दिगेर प्रति)	(मालिनी-काञ्चना आदि पड़ोसिनियोंके प्रति)
मालिनी दिदि ! सर्व्वजया ! काञ्चने !	मालिनी दीदी ! सर्वजया ! काञ्चने !
थाक तुमि सबे गृहे मोर,	तुम सभी रहो घर मेरे
बौमाके ल'ये,	लेकर बहूमाँको;
शान्तिपुरे जाब आमि एका,	शान्तिपुर जाऊँगी अकेले मैं।
बलिलेन नित्यानन्द	कहते हैं नित्यानन्द,
निमाइ करेछे माना बौमाके जेते।	किया है निमाईने निषेध जाना बहूमाँका।
मालिनी—	**मालिनी**—
दिदि ! जाओ तुमि,	दीदी ! जाओ तुम,
विष्णुप्रिया रबे मोर काछे;	विष्णुप्रिया रहेगी मेरे पास।
स्वामी-दरशने—वञ्चिता अभागिनी—	पति-दर्शनसे वञ्चित अभागिनी,
करमेर फले।	कर्मोंके फलसे;—
ए दुःख तार जिवने ना जावे।	यह दुःख जायगा न जीवनमें उसके।
पतिर आदेशे,	पतिके आदेशसे
पतिप्राणा रमणीर पति-दरशन माना !	पतिप्राणा रमणीको पति-दर्शन वर्जित !
प्रबोधेर एइ नूतन उपाय,—	प्रबोधनका नूतन उपाय यह,—
ए नव विधान,—	यह नया विधान—
निमायेर स्वकपोलकल्पित किना	निमाईका यह स्वकपोलकल्पित है या नहीं ?

धन्ध लागे मने ।	पहेली-सी लगती है मनमें ।
विष्णुप्रिया बुद्धिमती, सुबोधिनी बाला,	विष्णुप्रिया बुद्धिमती, बाला सुबोधिनी,
पति-परायणा;	पति-परायणा है;
पतिर आदेश से करिबे पालन ।	स्वामीकी आज्ञा वह पालन करेगी ।
काञ्चना—	**काञ्चना**—
रहिब आमि सखि सने एइ गृहे,—	रहूँगी मैं सखीके साथ इसी घरमें
ह'ये निश्चिन्त तुमि मागो !	होकर निश्चिन्त तुम, माँ !
जाओ शान्तिपुरे, तव पुत्र दरशने ।	जाओ शान्तिपुर अपने पुत्रको देखने ।
पतिप्राणा रमणीर,	पति-प्राणा रमणीको
पति-दरशन माना,	पति-दर्शन-निषेध,—
कोन शास्त्रे बले ?	किस शास्त्रका विधान ?
शास्त्र-ज्ञानाभिमानी, पण्डित निमाइ,	शास्त्र-ज्ञानाभिमानी पण्डित निमाई
आनिलेन कोन सुखे,	किस सुखकी आशामें लाये मुँहपर
एइ निदारुण कथा,——	यह निदारुण बात,——
किछु नाहि बुझि ।	समझमें न आता कुछ ।
मागो ! जे पारे बलिते	माँ ! जो कह सकता है
हेन निदारुण वाणी,—	ऐसी कठोर वाणी,
नाइ तार प्राण,——	हृदय नहीं है उसमें,
देहे नाइ दया-मया,—	नहीं है उसमें दया-मयाकी गन्ध;
नारी वधे भय नाइ तार ।	नारी-वधका भी न उसको भय है ।
मागो ! जाब ना आमि शान्तिपुरे,	शान्तिपुर जाऊँगी न माँ ! मैं
तव पुत्र-दरशने;	तव पुत्र-दर्शन हेतु;
देखिब विष्णुप्रियारे आमि;	निहारूँगी मैं विष्णुप्रियाको ।
गौरदरशन,—	गौरदर्शन—
आर गौर-प्रिया-दरशन,—	और गौर-प्रिया-दर्शन,——
एक वस्तु—तुल्यफल,—	एक वस्तु, समान फलवाली ।
नदीयार राजा गेछे चले,—	चले गये, नदियाके राजा
राजराणी आछे घरे;	राजरानी राजती हैं घरमें;
नदीयार राणीर दासी मोरा,——	नदियाकी रानीकी दासी हम,
सखि मोरा,—	सहचरी हम,——
छाड़ि ताँरे कोथाओ ना जाब ।	छोड़ उन्हें कही भी न जायँगी ।

शचीमाता—

धन्य मा काञ्चना !
धन्य तव प्रेम-भक्ति
विष्णुप्रिया प्रति ।
शक्ति-पूजार सार तत्व—
बुझियाछ तुमि,
तोमार ए साधु पथ,
शक्तिसाधकेर मूल मन्त्र,
शक्ति-शक्तिमाने अभेद-तत्व,
बुझाइले तुमि जीवे आजि ।
जाओ मा ! करगे तुमि विष्णुप्रिया-सेवा,
एइ सेवा ह'ते, तव हबे इष्ट-लाभ;
गौराङ्ग सदय हबे तोमा प्रति ।

(गृहे हइते श्रीविष्णुप्रियादेवीर आङ्गिनाय आगमन एवं शचीमाताके बाहुमूले आबद्ध करिया क्रन्दन)

श्रीविष्णुप्रिया—

जाब आमि मागो !
शान्तिपुरे तव साथे ।
एका यदि जेते तुमि,—
किछु नाहि बलिताम ।
देखितेछि,—
भाङ्गियाछे सर्व्व नदीयार लोक,—
शान्तिपुरे जेते,—
तव पुत्र-दरशने;
आमि केन तबे पड़िलाम बाद ?
शुनितेछि मागो ! तुमि नाकि,—
रेखे जाबे मोरे एकाकिनी घरे ।
छाड़ि तोमा नारिब रहिते आमि
एइ शून्य गृहे माझे तिलार्द्धेक काल ।

शचीमाता—

धन्य बेटी काञ्चना !
धन्य तुम्हारी प्रेमभक्ति
विष्णुप्रियाके प्रति ।
शक्ति-पूजाका सार तत्त्व
समझा है तुमने;
तुम्हारा यह श्रेष्ठ पथ,—
मूल-मन्त्र शक्ति साधकोंका है ।
शक्ति-शक्तिमानका अभेद-तत्त्व
समझाया जीवोंको तुमने आज ।
जाओ, बेटी! करो विष्णुप्रियाकी सेवा तुम।
इसी सेवाके द्वारा होगा तुम्हें इष्ट-लाभ;
गौराङ्ग होगा सकरुण तुम्हारे प्रति ।

(घरमेंसे श्रीविष्णुप्रियादेवीका आँगनमें आना और शचीमाताको भुजाओंमें बाँधकर क्रन्दन करना)

श्रीविष्णुप्रिया—

माँ ! जाऊँगी मैं
शान्तिपुर तुम्हारे साथ ।
जाती यदि अकेले तुम,
कुछ नहीं कहती मैं ।
देखती हूँ,—
टूट पड़े ह सभी लोग नदियाके
शान्तिपुर जानेको
तुम्हारे पुत्रका दर्शन करने
मैं ही तब किसलिये जाऊँगी छाँट दी ?
सुनती हूँ, माँ ! तुम भी क्या
छोड़कर जाओगी घरमें अकेली मुझे ?
बिना तुम्हारे रह सकती नहीं मैं
इस सूने घरमें आधे पलमात्र भी ।

मागो ! आमि सङ्गे जाव तव,	जाऊँगी माँ ! मैं तुम्हारे साथ,--
ए कथा बलिओ ना ताँके,—	यह बात कहना नहीं उनसे;
दूर ह'ते हेरिब एकटि बार	दूरसे ही निहार लूँगी एकबार
पुत्रेर तव रातुल चरण ।	अरुण चरण पुत्रके तुम्हारे ।
(क्रन्दन)	(क्रन्दन करना)
शचीमाता--	**शचीमाता--**
बौमा ! वक्षेर धन आमार !	बहूमाँ ! वक्षस्थलकी निधि मेरी,
बुके एस तुमि,	छातीसे लगो आ तुम,
कोले करि जुड़ाइ जीवन ।	लेकर तुम्हें गोदमें शीतल करूँ जीवनको ।
पुत्र-विरह-तापे,	पुत्र-विरह-तापमें
ज्वलितेछे अहरहः हृदि मोर,	जलता है हृदय मेरा अनुदिन,
तुषेर आगुन ज्वले	जल रहा तुषानल है
मनेर भीतरे मोर निशिदिन;	मेरे अभ्यन्तरमें निशिदिन ।
सुधु तव चेये मुख पाने,—	केवल तुम्हारे मुखड़ेकी ओर देखकर,
रेखेछि एइ देह भार,	धारण किये हूँ यह देह-भार ।
बुद्धिमती तुमि,	बुद्धिमती तुम हो,
सुबोधिनी बाला तुमि,	सुबोधिनी बाला तुम,
देखितेछ स्वचक्षे सकलि तुमि,--	देख रही हो सब कुछ आँखोंसे अपने तुम,
बलिबार किछु नाइ,—	कहना कुछ शेष नहीं,
किछु नाइ बुझाबार तोमाय;	कुछ नहीं तुमको है समझाना ।
मालिनी दिदि रहिवे तव काछे,	मालिनी बहिन रहेगी तुम्हारे पास,
काञ्चना थाकिबे तव साथे,	काञ्चना रहेगी तुम्हारे साथ ।
जेतेछि आमि शान्तिपुरे	जा रही हूँ मैं शान्तिपुर
दिन दुइ तरे,--निमाइके आनिते;	मात्र दिवस दोके लिये, लाने निमाईको;
ठेलिते से नारिबे मोर कथा,	टाल नहीं सकेगा वह बात मेरी,
ताइ, नित्यानन्द प्रमुख भक्तगणे सबे	इसीलिये नित्यानन्द प्रभृति भक्तगण सब
ल'ये मोरे जेतेछेन शान्तिपुर धामे ।	लेकर मुझे जा रहे हैं शान्तिपुर धाम ।
स्थिर ह'ये रह तुमि घरे,	होकर रहो स्थिर-चित्त घरमें,
शीघ्र फिरिव आमि पुत्र ल'ये, नवद्वीपे	लेकर पुत्रको शीघ्र ही लौटूँगी मैं नवद्वीपमें
तव आशा हइवे पूरण ।	होगी तव आशा पूर्ण ।

श्रीविष्णुप्रिया—	श्रीविष्णुप्रिया—
मागो ! शुनेछि सखिमुखे	माँ ! सुना है, सखि-मुखसे
तव पुत्रेर आदेश,—	तुम्हारे पुत्रका आदेश,—
एबे शुनिलाम मुखे तव	अब सुना मुखसे तुम्हारे
प्रबोधेर वाक्य उपदेश ।	प्रबोधमयी वाणीका उपदेश ।
अभागिनी विष्णुप्रिया,—	अभागिनी विष्णुप्रिया
सहिबे सर्व्वविध दुःख-ताप-शोक,	सर्वविध सहन करेगी दुःख-ताप-शोक
अकातरे, तार पतिर आदेशे ।	अकातर बन अपने पतिके आदेशसे ।
तार अदृष्टेर लिखन इहा,	उसके यही भाग्यमें अङ्कित,—
विधातार विचित्र सृजन विष्णुप्रिया,—	विधिकी विचित्र रचना विष्णुप्रिया,—
प्राणे तार सकलि सहिबे,	सब कुछ सहेंगे प्राण उसके,
बड़इ कठिन प्राण तार,	बड़े ही कठोर प्राण उसके हैं ।
ता ना ह'ले,—	ऐसा न होता तो,
शुनि एइ प्राणघाती निदारुण वाणी	सुनकर भी अति दारुण, प्राणघाती वाणी यह
बाहिर ना ह'ल छार प्राण तार;	निकलते बाहर न उसके दग्ध-प्राण क्या ?
मागो ! जाओ तुमि शान्तिपुरे,	माँ ! जाओ तुम शान्तिपुर,
गृहे आमि रब एकाकिनी ।	रहूँगी अकेली मैं घरमें ।

गीत

ओहे त्रिजगत-नाथ !	एहो त्रिजगत-नाथ !
जगत तारिते एसे मोरे छाड़िले ।	सिवा एक मेरे, सचराचर जगत तारने आये ।
अभागी पापिनी बले दुखे भासाले ॥	समझ अभागिन, पापिन मुझको दुःख-पयोधि डुबाये ॥
मोसम दुखिनी नाइ,	दुखिया न अन्य मेरे समान,
ताइ हे दिले ना ठाँइ,	अतएव नहीं हे ! दिया स्थान
दुखहारी, सुशीतल चरण तले ।	चरणोंकी शीतल छायामें जहाँ दुःख मिट जाये ।

त्रिजगत-नाथ तुमि,
चरणेर दासी आमि,
कि सुख पाइले नाथ! चरणे ठेले।

ए दुख जावे ना मोर पराण गेले॥

निखिल त्रिलोकीके तुम ईश्वर,
चरण-अनुचरी मैं सेवा-पर,
क्या सुख मिला नाथ! चरणोंसे
जो मुझको ठुकराये?
यह दुख नहीं मिटेगा मेरा,
प्राण भले ही जाये॥

शचीमाता— (निज मने)

आर किछु वलिबार नाइ,—
बुझाबार नाइ किछु आर;—
प्रबोधेर सीमा हयेछे उत्तीर्ण;
आर मोर नाहि शक्ति प्रबोधिते,
पति-विरह-विधुरा बालाके।

(क्रन्दन करिते-करिते प्रस्थान)

शचीमाता--(स्वगत)

और कुछ कहना नहीं,
समझाना-बुझाना अब और कुछ नहीं,
सान्त्वना देनेकी सीमा शेष हो गयी;
और नहीं शक्ति मुझमें सान्त्वना देने ी
पति-विरह-विधुरा बालाको।

(रोते-रोते प्रस्थान)

तृतीय अङ्क ।

(तृतीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवने निभृत कक्षे
श्रीविष्णुप्रिया ओ काञ्चना ।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने !
पाँच दिन हल आज
गियेछेन माता शान्तिपुरे ।
हयेछेन प्रतिश्रुत तिनि मोर काछे,
आसिबेन शीघ्र फिरि,
पुत्र सने पुनः नदीयाय ।
सखि ! विलम्ब केन एत ?
बहुदूर नहे शान्तिपुर,—
एक दिने आसे-जाय लोक;
ह'तेछे संदेह मने मोर,—
पुनः गृहे ना फिरिबेन गुणमणि ।
मातृभक्त-शिरोमणि तिनि,
जननीर वाक्य,
वेद-वाक्य ह'ते बड़ ताँर काछे;
किंतु सखि ! कपाल भेङ्गेछे मोर,
बड़ अभागिनी आमि;
नाना चिन्ता हय मोर मने,—
चिन्ता-ज्वरे जर्ज्जरित एइ देह मोर,
तुमि सखि ! निशि-दिन आछ काछे मोर,
ताइ रेखेछ भुलाये मोरे
नाना भावे;
किन्तु सखि ! बलि सत्य कथा,

दृश्य—श्रीगौराङ्ग-भवनके एकान्त कक्षमें
श्रीविष्णुप्रिया और काञ्चना ।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने !
पाँच दिन हुये आज
शान्तिपुर गये माताको ।
हुई थीं प्रतिज्ञाबद्ध मेरे समीप वे,—
आयेंगी लौटकर शीघ्र
पुत्रके साथ नदिया पुनः ।
सखि ! विलम्ब इतना किसलिये ?
शान्तिपुर नहीं बहुत दूर है,
एक ही दिनमें लोग आते-जाते हैं;
होता है संदेह मेरे मनमें,—
फिर न घर आयेंगे लौटकर गुणमणि ।
मातृभक्त-शिरोमणि वे,
जननी-वाक्य
वेद-वाक्यसे भी गुरुतर उनके लिये ।
किन्तु सखि ! फूटा है कपाल मेरा,
बड़ी अभागिनी मैं;
नाना चिन्ताएँ उठ रही हैं मनमें मेरे ।
चिन्ता-ज्वर-जर्जरित मेरा शरीर यह,
तुम सखि ! रहती हो निशिदिन पास मेरे,
इसीलिये रखती हो भुलाये मेरे मनको
नाना विधिसे ।
किंतु सखि ! कहती हूँ सत्य बात,

मन मोर बड़इ चञ्चल,—
घोर संदेह मोर मने,—
आर बुझि गुणमणि ना फिरिबेन गृहे ।
आर ना हेरिब ताँर रातुल चरण ।
(क्रन्दन)

काञ्चना—
सखि ! विष्णुप्रिये !
बड़ अबोधिनी तुमि;
श्रीवास पण्डित आदि
नदीयार सर्व्व भक्तगण
गियेछेन शान्तिपुरे;
कइ ? केहइ त आसेन नाइ
फिरे नदीयाय ।
तबे केन वृथा एत
उत्कण्ठा तोमार ?
अद्वैत-गृहिणी सीतादेवी,
करेन स्नेह नदीयार चाँदे पुत्र सम;
एबे पेये ताँरे गृहे,—
तुषिछेन समादरे लये सर्व्व भक्तगणे,
ताइ ताँर आसिते विलम्ब;
सखि ! तुमि कर मन स्थिर
चल, आज जाइ गङ्गास्नाने ।

श्रीविष्णुप्रिया—
सखि ! हाते धरि तव,
ओ कथा आर आनिओ ना मुखे;
जे दिन ह'ते
हयेछेन गृहत्यागी गुणमणि मोर,—
करेछि प्रतिज्ञा आमि,
नाहि बाहिरिब पथे गृह ह'ते,
पोड़ा मुख आर ना देखाव

मन मेरा अतिशय चञ्चल,—
घोर संदेह मेरे मनमें,—
लगता है गुणमणि अब नहीं लौटेंगे घरमें,
अब नहीं देखूँगी उनके अरुण चरण ।
(क्रन्दन)

काञ्चना—
सखि विष्णुप्रिये !
बहुत ही भोली तुम;
श्रीवास पंडित आदि—,
नदियाके भक्त सभी
गये हैं शान्तिपुर;
कहाँ, कोई भी तो आये नहीं
लौटकर नदियामें !
तब किस कारण व्यर्थ इतनी
उत्कण्ठा तुमको है ?
अद्वैत-गृहिणी सीतादेवी
करती हैं पुत्र-सम स्नेह नवद्वीप-चन्द्रसे,
इस समय पाकर उन्हें घरमें
लाड़ लड़ाती होंगी सादर सब भक्तों सहित,
इसीसे विलम्ब यह आनेमें उनके ।
सखि ! तुम करो मन स्थिर,
चलो, आज चलें गङ्गास्नान करने ।

श्रीविष्णुप्रिया—
सखि ! तुम्हारे हाथ पकड़ करती हूँ विनय,
यह बात फिर नहीं लाना अधरपर ।
जिस दिनसे
हुए हैं गृहत्यागी गुणमणि मेरे,
की है प्रतिज्ञा मैंने,—
बाहर नहीं जाऊँगी पथपर गृहसे,
झुलसा मुख अब न दिखाऊँगी

काहाकेओ,—	किसीको भी ।
थाकुन माथाय मोर—भागीरथी देवी;	रहें सिर-माथेपर मेरे भागीरथी देवी,
बलितेछे कत लोके कत कथा सखि !	कह रहे कितने लोग कितनी बातें, सखि !
कार मुखे हात दिबे तुमि ?	किस-किसके मुखपर धरोगी हाथ तुम ?
तोमादेर नदीया-नागर,	नदिया-नागर तुम लोगोंके
गुणमणि मोर,—छिलेन रूपेर माणिक;	गुणमणि मेरे, रूपके रत्न जो थे ।
नदीयार मध्ये तिनि	नदियामें वे
सर्व्वश्रेष्ठ रूपवान, गुणवान,	सर्वश्रेष्ठ रूपवान, गुणवान,
प्रधान पण्डित; नवीन यौवने,	प्रधान पण्डित; नव-यौवनमें
छाड़ि नदीयार ए सुख-सम्पद,	छोड़कर नदियाकी यह सुख-सम्पदा,
छाड़ि वृद्धा शोकातुरा जननी,	छोड़कर वृद्धा, शोकविह्वला जननीको,
त्यजि अभागिनी नारी,	त्यागकर अभागिनी नारीको,
संन्यास करेछेन तिनि ।	संन्यास ग्रहण किया है उन्होंने ।
एकि ताँर संन्यासेर काल ?	यह क्या उनके संन्यासका समय था ?
केन तिनि ह'लेन गृहत्यागी	किसलिये हुए वे गृह-त्यागी
एइ नवीन वयसे ?	इस चढ़ती उमरमें ?
लोकचक्षे दोषी आमि सर्व्वभावे,—	लोगोंकी दृष्टिमें दोषी मैं सभी भाँति ।
ता' ना ह'ले, गुणमणि मोर	होती जो न बात यह, गुणमणि मेरे
छाड़िबेन केन गृह,—आर	छोड़ते क्यों घर, और
नदीयार ए सुख सम्पद ?	नदियाकी यह सुख-सम्पदा ?
सखि ! बलेछि बड़ दुखे आमि	सखि ! परम दुःखसे कहती मैं—
आर ना देखाब ए पोड़ा मुख	अब न दिखाऊँगी अपना यह दग्ध मुख
नदीयावासीरे ।	नदियानिवासियोंको ।

गीत

नाथ हे ! प्रिय हे !	नाथ हे । प्रिय हे !
कि दुख पाइया तुमि नदे छाड़िले ।	कौन दुःख पा त्याग दिया तुमने नदियाको ?
से कथा खुलिये मोरे नाहि बलिले ।।	खोल कही वह बात न दासी विष्णुप्रियाको ।।
लोके बले कत कथा,	जगती नाना बात बनाती,
ताते पाई मने व्यथा,	सुन-सुन जिनको फटती छाती,

नारीर मरम व्यथा,—नाहि वुझिले।
समझ न पाये तुम अवलाकी मर्म-व्यथाको।

ना बलिया चलि गेले,
अभागी दासीरे फेले,
दया माया भालवासा, सब भूलिले॥
चले गये, पर गये न कुछ कह,
परिचारिका अभागिन तज यह;
भूल गये तुम प्रीति-रीति सब दया-मयाको॥

नदियार सुख भूलि,
कोथाय गेले हे चलि,
साधेर संसार-सुखे,—वाद साधिले।
नदियाके सुखको विसराकर
चले गये हे। कहो, कहाँपर?
चले ढहा मनचाहे भव-सुखमय कुटियाको॥

(अमितार प्रवेश)

(अमिताका प्रवेश)

अमिता—

सखि! विष्णुप्रिये!
तुमि काँदितेछ केन?
एसेछे समाचार शान्तिपुर ह'ते,—
आर तिन दिन परे,
फिरिबेन शचीमाता नवद्वीपे
भक्तगणे ल'ये;
आसिबेन गुणमणि तव जननीर साथे;
सखि! संवर रोदन।

अमिता—

सखि! विष्णुप्रिये!
तुम रो रही हो किसलिये?
समाचार आया है शान्तिपुरसे,—
और तीन दिवस बाद,
लौटेंगी शचीमाता नवद्वीप,
लिये भक्तवृन्दको;
आयेंगे गुणमणि तुम्हारे, साथ जननीके
सखि! रुदन संवरण करो।

श्रीविष्णुप्रिया—

(अमितार गलदेशे जड़ाइया धरिया काँदिते-काँदिते)

सखि! अमिते! कि वलिले?
गुणमणि मोर पुनः आसिबेन नदीयाय?
पड़ूक मुखेते तव पुष्प-चन्दन,
ह'ये चिरजीवी सुखे थाक
तुमि, सखि!
तव वाक्ये आश्वासित हल मोर प्राण,
पिपासित कर्ण मोर परितृप्त ह'ल।

श्रीविष्णुप्रिया—

(अमिताके गलेसे लिपटकर रोते-रोते)

सखि! अमिते! क्या कहा?
गुणमणि मेरे आयेंगे नदिया फिर?
शोभित हो पुष्प और चन्दनसे मुख तेरा,
होकर चिरजीवी रहो सुखमें
तुम सखि!
वचनोंसे तुम्हारे हुए आश्वासित प्राण मेरे,
तृषित कर्ण मेरे परितृप्त हुए।

प्राणहीन देहे मोर ग्रासिल जीवन,	लौट प्राण ग्राये मेरे प्राणहीन तनमें,
सखि ! हेन शुभ दिन हवे कि ग्रामार ?	सखि ! ऐसा शुभ दिन होगा क्या मेरा ?
गणितेछि दिन ग्रामि,	गिनती हूँ दिन मैं,
चेये पथपाने ब'से ग्राछि	पथको निहारती मैं बैठी हूँ,
गुणमणि ग्रासिबेन ब'ले ।	गुणमणि ग्रायेंगे,--यह सोच ।

गीत

(ग्रामि) दिन गणि, बसे ग्राछि, नाथ ग्रासिवे ।	वैठी-वैठी मैं दिन गिनती रहती, ग्रायेंगे प्रियतम ।
दण्डे-दण्डे, पले-पले, स्वप्न देखि जे ॥	स्वप्न यही देखा करती हूँ घड़ी-घड़ी, पल-पल, हरदम ॥
नाथ एसे, देखा दिये प्राणे वाँचावे ।	नाथ बचायेंगे प्राणोंको ग्राकर, देकर निज दर्शन ।
कइ एल, प्राणधन, कोथा गेल से ।	कहाँ पधारे, कहाँ गये वे चले, वताग्रो, जीवन-धन ॥

समवेत गीत

काञ्चना ओ अमिता—	**काञ्चना और अमिता—**
ग्रास्‌वे गोरा गुणमणि, केँद ना सखि ।	गुणमणि गौराङ्ग पधारेंगे, सखि ! तू मत ग्राँसू ढारे ।
देख्‌बो मोरा मनचोरा केमन यति ॥	हम भी देखेंगी, संन्यासी कैसे मनचोर तुम्हारे ॥
सबाइ गेछे, धर्‌ते तारे, जननी निये ।	सभी लोग हैं उनको लेने गये सङ्ग माँको लेकर ।
ग्रास्‌वे फिरि गौरहरि ग्रापन गृहे ॥	ग्रा जायेंगे पुनः लौटकर यहाँ गौरहरि ग्रपने घर ॥
गोरा बामे गौराङ्गिनो वसाव मोरा ।	हम वायें गौराङ्गदेवके गौरीको देंगी बिठला ।
नदे छाड़ि कोथा जावे नदीया गोरा ॥	नदियाके गौराङ्ग जायंगे नदिया तज फिर कहाँ, भला ॥

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! अमिते !
हृदिभरा विषादेर माझे,—
प्राणभरा दुखराशि माझे,—
एकमात्र सुखबिन्दु मोर,—
श्रवण,—तोमादेर मुखे,
सुधामाखा प्राणवल्लभेर कथा ।
प्राणसंजीवनी—सुधा इहा मोर
ना कर वञ्चित सखि मोरे,
गौरनाम-सुधासिन्धु-दाने ।
आर किछु नाहि चाइ आमि,
तोमादेर काछे;
भिक्षा मोर एइ,—कह गौर-कथा
गुण गाओ ताँर,—
शुने आमि पराण जुड़ाइ ।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ! अमिते !
हृदयमें भरे हुए विषादके बीच,
प्राणोंमें भरे हुए दुःखपुञ्ज मध्य,
एकमात्र सुखबिन्दु मेरे लिये,—
मुखसे तुम लोगोंके सुनना
सुधासिक्त कथा प्राणवल्लभकी ।
प्राण-संजीवनी सुधा यही मेरे लिये;
करो न मुझे वञ्चित सखि !
गौरनाम-सुधासिन्धु-दानसे ।
और कुछ चाहती हूँ नहीं मैं
तुम सब लोगोंसे;
यही मिले भिक्षा मुझे,—कहो गौर-कथा,
गुण गाओ उनके,—
सुनकर मैं करूँ प्राणोंको शीतल ।

गीत

सखि चरणे तोमार धरि ।
गौरकथा कह,
प्राण जुड़ाओ,
(आमि) गौरविरहे मरि ॥
सकल समय,
कथा रसमय,
(सखि) शुनाओ आमार काने ।
वाचाओ पराण,
सुधा-वरिषणे,
जुड़ाओ तापित प्राणे ॥

सखि ! चरण तुम्हारे धरती ।
गौराङ्गकथाको स्वर दो,
प्राणोंको शीतल कर दो,
मैं गौरविरहमें मरती ॥
सब समय, सभी क्षण, पल-पल,
रसमयी कथा वह केवल,
सखि ! मेरे कानोमें भर ।
सखि ! करो प्राणका रक्षण,
पीयूष मधुर कर वर्षण,
दो तप्त प्राण शीतल कर ॥

सखि। रूपेर माधुरी कह।
किवा से वदन,
किवा से नयन,
किवा सुवलित देह।
सोनार वरण,
गौर रतन,
किवा से मोहन हासि।
रूपेर काहिनी,
कह लो सजनी,
शुनि आमि दिवा-निशि ॥

काञ्चना—

विरहिणी तुमि, सखि !
विरहेर कथा
व्यथा दिबे प्राणे तव—
सेइ भये थाकि सावधाने सदा मोरा,
अन्य कथाय,——अन्य काजे,——
मन तव भुलाइते चाइ सखि,
किंतु,तुमि यदि भालबास सेइ कथा——
चाह यदि शुनिते,
तव निठुर गुणमणिर गुणराशि——
शत मुखे कहिते प्रस्तुत मोरा,
विस्तारिये से सब काहिनी;
गाबो मोरा उच्चकण्ठे——
तव गुणमणिर गुणगाथा,
धरि जने-जने,
सुख यदि पाओ तुमि मने।
सोयास्ति जाते पाओ तुमि सखि !
मोदेर ताइ अवश्य कर्त्तव्य।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने।
निठुर ब'ल ना ताँके;

सखि। रूप मधुर वर्णन कर।
कैसो शोभा आननकी,
कैसी शोभा चितवनकी,
कैसा सुगठित तन सुन्दर ॥
आभा कमनीय कनक सम,
गौराङ्ग रत्न अति अनुपम,
कैसी वह हँसी मनोहर।
रूप - छटाकी कथा सरस,
कह, आली। कहती रह, वस,
मैं सुना करूँ निशि-वासर ॥

काञ्चना——

तुम सखि ! विरहिणी,
विरह-वार्ता
करेगी व्यथित तव प्राणोंको——
इसी डरसे रहती हैं सावधान सदा हम।
दूसरी चर्चामें, दूसरे काममें,
मन तव भुलाना चाहती हैं, सखि हे !
किंतु तुम्हें रुचिकर यदि वही कथा——
चाहती हो सुनना यदि
निठुर निज गुणमणिकी गुणराशि,
सौ मुखसे कहनेको प्रस्तुत हम
विस्तारपूर्वक वह सब वार्ता;
गायेंगी हम सब ऊँचे स्वरसे
गुणगाथा तव गुणमणिकी
निकट जन-जनके,
सखि ! यदि पाओ सुख मनमें तुम।
पाओ सखि ! शान्ति तुम जिससे,
वही कर्त्तव्य हम सबका आवश्यक।

श्रीविष्णुप्रिया——

सखि काञ्चने !
निठुर कहो न उन्हें।

रूढ़कथा ताँर प्रति	अभियोग-आरोप उनके प्रति
शोभा नाहि पाय।	शोभा नहीं देता है।
अकलङ्क नदीयार चाँद, मोर गुणमणि,—	अकलङ्क नदियाके चाँद, मेरे जो गुणमणि,
दयामय तिनि,—गुणेर सागर तिनि।	करुणामय वे, सागर वे गुणके।
अभागिनी आमि,—अबोधिनी बाला,	मैं अभागिनी, बाला अबोधिनी,
कि बुझिब महिमा ताँहार ?	समझूँगी महिमा क्या उनकी ?
कि बुझिब ताँर गुणराशि ?	जानूँगी गुणराशि क्या उनकी ?
ताँर काजे नाइ कोन दोष;	कोई दोष नहीं उनके किसी कार्यमें;
दृष्टेर दोषे आमि दोषी;	भाग्यके ही दोषसे दोषी मैं,
शत अपराधिनी पदे आमि ताँर——	शत अपराधिनी मैं चरणोंमें उनके——
सहि ताइ एत मनस्ताप।	इसीसे सहती हूँ इतना मनस्ताप।
सखि ! गुण गाओ ताँर,	सखि ! गुण गाओ उनके,
शुने आमि जुड़ाइ जीवन।	सुनकर मैं शीतल करूँ प्राणोंको।
अमिता—(चमकित भावे)	**अमिता**—(चौंककर)
सखि काञ्चने !	सखि काञ्चने !
शुनि महाकोलाहल बहिर्द्वारे,	सुनती हूँ, महाकोलाहल बहिर्द्वारपर
आसितेछे बहुलोक एइ दिके।	आ रहे हैं बहुत लोग इसी ओर।
बुझि शचीमाता,	प्रतीत होता है शचीमाता
एलेन शान्तिपुर ह'ते,—	आयी हैं शान्तिपुरसे;
जाइ देखि गिये।	जाकर देखूँ तो।
(उभयेर प्रस्थान)	(दोनोंका प्रस्थान)
श्रीविष्णुप्रिया—(निज मने)	**श्रीविष्णुप्रिया**—(स्वगत)
एसेछेन मा जननी—पुत्र ल'ये,	आयी हैं जननी माँ——पुत्रको लेकर
शान्तिपुर ह'ते,	शान्तिपुरसे।
आमि आर जाब कोथा ?	जाऊँ कहाँ मैं अब ?
वसे थाकि घरे।	बैठी रहूँ घरमें।
आसिबेन जबे गृहे गुणमणि मोर,	आयेंगे घरमें जब गुणमणि मेरे,
तखन कि करिब आमि ?	क्या करूँगी उस समय मैं ?—
ताइ भावि ब'से ब'से;	बैठे-बैठे सोचूँ मैं यही।

बुक मोर काँपितेछे केन ?	किसलिये मेरी थर्राती छाती है ?
हृदि केन करे दुरु-दुरु,	धड़क रहा हृदय क्यों ?
स्थिर ह'ये दाँड़ाइते नारि आमि,—	स्थिर हो खड़ी रह न पाती मैं,
सर्व्व अङ्ग काँपे थर-थर;	सारे अङ्ग काँपते हैं थर-थर;
काछे नाहि केह,—किवा करि आमि,—	पास नहीं कोई,—करूँ क्या मैं,—
देखि करिया शयन ।	लेटकर देखूँ ।
(भूमितले शयन)	(पृथ्वीपर लेटना)
(मालिनी, सर्व्वजया प्रभृति प्रतिवेशिनीगणसह शचीमातार प्रवेश)	(मालिनी, सर्वजया आदि पड़ोसिनियोंके साथ शचीमाताका प्रवेश)
शचीमाता--	**शचीमाता--**
कइ ! मालिनी दिदि !	कहाँ ? मालिनी दीदी !
आमार बौमा कोथाय ?	कहाँ बहूमाँ मेरी ?
देखि नाइ तारे, आज आट दिन ह'ल,	देखा नहीं उसको, आज आठ दिनसे.
राखि तारे एकाकिनी हेथा—	छोड़ अकेली यहाँ उसको
पाइ नाइ मने बिन्दुमात्र सुख ।	मिला नहीं मनको लवमात्र सुख ।
तार सेइ काँद-काँद म्लान मुख खानि,	उसका वही रुदन-म्लान मुखड़ा
पड़ित सदाइ मने मोर ।	छाया रहता सदा मेरे मनमें ।
आहा ! बाछा आमार,	आह ! लाड़ली मेरी,
केंदेछे कतइ गृहे बसि,	रोई है कितनी वह घरमें बैठ;
भेवेछे कतइ	डूबी कितनी चिन्ताओंमें रही है वह,
कचि मेये ।	अबोध बालिका ।
कत दुख पेयेछे मने ते ।	कितना दुख पायी है मन-ही-मन ।
कइ दिदि । कइ ? बौमा कोथाय ?	क्यों ? दीदी ! कहाँ, बहूमाँ कहाँ है ?
काञ्चने ! कोथा तोर सखि ?	काञ्चने ! कहाँ सखी तेरी ?
आछे त भाल बाछा आमार ?	सकुशल तो है मेरी बच्ची ?
काञ्चना—	**काञ्चना--**
मागो ! बल आगे, कोथा तव पुत्र ?	माँ ! पहले बताओ, कहाँ तुम्हारे पुत्र ?
कोथा राखि ताँरे,	कहाँ छोड़ उनको
एले एकाकिनी तुमि घरे ?	आयी हो अकेली तुम घरमें ?
मागो ! जान ना कि तुमि	माँ ! जानती हो नहीं क्या तुम,—

विरहिणी बोमा तोमार	विरहिणी बहू माँ तुम्हारी
आछे पथ पाने चेये !	देख रही पथकी ओर ।
आछ प्रतिश्रुत तुमि तार काछे	वचन दिया तुमने है उसको——
पुत्र ल'ये फिरिबे नदीयाय ।	'लौटूँगी नदियामें पुत्रको लेकर' ।
कइ ? मागो ! नदीयार चाँद कोथा ?	कहाँ ? माँ ! नदियाके चाँद कहाँ ?
आँधार नदीया——	अंधकार-ग्रस्त नदिया,
आँधार ए गृह-संसार,—	अंधकार-ग्रस्त यह गृह-संसार,
आँधार हृदय बोमार तव,	अन्धकारमय हृदय तुम्हारी बहूमाँका,
उज्ज्वल करिबे के ?	उद्भासित करेगा कौन
बिने नदीयार चाँद	बिना नदिया-चाँदके ?
कोथा रेखे एले तारे ?	कहाँ छोड़ आयी हो उनको ?
कोन देश,—कार गृह करिया उजल	किस देशमें, किसका गृह भासितकर,
विराजिछेन नवद्वीपचन्द्र ।	विराज रहे नवद्वीप-चन्द्र ?
बल मागो ! त्वरा करि बल ।	बताओ माँ ! शीघ्र बताओ ।

शचीमाता—	**शचीमाता**—
(अधोवदने बहुक्षण काँदिते-काँदिते धरासने उपवेशन)	(अवनतमुख बहुत देरतक रोते-रोते पृथ्वीपर बैठना)
काञ्चने ! कि आर बलिब तोरे ?	काञ्चने ! अब क्या बताऊँ तुमको ?
बड़इ कठिन हृदय मोर,	बड़ा ही कठोर हृदय मेरा ।
विधाता,—बसि निरजने	विधाताने बैठकर एकान्तमें
गड़ेछेन पाषाण दिये इहा;	गढ़ा है पाषाणसे इसको ।
महा पातकिनी आमि,—	महा पातकिनी मैं,
अभागिनी मोर सम—	मुझ-सी अभागिनी
नाइ केह त्रिजगत माझे ।	नहीं कोई त्रिभुवन बीच ।
एकमात्र जीवनेर ध्रुवतारा,	जीवनका एकमात्र ध्रुवतारा,
नयनेर मणि,—अन्धेर यष्टि मोर	नयन-मणि, अंधेकी लकड़ी मेरी,
बाप विश्वम्भर;	लाल विश्वम्भर;
ह'ये जननी ताहार	होकर भी माँ मैं उसकी
दियेछि विदाय बाछारे,	दी है विदाई अपने लालको
नीलाचले जेते ।	नीलाचल जानेके लिये ।

से जे सर्व्व-समक्षे चाहिल विदाय,	उसने जो सबके सामने विदा माँगी
स्थिरभावे बलिल आमारे,	और बोला मुझसे स्थिर भावसे,—
"मा ! आदेश तव शिरोधार्य्य मोर"	"माँ ! तुम्हारा आदेश शिरोधार्य है मुझे।"
तार परिधाने रक्ताम्बर,—	गैरिक परिधान उसका,
करे दण्ड-कमण्डलु—मुण्डित मस्तक,—	हाथमें-दण्ड कमण्डलु, मुण्डित मस्तक,—
देह महा ज्योतिर्म्मय;	महा-ज्योतिर्मय देह;
महा भय ह'ल मने,	अत्यन्त भय हुआ मनमें
बलिते ताहारे,—	कहनेमें उसको—
छाड़ि यतिधर्म्म,—	छोड़ यतिधर्मको,
पुनः फिरिते संसारे।	संसारमें लौटनेके लिये फिर।
मन ह'ल मोर,	मनमें हुआ मेरे,—
हेरि महा ज्योतिर्म्मय सेइ प्रशान्त मूरति,	देख महाज्योतिर्मय उस प्रशान्त मूर्तिको,
महा महिमामय भावपूर्ण,	महा महिमामय, भावपूर्ण,
तार वदन-मण्डल;	उसका बदन-मण्डल,
इनि जेन मोर पुत्र नन्;	मानो ये मेरे पुत्र नहीं;
त्रिजगत नाथ,	त्रिजगतनाथ,
जीवेर उद्धार लागि,	जीवोंके उद्धार हेतु—
बुझि धरि एइ संन्यासीर वेश	प्रतीत होता है धरकर यह संन्यासी-वेश,
अवतीर्ण धराधामे—	अवतीर्ण हुए हैं इस धराधामपर—
एइ बोध हल।	यही बोध हुआ।
विस्मरिनु पुत्रभाव;	भूल गयी पुत्रभाव,
भय ह'ल मने,—	भय हुआ मनमें,
नारिनु तार धर्म्मे बाधा दिते;	दे सकी बाधा नहीं उसके धर्ममार्गमें।
भाविलाम मने-मने,—	सोचा मैंने मन-ही-मन—
आमार स्वार्थेर हेतु,	अपने स्वार्थहेतु,
संसारेर सुख-लालसाय,	सांसारिक सुख-लालसा निमित्त,
ज्वालामय संसार-बन्धने,	ज्वालामय संसार-बन्धनमें
किवा फल बाँधि पुनः,	किसलिये फिर बाँधूँ
एइ पुरुष-रतने—	इस पुरुष-रत्नको।
भक्तगणे सबे,—चेयेछिलेन मोर मुख	भक्तगण सभी देखते थे मेरी ओर

एकटि मुखेर कथा तरे,—	मेरे मुखकी एक ही उक्तिके लिये ।
"एस बाप विश्वम्भर !	"आओ, लाल विश्वम्भर !
गृहे चल मोर साथे"	घर चलो मेरे साथ ।"--
एइ ब'ले हात खानि ध'रे तार	ऐसा कह हाथ पकड़ उसका
डाकिताम यदि एकबार आमि स्नेह भरे:	एक बार यदि मैं पुकारती स्नेह सहित,
निश्चय आसित से गृहे फिरि ।	निश्चय ही आता वह घर लौट ।
किंतु काञ्चने !	किंतु काञ्चने !
आमा ह'ते ह'ल ना से काज ।	हुआ नहीं मुझसे वह काम ।
ह'लेन क्षुण्ण भक्तगण सबे,	हो गये व्यथित भक्तगण सभी,
हलेन क्रुद्ध केह-केह आमार उपरे,	कोई-कोई क्रुद्ध हुए मुझपर ।
कि करिब आमि ?	क्या करूँ मैं ?
पुतुलेर मत मोरे नाचाल' निमाइ ।	पुतलीकी भाँति मुझे नचाया निमाईने ।
तार यदि धर्म्मरक्षा हय,	धर्म्मकी रक्षा यदि उसके हो,
मने सुख हय तार यदि,	मनमें सुख यदि उसके हो,--
जाते हय जगतेर मङ्गल	जिससे हो मङ्गल जगत्का,
सेइ काज आमार कर्त्तव्य ।	वही कार्य कर्तव्य मेरा है ।
ताइ मा ह'ये	इसीलिये माँ होकर
विदाय दिनु पुत्रधने,	विदा दे दी मैंने पुत्रको,
नीलाचले जेते चिरतरे ।	नीलाचल जानेको चिरकालके लिये ।
मोर एइ काजे यदि	यदि मेरे इस कार्यसे
तोमरा दुःख पाओ मने,	तुम सब दुःख पाओ मनमें,
हृदे पाओ व्यथा यदि,	हृदयमें पाओ यदि व्यथा,
क्षमा कर सबे मिले,—	सब मिलकर क्षमा करो,--
पागलिनी ब'ले,--क्षमाकर सबे ।	पगली मुझे समझकर क्षमा करो सभी ।
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)
काञ्चना—(स्वगत)	**काञ्चना**--(स्वगत)
गौराङ्गजननी इनि,	गौराङ्गजननी ये,
ताँर उपयुक्त काज इहा—	इनके अनुरूप कार्य यही--
जगन्माता जगज्जीव-उद्धारेर तरे,--	जगज्जीवोंके उद्धार हेतु जगज्जननीने
पुत्रधने दिलेन विदाय;	पुत्रको कर दिया विदा ।

समस्त जगज्जीव संतान ताँहार,—	जगत्के जीव सभी संतान उनकी,
जगतेर हिताकाङक्षिणी तिनि,—	जगत्की हिताकाङ्क्षिणी वे,
ताइ एइ अपूर्व्व स्वार्थत्याग ताँर।	इसीलिये यह उनका अपूर्व स्वार्थत्याग।
शचीमाता जगन्माता आदर्श जननी,	शचीमाता जगन्माता,—आदर्श जननी;
यतिधर्म्म-रक्षा हबे पुत्रेर ताँहार,	रक्षित यतिधर्म होगा पुत्रका उनके,
जगतेर जीव हइबे उद्धार,	जगत्के जीवोंका होगा उद्धार,
पुत्र ह'ते ताँर—	पुत्र द्वारा उनके—
एइ भावि,—	यही सोच
जगज्जननी मोर, दिलेन चिर विदाय	मेरी जगज्जननीने चिर विदा दे दी
ताँर पुत्रधने	अपने पुत्ररत्नको।
नारी-जीवनेर उच्च आदर्श,	नारी-जीवनका उच्च आदर्श
इहा ह'ते कि ह'ते पारे आर।	इससे बढ़कर क्या हो सकता और?
मालिनी—	**मालिनी**—
दिदि! चल, घरे चल;	दीदी! चलो, घर चलो;
तोमार बौमाके देख़ गिये।	अपनी बहूमाँको देखो जाकर।
(हस्त-धारण करिया आङ्गिना हइते गृहे आनयन)	(हाथ पकड़कर आँगनसे घरमें ले आना)
शचीमाता—	**शचीमाता**—
(श्रीविष्णुप्रियाके देखिया)	(श्रीविष्णुप्रियाको देखकर)
एइ जे बौमा आमार।	यह देखो बहूमाँ मेरी,
मा लक्ष्मी आमार!	लक्ष्मी बहू मेरी!
भूमिशय्याय केन मा! करेछ शयन?	पृथ्वीपर किस हेतु लेटी है तू?
उठ मागो! धरि बुके तोमा	उठो, बेटी! छातीसे लगा तुमको
जुड़ाइ जीवन।	शीतल करूँ जीवनको।
तोमाके धरिले बुके,—	तुमको लगानेपर वक्षसे,—
दुःखेर सागर माझे;	दुःख-पारावारमें
सुखबिन्दु उथलिया उठे,—	सुख-बिन्दु उछल उठता है;
सोनार निमाइ चाँदेर	सोनेके निमाई चाँदको
अदर्शन-ज्वाला	न देख पानेकी ज्वाला
साम्य हय किछु।	शमित होती कुछ-कुछ।

एस मागो ! कोले एस,	आ बेटी ! गोदमें आ,
चुम्बि तव चाँदमुख जुड़ाइ पराण ।	चूम तव चन्द्रमुख शीतल करूँ प्राण ।
पिपासित आमि;	प्यासी हूँ मैं,
त्वरा करि मागो, आन तुमि जल ।	शीघ्रतासे, बहूमाँ ! लाओ तुम जल ।
(श्रीविष्णुप्रियार उठिया जलदान)	(श्रीविष्णुप्रियाका उठकर जल देना)
श्रीविष्णुप्रिया—(काँदिते-काँदिते)	**श्रीविष्णुप्रिया**—(रोते-रोते)
मागो ! तुमि एकाकिनी केन ?	माँ ! तुम अकेली क्यों ?
तिनि कोथाय ?	वे कहाँ हैं ?
कोथा ताँरे रेखे एले बल, मा ! आमाय ?	कहाँ उन्हें छोड़कर आयी हो बताओ, माँ !
शचीमाता—	**शचीमाता**—
बउमा ! बड़ निदारुण कथा,	बहू माँ ! अत्यन्त दारुण कथा,
शुनाइते ह'ल तोरे आज ।	सुनानी पड़ी तुझे आज ।
काञ्चनाके बलियाछि सब,	काञ्चनाको कह चुकी हूँ सब,
तोमाकेओ बलि, शुन,—	तुमको भी कहती हूँ, सुनो—
बड़इ कठिन हृदय मोर,	बड़ा ही कठोर मेरा हृदय है
विधातार कि विधि जानि ना,—	विधाताका क्या विधान ? जानती नहीं,—
नारायणेर कि जे इच्छा ?—	क्या है इच्छा नारायणकी ?—
किछुइ ना बुझि ।	कुछ भी समझती नहीं ।
मोर पोड़ा मुख ह'ते	मेरे दग्ध मुखसे
शुनिबे मोर विरहिणी पुत्रवधु,	सुनेगी विरहिणी पुत्रवधू मेरी—
पुत्र मोर हयेछे संन्यासी ।	पुत्र मेरा हो गया संन्यासी ।
क'रे मस्तक मुण्डित,	मस्तक मुड़ाकर,
हाते ल'ये दण्ड-कमण्डलु,—	हाथमें दण्ड-कमण्डलु ले,
परिधाने रक्ताम्बर,—	धारणकर गैरिक पट,
'हरे कृष्ण हरि' ब'ले	कहते हुए 'हरे कृष्ण, हरि' !
दुइ बाहु तुले नाचिते-नाचिते	दोनों बाहोंको उठा नाचते-नाचते
चलिल से नीलाचलधामे ।	चल पड़ा वह नीलाचल धामको ।
मा ह'ये पुत्रधने आमि	माँ होकर भी मैंने पुत्रधनको
दिनु विदाय सर्व्वसमक्षे;	विदा किया सबके समक्ष
तार धर्म्म-रक्षा तरे ।	उसके धर्मकी रक्षाके लिये ।

गृहे ना फिरिबे आर,	घर नहीं लौटेगा अब,
सोनार निमाइ चाँद,——	सोनेका निमाई चाँद,——
क'रे गेल शेष देखा मोर सने,——	कर गया मेरे साथ अन्तिम मिलन
शान्तिपुरे अद्वैतभवने ।	शान्तिपुरमें घरमें अद्वैतके ।
बौमा शुनिले त ?	सुन लिया तो तुमने बहूरानी ?
एखन एस,——बसि दुइ जने	आओ अब——बैठ दोनों जनी
नदीयाय गौरशून्य गृहे,——	नदियाके गौरशून्य गृहमें
करि गला जड़ाजड़ि,——	परस्पर गले लिपट
काँदि दिवानिशि ; ——जत दिन बाँचि ।	रोयें दिनरात,——जितने दिन जीवित रहें ।
आमादेर करुण क्रन्दने,——	हमारे करुण क्रन्दनसे
द्रव हबे,	द्रवित होगा
कलिजीवेर पाषाण हृदय ।	पाषाण हृदय कलियुगी जीवोंका ।
आमादेर नयनेर अश्रुधारे,	अश्रुधारा हमारे नयनोंकी
बहाइबे जगते	करेगी प्रवाहित जगतमें,
करुणार वेगवती नदी,	करुणाकी वेगवती सरिता
घरे-घरे, प्रति जीव हृदे,——	घर-घरमें प्रत्येक जीवके हृदयमें ।
आमादेर हा हताश ओ तप्त श्वासे	हताश हाहाकार तथा तप्त उच्छ्वास हम दोनोंका
आलोड़िबे,—घुर्णी वायुमत,——	आलोड़ित कर देगा, चक्रवातके समान,
पापी-तापीर हृदय-समुद्र ;	हृदय-सिन्धु पापी और संतापी जीवोंका ;
तबे ह'बे तादेर हृदय-शोधन ;	तभी होगा उन सबका हृदय-शोधन,
तबे जीव हइबे उद्धार ;	तभी होगा जीवोंका उद्धार ;
तबे पूर्ण हबे अभिलाष	तभी होगी अभिलाषा पूरी
नदीयाचाँदेर ।	नवद्वीप-चन्द्रकी ।
जीवबन्धु तिनि,——	जीवोंके बन्धु वे,——
दुखी तापी पापी जीव लागि,	दुःखी, संतप्त, पापी जीव हेतु,
नदीयाय एइ करुणार लीला ताँर ।	नदियामें यह करुण लीला उनकी ।
लीला-सहायिनी मोरा दुइ जन,	लीला-सहायिका हम दोनों जनी ——
पत्नीरूपे तुमि,—आमि मातृरूपे,——	तुम पत्नीरूपमें,—मैं मातृरूपमें,——
मोरा नट, तिनि सूत्रधार ।	हम हैं नटी, वे सूत्रधार ।

जे भावे जाहाके नाचाबेन तिनि,—
नाचिते हइबे ।
शेष कथा,—सार कथा,—
बलिनु तोमारे,
एखन एस,—गृहे बसि
हा गौर, गौराङ्ग ब'ले
प्राण भरे काँदि दुइ जने ।
(श्रीविष्णुप्रियाके कोले लइया क्रन्दन)

जिस प्रकार जिसको नचायेंगे वे,
नाचना ही होगा ।
अन्तिम बात,—सार बात,
कह दी तुम्हें ।
यहाँ आओ, घरमें बैठ,
'हा गौर, गौराङ्ग; कहकर,
जी भरके रोयें हम दोनों ।
(श्रीविष्णुप्रियाको गोदमें लेकर रोना)

गृहेर बहिर्द्वारे भक्तगणेर गीत

गृहके बहिर्द्वारपर भक्तगणका गान

कीर्त्तन

व्रजेर खेला छिल बाँशिर गाने ।
नदेर खेला एबार हरिनामे ॥
व्रजेर खेला छिल वने भ्रमण ।
नदेर खेला एबार केवल रोदन ॥
आय, सबे काँदि मोरा;
संन्यास करेछे गोरा,
ताँहार जननी काँदे,
धूलाते प'ड़े ।
नदीयार राणी काँदे,—
बसिये घरे ॥
आय, सबे नाम करि,
गौर गौराङ्ग हरि,
हरे कृष्ण हरे राम,
(जे) दिये छे जीवे ॥
बोल हरि बोल, बोल हरि बोल,
गौर हरि बोल ।
(प्रस्थान)
(पट-परिवर्तन)

व्रजका था तब खेल—
मुरलिकामें स्वर भरना ।
नदियाका अब खेल—
नाम रटना, जप करना ॥
व्रजपुरका था खेल
उस समय वन-वन विहरण ।
आज खेल नदियाका
बस, लोचन-जल - वर्षण ॥
आओ, हम सब आँसू ढारें,
गौर वेश संन्यासी धारें,
उनकी जननी करती रुदन
पछाड़े रजमें खाकर ।
नदियाकी रानी रोती है
बैठी घरके भीतर ॥
आओ, हम सब नाम उचारें,
'गौर हरे, गौराङ्ग' पुकारें ;
हरे कृष्ण हरे राम—मन्त्र महा,
जिसने दे जीवोंको उन्हें कहा,
बोल हरि बोल, बोल हरि बोल,
गौर हरि बोल ॥
(प्रस्थान)
(पट-परिवर्तन)

चतुर्थ अङ्क ।

(प्रथम गर्भाङ्क)

दृश्य—नदीयार राजपथे नीलाचल हइते प्रत्यागत भक्तवृन्देर समवेत ।

श्रीवास—

नीलाचल ह'ते,
सुसंवाद एनेछि एवार;
नवद्वीपचन्द्र आसिबेन पुनः नदीयाय,
जननी ओ जन्मभूमि दरशन हेतु;—
संन्यासीर धर्म्म नहे
गृहे आगमन;
तबे शास्त्रमते,
जननी ओ जन्मभूमि दरशन—
जीवने कर्त्तव्य मात्र एकबार ।
चल सबे भक्तगण,
ए शुभ संवाद,
आगे गिये देइ शचीमाके ।
आहा ! पुत्र-विरह-दहने,
अहरहः दग्ध मा जननी,
शुधुमात्र मुख चेये बालिका वधूर,
तिनि रेखेछेन जीवन ।
ए शुभ संवादे देवी विष्णुप्रियार
अर्द्धमृत देहे आसिबेक प्राण,
चल सबे मिलि,
जाइ अग्रे गौराङ्गभवने ।

(भक्तवृन्द सह श्रीवास पण्डितेर श्रीगौराङ्गभवने प्रवेश एवं शचीमाताके प्रणाम-करण)

दृश्य—नदियाके राजपथपर नीलाचलसे लौटे हुए एकत्रित भक्तवृन्द ।

श्रीवास—

नीलाचलसे
सुसंवाद लाये हैं,——अबकी बार
नवद्वीपचन्द्र आयेंगे पुनः नदिया,
दर्शनार्थ जननी-जन्मभूमिके ।
धर्म नहीं संन्यासीका
आना पूर्वाश्रमके गृहमें;
तब भी शास्त्र-मतसे
जननी तथा जन्मभूमिका दर्शन
करनेका विधान मात्र एकबार जीवनमें ।
चलो सब भक्तगण,
यह शुभ संवाद
आगे बढ़कर दें शचीमाँको ।
पुत्र-विरह-ज्वालामें आह !
अहरहः दग्ध माँ जननी——
केवल, बस, मुख देख नन्ही-सी बहूका
जीवनको रखे हुई हैं वे ।
इस शुभ संवादसे देवी विष्णुप्रियाके
अर्द्धमृत देहमें होगा प्राण-संचार ।
चलो, सब मिलकर
प्रथम चलें श्रीगौराङ्गके घर ।

(भक्तवृन्दके साथ श्रीवासपण्डितका श्रीगौराङ्गभवनमें प्रवेश एवं शची-माताको प्रणाम करना ।)

श्रीवास-प्रमुख भक्तगण—

कर आशीर्व्वाद माता ।
एसेछि मोरा सबे नीलाचल ह'ते ।

शचीमाता—

पण्डित श्रीवास ! दामोदर !
मुकुन्द ! मुरारि ! जगदानन्द !
तुमि सबे फिरे एले क्षेत्र ह'ते,
सोनार निमाइचाँद मोर,
आछे त कुशले ?
से कि नाम करे
तार दुखिनी मायेर ?
किछु कि से ब'ले देछे तोमादेरे ?
बल, बल, शीघ्र बल मोरे !

श्रीवास—

मागो ! पुत्र तव आछेन कुशले;
दियेछेन जगन्नाथेर प्रसाद तिनि,
तोमादेर तरे ।
पण्डित दामोदरेर हाते,
दियेछेन गुणनिधि पुत्र तव
बहुमूल्य प्रसादी वस्त्र एकखानि,
तोमार वधुमातार तरे ।
उड़िष्याधिपति,
महाराज गजपति प्रतापरुद्र,
दियेछिलेन भेट् एइ पटवस्त्र भक्तिभरे
तव पुत्रवरे;
मागो ! तिनि कातर
सतत तव तरे,
जिज्ञासेन वार्त्ता तव,
धरि जने-जने नदीयार लोके;

श्रीवास-प्रमुख भक्तगण—

दो आशीर्वाद, माँ !
आये हैं हम सब नीलाचलसे ।

शचीमाता—

पण्डित श्रीवास ! दामोदर !
मुकुन्द ! मुरारि ! जगदानन्द !
तुम सब लौटकर आये हो क्षेत्रसे,
सोनेका निमाई चाँद मेरा,
कुशलसे है तो ?
वह क्या याद करता है
निज दुखिया माताको ?
तुम सबको उसने कुछ कहा है क्या ?
कहो, कहो, शीघ्र कहो मुझसे ।

श्रीवास—

माँ ! कुशलसे हैं पुत्र तुम्हारे,
दिया है उन्होंने प्रसाद जगन्नाथका
तुम सबके लिये ।
पण्डित दामोदरके हाथ
दिया है गुणनिधि पुत्रने तुम्हारे
बहुमूल्य प्रसादी वस्त्र एक
लिये तुम्हारी बहूरानीके ।
उड़ीसाधिपति,
महाराज गजपति प्रतापरुद्रदेवने
दिया था भेंट यह पाटम्बर भक्तिसे भरकर
तव पुत्रवरको ।
माँ ! रहते हैं कातर वे
सतत तुम्हारे लिये,
पूछते हैं वार्ता तुम्हारी
पकड़कर नदियाके एक-एक व्यक्तिको;

बलिलेन तिनि सर्व्व-समक्षे ।
छाड़ि मातृसेवा,–छाड़ि गृहवास,
संन्यास करिया ताँर मने नाइ सुख ।
थाके पड़े मन ताँर सदा,
चरण-कमले तव;
देखिलाम महा दुखी तिनि ।

बोले वे सबके समक्ष ही ।
छोड़कर मातृसेवा, छोड़कर गृहवास,
संन्यास-धारणसे सुख नहीं उनके मनमें;
रहता है पड़ा सदा मन उनका
चरण-कमलोंमें तुम्हारे,
देखा मैंने महादुःखी उनको ।

शचीमाता—

सोनार निमाइचाँद मोर,
स्मरण करिछे मोरे क्षेत्रे ब'से;
अनाथिनी जननीर नाम,
एतदिन परे
तार मने जे पड़ेछे,
एइ मोर परम सौभाग्य ।
बहु भक्त तार बहुभावे,
दिये अकपट प्रीति भालबासा,
करे सेवा तार,
करे तुष्ट मन तार बहु जने,
उत्तम भोजन दाने;
किसेर अभाव तार ?
स्नेह, प्रेम, प्रीति-भालबासार
छिल बुझि अभाव तार एइ गृहे;
त्रुटि हत भोजनेर बुझि तार
मोर काछे,
ता ना ह'ले
ह'बे केन गृहत्यागी बाछा,
पण्डित श्रीवास ! सत्य करि बल,
निमाइचाँद कखन
कि तार मार नाम करे ?

शचीमाता—

सोनेका निमाई चाँद मेरा,
स्मरण करता है मुझे क्षेत्रमें बैठकर;
अनाथिनी जननीका नाम
इतने दिन बाद भी
मनमें जो आया है उसके,
यही मेरा परम सौभाग्य ।
अनेक भक्त उसके अनेक भावोंसे
अकपट प्रीति-प्रेमद्वारा
करते हैं सेवा उसकी,
करते हैं संतुष्ट उसका मन अनेक जन
उत्कृष्ट भोजन समर्पणसे;
उसको अभाव किस वस्तुका ?
स्नेह, प्रेम, प्रीति, प्यारका
जानती हूँ उसको था अभाव इस घरमें;
प्रतीत होता है त्रुटि रह जाती थी
भोजनमें उसके
मेरे समीप,
होती जो न बात यह
होता क्यों गृहत्यागी लाल ?
पण्डित श्रीवास ! सच-सच कहो
निमाई चाँद कभी
करता क्या याद माँको अपनी ?

श्रीवास—

मागो ! सत्य कहि,
स्पर्शि तव चरणयुगल,
पुत्र तव मातृभक्त-शिरोमणि;
शुनिलेइ नाम तव
कारओ मुखे,
उठे शिहरिया तिनि,
झुरेन अझोर नयने नतमुखे ।

छाड़ि सर्व्व कर्म्म, कहेन तव कथा;
एकान्ते बसिया, मन दिया,
शुनेन गृहेर बारता तिनि
नदीयावासीर मुखे ।
हेथा हइये विह्वल, जबे तुमि,
पुत्रधने करह स्मरण,
अनुरागभरे नाम करि डाकह ताँहारे,
आविर्भाव हय ताँर नदीयाय,
तव काछे;—करेन ग्रहण प्रेमभरे
तव दत्त उपचार
अन्न-व्यञ्जन ।
हये अभिभूत ताँर वैष्णवी मायाय
तुमि, मागो !
देखियाओ नाहि देख ताहा;
बुझियाओ नाहि बुझ,
"के खाइल तव भोगेर अन्न-व्यञ्जन ?"

एइ बलि कर हाहाकार ।
मने करि देख देखि मागो ।
एइ विजया-दशमी दिने,
राँधि नानाविध शाक-व्यञ्जन,
स्मरि पुत्रधने तव,

श्रीवास—

माँ ! सत्य कहता हूँ
छूकर तव चरणयुगल—
पुत्र तव मातृभक्त-शिरोमणि;
सुनकर ही नाम तुम्हारा,
किसीके भी मुखसे
उठते हैं सिहर वे,
झूरते हैं वे अवनतमुख अजस्र अश्रुपूर्ण
नयनोंसे ।
छोड़ सभी काम कहते हैं तुम्हारी बात;
बैठ एकान्तमें, मनसे
सुनते हैं बात घरकी वे
नदियानिवासियोंके मुखसे ।
यहाँ होकर विह्वल तुम जिस समय
पुत्रधनको करती हो स्मरण,
प्रेमसहित यादकर उनको पुकारती हो,
आविर्भाव होता है नदियामें उनका
तुम्हारे पास; करते हैं ग्रहण स्नेहसहित
तुम्हारे द्वारा दिये उपचार,
अन्न, व्यञ्जनको ।
अभिभूत हुई वैष्णवी मायासे उनकी
तुम, माँ !
देखकर भी देख नहीं पाती हो उनको,
जानकर भी नहीं जानती हो,
"खा लिया किसने रखा भोगके लिये
अन्न-व्यञ्जन तुम्हारा",
कहकर यों करती हो हाहाकार ।
याद करके देखो तो, माँ !
इसी विजया-दशमीके दिन,
बनाकर नानाविध शाक-व्यञ्जन,
स्मरणकर पुत्रधनको अपने,

लागाइले भोग नारायणे;	लगाया नारायणको भोग,
काँदिते काँदिते ।	रो-रोकर ।
करि नयन मुद्रित, भोग-मन्दिर-द्वारे	आँखोंको मूदकर, भोग-मन्दिर-द्वारपर,
बसेछिले ध्याने जबे तुमि,	बैठी थीं ध्यानमें जब तुम,
नवद्वीपचन्द्र आसि अलक्षिते,	नवद्वीपचन्द्र आकर अलक्षित
प्रेम भरे करिला भोजन समुदाय ।	प्रेमसहित खा गये सभी कुछ ।
खुलि आँखि हेरि शून्य पात्र,	खोल आँख देखकर रिक्त पात्र,
हइये आश्चर्य्य	होकर आश्चर्यचकित,
भाविले तुमि मने-मने,	सोचती थीं मन-ही-मन तुम--
भोजन करिल के ?	'भोजन किया किसने ?
नारायणेर भोग नष्ट ह'ल,	नष्ट हुआ भोग नारायणका,
इहा भावि,--ईशानके डाकिये,	सोच ऐसा, बुला ईशानको
स्थान परिष्कारि	स्थान स्वच्छ कराकर,
करिले तुमि रन्धन,	तुमने रसोई की,
पुनराय भोग दिब बलि ।	फिरसे लगानेके हेतु भोग ।
मागो ! नीलाचले बसि,	माँ ! बैठ नीलाचलमें
तव पुत्र मुखे शुनिलाम	तव पुत्र मुखसे सुनी मैंने
ए सब अद्भुत काहिनी ।	अद्भुत कथा यह सब ।
पुत्र तव साक्षात् नारायण;	पुत्र तुम्हारा साक्षात् नारायण है,
मने बुझि देख ।	मनमें विचारकर देखो ।
तव विश्वास तरे	तुमको विश्वास हो, इसलिये
बलिलेन तिनि हाते धरि	कही उन्होंने हाथ पकड़
मोर काने-काने--एइ गुह्य कथा	मेरे कानमें धीरेसे इस गुप्त बातको;
करिलेन अनुरोध, पुनः बलिते तोमाय ।	किया अनुरोध फिर तुम्हें कहनेके लिये ।
मागो ! विश्वास करह मोर वाणी,	माँ ! करो विश्वास मेरी बातका,
पुत्र तव नहे सामान्य मानव,--	सामान्य मानव नहीं पुत्र तव;
पूर्व्वे तुमि जानियाछ इहा ।	जान चुकी पहले ही हो तुम इसे ।
भाग्यवती तुमि,	भाग्यवती तुम,
गर्भे तव हयेछेन उदय,	गर्भसे तुम्हारे हैं प्रकट हुए,
त्रिजगत्-पति पुत्ररूपे ।	त्रिजगत्-पति पुत्ररूप धारणकर ।

शचीमाता—	**शचीमाता—**
पण्डित श्रीवास !	पण्डित श्रीवास !
जत किछु बल तुमि,	जो कुछ हो कहते तुम,
किछु नाहि बुझि;	कुछ नहीं समझ पाती ।
निमाइचाँद पुत्र मोर,	निमाई चाँद पुत्र मेरा,
आमि तार अभागिनी माता;	मैं उसकी माता अभागिनी;
भाग्यदोषे पुत्र मोर	भाग्यके दोषसे पुत्र मेरा
हयेछे संन्यासी ।	संन्यासी हो गया ।
छाड़ि गृहवास, छाड़ि वृद्धा माता,	छोड़कर गृहवास, छोड़ वृद्धामाताको,
छाड़ि तार बालिका रमणी,	छोड़ निज नन्ही-सी रमणीको
से आछे नीलाचले ।	बसा है वह नीलाचलमें ।
इहा भिन्न आर किछु नाहि जानि आमि ।	इसके सिवा और कुछ जानती नहीं मैं ।
पण्डित ! आर किछु बलेछे कि मोरे	पण्डित ! और कुछ कहा है क्या मुझको
सोनार निमाइ चाँद ?	सोनेके निमाई चाँदने ?
श्रीवास—	**श्रीवास—**
मागो ! एके-एके बलितेछि सब,	कह रहा हूँ माँ ! एक-एक करके सब,
शुन स्थिर ह'ये—	सुनो स्थिर होकर—
आसिबेन पुत्र तव नवद्वीपे	आयेंगे पुत्र तुम्हारे नवद्वीपमें
गङ्गा-दरशने;	गङ्गा-दर्शनके लिये ।
जननी ओ जन्मभूमि दर्शनीय एक बार	जननी-जन्मभूमि-दर्शन विधेय है एकबार
संन्यासीर पक्षे,	संन्यासीके लिये—
ताइ आसिबेन नवद्वीपचन्द्र	इसलिये आयेंगे नवद्वीपचन्द्र
नदीयाय पुनः	फिर नदियामें ।
ए शुभ संवाद,—	यह शुभ-संवाद
दिते जननीके ताँर,—	देनेको जननीको अपनी,—
आर नदीयावासीरे,	नदियानिवासियोंको तथा,
वलेछेन तिनि मोरे वारम्वार ।	कहा है उन्होंने मुझे बार-बार ।
शचीमाता—	**शचीमाता—**
(काँदिते-काँदिते)	(रोते-रोते)
श्रीवास ! पुनः आसिबे नदीयाय	श्रीवास ! पुनः आयेगा नदियामें

नदीयार चाँद निमाइ आमार—
कि कथा शुनाइले आजि तुमि मोरे ?
करि आशीर्वाद कि ब'ले तोमाय आजि
ना पाइ भाविया—
जत केश आछे मोर माथे,
तत वर्ष परमायु हउक तोमार;
हओ तुमि धने-पुत्रे लक्ष्मीश्वर;

मेरा निमाई नदियाका चाँद—
अहा ! क्या बात सुनायी आज तुमने मुझे?
तुमको आसीस दूँ किन शब्दोंमें आज—
सोच नहीं पाती हूँ ।
जितने केश हैं मेरे सिरमें,
उतने वर्षोंकी परमायु तुम्हारी हो;
बनो तुम लक्ष्मीश्वर धन और पुत्रकी
दृष्टिसे ।

बल, बल—हेन भाग्य हबे कि आमार ?
आसिबे हेन शुभदिन कबे ?
चेये आछि पथ पाने आमि,—
रेखेछि ए छार पराण,
तार दरशन-आशे ।
बल, बल, पण्डित श्रीवास !
कबे से आसिबे ?

बोलो, बोलो ऐसा भाग्य होगा क्या मेरा?
आयेगा शुभ दिन ऐसा कब ?
पथकी ओर आँख मैं गड़ाये हूँ,
रख छोड़ा है इन दग्ध-प्राणोंको
देखनेकी आशासे उसे ।
बोलो, बोलो, पण्डित श्रीवास !
आयेगा कब वह ?

श्रीवास—

अतिशीघ्र;
करेछेन तिनि शुभयात्रा
नीलाचल ह'ते
एइ विजयादशमी तिथिते ।

श्रीवास—

अतिशीघ्र;
आरम्भ कर दी है शुभ यात्रा उन्होंने
नीलाचलसे
इसी विजयादशमी तिथिको ।

शचीमाता—

जाइ शीघ्र करि जाइ,—
दिइ गिये ए शुभसंवाद बौमारे आगे;
आहा ! दुःखेर समुद्र माझे,
अगाध अकूल,—
भासितेछे अभागिनी विष्णुप्रिया ।
जगतेर दुःखराशि जत,
करे एकत्रित यदि केह,—
दुःखिनी विष्णुप्रियार दुखराशि सने,
ना हय तुलना ।
पञ्चवर्ष पूर्व्वे,

शचीमाता—

जाऊँ शीघ्रतासे जाऊँ,—
जाकर कहूँ यह शुभ संवाद बहूरानीको
आह ! दुःखके समुद्र मध्य,—
अगाध, अकूल—
वही जा रही है विष्णुप्रिया अभागिनी ।
जगत्की दुःखराशि जितनी,
करे एकत्रित यदि कोई,
दुखिया विष्णुप्रियाकी दुःखराशिके साथ
तुलना नहीं हो सकती ।
पाँच वर्ष पहले,

दिये विदाय निमाइचाँदेरे,	कर विदा निमाई चाँदको,
शान्तिपुर ह'ते	शान्तिपुरसे
जबे फिरिलाम गृहे एकाकिनी,	जब घर लौटी थी अकेली
सेइ ह'ते कथा नाइ मुखे तार——	तभीसे बात नहीं मुखसे निकलती उसके।
बाछा ! मुख बुंजे प्राणपने	बच्ची ! मुख सीये हुए प्राणपणसे
करे सेवा मोर रात्रिदिन,——	करती है सेवा दिनरात मेरी,
ह'ले चोखाचोखि, करे नत आँखि,——	देखा-देखी होनेपर आँखें झुका लेती है;
नयनेर जले	नयनोंके जलसे
बाछार बुक भेसे जाय।	लालीकी छाती भीग जाती है।
बले ना से मुखे किछु,——	कुछ नहीं बोलती है मुखसे वह,
किंतु धरे वक्षे दुःखेर वारिधि,——	रखती है वक्षःस्थलमें किंतु जलधि दुःखका,
हृदे धरे अग्निर पञ्जर।	रखती है हृदय बीच अग्नि-पञ्जर।
विषादेर एक भीषण छाया,	विषादकी भीषण छाया एक
पड़ेछे तार चाँद बदन उपर,——	रहती है उसके मयङ्क-मुखपर,
सोनार वरण तार ह'ये गेछे काल !	सोने-सा वर्ण उसका हो गया है काला।
बाछार मुख देखे,	बच्चीका मुख देख,
प्राण फेटे जाय मोर।	प्राण फटे जाते मेरे,
कि करिव आमि ?	करूँ क्या मैं ?
विधातार निर्व्वन्ध इहा—	विधिका विधान यही।
दया करि श्रीवासपण्डित,	श्रीवास पण्डितने दया करके
दिलेन जे सुसंवाद आजि मोरे—	दिया जो सुसंवाद आज मुझे,
जाइ,——बलि गिये तारे;	जाऊँ,——जाकर कहूँ उसको;
देखि,——पारि यदि दिते तारे	देखूँ,——सकूँ यदि दे उसे
कथंचित् प्रवोध,——एइ सुसंवाददाने।	किंचित् प्रबोध-देकर सुसंवाद यह।
(श्रीवासादि भक्तगणेर प्रस्थान)	(श्रीवासादि भक्तगणोंका प्रस्थान)
शचीमाता—	**शचीमाता—**
(श्रीविष्णुप्रियार प्रति)	(श्रीविष्णुप्रियाके प्रति)
बौमा ! लक्ष्मी मेये तुमि,	बहूरानी ! लक्ष्मीसी बेटी तुम !
केन देखि दिवानिशि	देखती हूँ किस लिये अहर्निश,
भूमिते शयान तोमा;	पृथ्वीपर पड़ी तुम्हें ?

हयेछे जीर्ण-शीर्ण देह-यष्टि तव,	हो रही है जीर्ण-शीर्ण देह-यष्टि तेरी,
चेना नाहि जाय तोमा,——	पहचानी नहीं जाती हो तुम,——
ननीर पुतलि मोर गले गेछे जेन ।	नवनीत-पुतली मेरी मानो गली जाती है।
पञ्चवर्ष-व्यापी चिन्ताज्वरे,	पञ्चवर्ष-व्यापी चिन्ताज्वरसे
जर्ज्जरित देह तव;	जर्जरित देह तव;
जानि आमि,——ज्वलितेछे कालानल	जानती हूँ मैं, धधक रहा कालानल
अहरहः हृदिमाझे तव ।	दिनरात हृदय मध्य तेरे ।
उदरे ते नाइ अन्न,	उदरमें अन्न नहीं,
चोखे नाइ निद्रा दिवाराति;	आँखोंमें नींद नहीं दिनरात;
बौमा ! एइ भावे	बहूरानी ! इस प्रकार
कर यदि देहपात तुमि,	करोगी शरीरपात यदि तुम,
गङ्गाय मरिब डूबि आमि,	गङ्गामें डूबकर मरूँगी मैं,
ह'ब आत्मघाती,	बनूँगी आत्मघातिनी,
पापेर भार लागिबे तोमार ।	पापका चढ़ेगा भार तुमपर ।
कर यदि प्राणपात तुमि,	करोगी प्राण-त्याग यदि तुम,
निमाइचाँद फिरे यदि आसे नदीयाय,	निमाईचाँद लौट यदि आयेगा नदियामें,
देखा नाहि हबे तार सने,——	तुमसे नहीं होगी भेंट,
से दुःख पाबे मने,	दुःख होगा उसके मनमें,
गृहे ना तिष्टिबे एक दिन ।	घरमें नहीं ठहरेगा एक दिन,
सब आशा जाबे दूरे मोर ।	सब आशा दूर मेरी होगी ।
बुद्धिमति तुमि,	बुद्धिमती तुम हो,
करि विवेचना धीरभावे,—धैर्य्य धर,	सोच-समझकर, धीर बन, धैर्य धरो ।
वृद्धा आमि,—ज्वरा जीर्ण देह यष्टि मोर;	वृद्धा मैं,——जरा-जीर्ण देह-यष्टि मेरी;
दुइ पुत्र मोर ह'ल गृहत्यागी ।	दोनों पुत्र मेरे हो गये गृहत्यागी ।
जनम-दुःखिनी आमि,	जन्मदुःखिनी मैं,
मुख चेये मोर धैर्य्य धर तुमि,	मुख मेरा देखकर धैर्य धरो तुम;
पालह तव पतिर आदेश ।	पालो आदेश निज पतिका ।
नीलाचल ह'ते पण्डित श्रीवास	नीलाचलसे पण्डित श्रीवास
एनेछेन सुसम्वाद एक,	लाये हैं सुसंवाद एक,——
आसिबे नवद्वीपे निमाइ मोर	आयेगा नवद्वीपमें निमाई मेरा

गङ्गा-दरशने ।	गङ्गा-दर्शन करने ।
करेछे यात्रा निलाचल ह'ते निमाइचाँद—	प्रस्थान कर चुका है नीलाचलसे निमाईचाँद
एसेछे संवाद;	आया है संवाद यह;
पण्डित मिथ्या नाहि कहे ।	पण्डित नहीं कहते असत्य हैं ।
उठ, उठ, बौमा; आमार, रोदन संवर ।	उठो, उठो, बहूमाँ मेरी; करो रोना बंद।
श्रीविष्णुप्रिया--	**श्रीविष्णुप्रिया—**
मागो ! पुनः तिनि,	मैया ! पुनः वे
आसिबेन गृहे फिरि--	आयेंगे लौट घर--
इहा मोर ना हय विश्वास ।	इसपर मुझे होता विश्वास नहीं ।
तबे,--तुमि वृद्धा जननी ताँर,	तब भी,--वृद्धा जननी तुम उनकी,
एक बार देखा दिते तोमा,	एकबार मिलने तुमसे,
आसितेओ पारेन तिनि नदीयाय,	आ भी सकते हैं वे नदिया;
किंतु मागो ! काल सापिनी आमि,	किंतु माँ ! काल-सर्पिणी मैं
गृहे आछि ताँर--	घरमें उनके हूँ--
संन्यासी तिनि,--विषम अन्तराय	संन्यासी वे हैं,--विषम अन्तराय
ताँर पक्षे इहा,--	उनके लिये यह है
गृह आगमने ।	घर आनेमें ।
आमि यदि ना रहिताम हेथा,	मैं यदि नहीं होती यहाँ,
आसितेन गृहे तिनि—	आते घर वे--
ए मोर विश्वास ।	है यह मेरा विश्वास ।
बादी तव पुत्रसुखे एइ अभागिनी,	विरोधिनी अभागिन यह, तव पुत्र-सुखकी
तव सुखेओ बादी आमि,	विरोधिनी सुखकी तुम्हारे भी मैं;
धिक ए जीवने,	धिक्कार इस जीवनको,
धिक मोर नारी-जनमे;	धिक्कार मेरे नारी-देह-धारणको ।
एसे शान्तिपुरे तिनि,	शान्तिपुर आकर उन्होंने
डाकिलेन तोमा सबे,	बुलाया तुम सबको,
डाकिलेन नदेवासी नर-नारीगणे,	बुलाया नवद्वीपवासी नर-नारी-गणको,
दरशन दिते ।	दर्शन देनेके लिये ।
पाठाइलेन कठोर आदेश-वाणी	भेजी कठोर आदेश-वाणी

श्रीपाद नित्यानन्दे दिये,	श्रीपाद नित्यानन्द द्वारा,
अभागिनी एक विष्णुप्रिया छाड़ा	अभागिनी एक विष्णुप्रियाको छोड़,
सबे जाबे शान्तिपुरे ।	जायेंगे शान्तिपुर सभी ।
मागो ? ना ह'ताम यदि आमि	माँ ! नहीं होती यदि मैं
पुत्रवधू तव,—	पुत्रवधू तुम्हारी,
पाइताम दरशन ताँर रातुल चरण ।	प्राप्त करती दर्शन उनके अरुण चरणोंके ।
विष्णुप्रिया जत दिन	विष्णुप्रिया जितने दिन
रबे एइ भवे,—	रहेगी इस जगतीमें,—
जत दिन देह तार भस्मे ना मिशाबे,	जबतक देह उसकी मिलेगी न राखमें
गुणमणि पुत्र तव,	गुणमणि पुत्र तव
दरशन नाहि दिबे तारे ।	दर्शन नहीं देंगे उसको ।
मागो ! बड़ दुखे आजि	माँ ! बड़े दुःखमें आज
बाहिरल एइ सब मर्म्मान्तिक कथा,	निकली है यह सब बात मर्मान्तक,
मोर मुख ह'ते ।	मुखसे मेरे ।
पाबे व्यथा मने तुमि,	पाओगी व्यथा तुम मनमें,
ताहा आमि जानि ।	जानती हूँ यह मैं ।
किंतु मागो ! आर जे राखिते नारि,	किंतु माँ ! और रख पाती नहीं
मनागुन चापिया-चापिया हृदय भितरे;	मनोज्वाला दबाकर हृदयमें;
ज्वले तुँषेर आगुन मोर अन्तरेर माझे ।	जलता तुषानल है मेरे अन्तस्तलमें ।
देखाबार यदि हत,—	होता यदि दिखाने योग्य,
मागो ! देखाये दिताम तोमाय	माँ देती दिखा तुम्हें
चिरि ऐ हृदय;	चीर इस हृदयको;
तखन देखिते तुमि,	उस समय देखती तुम—
ज्वलितेछे कि भीषण कालानल,	जल रहा है कैसा भयानक कालानल
निशिदिन बुकेर माझारे मोर ।	निशिदिन वक्षःस्थलके बीच मेरे ।
मागो ! क्षमा कर मोरे	माँ क्षमा करो मुझे,
दुख यदि दिये थाकि मनकथा ब'ले ।	दुःख यदि दिया है मनकी बात कहकर ।
पागलिनी आमि,—अबोधिनी आमि,	पगली मैं हूँ, मैं अबोधिनी,
गुरुजन तुमि,	गुरुजन तुम,
धरि पदे, क्षमा कर मोरे ।	चरण पकड़ती हूँ, करो क्षमा मुझे ।

गीत

नाथ हे !	नाथ हे !
दयार सागर केन बले तोमारे।	कहते हैं किस लिये तुम्हें करुणाका सागर ?
कि दया देखाले नाथ ! वल आमारे ॥	दया कौन-सी नाथ ! दिखायी तुमने मुझपर ?
वञ्चित दरशने, करिले दासीरे केने,	वञ्चित दर्शनसे अपनी इस, किया अनुचरीको कारण किस ?
कि पापे एमन ताप दिले दासीरे ॥	दिया पापसे किस मुझमें ऐसी ज्वाला भर ?
शान्तिपुरे एसे नाथ, सवे डाकिले।	नाथ ! शान्तिपुर आ सवको स्वयमेव बुलाया।
नदेवासी सवे गेल आमारे फेले॥	नदियावासी सब समाज तज मुझको धाया।
दुखिनी पापिनी ब'ले, नित्यानन्दे निषेधिले,	कर मुझे दुखी-पापी घोषित, कर दिया निताईको वर्जित,
ल'ये जेते अधिनीरे चरणतले।	ले आनेको मुझे जहाँ चरणोंकी छाया ॥
उच्चपद दिये तुमि, नीचे फेलिले॥	ऊँचा पद देकर नीचे फिर मुझे उतारा।
कि करि जीवन धरि, ए कथा वा कारे वलि,	धारूँ जीवन कैसे, क्या कर ? कहूँ वात यह किसको जाकर ?
कि दोषे दासीरे तुमि पदे ठेलिले।	किस त्रुटिसे दासीको ठुकरा कसे किनारा ?
ए दुख जीवने मोर जावे ना म'ले ॥	मरकर भी न मिलेगा दुःखसे इस छुटकारा ॥

शचीमाता—	**शचीमाता—**
बौमा ! बौमा ! मा लक्ष्मी आमार !	बहूरानी ! बहूरानी! लक्ष्मी बेटी मेरी !
आवार ज्वलिल,—द्विगुण ज्वलिल,—	फिरसे धधक उठा,—द्विगुणित हो उठा,
पुत्रविरहानल,—शुनि तव मुखे,	पुत्र-विरहानल सुन तव मुखसे,
विलापेर करुण आर्त्तनाद।	विलापका करुण आर्तनाद।
दिले घृताहुति तुमि,	दी घृताहुति तुमने,

मन्दीभूत अनल-शिखाय;	मन्द हुई अनलशिखामें ।
नदीयाय निमाइचाँद आसिबे आबार,	नदियामें निमाई चाँद आयेंगे फिर--
एइ सुसम्वादे,--कथंचित् उपशम,	इस सुसंवादसे--उपशम किंचित्
ह'येछिल हृदय-ज्वलन मोर ।	हुई थी हृदय-ज्वाला मेरी ।
पुनः उठिल ज्वलिया,–दाउ दाउ क'रे,	फिर उठा ज्वलित हो,–कर रहा धू-धू,
पुत्र-विरहानल हृदयेर अन्तःस्तले ।	पुत्र-विरहानल हृदयके भीतर ।
गेल सब आशा,	दूर हुई आशा सब,
मिथ्या मने ह'ल श्रीवासेर कथा ।	मनमें असत्य लगती बात श्रीवासकी;
बुझितेछि,--प्रबोधेर तरे	जान पड़ता है,--सान्त्वनाके लिये
करि युक्ति भक्तगणे मिलि,	युक्तिपूर्वक भक्तोंने मिलकर
दियेछे ए सम्वाद मोरे ।	दिया है संवाद मुझको यह ।
एत दिन तुमि,	इतने दिन तुमने,
बुकेर आगुन धरेछिले बुके,	छातीकी ज्वालाको रखा था छातीमें;
छिले मुख बुजे;	मुख बंद किये थी ।
एबे सेइ बुकेर वेदन तव--	इस समय अपनी उस छातीकी वेदनाको,–
ज्वलंत अङ्गार,--ढालिले	जलते हुए अङ्गारको,--दिया है उंड़ेल
वृद्धा शाशुड़िर बुके ।	छातीमें वृद्धा सासके ।
उः उः ज्वले-पुड़े मरि आमि,--	ओः ओः जल-भुनकर मर रही मैं,
अस्थि-चर्म्म सब पुड़े,	अस्थि-चर्म रहे भुन सब,
मज्जार भितरे पशिल सेइ	मज्जाके भीतर प्रवेश कर गया है वही
भीम कालानल ।	कालानल भीषण ।
तबु प्राण नाहि बाहिराय;	तब भी प्राण बाहर निकलते नहीं;
बाप्रे ! निमाइ रे ! विश्वम्भर !	लाल रे ! निमाई रे ! विश्वम्भर !
(बुक चापड़ाइते-चापड़ाइते)	(छाती पीटते-पीटते)
कोथाय आछिस् तुइ,	कहाँ है तू ?
एकबार एसे देखे जारे बाप्;	एकबार आकर देख जा रे लाल !
कि दशा हयेछे मायेर तोर,	क्या दशा हुई है तेरी माँकी;
लोके बले,–मातृभक्त-शिरोमणि तुइ,	लोग कहते हैं,–मातृभक्त-शिरोमणि तू,
कि भक्ति देखालि तुइ बाप् !	कैसी भक्ति तूने दिखायी लाल !
वृद्धा जननीर प्रति;	वृद्धा जननीके प्रति;

निमाइ रे ! बाप्‌रे !
एक बार देखा दिये,
बले जा' आमारे बाप्‌धन !
(काँदिते-काँदिते आङ्गिनाय पतन, श्रीविष्णुप्रिया देवीर सङ्गे-सङ्गे पतन, उभयेर मूर्च्छा)
(मालिनी देवी ओ काञ्चना प्रभृतिर प्रवेश)

निमाई रे ! लाल रे !
एक बार आँखोंके आगे आ
बोल जाओ मुझसे, दुलारे लाल !
(रोते-रोते आँगनमें गिर पड़ना, साथ-साथ श्रीविष्णुप्रियादेवीका भी गिरना, दोनोंका मूर्च्छित होना।)
(मालिनीदेवी और काञ्चना प्रभृतिका प्रवेश)

मालिनी—

ए कि ? ए कि ? शाशुड़ी बौये
क'रे जड़ाजड़ि,
लुण्ठित धूलाय आङ्गिनाय ।
देखि कारओ नाइ बाह्यज्ञान,
सर्व्वजया ! काञ्चने !
जल आन शीघ्र करि,
अमिते ! पाखा निये आय !
(उभयेर मुखे जलेर छिटादान ओ व्यजन)
हाय ! हाय ! केह नाहि छिल हेथा,
दुइजने बसि एका,
कि जानि,—कि भावे,—
किवा कथा ल'ये,
कि हइल,—किछु नाहि बुझि
एइरूपे कोन दिन,
कि हबे सर्व्वनाश ।
काञ्चने ! तुइ छिलि कोथा ?
अमिते ! तुइ वा छिलि कोथा ?
आज ह'ते, आमि आर,
जाब ना गृहे ते;—
आमार सब एक दिके,—

मालिनी—

यह क्या ? यह क्या ? सास-बहू
परस्पर चिपटकर
लोटी हैं धूलमें आँगनमें ।
देखती हूँ बाह्य-ज्ञान किसीको भी नहीं ।
सर्वजये ! काञ्चने !
जल लाओ शीघ्रतासे,
अमिते ! पंखा लेकर आ ।
(दोनोंके मुखपर जलके छींटे देना और पंखेसे हवा करना।)
हाय ! हाय ! कोई नहीं यहाँ था,
बैठी थीं अकेली दोनों;
क्या जाने, किस भाँति,—
कौन बात लेकर,
क्या हुआ,—समझ पा न रही कुछ ।
इसी प्रकार किसी दिन
हो क्या सर्वनाश ?
काञ्चने ! कहाँ थी तू ?
अमिते ! तू भी कहाँ थी ?
आजसे फिर कभी मैं,
जाऊँगी न घरको ।
मेरा सर्वस्व एक ओर,

आर गौराङ्ग-जननी ओ घरणीर	और गौराङ्ग-जननी तथा गृहिणीकी
सेवा एक दिके ।	सेवा एक ओर ।
प्राण यदि जाय इहादेर	प्राण यदि चला जाय इन दोनोंका
एइ भावे कोन दिन,	इसी भाँति किसी दिन,
शुने नदीयार चाँद,	सुनकर नवद्वीपचन्द्र
मने भाविबेन कि ?	मनमें क्या सोचेंगे ?
रयेछि हेथाय मोरा ताँहादेर काछे,--	रहती हैं यहाँ हम इनके पास,--
निश्चिन्त आछेन तिनि ।	निश्चिन्त हैं वे ।
आसिबेन शीघ्र तिनि नदीयाय,	आयेंगे शीघ्र वे नदियामें,
देखिते जननी;	देखने जननीको;
यदि घटे कोन अमङ्गल,	हो जाय अमङ्गल घटना यदि कोई
कि बलिब ताँके ?	कहूँगी क्या उनको ?
केमने देखाइब ए काला मुख ?	कैसे दिखाऊँगी यह काला मुख ?
(देहे हस्त दिया)	(शरीरपर हाथ रखकर)
सर्व्वजये ! काञ्चने ! अमिते !	सर्वजये ! काञ्चने ! अमिते !
देख ! एखनओ बाह्यज्ञानरहिता इँहारा ।	देखो ! अब भी हैं बाह्यज्ञान बिना ये ।
धीरे धीरे बहितेछे श्वास उभयेर,	धीरे-धीरे चल रहा है दोनोंका श्वास,
किंतु नयन मुद्रित,	किंतु नेत्र मुँदे हैं,
अन्तरे चैतन्य आछे,	भीतर चेतना है;
बुझि इहा गौराङ्ग-प्रेमेर विकार ?	मेरे जान गौराङ्ग-प्रेमका विकार यह ।
गौर-नामे पागलिनी दोँहे ।	दोनों हैं पगली गौरनामकी ।
एस सबे मिले, करि गौरनाम,	आओ, सब मिलकर पुकारें गौर नाम,
गान करि गौराङ्गेर गुण;	गान करें गुण गौराङ्गके;
देखि--तबे यदि बाह्यज्ञान हय इँहादेर ।	देखें,--तब हो यदि बाह्यज्ञान इनको ।

समवेत गीत

(गौरारूप विने सखि !)	गौररूप विना सखि ।
आर जे लागे ना भाल किछु नयने ।	और नहीं अब कुछ भी इन नयनोंको भाये ।
गौरा रूप हेरि मोरा शयने स्वप्ने ॥	सोनेपर भी गौररूप सपनेमें आये ॥

जे दिके फिराइ आँखि,
गौरारूप सब देखि,
गौरमय जगत् हेरि हासि मने-मने।

जिस दिशि भी फिर जाते लोचन,
होता गौर - रूपका दर्शन।
देख गौरमय जग भीतर ही
मन मुसकाये।

मन-प्राण-चितचोरा,
नदीया नटुया गोरा,
मोरा सवे अनुक्षण,—हेरि नयने॥

प्राणचोर, मनचोर, चित्तहर,
गौरदेव नदियाके नटवर,
अनुक्षण हम सबके नयनोंमें
वही समाये॥

अनुरागे डाक्ले तारे,
देखा देय से जारे-तारे,
भूलि ने गोराके जेन,—जीवने-मरणे।

सानुराग यदि हो आवाहन,
चाहे जिसको देते दर्शन,
कहीं गौर हरिकी सुधि
इहपर बिसर न जाये।

(शचीमाता ओ विष्णप्रिया देवीर मूर्च्छाभङ्ग)

(शचीमाता और श्रीविष्णुप्रिया देवीका मूर्च्छाभङ्ग)

शचीमाता—

(धीरे-धीरे उठिया बसिया)
आमार निमाइचाँद, नदेवासीर प्राण; तार नाम करते तादेर चोख दिये टप्-टप् करे जल पड़े। ओइ देख, तारा सवे गौरनामे उन्मत्त हयेछे,—गौर-गुण-गाने हृदि-प्राण एक बारे ढेले दियेछे।
आमार गोराचाँद के
आमरा अनुराग भरे एकटि बारओ डाक्ते पारि ने,—सर्व्वान्तःकरणे तार गुणगान करिते पारि ने,—ताइ तार देखा पाइ ने! निमाइचाँद आमार नदेवासीर प्राण,—नदेवासी नरनारी ताके चिनेछे,—
तार मर्म्म बुझेछे;—
आमरा ताके चिन्ते पारि नि।

शचीमाता—

(धीरे-धीरे उठकर बैठकर)
मेरा निमाई चाँद नदियानिवासियोंका प्राण है, उसका नाम लेनेसे उनकी आँखों-से टप्-टप् जल पड़ने लगता है। वह देखो, वे सब गौर-नाम-कीर्तनमें उन्मत्त हो गयी हैं,—गौर-गुण-गानमें हृदय और प्राणको एकसाथ उँड़ेल दिया है। अपने गौर-चाँदको हमसब अनुरागसे भरकर एकबार भी नहीं पुकार सकीं,—समस्त अन्तःकरणसे उनका गुण-गान नहीं कर सकीं,—इसीलिये उसको देख नहीं पातीं। मेरा निमाई चाँद नदियावासियोंका प्राण है,—नदिया-वासी नर-नारियोंने ही उसको पहचाना है,—उसका मर्म समझा है,—हम सब उसको पहचान सकीं नहीं।

नदेवासीर अनुराग भजनेते तुष्ट हये, तादेर देखा दिते आसबे,--तादेर कृपाय यदि आमादेर भाग्ये दर्शन-लाभ घटे, परम मङ्गल ब'ले मने कर्‌बो ! केगो ! तोमरा नदेवासी, गौरनाम शुनाइया आमार बहु दिनेर पिपासित कर्ण शीतल करले । तोमादेर चरणे कोटि-कोटि प्रणिपात । तोमादेर गौरानुराग,-- तोमादेर गौराङ्ग-प्रीति,-आमादेर अनुकरणीय ! बौमा ! उठे देख, शोन, नदीयावासिनी नारीगण नदीयार चाँदेर गुणगान करते एसेछेन । आमरा दुइजने मरे छिलाम,-गौरनाम-महौषधि दाने तारा आमादेर प्राण बाँचाइयाछे ! ओगो ! से मरा बै कि ? मूर्छा,-मरा अपेक्षा बेशी,-मुख थाकते,-कान थाकते,-गौरकथा कइब ना,-शुनबो ना,-चुप करे शुये पड़े थाकबो, जड़ेर मत मरे थाकबो,-एइ पापेइ गौर आमादेर देखा दिबे ना । एसो बौमा ! आर चुप क'रे थाकबो ना,--एस गौरके डाकि--उच्चस्वरे डाकि--हा गौर गौराङ्ग ब'ले प्राणभरे, प्राण खुले, काँदि आर डाकि ! देखि आमार गौर आसे कि ना;-आय मा ! दुइ जने मिले गला जड़ाजड़ि करे, हा गौर गौराङ्ग ब'ले केंदे-केंदे डाकि;-काँदले ताके पाओया जाबे,—

नदियावासियोंके सानुराग भजनसे वह तुष्ट होकर उनको दर्शन देने आयेगा,-- उनकी कृपासे यदि हमारे भाग्यमें दर्शनका लाभ घटित हो जाय तो परम मङ्गल मानूँगी मनमें मैं । अहा ! तुम नदिया-वासियोंने गौर-नाम सुनाकर हमारे बहुत दिनोंके पिपासित कानोंको शीतलकर दिया । तुमलोगोंके चरणोंमें कोटि-कोटि प्रणाम । तुमलोगोंका गौरानुराग,--तुम लोगोंकी गौराङ्ग-प्रीति, हमारे लिये अनु-करणीय है। बहूरानी ! उठकर देखो, सुनो, नदियावासिनी नारीगण नदिया-चाँदका गुणगान करने आई हैं । हम दोनों मर ही चुकी थीं । गौर-नाम महौषधि देकर उनलोगोंने हमारे प्राण बचाये हैं । अहो ! यह मृत्युके सिवा और क्या है ? मूर्च्छा,--मरनेसे भी बढ़कर है,--मुख रहते, कान रहते, गौरकथा कहेंगी नहीं, सुनेंगी नहीं,--चुपचाप सोयी पड़ी रहेंगी, जड़वत्,--अचेतन रहेंगी,-- इस पापसे ही गौर हमलोगोंको दर्शन नहीं देगा । आओ बहूरानी ! अब चुप नहीं रहेंगी,--आओ, गौरको पुकारें,- उच्चस्वरसे पुकारें । 'हा गौर गौराङ्ग' कहकर जीभर हृदय खोलकर रोयें और पुकारें । देखें, हमारा गौर आता है कि नहीं । आ बेटी ! दोनों जनी मिलकर परस्पर गले लिपटकर 'हा गौर गौराङ्ग' रटते हुए रोते-रोते पुकार लगायें;- रोनेसे उसको पाया जा सकेगा,—

आकुल प्राणेर आकुल डाके से आसबे,—चुप करे थाकले ताके पाओया जाबे ना,—म'लेओ पाओया जाबे ना! आर आमरा एमन क'रे लोक हासिये आङ्गिनार माझे पड़े थाकबो ना; घरेर कोने बसे दुइ जने मिले सुरे सुर मिलाइये आकुल प्राणे केवल काँदबो,—केवल काँदबो,—केवल काँदबो,—आर डाकबो, उच्चःस्वरे—हा गौर गौराङ्ग बले। मान, अपमान, लज्जा, भय सम्भ्रमेर धार आर धारबो ना—लोकेर कथाय आर भूलबो ना! निमाइ आमार एइ नदेय आबार आसते चेयेछे लोके बलचे, किंतु बौमा! आमरा तो ताके नदेवासीर मत प्राण भरे डाकचि ने, दिवानिशि तार जन्ये काँदचि ने,—एइ नदीयावासिनी नारीगण आज आमादेर उपयुक्त शिक्षा दिलेन, भक्तिभरे इहादेर प्रणाम कर।

(श्रीविष्णुप्रिया ओ शचीमातार प्रणाम)

आकुल प्राणोंकी आकुल पुकारसे वह आयेगा, चुप रहनेसे वह नहीं मिलेगा, मरनेसे भी नहीं मिलेगा। अब हम इस प्रकारसे दुनियाको हँसानेके लिये आँगनमें पड़ी नहीं रहेंगी; घरके कोनेमें बैठी दोनों जनीं एक साथ स्वरमें स्वर मिलाकर आकुल प्राणोंसे केवल क्रन्दन करेंगी,—क्रन्दन,—केवल क्रन्दन,— और पुकारेंगी उच्च स्वरसे,—'हा गौर-गौराङ्ग' की रट लगाकर। मान, अपमान, लज्जा, भय, सम्भ्रमकी परवाह नहीं करेंगी, लोगोंकी बातोंमें और भूलेंगी नहीं। मेरा निमाई इस नदियामें फिर आना चाहता है—लोग ऐसा कहते हैं, किंतु, बहूरानी! हम तो उसको नदियावासियोंकी भाँति प्राण भरकर पुकारतीं नहीं, दिनरात उसके लिये रोतीं नहीं। इन नदियावासी नारीगणने आज हमलोगोंके उपयुक्त शिक्षा दी है, भक्तिसे भरकर इन लोगोंको प्रणाम करो।

(श्रीविष्णुप्रिया और शचीमाताका प्रणाम करना)

मालिनी—

आहा! भगवद्भक्तिर कि उच्च आदर्श। भगवद्दर्शनाभिलाषेर कि तीव्र आकाङ्क्षा, कि भीषण उत्कण्ठा। कि उच्च शिक्षा! जगज्जननी शचीमातार पुत्र जगन्नाथ श्रीनवद्वीपचन्द्र एक दिके विशुद्ध भक्तिधर्म्म स्वयं आचरण क'रे कलिहत जीवके हाते ध'रे

मालिनी—

अहा! भगवद्भक्तिका कैसा उच्च आदर्श है! भगवद्दर्शनाभिलाषाकी कैसी तीव्र आकांक्षा, कितनी प्रबल उत्कण्ठा, कैसी ऊँची शिक्षा है! जगज्जननी शचीमाताके पुत्र जगन्नाथ श्रीनवद्वीपचन्द्र एक ओर विशुद्ध भक्तिधर्मका स्वयं आचरण करके कलिहत जीवोंको हाथ पकड़कर

शिक्षा दिच्चेन,—
अन्य दिके ताँहार विष्णुभक्तिस्वरूपिणी जननी जगज्जननीभावे भगवद्भक्तेर भगवतप्राप्तिर जन्य भक्तिर उच्च सोपान निर्माण कच्चेन। व्रजप्रेमेर रीति, व्रजवासीर प्रति व्रजजनेर कि प्रगाढ़ प्रेम श्रो भक्ति, शचीमाता नदेवासी नरनारीके लक्ष्य करे श्राज श्रामादेर ताइ विशेष भावे शिक्षा दिलेन। व्रजवासीर श्रनुकम्पा ना ह'ले,—ताहादेर श्रनुगत ना ह'ले कृष्णकृपा प्राप्ति श्रसम्भव; शचीमाता नदेवासी नारीदिगके सम्मान क'रे नवद्वीपचन्द्र कृपाप्राप्तिर उपाय बले दिलेन। नवद्वीप श्रो व्रजधाम एक वस्तु; व्रजेन्द्रनन्दन श्रो जिनि,—शचीनन्दन श्रो तिनि,—नवद्वीप-वासी नरनारी श्रो सामान्य मानव नहे, गौराङ्ग-जननी कृपा क'रे श्राज श्रामादेर एइ शिक्षा दिलेन। तिनि परम पूजनीया,—श्रामादेर सकलेर वयः ज्येष्ठा। तिनि श्रामादेर प्रणाम करलेन, श्रीविष्णुप्रिया देवीके श्रो प्रणाम करिते बल्लेन। काञ्चने! सर्व्वजया! श्रमिते! एस, सकले मिलिया जगन्माता शचीमाता एवं गौरवक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीके प्रणाम करि! ताहादेर सेवा करि।

(सकलेर प्रणाम)
प्रस्थान।

शिक्षा दे रहे हैं,—
दूसरी श्रोर उनकी विष्णुभक्तिस्वरूपिणी जननी जगज्जननी-भावसे भगवद्भक्तोंके हितार्थ भगवत्प्राप्तिके लिये भक्तिकी ऊँची सीढ़ीका निर्माणकर रही हैं। व्रजप्रेमकी रीति, व्रजवासियोंके प्रति व्रज-जनोंका कैसा प्रगाढ़ प्रेम श्रौर भक्ति—शचीमाता नदियावासी नर-नारियोंको लक्ष्य करके श्राज हमलोगोंको इसी विशेष भावकी शिक्षा दे रही हैं। व्रजवासियोंकी श्रनुकम्पा बिना, उनके श्रनुगत हुए बिना कृष्ण-कृपाकी प्राप्ति श्रसम्भव है; शचीमाताने नदियावासी नारियोंका सम्मान करके नवद्वीपचन्द्रकी कृपा-प्राप्तिका उपाय बतला दिया। नवद्वीप श्रौर व्रजधाम एक ही वस्तु हैं, व्रजेन्द्रनन्दन जो हैं, शचीनन्दन भी वे ही हैं; नवद्वीपवासी नर-नारी भी सामान्य मानव नहीं,—गौराङ्ग-जननीने कृपा करके श्राज हमलोगोंको यही शिक्षा दी है। वे परम पूजनीया हैं, हम सबोंमें वयोवृद्ध हैं। उन्होंने हम-लोगोंको प्रणाम किया, श्रीविष्णुप्रिया देवीको भी प्रणाम करनेके लिये कहा। काञ्चने! सर्वजये, ! श्रमिते! श्राश्रो, सब मिलकर जगज्जननी शचीमाता एवं गौरवक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीको प्रणाम करें, उनकी सेवा करें।

(सबका प्रणाम करना)
प्रस्थान।

चतुर्थ अङ्क ।

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन, गृहे शचीमाता आसीना ।

(श्रीविष्णुप्रिया देवीर प्रवेश)

श्रीविष्णुप्रिया—

मा ! चल, मा ! हयेछे वेला
द्वितीय प्रहर,
करेछि आमि रन्धनेर
सकल उद्योग;
चल, मा ! स्नान करि, रन्धन कर
गिये तुमि ।
मागो ! भेवे-भेवे देहपात करे
किवा हवे फल ?
उठ मा ! वेला हयेछे अधिक !

शचीमाता—

बौमा ! वासना हयेछे मने—
एकटि आमार;
पूर्ण कि ताहा करिवे मा तुमि ?

श्रीविष्णुप्रिया—

मागो ! ए कि कथा वल
आजि तुमि ?
कवे कोन दिन देखियाछ तुमि,
आज्ञा तव, लङ्घियाछे ए दासी ?
गुरुजन तुमि,—पूजनीया तुमि,—
तव आज्ञा सर्व्वभावे पालनीय मोर;

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन, घरमें शचीमाता बैठी हैं ।

(श्रीविष्णुप्रिया देवीका प्रवेश)

श्रीविष्णुप्रिया—

माँ ! चलो, माँ ! हो रही है वेला
दूसरे पहरकी,
करली है मैंने रसोईकी
सारी तैयारी;
चलो माँ ! स्नान करके रसोई करो
जाकर तुम ।
माँ ! सोच-सोचकर देहपात करनेसे
क्या होगा फल ?
उठो माँ ! वेला हो गयी अधिक ।

शचीमाता—

बहूरानी ! इच्छा उठी है मनमें,—
एक मेरे;
पूरी क्या करोगी उसे बेटी ! तुम ?

श्रीविष्णुप्रिया—

माँ ! यह कैसी बात कह रही
आज तुम ?
कभी किसी दिन देखा है तुमने,
आज्ञा तव टाली है इस दासीने ?
गुरुजन तुम, —पूजनीया तुम,—
सब प्रकार आज्ञा तव पालनीय मेरे लिये;

अनुरोध केन,—कर आज्ञा मागो !
अवश्य पालिब आमि ।

शचीमाता—

दामोदर पण्डितके दिये,——
क्षेत्र ह'ते,——निमाइ आमार,
पाठायेछे मोर काछे,
बहुमूल्य पटशाड़ी एक;
यत्न करि रेखेछि आमि, ताहा——
पेटारि भीतरे ।
हयेछे मने बड़ साध मोर,
पर तुमि सेइ शाड़ी,
देखि आमि केमन देखाय ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(बहुत क्षण नतमुखे नीरव रहिया काँदिते-काँदिते)

दाओ मा ! शाड़ी आमाय;
ससन्माने——मस्तके धरि ताहा,
करि जीवन सार्थक ।
करेछेन स्मरण ए अभागीरे,
पुत्रवर तव,—से मोर सौभाग्य ।
ताँर कृपाकणा चाहि मात्र आमि;
मागो ! शोभा नाहि पाय,
एइ बहुमूल्य शाड़ी परिते आमाय,
मागो ! विलाइया दाओ तुमि इहा,
किम्वा कर दान कोन ब्राह्मण पत्नीके
पुण्य हबे तव;

शचीमाता—

बौमा ! बड़ दागा
दिले बुके तुमि,—
एइ कथा बले;

अनुरोध किसलिये,——करो आज्ञा माँ !
अवश्य पालूँगी मैं ।

शचीमाता—

दामोदर पण्डितके द्वारा,——
पुरुषोत्तम-क्षेत्रसे,——निमाईने मेरे,
भेजी है मेरे पास,
बहुमूल्य साड़ी एक रेशमी;
यत्नपूर्वक रखा है मैंने उसे,
भीतर पिटारीके ।
उपजी है मनमें बड़ी साध मेरे,
पहरो तुम वही साड़ी;
देखूँ मैं, लगती है कैसी ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(बहुत कालतक मुँह नीचे किये चुप रहकर रोते-रोते)

दो माँ ! साड़ी मुझे,
ससम्मान मस्तकपर धारणकर इसको
जीवनको सार्थक करूँ ।
किया है स्मरण इस अभागिनीको
तव पुत्रवरने,—यही मेरा सौभाग्य;
उनका कृपाकण मात्र चाहती मैं ।
माँ ! शोभा नहीं देगा
मुझको पहनना यह बहुमूल्य साड़ी;
माँ ! दे डालो तुम इसको
अथवा दानकर दो किसी ब्राह्मण-पत्नीको,
पुण्य होगा तव ।

शचीमाता——

बहूरानी ! बड़ी चोट
की तुमने छातीपर मेरी,——
यह बात कहकर;

तुमि ना परिले एइ शाड़ी	तुम्हारे न पहननेसे यह साड़ी
आमार निमायेर हबे अकल्याण,	मेरे निमाईका होगा अकल्याण,
मने बड़ दुःख पाब आमि ।	मनमें मैं पाऊँगी बड़ा दुःख ।
बौमा ! बुद्धिमती तुमि,	बहूरानी ! बुद्धिमती तुम हो,
राख मोर अनुरोध ।	रखो मेरा अनुरोध ।
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)
श्रीविष्णुप्रिया—(स्वगत)	**श्रीविष्णुप्रिया**—(स्वगत)
उभय संकट मोर;—	दोनों ओर संकट मुझे—
मा पावेन व्यथा मने,	माँ होंगी व्यथित मनमें,
अकल्याण हबे गुणमणिर	अकल्याण होगा गुणमणिका,
अनुरोध ताँर यदि करि अस्वीकार ।	अनुरोध उनका यदि करती हूँ अस्वीकार ।
निज मने पाब व्यथा निदारुण—	दारुण व्यथा पाऊँगी निज मनमें
यदि आमि एइ शाड़ी,—	यदि मैं यह साड़ी
करि अङ्गीकार ।	करती हूँ अङ्गीकार ।
पति-विरहिणी आमि;—	पति-वियोगिनी मैं,
त्यजेछेन मोरे गुणमणि	दिया है त्याग मुझको गुणमणिने
अभागिनी ब'ले;	जानकर अभागिनी;
विलासिनी-साज मोर,	वेष विलासिनीका मेरे लिये,
शोभा नाहि पाय ।	शोभा नहीं देगा ।
ज्वलितेछे निशिदिन जे विषमानल,	जल रहा है दिन-रात जो विषमानल
हृदितले मोर,—	मेरे हृदयतलमें,—
निभाइते चाहेन माता ताहा,—	बुझाना चाहती हैं माता उसको,
दिये वसन-भूषण ।	देकर वसन-भूषण ।
कि भ्रम ताँहार ?	कैसा भ्रम उनका ?
ना,—ना,—भ्रम नहे ताँर इहा,—	नहीं, नहीं,—भ्रम नहीं उनका यह,—
शुद्ध वात्सल्य भावमयी तिनि,—	शुद्ध वात्सल्य भावमयी वे,—
पुत्रस्नेहे अन्ध तिनि,—	पुत्र-स्नेहसे अंधी हो रही हैं
इहा तार प्रकृष्ट प्रमाण ।	यह है उसका प्रकृष्ट प्रमाण ।
आमि ताँर राजराणी पुत्रवधू,	मैं उनकी राजरानी पुत्रवधू,
भिखारिणी,—अनाथिनी देखे मोरे,	भिखारिणी,—अनाथिनी देखकर मुझको,

कातर हन पुत्रशोके तिनि,	कातर होती हैं पुत्र-शोकसे वे,
मने पड़े पुत्र ताँर,—	याद आती है उन्हें अपने पुत्रकी,——
नदीयार राजा——	नदियाके राजाकी,
जेगे उठे शोक हृदयेते,——	जाग उठता है शोक हृदयमें;——
निवारिते कथञ्चित् सेइ शोक,	निवारित करनेको रञ्चमात्र वही शोक
हय साध मने ताँर,	होती है साध उनके मनमें
साजाइते मोरे वसन-भूषणे;	सजानेकी मुझको पट-भूषणसे;
शुद्ध वात्सल्य-प्रेमभावे	शुद्ध वात्सल्यप्रेमभाव-प्रेरित
ए कार्य्य ताँर पक्षे, निन्दनीय नहे ।	यह कार्य उनके लिये निन्दनीय नहीं ।
किंतु मोर पक्षे,——	मेरे लिये किंतु,——
पति जार ह'ये गृहत्यागी	पति जिसका होकर गृहत्यागी
सेजेछे संन्यासी,—	बन गया है संन्यासी,——
तार पक्षे विलासेर बिन्दुमात्र	उसके लिये बिन्दुमात्र भी विलासका
शोभा नाहि पाय ।	शोभा नहीं देता ।
किंतु गुरुजन तिनि,–दासी आमि,——	किंतु गुरुजन वे,——दासी मैं,——
पति-आज्ञा धरि शिरे,	पति-आज्ञा सिरपर धर
करि ताँरे सेवा,—	करती हूँ सेवा मैं उनकी,——
सर्व्वभावे ताँर आज्ञा	सभी विधि उनकी आज्ञा
पालनीय मोर ।	पालनीय मुझको ।
मने ताँर दिये व्यथा,	मनमें व्यथा उनके पहुँचानेसे,
कि लाभ हइबे मोर ?	होगा क्या लाभ मुझे ?
परिहरि लोकलज्जा,—	त्यागकर लोक-लज्जा,——
त्यजि अभिमान,	त्याग अभिमानको,
पालिब आज्ञा ताँर सर्व्वभावे आमि;	पालूँगी आज्ञा मैं उनकी सभी भाँति;
ताँर मने हबे सुख इथे,	उनके मन होगा सुख इससे,
परमार्थ हबे लाभ मोर ।	परमार्थ-लाभ होगा मुझको ।
आत्माभिमान,——आत्मसुख,	आत्माभिमान,——आत्मसुख,
आपनार बलि किछु,	अपना मान, कुछ भी,
राखिब ना मने आर आमि ।	मनमें न रखूँगी अब मैं ।
करि पूर्णभावे लोप,	पूर्णतया लुप्तकर,

आमित्व आमाते,—
भजिब पतिधने,—
एवं पतिर निजजने प्राणपणे ।
(शचीमातार दिके चाहिया)
मागो ! तव आज्ञा आमि,
ना पारि ठेलिते;
दाओ मा ! पटवस्त्र, करिब परिधान;
जाते तव मने हय सुख,
सेइ मोर अवश्य कर्त्तव्य ।
(शचीमातार वस्त्रदान,
श्रीविष्णुप्रियार परिधान)

अहंकार अपनेमें
भजूँगी पतिधनको,—
एवं पतिके निजजनोंको प्राणपणसे ।
(शचीमाताकी ओर देखकर)
माँ ! आज्ञा तुम्हारी मैं
नहीं ठुकरा सकती;
पाटंबर दो माँ ! करूँगी धारण;
जिससे हो सुख तव मनमें,
अनिवार्य कर्तव्य वही मेरे लिये ।
(शचीमाताका वस्त्र देना,
श्रीविष्णुप्रियाका उसे धारण करना)

शचीमाता—
लक्ष्मी मेये ! बौमा !
बड़ सुख दिले तुमि आजि मोरे,
बेंचे थाक् तुमि,—
बेंचे थाक् निमाइ आमार,—
जन्म-जन्म पर शाड़ी तुमि,
राजराणी ह'ये ।
(उभयेर प्रस्थान)
(श्रीवास पण्डितेर प्रवेश)

शचीमाता—
लक्ष्मी बेटी ! बहूरानी !
बड़ा सुख दिया आज तुमने मुझे;
जीती रहो तुम,—
जीता रहे मेरा निमाई,—
जन्म-जन्म पहरो साड़ी तुम,
राजरानी बनकर
(दोनोंका प्रस्थान)
(श्रीवास पण्डितका प्रवेश)

श्रीवास—
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु
एसेछेन कुलिया नगरे;
पड़ेगेछे कोलाहल सर्व्व नदीयाय,
जाइतेछे लक्ष-लक्ष लोक,
ह'ये गङ्गापार,
ताँर दरशन तरे ।
शुनितेछि लोकमुखे,
आसिबेन तिनि नवद्वीपे;
दिते एइ शुभ समाचार,

श्रीवास—
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु,
आये हैं कुलिया नगरमें;
मच गया है कोलाहल सारे नदियामें;
जा रहे हैं लाख-लाख लोग,
होकर गङ्गापार,
उनके दर्शनके लिये ।
सुनता हूँ लोगोंके मुखसे,
आयेंगे वे नवद्वीपमें;
देने यह शुभ समाचार,

एसेछि आमि शची-आङ्गिनाय ।	आया हूँ मैं शची-आँगनमें ।
आहा ! दुखिनी जननीके	आह ! दुःखिनी जननीका
एतदिन ताँर पड़ेछे स्मरण ।	इतने दिन बाद उन्हें हुआ है स्मरण ।
शोके जराजीर्ण देह हयेछे ताँहार;	शोकसे देह जराजीर्ण हुआ है उनका,
पुत्र-दरशन-आशे,	पुत्र-दर्शन-आशामें
रेखेछेन जीवन मात्र तिनि;	रखा है जीवनमात्र उन्होंने,
जानि ना,—कि निदारुण दृश्य	पता नहीं—क्या निदारुण दृश्य
हबे अभिनीत एइ नवद्वीपे,	होगा अभिनीत इस नवद्वीपमें,
यदि प्रभु नाहि देन दरशन—	यदि प्रभु नहीं देंगे दर्शन—
श्रीविष्णुप्रियाके ।	श्रीविष्णुप्रियाको ।
शान्तिपुरे एसे, देन नाइ दरशन तिनि,	शान्तिपुर आकर दिया नहीं दर्शन उन्होंने,
सेइ दुखे आछेन जीयन्ते मरिया	उसी दुःखसे हुई हैं जीवित ही मृत समान
गौराङ्ग-घरणी ।	गौराङ्ग-गृहिणी ।
करेन वञ्चित यदि सेइभावे एबार,	करते हैं वञ्चित यदि उसी भाँति इसबार
दरशने ताँर,—	दर्शनसे उनको,—
सर्व्वापेक्षा निजजने;	सबसे अधिक निजजन हैं जो,
प्राणरक्षा ह'बे दाय,	प्राण-रक्षा होगी कठिन,
स्त्रीवधेर पातक-भागी	भागी स्त्री-वध-पातकका
हइ ते हइबे ताँके ।	होना होगा उनको ।
ए सकल कथा, के बलिबे प्रभुके ?	यह सब बात कहेगा कौन प्रभुसे ?
इच्छामय स्वतन्त्र पुरुष तिनि,	इच्छामय स्वतन्त्र पुरुष वे,
करिबेन जाहा इच्छा हय ।	करेंगे जैसी इच्छा हो ।
एखन ताँर कुलियार आगमन-समाचार,	इस समय उनके कुलिया आनेका समाचार,
दिये जाइ शचीमाके ।	दूँ जाके शचीमाँको ।
कइ ? मा जननी कोथाय ?	कहाँ, माँ जननी कहाँ हैं ?
मागो ! मागो ! मागो !	माँ ! माँ ! अरी माँ !
(शचीमातार प्रवेश)	(शचीमाताका प्रवेश)
शचीमाता—	**शचीमाता**—
के ? पण्डित श्रीवास ! एस बाप !	कौन ? पण्डित श्रीवास ! आओ, तात !
तुमि मोर निमायेर बड़ प्रियजन;	तुम मेरे निमाईके बड़े प्रियजन;

तार जत किछु लीला नवद्वीपे,	उसकी जितनी कुछ नवद्वीप-लीला,—
संकीर्तन, रास, ऐश्वर्य्य-प्रकाश,	सङ्कीर्तन, रास, ऐश्वर्य-प्रकाश,—
हयेछिल अनुष्ठित,—तोमारि भवने !	हुई अनुष्ठित घरमें तुम्हारे ।
तुमि तार सर्व्वश्रेष्ठ भक्त;	तुम हो उसके सर्वश्रेष्ठ भक्त;
निमायेर कि संवाद—बल, बल मोरे;	निमाईका क्या संवाद—कहो, कहो मुझसे ।
तुमि सबे परम हिताकांक्षी मोर,	मेरे तुम सब प्रकार परम हिताकांक्षी,
चिर ऋणे बद्ध आमि,	चिर ऋणमें बँधी हूँ मैं
तोमादेर काछे चिरदिन,	निकट तुम्हारे सदा;
श्रीवास ! आमार निमाइचाँद कि	श्रीवास ! मेरा निमाई चाँद क्या
एसेछे नदियाय ?	आया है नदियामें ?
श्रीवास—	**श्रीवास**—
मागो ! एनेछि सुसम्वाद तव तरे,	माँ ! लाया हूँ सुसंवाद तेरे लिये,
एसेछेन कुलिया नगरे, तव पुत्रवर;	आये हैं कुलिया नगरमें पुत्रवर तव;
ए शुन ह'तेछे कोलाहल,	वह सुनो ! हो रहा है कोलाहल,
सर्व्व नदीयाय,	सम्पूर्ण नदियामें,
लक्ष-लक्ष लोक,—पार हये सुरधुनी—	लक्ष-लक्ष लोग,—गङ्गाको पारकर,—
छुटेछे नवद्वीपचन्द्र-दरशने ।	भाग रहे हैं दर्शन करनेको नवद्वीपचन्द्रका ।
शचीमाता—(चमकित भावे)	**शचीमाता**—(विस्मित भावसे)
निमाइ आमार, बाप विश्वम्भर,	मेरा निमाई, लाल विश्वम्भर,
जीवन-सर्व्वस्व,	जीवन-सर्वस्व,
एसेछे कुलिया नगरे;	आया है कुलिया नगरमें ।
बल, बल, पण्डित श्रीवास !	बोलो, बोलो, पण्डित श्रीवास !
केमन जाइब आमि,—बौमाके ल'ये ह'ये गङ्गापार ?	कैसे जाऊँगी मैं,—लेकर बहूरानीको, गङ्गा पार करके ?
दया क'रे तुमि ल'ये चल,	दया करके तुम्हीं चलो ले,
मोदेर दुइ जने निमायेर काछे ।	हम दोनोंको पास निमाईके ।
देखितेछि पथे बहु लोकेर संघट्ट,	देखती हूँ पथपर भीड़ बहुत लोगोंकी;
केमने कुलवधू मोर,	किस प्रकार कुलवधू मेरी,
जाबे मोर साथे ?	जायेगी मेरे साथ ?

श्रीवास—

मागो ! सुस्थ कर मन,—
व्यस्त ना हइओ,—
जेतेछि आमि,
नदीयारचाँदे आनिते नदीयाय ।
गृहे ब'से,—तुमि सबे
पाबे दरशन ताँर;
मागो ! मोर वाक्य करह विश्वास ।

(प्रस्थान)

(मालिनी प्रभृतिर प्रवेश)

शचीमाता—

दिदि ! आमार निमाइचाँद
एसेछे नदीयाय पुनः
दिये गेलेन एइमात्र ए सुसम्वाद,
पण्डित तोमार ।
जाओ, दिदि ! सबे मिलि
गिये कुलिया नगरे,
निये एस गृहे तारे ।

श्रीवास—

माँ ! स्वस्थ करो मनको,—
अधीर न होओ,—
जा रहा हूँ मैं,
नदिया चाँदको लाने नदियामें ।
घरमें रहकर ही तुम सब
प्राप्त करोगी उनका दर्शन;
माँ ! मेरी बातका करो विश्वास ।

(प्रस्थान)

(मालिनी आदिका प्रवेश)

शचीमाता—

दीदी ! मेरा निमाई चाँद
आया है नदिया फिर—
दे गये हैं अभी-अभी यह सुसंवाद
पण्डित तुम्हारे ।
जाओ, दीदी ! सब मिलकर
कुलिया नगर जा,
ले आओ घर उसे ।

गीत

ओगो मालिनी दिदि ।
आमार निमाइ एसेछेन ।
शुनितेछि लोक मुखे—
से जे यति सेजेछ ॥
(तोरा) निये आय घरे तारे
बुझाइये हाते धरे,
धरमेर कथा से जे,—
उल्टा बुझेछे ।
जननीरे दुःख दिये,
विष्णुप्रिया तेयागिये,

अरी मालिनी दीदी !
लाल निमाई मेरा आया है ।
लोगोंके मुखसे सुनती—
संन्यासी-वेश बनाया है ॥
तुम सब उसको ले आओ घर,
हाथ पकड़ करके, समझाकर,
बात धर्मकी ठीक न समझी,
उलटा अर्थ लगाया है ।
जननीके उरमें दुखको भर,
विष्णुप्रियाको तथा त्यागकर,

कि सुख पेयेछे निमाइ,—
आयगो पुछे।
(आमार) निमाइ एल नदीयाय;
बाड़ी ना आसिबे हाय,
कि दारुण मन व्यथा,—
बलि कार काछे।
जा' गो तुइ सर्व्वजया,
जाओ गो तुमि महामाया,
मालिनीके सङ्गे निये,—
निमायेर काछे।
आमि आर जाव ना,
किछु तारे बल्वो ना,
पागला निमाइ मने,—
करे किछु पाछे।
जाओ गो सवे कुलनारो,
विष्णुप्रिया सङ्गे करि,
बल्गे तारे सवइ मिले,—
तार माँ मरेछे।
दास हरिदासे कय,
निमायेर उचित हय,
कपट-संन्यास छाड़ि,—
मार क्षमा याचे।

आओ पूछ निमाईसे
उसने क्या तो सुख पाया है॥
सुत आया मम नवद्वीपनगर,
पर हाय! न आयेगा घरपर,
किसे कहूँ मनमें जो मेरे
दारुण दुःख समाया है।
सर्वजया! जा, अरी चली जा,
और महामाया! तू भी जा,
सँग मालिनीको ले, सुतने
आसन जहाँ बिछाया है।
मैं तो स्वयं नहीं जाऊँगी,
कुछ भी उससे नहीं कहूँगी,
पीछे पुत्र न सोचे कुछ, उस-
पर पागलपन छाया है।
जाओ अरी! सकल कुलनारी,
सँग ले विष्णुप्रिया वेचारी,
सव मिलि उसको कहना—तेरी
माँने तज दी काया है।
दास-दास हरिदास रहा कह,
उचित निमाईको केवल यह—
माँसे माँगे क्षमा-त्याग
जो छल - संन्यास सजाया है।

मालिनी—

दिदि! कि काज तुलिया आर
पुरातन कथा?
शुनेछि सकल कथा, पण्डितेर मुखे,
मातृभक्त-शिरोमणि पुत्र तव,
एसेछेन मातृदरशने, छाड़ि नीलाचल,
प्राणेर आवेगे।
छाड़ि मातृसेवा नवीन वयसे,—
करिया संन्यास, अनुतप्त पुत्र तव,—
बलेछेन निज मुखे एइ कथा

मालिनी—

दीदी! किसलिये उठाती अब
पुरानी बात?
सुनी है सकल बात, पण्डितके मुखसे,
मातृभक्त-शिरोमणि पुत्र तुम्हारे
आये हैं माताके दर्शनको, छोड़ नीलाचल
प्राणके आवेगमें।
छोड़ मातृसेवा नयी अवस्थामें,—
संन्यास ग्रहणकर अनुतप्त हैं तुम्हारे पुत्र,
कही है स्वमुखसे बात यही,—

नदीयार चाँद;—	नदियाके चाँदने ।
देखेछि स्वचक्षे मोरा,	देखा है निज नयनोंसे हमने,
तव नामे चक्षे ताँर,	नामसे तुम्हारे उनकी आँखोंसे
बहे शत धारा,	बहती हैं शत धाराएँ;
धरि जने-जने नदीयार लोके,	नदियाके एक-एक व्यक्तिको पकड़कर
पुत्र तव जिज्ञासये वार्त्ता जननीर ।	पुत्र तव पूछते हैं समाचार जननीका ।
पुत्र सने अभिमान,	पुत्रके प्रति अभिमान,
दिदि ! शोभा नाहि पाय, ए समय ।	दीदी ! शोभा नहीं देता इस समय ।
चल,—मोरा जाइ गङ्गातीरे ।	चलो, हमलोग चलें गङ्गातटपर ।
देख गङ्गार ओपारे कुलिया नगर,	देखो, गङ्गाके उस पार कुलिया नगर,
परिपूर्ण जन कोलाहले,	जन-कोलाहलसे परिपूर्ण;
मध्ये-मध्ये शुनि मात्र शुधु,—	केवल मात्र सुन पड़ती बीच-बीचमें,—
गगनभेदी हरिनामध्वनि ।	हरिनाम-ध्वनि गगनभेदी ।
आर शुनि तार सङ्गे-सङ्गे	और सुनती हूँ साथ-साथ उसके,—
गाइतेछे उच्चकण्ठे—	गा रहे हैं उच्च स्वरसे,
सर्व्व नरनारी—जयगान—	सब नरनारी—जयगान,
धरि संन्यासेर नाम पुत्रेर तव ।	लेकर संन्यास-नाम तव पुत्रका ।
भाग्यवती तुमि दिदि !	भाग्यवती दीदी ! तुम,—
सर्व्वलोके जाँरे	सकल लोक जिनको
पूजिछे भक्तिभरे ईश्वर बलिया,—	पूज रहा भक्तिसे भावित हो, ईश्वर मान
दरशन तरे जाँर त्यजि सर्व्व कर्म्म	दर्शनके लिये जिनके त्याग सर्व कर्म
लक्ष-कोटि लोके,	लाखों-करोड़ों लोग,
छुटितेछे कुलिया नगरे;	भागे हुए जा रहे हैं कुलिया नगर।
चेये देख दिदि !	आँख उठाकर देखो दीदी !
नाइ घाटे तरि एक खानि,	नहीं नाव घाटपर एक भी,
ह'तेछे गङ्गा पार सबे संतरण दिये,—	हो रहे गङ्गा पार सब तैर-तैरकर
छाड़ि प्राणेर ममता ।	छोड़ प्राणोंका मोह ।
मुखे शुधु एकइ कथा सकलेर,	मुखमें बस एक ही सभीके बात,—
"श्रीकृष्णचैतन्यप्रभु ! दरशन दाओ"	"श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु ! दर्शन दो" ।
दिदि ! चल मोरा जाइ गङ्गातीरे ।	दीदी ! चलो हम लोग चलें गङ्गातट ।

शचीमाता—

मालिनी दिदि !
एसेछे निमाइ मोर,
गङ्गा-दरशने;
पण्डित श्रीवास कहिलेन मोरे ।
आसिबेन सङ्गे ल'ये तिनि,
नदीयार चाँदे नदीया भीतरे ।
करि गङ्गा-दरशन यदि,
निमाइ मोर फिरे चले जाय,
आर ना हवे देखा तार सने मोर,—
से दुःख मरिलेओ नाहि जावे;
तोमादेर परामर्श भाल,
चल दिदि ! बौमाके ल'ये,
चल मोरा जाइ गङ्गा तीरे ।

(सकलेर प्रस्थान)

शचीमाता—

मालिनी बीवी !
आया है निमाई मेरा
गङ्गा-दर्शनके लिये,
पण्डित श्रीवासने बताया है मुझको ।
आयेंगे लेकर वे साथ,
नदियाचांदको नदियाके भीतर ।
गङ्गाका दर्शन करके यदि,
मेरा निमाई फिर चला जाय,
तब नहीं होगा मिलना उसके साथ मेरा,—
वह दुःख मिटेगा न मरनेसे भी ।
अच्छा परामर्श तुम सबका;
चलो बीवी ! लेकर बहूरानीको,
चलो, हम लोग चलें गङ्गातट ।

(सबका प्रस्थान)

चतुर्थ अङ्क ।

(तृतीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—सन्मुखे पथे दाँड़ाइया काञ्चना ओ अमितादि सखिगण ।

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—सामने पथपर खड़ी काञ्चना और अमितादि सखिगण ।

काञ्चना—

सखि अमिते !
नदीयानागर एसेछेन नदीयाय पुनः;
किंतु, देखे तांर संन्यास-मूरति,—
बुक फेटे गेल मोर;
हेरिलाम तांरे, नदीयार पथे—
विरस वदने,—आनमना भावे
भ्रमिछेन द्वारे द्वारे कातर हृदये ।

काञ्चना—

सखि अमिते !
नदिया-नागर आये हैं नदियामें पुनः,
किंतु देख उनकी संन्यास-मूर्ति
छाती फट गयी मेरी;
देखा उनको नदियाके पथपर—
विरस बदन, अन्यमनस्क हो,
घूम रहे द्वार-द्वार कातर हृदयसे ।

गीत

सजनि ! से जे एसेछे आवार ।
नदीयार चाँद गोरा,
नागरीर मनचोरा,
एवे जे कोपिन परा,—
नेड़ा माथा तार ।
कोथा से चाँचर केश,
नव नटवर वेश,
सरमेर नाहि लेश,—
फिरे द्वारे-द्वार ।
कोथा से मधुर हासि,
अपरूप रूपराशि,

सजनी ! वे पुनः पधारे,
उनका शुभागमन ।
वे गौर-चन्द्र नदियाके,
मनहर नागरी तियाके,
अब तो धारे कौपीन
न सिरपर कुन्तल सघन ॥
कुञ्चित वह कच-जाल कहाँ,
नटवर-वेश रसाल कहाँ,
लज्जाका लेश न,
द्वार-द्वार करते विचरण ।
वह कहाँ हँसी अब मधुसम,
नव रूप-राशि वह अनुपम,

कटाक्ष से कुलनाशी,—
मुख देखि तार।
कमण्डलु हाते धरे,
नदेर पथे बेड़ाय घुरे,
मने हय बुके धरे,—
दुखेर पाथार।

कि जानि कि छल करि
माझे-माझे वले हरि,
जल देखि आँखि भरि—
गुरु दुखभार।

नदेय एसे कारे खोंजे,
वले ना से भये-लाजे,
एसेछे से यति साजे,—
ए कि व्यवहार।

देख सखि! देख गिये,
जाच्छे से जे घरे धेये,
देखवे व'ले विष्णुप्रिये—
प्रणय-आधार।

दास हरिदासे वले,
धरे राख छले-वले,
विष्णुप्रिया-वल्लभे,—गृहे दिये द्वार।

नागरीर प्राण गोरा,
(सुधु) नागरीके देय धरा—
आन जनेर मन पीड़ा,—
सुधु मात्र सार।

मुखपर कहाँ दीखता वह
कुलनाशी चितवन॥
अब लिये कमण्डलु करमें,
फिरते नवद्वीप नगरमें,
दुखका सागर लिये हुए
उरमें—कहता मन।

क्या जाने, कर क्या कैतव,
रह-रहकर करते हरि-रव,
भारी दुःखभारसे दिखते
गीले लोचन॥

आ नदिया किसे तलासें,
कह सकें न भय-लज्जासे,
यह कैसा व्यवहार,
पधारे संन्यासी वन।

देखो सखि! देखो चलकर,
जा रहे भवन वे सत्वर,
नींव प्रणयकी, विष्णु-
प्रियाका करने दर्शन॥

हरिदास, दासका कहना—
छल-वलसे घरमें रखना
विष्णुप्रिया-वल्लभको
करके द्वारनिरोधन।

गौर नागरीके जीवन,
वँधे उसीके वस वन्धन,
अन्य जनोंको मनो-
व्यथा ही वस अवलम्वन॥

अमिता—

चल, सखि काञ्चने !
जाइ सबे मिलि, विष्णुप्रिया काछे;
ए सम्वाद दिये तार,
जीवन बाँचाओ।
विष्णुप्रियावल्लभेर संन्यासीरूप,

अमिता—

चलो, सखि काञ्चने !
जायें सब मिलकर विष्णुप्रिया पास;
यह संवाद देकर उसका
जीवन बचायें।
श्रीविष्णुप्रियावल्लभका संन्यासी-रूप,

कि रूपे हेरिबे सखि मोर;	किस प्रकार देखेगी सखी मेरी ?
मने हले हृत्-कम्प हय ।	याद आते होता है हृदय-कम्प
(सकलेर श्रीगौराङ्गभवने गमन)	(सबका गौराङ्गभवन जाना)
काञ्चना—	**काञ्चना—**
(श्रीविष्णुप्रियाके धरासने आसीना देखिया)	(श्रीविष्णुप्रियाको धरतीपर बैठी देखकर)
सखि ! आछ त भाल ?	सखि ! अच्छी तो हो ?
धरासने बसि केन ?	धरतीपर बैठी क्यों ?
उठ, तव तरे एनेछि सुसम्वाद ।	उठो, लायी हूँ तुम्हारे लिये सुसंवाद ।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
सखि काञ्चने ! निशि भोरे,	सखि काञ्चने ! निशाके अन्तमें
ध्याने बसि,	ध्यानमें बैठी हुई मैंने,
हेरिनु एक अपूर्व्व स्वप्न आजि;	देखा एक अपूर्व स्वप्न आज,
आछि ब'से तोमादेर प्रतीक्षाय सेइ ह'ते,	बैठी हूँ प्रतीक्षामें तुम सबकी तभीसे,
स्वप्नकथा बलिब तोमाके ।	कहूँगी स्वप्नकथा तुमको ।
शान्ति नाहि ह'ल मने, कें'दे-कें'दे एका;	शान्ति नहीं मिली मनको रोते-रोते अकेले;
सखि ! मनकथा,—मनव्यथा,	सखि ! मनकी बात—मनकी व्यथा,
तोमा भिन्न आर काके बलि ?	तुमको छोड़ और किससे कहूँ ?
बलिबार कथा नय,—	कहनेकी बात नहीं,—
गुणमणि मोर,—	गुणमणिने मेरे,—
एतदिन परे बुझि,—	इतने दिन पश्चात्, प्रतीत होता है,—
स्मरण करेछेन ए दासीरे ।	स्मरण किया है इस दासीको ।

गीत

सखि रे । (आज)	सजनी री । क्या आज
कि हेरिनु ध्याने ।	ध्यानमें दर्शन पाया ।
एसेछेन गुणमणि,	गुणमणिका है हुआ आगमन,
देखिवारे मा जननी,—	मैयाका करनेको दर्शन,—
के आसि आमारे जेन,—	आ कानोंमें जाने किसने
बलिल काने ।	वचन सुनाया ॥

स्वकर्णे शुनिनु वाणी,	अपने ही कानों सुना वचन,
सन्मुखे हेरिनु आमि,	सामने किया मैंने दर्शन,
अपरूप यतिरूप—	नदियामें ही—जो अद्भुत
नदीया धामे।	यति-वेश सजाया।
हाते कमण्डलु करि,	कर लिये कमण्डलु अपने,
चरणे खड़म् धरि,	पादुका पदोंमें पहने,
दुयारे दाँड़ाये तिनि,—	खड़े द्वार पर वे,
उदास प्राणे।	प्राणोंमें सोच समाया॥
सङ्गे ताँर अगणन,	उनके साथ परे गणनाके,
नदीया भकतगण,	भक्तोंकी टोली नदियाके,
सकले विरस मन,—	सभी विरस-मन,—नहीं
केन के जाने।	समझमें कारण आया।
दुयारे दाँड़ाये माता,	माँने जो हो खड़ी द्वार पर,
कहिछेन कि जे कथा,	बात निकाली मुखसे बाहर,
लोकेर गहले ताहा,—	कानोंमें वह गयी न
गेल ना काने!	ऐसा जनरव छाया॥
तुमि सवे ध'रे मोरे,	तुम सब पकड़े मुझे सँभारे,
निये गेल पथ-धारे,	लेकर पथके गयीं किनारे,
तार पर कि जे हल,—	पता न उसके पीछे क्या
किछु जानि ने।	फिर हुआ-हवाया।
दास हरिदासे कहे,	दासानुदास हरिदास कहे,
गौराङ्ग तोमारे चाहे,	गौराङ्ग तुम्हीको चाह रहे,
कपट-संन्यासी तिनि,—	सर्वविदित—यति-वेश
सबाइ जाने।	उन्होंने अनृत बनाया॥

काञ्चना—	**काञ्चना—**
सखि विष्णुप्रिये !	सखि विष्णुप्रिये !
ध्यानेते तुमि देखियाछ जाहा,	ध्यानमें तुमने देखा है जिसको,
स्वप्नेर कथा नहे ताहा;	स्वप्नकी बात नहीं वह;
गुणमणि तव एसेछेन कुलिया नगरे।	गुणमणि तुम्हारे आये हैं कुलिया नगरमें।
एसेछि मोरा तोमार निकटे	आयी हैं हमलोग निकट तुम्हारे
ल'ये एइ शुभ समाचार।	लेकर यही शुभ समाचार।
आसिवेन तिनि,	आयेंगे वे,
देखिते तोमाय,	देखने तुम्हें,—

ए संवादओ पेयेछि मोरा ।	यह संवाद भी मिला है हमको ।
छुटेछे सर्व्वनदीयार लोक आजि,	भागे जा रहे हैं आज नदियाके सब लोग
कुलिया नगरे;	कुलिया नगरको;
लोके लोकारण्य सुरधुनि तीर,	सुरधुनि-तीरपर भीड़ अपार,
नर-नारी बाल वृद्ध युवा,	नर-नारी-बाल-वृद्ध-युवा,
साँतारिया हइतेछे पार ।	तैर-तैर हो रहे हैं पार ।
शुनि सकलेर मुखे,	सुनकर सब लोगोंके मुखसे
तव गुणमणिर संन्यासेर नाम,	तुम्हारे गुणमणिका संन्यास-नाम,
नारि उच्चारिते मोरा ताहा मुखे ।	मुखसे कर पाती नहीं उसका उच्चारण हम।
सखि ! तुमि थाक ब'से एइ गृहे;——	सखि ! तुम बैठी रहो इसी घरमें;——
आसिबेन गुणमणि तव,	आयेंगे गुणमणि तुम्हारे
तोमार दुयारे, दरशन दिते तोमा ।	द्वारपर तुम्हारे, दर्शन देनेको तुम्हें ।
बाँधा तिनि तव प्रेमे चिर दिन;——	बँधे हैं चिरदिन वे प्रेममें तुम्हारे,
दिबेन प्रमाण तार एइ कार्य्ये तिनि ।	देंगे प्रमाण इसका इसी कार्यसे वे ।
श्रीविष्णुप्रिया——	**श्रीविष्णुप्रिया——**
सखि काञ्चने ! शुनि तव कथा,	सखि काञ्चने ! सुनकर तुम्हारी बात,
जुड़ाइल प्राण मोर;	शीतल हुए प्राण मेरे;
किंतु दुर-दुर करे मोर बुक,	किंतु करती है छाती मेरी धक्-धक्,
दुर्ब्बल परानि मोर काँपे थर-थर ।	दुर्बल प्राण मेरे काँपते हैं थर-थर ।
वाक्शक्ति पाय लोप,	वाक्शक्ति लुप्त हुई,
चक्षे देखि अन्धकार नयनेर जले,	आँखोंमें अन्धकार आँसुओंके कारण,
बुद्धि हय नाश ।	बुद्धि हुई नष्ट ।
सखि ! ब'ले राखि शत कथार	सखि ! कह देती हूँ सौ बातोंकी
एक कथा तोमादेर,——	एक बात तुम सबसे——
एत कष्ट करिया स्वीकार,	इतना कष्ट करके स्वीकार
आसिबेन केन तिनि आमार दुयारे ?	द्वारपर मेरे वे आयेंगे क्यों ?
आमार कर्त्तव्य, सखि !	मेरा कर्तव्य, सखि !
जाइबारे पति-दरशने;	जाना पति-दर्शन निमित्त;
ताँर श्रीचरण-दरशनलाभ——	उनके श्रीचरणोंके दर्शनका लाभ

हबे मोर बहु भाग्यबले ।	होगा मुझे बड़े भाग्य-बलसे ।
बिलम्बे नाहि काज आर,—	देरीका काम नहीं और;
करि परामर्श मार सङ्गे,—	करके परामर्श माँसे,—
चल, मोरा सबे मिले जाइ गङ्गातीरे ।	चलो, चलें मिलकर हम सब गङ्गातीर ।
गुणमणि मोर,	मेरे गुणमणिने
दियेछेन शिक्षा मोरे वारंवार,	दी है मुझे बारंबार शिक्षा,—
हये अभिमान-शून्य,—	होकर अभिमान-शून्य,
भजिते श्रीकृष्णधने ।	भजना श्रीकृष्णधन ।
करि अभिमान ताँर सने	उनसे अभिमान करके
ब'से थाकि यदि आमि गृहे,—	बैठी यदि रहूँ मैं घरमें,—
लय मोर मने,—हय भय हृदे—	लगता है मेरे मनमें,—होता भय हृदयमें,
पाछे वञ्चित हइ वा आमि,	कहीं वञ्चित न रह जाऊँ मैं
पति-पादपद्म-दरशने ।	पति-पद-पद्म-दर्शनसे ।
सखि ! ताँर सने अभिमान	सखि ! उनके प्रति अभिमान
शोभा नाहि पाय ।	शोभा नहीं देता है ।
जगतेर गुरु तिनि,—बहुवल्लभ तिनि,	जगत्के गुरु वे,—बहुवल्लभ वे,
ह'ये अभिमानशून्य, सर्व्वभावे,—	होकर अभिमान-शून्य सब भाँति
जेते हबे दरशने ताँर ।	जाना होगा दर्शनको उनके ।
चलेछे सर्व्वलोक एइ नदीयार,	जा रहे हैं सभी लोग इस नदियाके,
पण्डित,—कुलीन,—धनी,—	पण्डित-कुलीन-धनी,—
केह नाहि बाद;	कोई नहीं बचा;
देख, देख—कुलेर कामिनी कत	देखो, देखो—कुलकामिनियाँ कितनी,
जाइतेछे धेये ।	जा रही हैं दौड़ी ।
कि आमि ?	मैं भला, क्या हूँ ?
किसेर अभिमान मोर ?	किस बातका अभिमान मुझे ?
जाव आमि मार सङ्गे पतिदरशने,	जाऊँगी मैं संग माँके पतिदर्शनको,
तोमराओ सङ्गे जावे मोर ।	तुम सब भी संग मेरे चलोगी ।
काञ्चना—	**काञ्चना—**
सखि विष्णुप्रिये !	सखि ! विष्णुप्रिये !
पतिप्राणा रमणीर शिरोमणि तुमि,	पतिप्राणा रमणियोंमें शिरोमणि तुम,

देखाइले तुमि आजि	दिखाया तुमने आज
उच्च आदर्श पतिभक्तिर	उच्च आदर्श पतिभक्तिका
ए मर जगते ।	इस मर्त्यलोकमें ।
शिखाइले तुमि मोदेर	सिखाया तुमने हमसबको
उपलक्ष्य करि पति-भक्ति,	करके उपलक्ष पतिभक्तिको--
भगवद्भक्तिर अति उच्च सोपान ।	भगवद्भक्तिका अति उच्च सोपान ।
मानिनीर मान श्रेय: बटे,--	मानिनीका मान उत्तम है,--
रसमय नागरेर पक्षे,--सुखकरओ बटे,	रसमय नागरके लिये सुखकर भी है;
किंतु उपयोगी नय इहा सर्व्वस्थाने,	किंतु उपयोगी नहीं सभी स्थानपर यह,-
शिखाइले तुमि, सखि,	सिखाया तुमने सखि,
इहा आमा सबाकारे ।	यह हम सबको ।
गुणमणि तव,	गुणमणि तुम्हारे,
प्रकाशिया आजि ताँर पूर्णैश्वर्य्य--	प्रकाशितकर आज अपना पूर्णैश्वर्य,--
हयेछेन उदय नदीया नगरे ।	हुए हैं उदित नदिया नगरमें ।
लीलामयी तुमि--लीलामय तिनि --	लीलामयी तुम,--लीलामय वे,--
जे लीलार जाहा उपयुक्त उपचार,	जिस लीलाका जो उपयोगी उपचार,
उपयोगी आवाहन--	उपयोगी आवाहन--
ताइ करा अवश्य कर्त्तव्य ।	वही करना कर्तव्य आवश्यक है ।
बुद्धिमती तुमि, सखि !	बुद्धिमती तुम सखि !
रसशास्त्रे तव पूर्ण अधिकार;	पूरा अधिकार तुम्हारा रस-शास्त्रमें ।
उपदेश-वाक्य तव धरि मस्तकेते	उपदेश-वाक्य तव मस्तकपर धारण करके
जाब मोरा सङ्गे तव,	जायेंगी साथ हम तुम्हारे,
दरशने -	करनेको दर्शन--
संन्यासीरूपी नदीयार अवतारे ।	संन्यासीरूपी नदियाके अवतारका ।
दिये वस्त्र गलदेशे	वसन लपेटकर कण्ठमें,
ह'ये भूमि-विलुण्ठित	लोटकर पृथ्वीपर,
करिब प्रणाम ताँरे दूर ह'ते	करेंगी प्रणाम उनको दूरसे,
दण्डवत् ह'ये ;	दण्डवत् गिरकर;
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु ! दया कर मोरे,	श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु ! दया करो हमपर,--
बलि इहा, कर जोड़े,--दाँड़ाइये दूरे,	कहकर यों, जोड़े हाथ, दूरपर खड़ी हो

करिब मोरा आत्मनिवेदन ।	करेंगी हमलोग आत्मनिवेदन ।
वैकुण्ठेर नारायण तिनि	वैकुण्ठवासी नारायण वे,
ताँर सने वैधीभक्ति-आचरण	उनके प्रति आचरण वैधीभक्तिका——
शास्त्रयुक्ति,——अवश्य कर्त्तव्य ।	शास्त्रयुक्त——अवश्य पालनीय ।
तबे,——भाग्ये यदि थाके सखि !	तथापि——भाग्यमें यदि होगा सखि !
हेरिते नदिया-नागरवेशे	दर्शन नदिया-नागर-वेषमें,
गोराचान्दे पुनः एइ नदीयाय,——	पुनः गौरचाँदका इसी नदियामें,—
शचीर दुलाले पुनः शची-आङ्गिनाय,——	शचीके दुलारेका पुनः शची-आँगनमें,
विष्णुप्रियावल्लभे पुनः विष्णुप्रिया बामे,—	विष्णुप्रियावल्लभका बायें लिये प्रियाको,
तखन,——तखन,——सखि,	तभी-तभी——सखि !
मानिनीर मानेर मर्म्म,——	भामिनीके मानका मर्म,——
प्रणयिनीर प्रणयरहस्य,	प्रणयिनीका प्रणय-रहस्य,
दिब बुझाइये भाल क'रे,	देंगी समझा भली-भाँति,
कपट-संन्यासीवरे ।	कपट-संन्यासी-शिरोमणिको ।
अभिमानेर अनुराग-शरे,	मानमें बुझे अनुराग-शरसे
बिंधिब कठिन हृदय ताँर ।	विद्ध कर देंगी उनके कठिन हृदयको ।
प्रियार मान-भञ्जनेर तरे,	करनेको प्रियाका मानभङ्ग,
काँदिया-काँदिया साधिते हइबे,	रो-रोकर मनाना होगा
तखन ताँरे,	तब उन्हें,
नदीया-नागरी जने-जने ।	एक-एक नदियानागरीके प्रति ।

गीत

साधिया काँदिले कथा	नहीं करूँगी बात, करें
कब ना तखन ।	कितना मनुहार-रुदन ।
विष्णुप्रिया-वल्लभे	विष्णुप्रिया-वल्लभ छलिया-
विष्णुप्रिया बुझि लबे,	को समझेगी विष्णुप्रिया,
संन्यासीर भरिभुरि—	संन्यासीके गुरु आडम्बरका
भाङ्गिबे तखन ॥	होगा भञ्जन ॥
शठ-शिरोमणि सेजे,	वे श्रेष्ठ शठोंमें सारे,
ताइ एसेछे यति सेजे	यति बनकर तभी पधारे,
शुधु देखे जावे च'ले,—	क्या विधान यह—चले जायेंगे
ए विधि केमन ।	बस करके दर्शन ।

स्वार्थपर-चूड़ामणि,
कपटेर शिरोमणि,
कि बुझिवे रमणीर,—
मरम वेदन ॥

चूड़ामणि स्वार्थपरोंके,
शिरभूषण कपटकरोंके,
समझेंगे क्या रमणीके
मर्मस्थलका वेदन ॥

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि काञ्चने !
बलिश्रो ना ताँके,--रूढ़ कथा,
बाजे मोर प्राणे इहा शेल सम;
गुणमणि मोर, बड़ दयामय,
हृदि ताँर प्रेम-पारावार ।
संन्यासीर धर्म्म नहे गृहे श्रागमन,
तबुश्रो सखि !
ह'ये कृपा-परवश मोर प्रति,
करि छल,--गङ्गा-दरशन,
एसेछेन गुणमणि मोर, पुनः नदीयाय,
दरशन दिते अभागीरे ।
अनाथिनी आमि,--
त्रिजगते,--एका तिनि बिना,--
निजजन केह नाइ मोर ।
अन्तर्य्यामी तिनि,--इहा जानि
करुणा करिये,--करुणासागर नाथ,--
एसेछेन दरशन दिते ।
गृहत्यागी यतिवर तिनि,
मायामुक्त परम पुरुष,
आमा समा लक्ष-कोटी नरनारी
करिछेन निरन्तर ताँहार सेवन ।
जगत संसारे तिनि पूज्य सबाकार;
प्रेम-प्रीति, भालबासा-स्नेहेर
एक मात्र आकर जिनि,
चाइ भिक्षा ताँर काछे कर जोड़े,

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि काञ्चने !
कहो मत अशिष्ट उक्ति उनके प्रति,
प्राणोंमें शेल सम करकता है मेरे यह;
गुणमणि मेरे बड़े ही दयामय हैं,
हृदयमें उनके प्रेम-पारावार ।
संन्यासीका धर्म नहीं घर आना,
तब भी सखि !
मेरे प्रति होकर कृपा-परवश,
करके मिस गङ्गा-दर्शनका
आये हैं गुणमणि मेरे फिर नदियामें,
दर्शन देने अभागिनीको ।
अनाथिनी मैं,--
त्रिभुवनमें उनके बिना एकाकिनी;
निजजन नहीं कोई मेरा ।
अन्तर्यामी वे,--यह जानकर
करुणापूर्वक, करुणासागर नाथ
आये हैं देनेको दर्शन ।
गृहत्यागी यतिवर वे,
मायामुक्त परमपुरुष;
मेरे सम लक्ष-कोटि नर-नारी
करते हैं निरन्तर आराधन उनका ।
पूज्य वे सभीके सारे संसारमें;
प्रेम-प्रीति, छोह-स्नेहके
एकमात्र आकर जो,
माँगती हूँ भिक्षा उनसे कर जोड़े,

कृपा-कणा मात्र ।
एसेछेन तिनि, करिते कृपा-वरिषण,
सर्व्वस्थाने समभावे एइ नदीयाय ।
हरषित सर्व्वलोके,
तिरपित जगत संसार ।
सखि ! कृपार अवतार तिनि,
कृपानिधि तिनि;
पाइ यदि, भाग्यबले,
एक बिन्दु कृपा ताँर,
सार्थक जीवन हबे मोर,
सफल हबे सर्व्व मनस्काम ।
इहा भिन्न
नाहि अन्य अभिलाष मोर ।
भिखारिणी आमि,—कांगालिनी आमि,
तिनि कांगालेर ठाकुर,
करुणार अवतार ।
जाब ताँर काछे सखि ! दुखिनीर वेशे,
तबे यदि हय कृपा ताँर
अनाथिनी ब'ले ।
चल, चल, प्रियसखि !
आर विलम्बे नाहिक काज ।

काञ्चना—

सखि ! प्रिय सखि ! धन्य तुमि,
धन्य तव गम्भीर चरित्र ।
सामान्या रमणी मोरा,–
शक्ति नाहि बुझिवार,
अद्भुत चरित्र तोमादेर ।
अद्भुत काहिनी शुनि तव मुखे,
बुझिलाम निगूढ़ रहस्यपूर्ण
लीला तोमादेर ।

कृपाकण मात्र ।
आये हैं वे करने अनुकम्पाकी वर्षा,
सर्वत्र समभावसे इस नदियामें ।
हर्षित सकल लोक,
तृप्त सम्पूर्ण जगत् ।
सखि ! अवतार वे कृपाके,
कृपानिधि वे;
पाऊँ यदि भाग्यसे
एक बिन्दु कृपा उनकी,
सार्थक हो जायगा जीवन मेरा,
पूर्ण होंगे सभी मनोरथ ।
इसके अतिरिक्त
अन्य अभिलाषा मेरी नहीं ।
भिखारिनी मैं,—मैं कंगालिनी,
ठाकुर कंगालोंके वे,
अवतार करुणाके ।
जाऊँगी पास उनके सखि ! दुःखिनीवेषमें
तब यदि हो कृपा उनकी,
जानकर अनाथिनी ।
चलो, चलो, प्रिय सखि !
और नहीं काम विलम्बका ।

काञ्चना

सखि ! प्रिय सखि ! धन्य तुम,
धन्य तुम्हारा गम्भीर चरित्र !
सामान्य रमणी हम,—
शक्ति न समझनेकी
अद्भुत चरित तुम दोनोंका ।
अद्भुत वार्ता सुनकर तुम्हारे मुखसे,
समझ पायी निगूढ़ रहस्यपूर्ण
लीला तुम दोनोंकी ।

प्रवेशिबे कार साध्य,
एइ गम्भीर, असीम, अगाध, अनन्त
भाव-तरङ्गमय लीला-समुद्र भीतरे ।
क्षमा कर सखि !
व्यथा यदि दिये थाकि मने ।

किसकी सामर्थ्य जो प्रवेश करे
इस गम्भीर, असीम, अगाध, अनन्त
भाव-तरङ्गमय लीला-समुद्रके भीतर ?
क्षमा करो सखि !
व्यथा यदि पहुँचायी हो मनको ।

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि ! विरहिणी आमि,
ज्वले हृदे अहरहः
विषम विरहानल;
ताइ प्रलापेर वाक्य आसे मुखे ।
कि जे बलियाछि तोमा,
किछु मने नाइ;
मने यदि दुख दिये थाकि
क्षमा कर, सखि !
(पथेर दिके चाहिया)
सखि ! कोलाहले परिपूर्ण नवद्वीप;
लोके लोकारण्यपथ,
कि करि जाइब मोरा,
गङ्गातीरे गुणमणि-दरशने ?

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि ! विरहिणी मैं,
जलता है हृदयमें प्रतिदिन
विषम विरहानल;
इसीसे प्रलाप-वाणी निकल पड़ती मुखसे ।
क्या मैं बोल गयी हूँ तुमसे,
कुछ भी स्मरण नहीं है;
मनमें यदि दुःख पहुँचाया हो
तो क्षमा करो, सखि !
(पथकी ओर देखकर)
सखि ! कोलाहलसे परिपूर्ण नवद्वीप,
बड़ी भीड़ पथपर,
जायेंगी हम सब कैसे,
गङ्गातट दर्शन करने गुणमणिका ?

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये !
परामर्श करि मार सङ्गे,
चल, जाइ सबे मिले गङ्गातीरे;
ईशानके करि सङ्गे चल, सखि !
दूर ह'ते देखे आसि न्यासीवरे ।
(सकलेर प्रस्थान)

काञ्चना--

सखि विष्णुप्रिये !
परामर्श कर संग माँके,
चलो, चलें सब मिलकर गङ्गातट,
साथ ले ईशानको चलें, सखि !
दूरसे देख आयें संन्यासी वरको ।
(सबका प्रस्थान)

पञ्चम अङ्क ।

(प्रथम गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन,—ईशान गृहकार्य्ये व्यस्त, मालिनीदेवी वहिर्वाटीते पुष्प-चयन करितेछेन ।

(श्रीवास पण्डितेर प्रवेश)

श्रीवास—

गृहिणी ! शुक्लाम्बर
ब्रह्मचारी गृहे,
एसेछेन नवद्वीपचन्द्र ।
आजइ तिनि,
जननी ओ जन्मभूमि करि दरशन,
छाड़िबेन नवद्वीप चिरतरे ।
कर जोड़े क'रे वहु अनुरोध,—
तिन दिन ध'रे,—
क'रे वहु आराधना;
वहुकष्टे क'रेछि सम्मत ताँहाके
दाड़ाइते गृहद्वारे,—
अर्द्ध दण्ड तरे ।
हेरिबेन पतिपादपद्म,
श्रीविष्णुप्रिया सती ।
एइ भार लह तुमि;—
करि परामर्श शचीमार सने—
कार्य्य जाते हय सुसम्पन्न,
कर तुमि सुव्यवस्था तार ।
जाइ आमि प्रभुर निकटे
सङ्गे करि ताँरे आनिब हेथाय ।

ईशान—

पण्डित ठाकुर !

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—ईशान गृहकार्यमें व्यस्त हैं, मालिनीदेवी बाहरी घरमें पुष्प-चयन कर रही हैं ।

(श्रीवास पण्डितका प्रवेश)

श्रीवास—

मेरी गृहस्वामिनि ! शुक्लाम्बर
ब्रह्मचारीके घर
आये हुए हैं नवद्वीपचन्द्र ।
आज ही वे
दर्शन करके जननी-जन्मभूमिका,
छोड़ देंगे नदियाको चिरकालके लिये ।
कर जोड़े करके बहुत अनुरोध,—
तीन दिन लगातार
करके बहुत अनुनय-विनय;
बड़ी कठिनतासे किया है राजी उनको
खड़ा रहनेके लिये घरके दरवाजेपर,—
आधी घड़ीके लिये ।
दर्शन करेंगी पति-पाद-पद्मोंका,
श्रीविष्णुप्रिया सती ।
उठाओ यह भार तुम,
करके परामर्श शचीमातासे;—
सुसम्पन्न कार्य हो जिससे,
करो तुम सुव्यवस्था उसकी ।
जाता हूँ निकट मैं प्रभुके,
उन्हें यहाँ साथ ले आऊँगा ।

ईशान—

पण्डित ठाकुर !

ए बाटीर पालित कुक्कुर आमि;	इस घरका पालतू कुत्ता मैं,
आज्ञावह भृत्य आमि,	आज्ञाकारी दास मैं;
जे आज्ञा करेन गौराङ्ग-जननी मोरे	जो आज्ञा देती हैं गौराङ्ग-जननी मुझे,
ताहा मोर सर्व्वथा पालनीय।	पालनीय सर्वथा मेरे लिये वही।
चिरदिन ह'ते,	चिर दिनसे
दासत्व-कार्य्ये व्रती आमि	व्रत लिया मैंने है दासत्व करनेका
गौराङ्ग-गोष्ठीर।	गौराङ्ग-परिवारका।
काल, मातार आदेशे	माताकी आज्ञासे कल
ल'ये बधू ठाकुरानीके,	बहू गृहस्वामिनीको लेकर,
गेनु मोरा सबे गङ्गातीरे,––	गये हम सब गङ्गाके तटपर––
गौराङ्ग-दर्शन तरे।	गौराङ्ग-दर्शनार्थ।
पथे लोकेर संघट्ट	पथमें लोगोंके जमघटमें––
नर-नारी एकाकार,	नर-नारी एकाकार––
सुधुमात्र जेतेछे देखा,	एकमात्र देते दिखाई थे
नरमुण्ड अगणन।	नरमुण्ड अगणित।
महा बलवान जारा,	महा बलवान् जो
ताहाराओ ह'ये पश्चात्पद	वे सब भी उलटे पाँव
फिरितेछे गृहेते,–ह'ये भग्न-मनोरथ।	घरको थे लौट रहे होकर भग्न-मनोरथ।
गौराङ्ग-जननी आमार,	गौराङ्ग-जननी मेरी
वृद्धा,–जीर्ण शीर्ण कलेवर;––	वृद्धा, जीर्ण-शीर्ण कलेवर,––
ल'ये यष्टि हाते,	लिये लाठी हाथमें,––
वधू मातार धरि हात,	पकड़कर हाथ बहूरानीका
सेइ अगणित जनसंघ माझे,	उस अगणित जनसमुदाय बीच
चलिलेन मोर सङ्गे पुत्र-दरशने।	चल पड़ीं मेरे साथ पुत्र-दर्शनके लिये।
थर-थर काँपे अङ्ग ताँर,	थर-थर काँपता था अङ्ग उनका,
नयेनेते बहे शतधारा,	नयनोंसे बहती थी सौ-सौ धाराएँ;
कुललक्ष्मी वधू ठाकुराणी, अवगुण्ठनवती	कुललक्ष्मी बहू गृहस्वामिनी घूँघट निकाले
वस्त्र दिया आच्छादित सर्व्व अङ्ग ताँर,–	वसनसे ढँके थे सारे अङ्ग उनके,––
लज्जा, भय, अपमाने हइये कातर,	लज्जा, भय, अपमान द्वारा हुई कातर,––
चलिलेन मार सङ्गे पतिदरशने।	चलीं सङ्ग माँके पति-दर्शनके लिये।

उठि गङ्गार पाहाड़' परे
निश्चल पाषाण-प्रतिमावत्
रहिलेन दाँड़ाइये दुइजने ।
किछु नाहि जाय देखा,—
दूरे गङ्गापारे,
केवल लोकेर संघट्ट,
आर नरमुण्ड अगणन ।
शुनि शुधु कोलाहल-
ध्वनि अविरत,
मध्ये-मध्ये उठितेछे हरिध्वनि
गगन भेदिया;
दूर ह'ते गेल देखा,
प्रभुर मोर मुण्डित मस्तक,——
करि ऊर्ध्वे आजानुलम्बित दुइ बाहु,——
"बोल, हरि बोल"
बलितेछेन यतिराज
उच्चकण्ठे घने घन ।
ताइ देखे मा जननी ओ वधू ठाकुराणी
पड़िलेन धरासने——हइये मूर्च्छित;
आर आमि,——नराधम भृत्य ताँदेर——
बाँधि बुक पाषाणेते
बुक दिये पड़ि——सेथा,
करिनु रक्षा दोंहाकारे
सेइ भीषण लोकसङ्घ ह'ते ।
पण्डित ठाकुर ! भक्त-चूड़ामणि तुमि,
एकि ए विचार तोमादेर ?
खोयाइये लाज-मान कुललक्ष्मीर,
एइ लोकारण्य राजपथ दिये,
जेते हबे कुलवधूर
पति-दर्शने ?

चढ़कर गङ्गाके ऊँचे कगारपर
निश्चल पाषाण-प्रतिमावत्
खड़ी रहीं दोनों ।
कुछ नहीं पड़ता था दिखायी,——
दूर गङ्गातटपर,
केवल लोगोंका जमघट,
और अगणित नरमुण्ड ।
पड़ती सुनायी थी केवल कोलाहल-
ध्वनि अविरत,
उठती थी बीच-बीचमें हरिध्वनि
गगन भेदकर;
दूरसे दिखायी दिया
स्वामीका मेरे मुण्डित मस्तक,——
ऊँचे उठा आजानुलम्बित भुजाएँ दोनों,——
"बोल, हरि बोल"
रहे थे बोल यतिराज
उच्च कण्ठसे अविराम ।
देख उसे जननी माँ और मालकिन बहू
गिर पड़ीं पृथ्वीपर——मूर्छिता हो;
और मैं,——नराधम दास उनका——
वक्षःस्थलपर बाँधकर पाषाण
लेटकर छातीके बल वहीं,
करता रहा रक्षा दोनोंकी
उस भीषण जन-समुदायसे ।
पण्डित ठाकुर ! भक्तचूड़ामणि तुम,
यह क्या कैसा विचार तुमलोगोंका ?
खोकर लाज-मान कुल-लक्ष्मीकी,
इस घनी भीड़में राजपथसे,
जाना पड़ेगा कुलवधूको
पति-दर्शननिमित्त ?

शोकातुरा जराजीर्ण वृद्धा जननीर
जेते हबे,
एइ लोक संघट्टेर मध्य दिये,
गङ्गातीरे पुत्र-दरशने ?
पण्डित ठाकुर ! सकलि सहिते पारि,
किंतु गौराङ्ग-जननीर ओ घरणीर,
ए निदारुण लाञ्छना ओ अपमान,--
बेजेछे प्राणे मोर बड़ ।
कहि नाइ, कोन कथा एत दिन,
नीरवे सहेछि आमि,
शत वृश्चिक दंशन ज्वाला ।
किंतु आर ना सहिते पारि;
राजराजेश्वरी मा विष्णुप्रिया आमार,
राजमाता गौराङ्ग-जननीर--
एइ बुक फाटा निदारुण अदृष्टेर फल ।
पण्डित ठाकुर ! तुमि सबे भक्तवृन्द
थाकिते हेथाय,
ए दृश्य--देखिते ह'ल मोर,
इहा बड़इ क्षोभेर विषय ।
हा गौराङ्ग ! गौरहरि !
मृत्यु केन लिख नाइ
भाले ए अभागार ?
शिशु ह'ते सेविलाम तव श्रीचरण
एइ सब देखिबार तरे ?
(क्रन्दन)

श्रीवास--

भाग्यवान तुमि,
चौद्द भुवन माझे,
भाग्य तव शिव-विरञ्चि-वाञ्छित ।
तुमि आज्ञावह दास,

शोकातुरा , जरा-जीर्ण, वृद्धा जननीको
जाना होगा,
इस जन-समूहके बीचसे,
गङ्गा-तीर पुत्र-दर्शनके लिये ?
पण्डित ठाकुर ! सब कुछ सह सकता हूँ,
किंतु गौराङ्ग-जननी और गृहिणीकी
लाञ्छना निदारुण यह और अपमान
प्राणोंमें मेरे सालती बहुत है ।
कहा नहीं कुछ भी इतने दिन,
चुपचाप सहता रहा मैं
शत वृश्चिक दंशन ज्वाला समान ।
किंतु अब नहीं सहा जाता है
राजराजेश्वरी माँ मेरी विष्णुप्रियाका,
राजमाता गौराङ्ग-जननीका
यह हृदय-विदारी निदारुण अदृष्टफल ।
पण्डित ठाकुर ! तुम सब भक्तवृन्दके
रहते हुए यहाँ,
यह दृश्य--देखना पड़ा मुझे,
बड़े ही क्षोभका विषय है यह ।
हा गौराङ्ग ! गौर हरि !
मृत्यु क्यों न दिया लिख
भाग्यमें इस अभागेके ?
शिशुपनसे की है सेवा तव श्रीचरणोंकी
यही सब देखनेके लिये ?
(क्रन्दन)

श्रीवास--

भाग्यवान् तुम,
चौदहों भुवनमें,
भाग्य तुम्हारा शिव-विरञ्चि-वाञ्छित है।
तुम आज्ञाकारी दास,

पेलेछ आज्ञा
गौराङ्ग-जननी ओ घरणीर
धन्य तुमि,–धन्य तव दास्यभाव ।
पारे नाइ केह जाहा,
तुमि ताहा पारियाछ;
दियेछिलेन शचीमाता एइ आज्ञा मोरे,
लङ्घियाछि आमि ताहा
अम्लान वदने ।
ए शक्ति आमार नाइ,—
कृपाबले गौराङ्गेर तुमि शक्तिशाली,
ताइ तुमि करिते पेरेछ एइ काज ।
गुरुजनेर आज्ञा बलवान,—
ताहा विचारेर नाइ प्रयोजन ।
एखन बलि शुन,—
आसिबेन प्रभु आज गृहद्वारे
जननी ओ जन्मभूमि दरशने ।
जाहाते वधू ठाकुराणीर तव
पतिपादपद्म स्वच्छन्दे हय दरशन;
ताहार सम्पूर्ण भार तोमार उपर ।
जाओ ईशान ! मार सने करि परामर्श—
बुझिया,—समय ओ सुयोग—
कर एइ कार्य्य समाधान ।

(प्रस्थान)

(बाड़ीर सन्मुखे राजपथेर उपर वहुलोकेर संघट्ट एवं कोलाहल)

(शचीमाता, मालिनीदेवी, सर्व्वजया, श्रीविष्णुप्रिया, काञ्चना, अमिता प्रभृति सकले एकत्रे आङ्गिनाय दाँड़ाइया व्यस्तभावे पथ-निरीक्षण)

पाली है आज्ञा तुमने
गौराङ्ग-जननी और गृहिणीकी;
धन्य तुम,—धन्य तुम्हारा दास्यभाव ।
कोई नहीं कर सका जिसे,
उसको तुमने कर दिखाया ।
दी थी शचीमाताने यही आज्ञा मुझको,
उल्लङ्घन किया है मैंने उसका
अम्लान मुखसे ।
ऐसी शक्ति मुझमें नहीं,—
गौराङ्गके कृपाबलसे तुम हो शक्तिशाली,
इसीसे तुम कर पाये हो यह काम ।
गुरुजनोंकी आज्ञा बलवान,—
उसमें आवश्यकता नहीं सोच-विचारकी ।
इस समय कहता हूँ, सुनो—
आयेंगे प्रभु आज घरके द्वारपर,
जननी और जन्मभूमिका करने दर्शन ।
जिससे तुम्हारी बहू गृहस्वामिनीको
पति-पाद-पद्मोंका स्वच्छन्द दर्शन हो,
इसका सम्पूर्ण भार ऊपर तुम्हारे है ।
जाओ ईशान ! माँसे कर परामर्श,—
विचारकर,—समय और सुयोग,—
करो यह कार्य-सम्पादन ।

(प्रस्थान)

(घरके सामने राजमार्गके ऊपर अपार जन-समूह एवं कोलाहल)

(शचीमाता, मालिनीदेवी, सर्वजया, श्रीविष्णुप्रिया, काञ्चना, अमिता आदि सबका एकत्र आँगनमें खड़ी होकर उत्सुकता-पूर्वक पथकी ओर देखना)

शचीमाता—	**शचीमाता**—
एकि ? बाड़ीर सन्मुखे देखि,	यह क्या ? भवनके सम्मुख देखती हूँ,
लोके लोकारण्य ।	लोगोंकी अपार भीड़ ।
श्रीवासादि भक्तगण एके-एके	श्रीवासादि भक्तगण एक-एक करके,
सबे समागत ।	सभी हैं आये हुए ।
आसिछे सर्व्व नदीयार लोक एइ पथे,	आ रहे हैं सारे नदियाके लोग इसी पथपर,
हरिध्वनि उठेछे गगने	हरिध्वनि गगनमें है उठ रही;
दाँड़ायेछे केन सबे	खड़े हैं सबलोग किसलिये,
धीरभावे विरस वदने,	धैर्य धरे म्लानमुख,
दुयारेते मोर ।	द्वारपर मेरे ।
सोनार निमाइचाँद,	सोनेका निमाईचाँद,
आसिबे कि देखा दिते मोरे ?	आयेगा दर्शन देने मुझे क्या ?
मालिनी दिदि !	मालिनी दीदी !
हेन भाग्य हबे कि आमार ?	ऐसा भाग्य होगा क्या मेरा ?
मालिनी—(स्वगत)	**मालिनी**—(स्वगत)
पण्डित ठाकुर बले गेछेन	कह गये हैं पण्डित ठाकुर
मोरे बारबार—	बार-बार मुझसे—
ल'ये श्रीविष्णुप्रियाके,	लेकर श्रीविष्णुप्रियाको,
प्रस्तुत थाकिते सावधाने,	प्रस्तुत रहनेको होकर सावधान;
आहा पतिर संन्यासवेश,	पतिका संन्यासवेश आह !
आजि तारे हइबे देखिते ;—	आज उसे होगा विलोकना ।
नदीयावासीर प्राण,—	नदियावासियोंके प्राण,
नदीयार राजराजेश्वर,—	नदियाके राजराजेश्वर,
विष्णुप्रियार प्राण धन, नदीया-नागर,	विष्णुप्रियाके प्राणधन, नदियानागर,
आजि भिखारीर वेशे,	भिखारीके वेशमें आज,
दण्ड-कमण्डलु करे,	हाथोंमें दण्ड-कमण्डलु लिये,
मुण्डित मस्तके,	मुण्डित-मस्तक,
रक्ताम्बर-परिधान संन्यासीर वेशे,	गैरिक वसन पहने संन्यासी-वेशमें
दाँड़ाये आपन दुयारे	खड़े होकर द्वारपर अपने
दिये जाबे शेष देखा ।	अन्तिम दर्शन दे जायँगे ।

दुखिनी विष्णुप्रियार	दुखिया विष्णुप्रियाका
गेछे सेइ एक दिन,--	एक वह दिन गया,
आर एकदिन आज आसियाछे ।--	अब एक दिन आज आया है ।
धैर्य्यवती नारी-शिरोमणि,--	धैर्यवती नारीशिरोमणि
सहेछे अकातरे पञ्चवर्षकालव्यापी	अकातर सह रही है पञ्चवर्षकालव्यापी
विरहेर भीषण दहन ।	भीषण वियोग-ज्वाला ।
आज प्राणवल्लभ ताँर,	आज प्राणवल्लभ उनके,
साधनार धन ताँर,--	उनकी साधनाके धन,
जीवन-सम्बल ताँर,--नवद्वीपचन्द्र,--	जीवन-सम्बल उनके,–नवद्वीप-चन्द्रमा,–
एकबार दिये देखा चले जावे,--	एकबार दर्शन दे, जायँगे चले,--
फिरिबे ना आर नवद्वीपे;--	लौटेंगे फिर नहीं नवद्वीप,--
ए दुःख ताँर मरिले ना जावे ।	मिटेगा न मरनेसे भी उसका यह दुःख ।
विधिर निर्ब्बन्ध,--	विधिका विधान,--
एइ प्राणघाती निदारुण दुःख-ताप--	यह प्राणघाती निदारुण दुःख-ज्वाला
ताँर सहिते हइबे चिरकाल ।	सहनी पड़ेगी उन्हें चिरकाल ।
दियेछेन शक्ति ताँरे,	शक्ति उनको दी है,
शक्तिमान स्वयं भगवान--	स्वयं शक्तिमान् भगवानने
दुःख-ज्वाला-ताप सहिबार,	दुःख-ज्वाला-ताप सहनेके लिये;
भगवत शक्ति इहा, इथे नाहिक संदेह ।	भागवती शक्ति यह, इसमें संदेह नहीं ।
श्रीविष्णुप्रिया हन,	श्रीविष्णुप्रिया हैं,
श्रीगौराङ्गेर पूर्ण शक्ति,	श्रीगौराङ्गकी पूर्ण शक्ति;
शक्ति-शक्तिमाने--	शक्ति-शक्तिमान्में--
दुःख सहिबार शक्ति	दुःख सहनेकी शक्ति
तुल्यभावे आछे विद्यमान ।	विद्यमान है तुल्य भावसे ।
श्रीविष्णुप्रिया--	**श्रीविष्णुप्रिया**—
(शचीमातार अञ्चल धरिया काँदिते-काँदिते)	(शचीमाताका आँचल पकड़कर रोते-रोते)
मागो ! आसिछेन तिनि,	माँ ! आ रहे हैं वे,
देखिते तोमाय ।	दर्शनके लिये तुम्हारे ।
एक अनुरोध तव पदे मोर;	मेरा अनुरोध एक तव चरणोंमें;

ब'ल मागो ! ताँके आसिते,
ए गृहे तिलार्द्धेक तरे;
प्राण भरि राङ्गा पादुखानि ताँर,
देखिब आबार,
एइ मोर जीवनेर साध ।
एइ लोकेर संघट्टे,––राजपथ माझे,
ए काज केमने साधिब आमि ?
बल मागो ! बल तुमि मोरे,
ताँर हेट हबे माथा,––
लज्जा पाइबेन तिनि,––
नारिब हेरिते से दृश्य आमि ।
गृहे एसे दाँड़ाइले क्षणकाल,
यदि ताँर हय धर्म्म नष्ट,––
बलेन यदि तिनि ए कथा तोमाके,
बलिओ ना आर किछु ताँरे ।
जाब आमि राजपथे भिखारिणी-वेशे,
ताँहारि आदेशे,
हेरिब रातुल चरण ताँर,
पथे दाँड़ाइये;––
तिनि यदि चान् इहा ।
आमार कर्त्तव्य ताँर आदेश पालन ।
तिनि मोर लज्जा-भय,
मान-अपमान;
ताँर तरे अकर्त्तव्य
कर्त्तव्य हय मोर ।

(श्रीवास पण्डितेर प्रवेश)

श्रीवास––

मागो ! ओइ देख लक्षकोटि लोक सङ्गे
हरिध्वनि करिते-करिते,––
आसितेछेन पुत्र तव;

कहना माँ ! आनेको उन्हें,––
इस घरमें बस आधे पलके लिये
प्राण भरकर उनके उभय अरुण चरण
देखूँगी फिर,––
यही साध जीवनकी मेरे ।
लोगोंके इस समुदायमें,––बीच राजपथमें
कैसे बनाऊँगी काम यह मैं ?
कहो माँ ! मुझको बताओ तुम ।
उनका सिर नीचा होगा,––
लज्जित होंगे वे,––
देख नहीं सकूँगी दृश्य वह मैं ।
घर आकर होनेसे क्षणभरके लिये खड़े,
यदि हो उनका धर्म नष्ट,––
कहें यदि ऐसी बात वे तुमको,
कहियेगा और कुछ न उनको ।
जाऊँगी मैं राजपथपर भिखारिणीके वेशमें,
उनके ही आदेशसे;
देखूँगी अरुण चरण उनके,
पथमें खड़ी हो,––
यही यदि वे चाहें ।
मेरा कर्त्तव्य उनका आदेश पालन ।
वे मेरे लज्जा-भय,
मान-अपमान;
उनके लिये, अकर्त्तव्य भी
होगा कर्त्तव्य मेरा ।

(श्रीवास पण्डितका प्रवेश)

श्रीवास––

माँ ! वह देखो लक्षकोटि लोगोंके साथ
हरिध्वनि करते-करते,
आ रहे हैं पुत्र तव;

दुयारे तोमार दाँड़ाबेन तिनि	द्वारपर तुम्हारे खड़े होंगे वे
क्षणकाल ।	क्षण भरको ।
मागो ! इतिमध्ये सर्व्वकार्य्य	माँ ! इसी बीच सब कार्योंका
कर समाधान ।	करो निर्वाह ।
(बहिद्वारेर सन्मुखे राजपथे यतिराज श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर आविर्भाव)	(बाहरी द्वारके सम्मुख राजपथपर यतिराज श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुका प्रकट होना)
(शचीमातार प्रवेश)	(शचीमाताका प्रवेश)
शचीमाता—	**शचीमाता—**
बाप् विश्वम्भर ! सोनार निमाइचाँद !	लाल विश्वम्भर ! सोनेके निमाईचाँद !
हाराधन मोर ! अञ्चलेर निधि !	खोये धन मेरे ! अञ्चलकी निधि !
बापधन !	लालमणि !
गृहेर भीतरे एस एकबार;	घरके भीतर आओ एकबार;
देखे जाओ बाप,	देख जाओ लाल,
कि दशा हयेछे मोर ।	क्या दशा हुई है मेरी ।
(रुद्धकण्ठे क्रन्दन)	(रुद्ध कण्ठसे क्रन्दन)
श्रीकृष्णचैतन्य--	**श्रीकृष्णचैतन्य—**
जननि ! प्रणमि तव पदे,	जननि ! प्रणाम करता हूँ तव चरणोंमें,
कर आशीर्व्वाद--	दो आशीर्वाद,--
श्रीकृष्णचरणे जेन मोर रति-मति हय,--	श्रीकृष्णचरणोंमें जिससे हो रति-मति मेरी,
यतिधर्म्म जेन रक्षा हय मोर,--	जिससे हो रक्षा मेरे यतिधर्मकी;
मागो ! तव कृपाबले श्रीकृष्णधन,	माँ ! तुम्हारे कृपाबलसे श्रीकृष्ण प्यारे,
दिबेन दरशन मोरे ।	देंगे दर्शन मुझे ।
भक्ति मोर जाहा किछु,—	भक्ति मुझमें जो कुछ है,
तुमि तार मूल मन्त्र ।	मूलमन्त्र उसका तुम्हीं ।
विष्णुभक्तिस्वरूपिणी तुमि,	विष्णुभक्तिस्वरूपिणी तुम,
गङ्गा ओ तुलसी	गङ्गा और तुलसी
परश मागे तव,—	याचना करती हैं तुम्हारे स्पर्शकी ।
भाग्यवान आमि,	भाग्यवान मैं,
तोमा हेन मातृगर्भे लभिये जनम ।	तुम-जैसी माताके गर्भसे जन्म लेकर ।

मूढ़ पुत्र तव,—अबोध,—निर्व्वुद्धि,—
करेछि संन्यास नवीन वयसे,
ना विचारि,—भाल मन्द,—
एवे जाते धर्म्मरक्षा हय तार,
तुमि मागो ! कृपा करि कर उपदेश ।

शचीमाता—

(थर-थर काँपिते-काँपिते)

बाप् विश्वम्भर ! आमार जीवनसर्व्वस्व ।
एसेछिनु मने क'रे
कत कथा बलिब तोमारे ।
हेरे ऐ जगतपूज्य यतिरूप तव,
चेये ऐ ज्योतिर्म्मय
मुखपाने तोर,
सब भूले गेनु आमि ।
तुमि बाप ! जगतेर गुरु,—
जगन्मङ्गल कार्य्ये व्रती तुमि,—
धर्म्मराज-चक्रवर्त्ती तुमि,—
कलिहत जीव हइबे उद्धार
तोमा ह'ते ।
बाप् विश्वम्भर ! जाते हय
तव धर्म्मरक्षा
ताइ कर तुमि ।
दुखिनी जननी बले
एसेछ तुमि देखा दिते मोरे,
एइ मोर परम सौभाग्य ।

(क्रन्दन एवं भूमितले उपवेशन)

श्रीकृष्णचैतन्य—

(जन्मभूमिर प्रति चाहिया)

(स्वगत)

मूढ़ सुत तुम्हारा,—अबोध,—निर्बुद्धि,—
ले चुका है संन्यास नयी अवस्थामें,
बिना विचारे,—उचित-अनुचित,—
अब जिससे धर्म-रक्षा हो उसकी,
तुम्हीं माँ ! कृपापूर्वक करो उपदेश ।

शचीमाता—

(थर-थर काँपते-काँपते)

लाल विश्वम्भर ! मेरे जीवन-सर्वस्व !
आयी थी मनमें सोच—
कितनी बात कहूँगी तुमको ।
अवलोक जगत्पूज्य यतिरूप यह तुम्हारा,
देखकर इस ज्योतिर्मय
तुम्हारे मुखकी ओर,
सब भूल गयी मैं ।
तुम तात ! जगद्गुरु,—
जगन्मङ्गल-कार्य-व्रतधारी तुम,—
धर्मराज-चक्रवर्त्ती तुम,—
कलिहत जीवोंका होगा उद्धार
तुम्हारे द्वारा ।
वत्स विश्वम्भर ! जिससे हो
तुम्हारी धर्मरक्षा,
करो तुम वैसा ही ।
जननीको दुःखिनी जान
आये तुम मिलने मुझसे,—
यही मेरा परम सौभाग्य ।

(क्रन्दन और भूमिपर वैठना)

श्रीकृष्णचैतन्य—

(जन्मभमिकी ओर देखकर)

(स्वगत)

परिपूर्ण मायामय,	परिपूर्ण मायामय,
एइ जगत संसार,	यह जग-संसार,
त्यजि गृहवास, हयेछि संन्यासी,--	घरबार त्यागकर, हुआ हूँ संन्यासी,
घुचे गेछे मोर,--संसार बन्धन;	मुक्त हुआ मेरा,--संसार-बन्धन;
तबुओ अबोध मन मोर	तब भी अबोध मन मेरा
पूर्व्व स्मृतिगुलि भुलिते ना चाय;	पूर्वकी स्मृतियोंको भूलना नहीं चाहता;
पूर्व्वाश्रमे, एइ गृहवासे	पूर्वाश्रममें, इसी घर-द्वारमें
छिनु आमि नदियानागर,--	था मैं नदिया-नागर;--
प्रेममयी प्रिया सने,	प्रेममयी प्रियाके साथ
प्रेमानन्दे डुबे छिनु निशिदिन ।	प्रेमानन्दमें निमग्न रहता था निशिदिन ।
स्नेहमयी जननीर स्नेहेर बन्धने,	स्नेहमयी जननीके स्नेहपूर्ण बन्धनमें
छिनु बाँधा अहरहः ।	रहता था बद्ध सदा ।
धर्म्म नहे संन्यासीर गृहे आगमन	धर्म नहीं आना संन्यासीका घरमें--
एइ जन्य,--	इसीसे,--
करे उद्दीपना इथे पूर्व्व स्मृति जत,--	होती उद्दीप्त यहाँ पूर्वस्मृति सभी--
जागे मने पूर्व्व सुखानन्द;	जागता मनमें पूर्व सुखानन्द,--
ताते नष्ट हय परकाल,	नष्ट होता परलोक उससे,
हानि हय संन्यासीर धर्म्म ।	हत होता संन्यासी-धर्म ।
बहु चिन्ता करि,--श्रीवासेर अनुरोधे--	बड़ी चिन्ताके बाद,--अनुरोधसे श्रीवासके
एनु गृहद्वारे;	आया हूँ द्वारपर घरके;
देखि स्नेहमयी मा जननी,	देखता हूँ--स्नेहमयी माँ जननी,
पुत्रशोके हये व्याकुलित,	हुई विकल पुत्रशोकसे
पदतले धुलाय लुण्ठित ।	लोट रही है नीचे धूलमें ।
आर एक अवश्यम्भावी महाविपद	और एक अवश्यम्भावी महाविपद्
प्रतिक्षणे गणितेछि मने;	प्रतिक्षण रहा हूँ विचार मनमें--
संन्यासीर धर्म्मपथे विघ्न शत-शत,	संन्यासीके धर्मपथमें विघ्न शत-शत,
सर्व्वलोके छिद्र खोंजे संन्यासीर काजे;	संन्यासीके आचरणमें सभी खोजते छिद्र,
एखन देखितेछि मनेते विचारि,	इस समय देखता हूँ मनमें विचारकर
मोर पक्षे--गृहद्वारे आगमन,--	मेरे लिये--आना द्वारपर घरके,--
एइ कार्य्य हयेछे अनुचित ।	यह काम हुआ है अनुचित ।

(मालिनी, काञ्चना प्रभृति आपाद-मस्तक वसनावृता श्रीविष्णुप्रियाके लइया द्वारदेशे आगमन एवं श्रीविष्णुप्रियार पतिपदतले पतन ओ प्रणाम)

(मालिनी, काञ्चना आदिका आपाद-मस्तक वसनावृता श्रीविष्णुप्रियाको लेकर द्वारपर आना और श्रीविष्णु-प्रियाका पतिके पदतलमें गिरना एवं प्रणाम करना)

श्रीकृष्णचैतन्य--

श्रीकृष्णे मतिरस्तु ।

श्रीकृष्णचैतन्य--

श्रीकृष्णमें मति हो ।

श्रीविष्णुप्रिया--

(उठिया जानु पातिया कर जोड़े)

ओहे जगतेर नाथ ।
दयार सागर तुमि, करुणार अवतार ।
ए दासीर प्रति,
करेछ तुमि करुणा प्रचुर ।
दिये दरशन निज गुणे,
कृतार्थ करिले मोरे ।
भिखारिणी आमि,–काङ्गालिनी आमि,–
भिक्षा चाइ तव काछे
कृपा-निदर्शन किछु तव दाओ प्रभु,
ए अधिनीरे;
दग्ध जीवनेर एखनओ बहुदिन
आछे बाँकि,—
तव दत्त कृपा-निदर्शन करिया सम्बल--
भजिब तोमारे आमि,
तव गृहे बसि ।
चरणेर दासी मागे,--कृपा-भिक्षा;
कृपादाने वञ्चित क'र ना तारे,
कृपामय तुमि,--कृपानिधि तुमि ।

श्रीविष्णुप्रिया--

(उठकर घुटना टेके हाथ जोड़कर)

अहो स्वामी जगके !
दयाके सागर तुम, करुणाके अवतार !
इस किंकरीके प्रति,
की है तुमने करुणा प्रचुर ।
देकर दर्शन स्वगुणवश,
कृतार्थ किया मुझको ।
भिखारिणी मैं,--कंगालिनी मैं,--
भिक्षा चाहती हूँ तुमसे,
कृपा-निदर्शन कुछ अपना प्रभो दो,
इस दुःखिनीको;
दग्ध जीवनके अब भी अनेक दिन
शेष हैं,--
तव दत्त कृपा-निदर्शनका लेकर सहारा,
भजूँगी तुम्हें मैं,
घरमें तुम्हारे रह ।
चरण-दासी माँगती है,--कृपा-भिक्षा;
कृपा-दानसे न करो वञ्चिता उसे,
कृपामय तुम,--कृपानिधि तुम ।

श्रीकृष्णचैतन्य--

संन्यासी आमि,--
पथेर भिखारी,--

श्रीकृष्णचैतन्य--

संन्यासी मैं,--
पथका भिखारी,--

पादुका-दान

N. P. Crafts.

किछु नाहि आछे मोर तोमारे दिबार
भिखारीर भिक्षाझुलि
सम्बलमात्र मोर;
तबे पदे एक आछे जे जंजाल,––
काष्ट पादुकाद्वय––
लह तुमि, यदि इच्छा कर ।
कर तुमि गृहे बसि श्रीकृष्णभजन ।
दयामय कृष्ण, कृपा करिबेन तोमाय ।

(श्रीविष्णुप्रियाके पादुका प्रदान एवं ताहा ताँहार मस्तके धारण)

(शचीमातार प्रति)

जननि ! जाओ गृहे तुमि,
चित्त कर स्थिर ।
श्रीकृष्णभजने दाओ मन ।
ना हइओ मिछा मायाबद्ध,
ना भुलिओ श्रीकृष्ण-चरण ।
श्रीकृष्ण-चरण बिना,
त्रिजगते किछु नहे आपनार ।
जत किछु देखितेछ, सब माया ताँर ।
कर आशीर्वाद मागो !
जेन श्रीकृष्णचरणे मोर
रति-मति हय ।

("हरे कृष्ण हरे कृष्ण" वलिते-वलिते प्रस्थान)

सर्व्वलोक मुखे उच्च हरिध्वनि ।

(सकलेर क्रन्दन)

कुछ भी नहीं मेरे पास देनेको तुम्हें,
भिखारीकी भिक्षा-झोली
सम्पत्ति बस, मेरी;
तब भी पैरोंमें एक है जंजाल जो,––
काष्ठ-पादुका द्वय
ले लो तुम, यदि चाहो ।
करो तुम घरमें रह श्रीकृष्ण-भजन ।
दयामय कृष्ण कृपा करेंगे तुमपर ।

(श्रीविष्णुप्रियाको पादुका देना और उनका उन्हें मस्तकपर धारण करना)

(शचीमाताके प्रति)

जननि ! जाओ तुम घरमें,
चित्त करो स्थिर ।
श्रीकृष्ण-भजनमें लगाओ मन ।
मत होना मिथ्या मायामें बद्ध,
भूलना न श्रीकृष्णचरण ।
श्रीकृष्णचरण बिना,
त्रिभुवनमें कुछ नहीं अपना ।
जो कुछ भी देखती हो, सब माया उनकी ।
दो माँ ! आशीर्वाद,
जिससे श्रीकृष्णचरणोंमें मेरी
रति-मति हो ।

("हरे कृष्ण हरे कृष्ण" बोलते-बोलते प्रस्थान)

सब लोगोंके मुखसे उच्च हरिध्वनि ।

(सबके द्वारा क्रन्दन)

पञ्चम अङ्क ।

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन,—भजनगृहे
श्रीविष्णुप्रियादेवी आसीना, प्रभुदत्त
काष्ठपादुकाद्वय आसनेर सन्मुखे
विराजमान ।

(काञ्चना ओ अमितार प्रवेश)

काञ्चना--

सखि विष्णुप्रिये !
ब'से ब'से निशिदिन
गृहेकोणे एकाकिनी,
कि जे भाव तुमि,
किछुइ ना बुझि;
जीर्णशीर्ण ह'ये गेछ तुमि,
सोनार वरण तव ह'ये गेल काल;
एइ भावे अनाहारे अनिद्राय;
दिये एत क्लेश देहके तव,
कत दिन बाँचिबे तुमि सखि !
भजनयोग्य देह तव
दियेछेन श्रीकृष्ण तोमाय,--
नाश करिले सेइ देह एइ भावे
कि भजन हइबे तोमार ?
गुणमणि तव कृपा करि,
गियेछेन देखा दिये तोमा,
दियेछेन उपदेश श्रीकृष्ण भजिते,
एखन स्थिर करि मन,
करह पतिर आज्ञा पालन ।

दृश्य—श्रीगौराङ्ग - भवन,—भजनगृहमें
श्रीविष्णुप्रिया देवी बैठी हैं,—
प्रभुकी दी हुई काष्ठ-पादुकाद्वय
आसनके सम्मुख विराजमान है।

(काञ्चना और अमिताका प्रवेश)

काञ्चना--

सखि विष्णुप्रिये !
बैठे-बैठे निशिदिन
घरके कोनेमें अकेले,
सोचती हो भला, क्या तुम--
कुछ भी न समझ पाती मैं ।
हो गयी हो तुम जीर्ण-शीर्ण,
सोने-सा वर्ण तुम्हारा पड़ गया है काला,
इस प्रकार बिना खाये, बिना सोये;
देकर इतना क्लेश अपने शरीरको,
कितने दिन जीओगी तुम सखि !
भजनयोग्य देह तुम्हारी
दिया है इसे श्रीकृष्णने तुमको
नाश करनेसे उस देहका इस प्रकार
क्या भजन तुमसे बनेगा ?
कृपाकर गुणमणि तुम्हारे
गये हैं दर्शन दे तुमको,
दे गये हैं उपदेश श्रीकृष्ण-भजनका;
मनको स्थिरकर अब,
करो पति-आज्ञा-पालन ।

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि काञ्चने !
भजन-साधन आमि किछु नाहि बुझि,
श्रीकृष्णधन कि जे वस्तु,--
किछु नाहि जानि,
जानि सुधु गुणनिधि,
गुणमणि मोर बड़ दयामय;
नाम करि ताँर,
गाइ गुण निशिदिनताँर,
करि ध्यान रूपराशि ताँर,
हृदय भीतरे।
अनुभवि दया ताँर
प्रति कार्य्ये
मने बड़ पाइ सुख।
शुनि ताँर कथा, तोमादेर काछे,
निराश पराणे मोर
होय आशार संचार।
कृपानिधि तिनि,
कृपा क'रे दियेछेन मोरे,
ताँर चरणकमल-पृष्ठ
काष्ठपादुका दु'खानि,
इहा शुधुमात्र कृपा-निदर्शन ताँर।
एइ मोर साधनार धन, जीवन-सम्बल।
किंतु सखि, एकटि कथा ह'ले मने
मने बड़ पाइ दुःख,-
बुक फेटे जाय,--
कुक्षणे मागिनु भिक्षा आमि,
ताँर काछे,--ताँर कृपार निदर्शन
जंजाल बलिया तिनि,
त्यजिलेन मोर वाक्ये चरणपादुका।

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि काञ्चने !
भजन-साधन मैं कुछ नहीं जानती,
श्रीकृष्ण-धन क्या वस्तु है,--
कुछ नहीं जानती मैं।
जानती बस, गुणनिधिको,
गुणमणि मेरे बड़े दयामय;
लेती हूँ नाम उनका,
गाती हूँ निशिदिन गुण उनके,
धरती हूँ ध्यान रूपराशिका उनके
हृदयके भीतर।
अनुभव करती हूँ उनकी दयाका
प्रत्येक कार्यमें,
मनमें बहुत सुख पाती हूँ।
सुन बातें उनकी तुमलोगोंसे,
निराश मेरे प्राणोंमें,
होता है आशाका संचार।
कृपानिधि वे,
कृपापूर्वक सौंपी है मुझको,
अपना पदकमलपीठ
काठकी खड़ाऊँ दोनों,
केवल बस, यही कृपा-चिह्न उनका।
यही मेरी साधनाका धन, जीवन-सम्बल।
किंतु सखि ! एक बात उठनेपर मनमें,
बहुत दुःख पाती हूँ मनमें,
होता हृदय विदीर्ण--
किस अशुभ क्षणमें माँगी भिक्षा मैंने,
उनसे; उनका कृपा-निदर्शन,--
जंजाल समझकर उन्होंने
त्यागी चरणपादुका मेरी बातपर।

सखि ! शत-अपराधी आमि,	सखि, शतापराधिनी मैं,
तांर श्रीचरणतले;	उनके श्रीचरणतलमें;
इच्छा करि पुनः एक अपराध नव	इच्छापूर्वक फिर एक अपराध नूतन
करिनु अर्ज्जन ।	मैंने कमा लिया ।
हयेछेन गृहत्यागी तिनि,	हुए हैं गृह-त्यागी वे,
शुधु मोर तरे,——जानि आमि ताहा,——	बस, मेरे कारण,——जानती हूँ मैं यह;
देशे-देशे पर्व्वते गहने	देश-देशमें, गहन पर्वतोंमें,
कठिन प्रस्तर ओ कण्टकाकीर्ण	कठिन पथरीले तथा कण्टकाकीर्ण
जन-मानवेर अगम्य पथेते,	जन-मानवोंसे अगम्य पथपर,
गुणनिधि गुणमणि मोर,	गुणनिधि, गुणमणि मेरे,
एबे नग्नपदे करिबेन भ्रमण ।	अब नंगे पैरों करेंगे भ्रमण ।
आहा ! बड़ व्यथा बाजिबे तांर	आह ! बड़ी व्यथा पहुँचेगी उनके
राता उत्पल-कोमल चरणतले ।	लाल कमलसम कोमल पैरोंके तलवोंको ।
पाइबेन तिनि कत कष्ट !	पायेंगे वे कितना कष्ट !
स्वार्थपर आमि——	स्वार्थपरायणा कितनी मैं,
मायाहीना पिशाचिनी आमि,	अकरुण पिशाचिनी मैं,
सिद्धि तरे निज स्वार्थ	स्वार्थ साधनेको निज
याचिलाम भिक्षा गृहत्यागी	माँगी भिक्षा गृहत्यागी
संन्यासीर काछे;	संन्यासीसे ।
सर्व्वत्यागी दयामय परम पुरुष तिनि——	सर्वत्यागी दयामय परम पुरुष वे——
अकातरे दिलेन मोरे	अनायास दे दी मुझे
तांर चरण पादुका दुखानि ।	दोनों चरण-पादुका निज ।
सखि ! पाषाण दिये बुक बाँधा मोर;	सखि, पाषाण-निर्मित छाती मेरी
पाषाण ह'ते कठिन हृदय मोर;	पाषाणसे भी कठिन हृदय मेरा;
ताइ मोर हेन मति ह'ल,	इसीलिये मेरी ऐसी मति हुई,
सखि काञ्चने !	सखि काञ्चने !
केन मोर हेन मति ह'ल ?	किसलिये मति मेरी ऐसी हुई ?
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)
काञ्चना—	**काञ्चना——**
सखि ! संवर रोदन,	सखि ! शमन करो रुदन,

पतिप्राणा देवीमूर्त्ति तुमि;	पतिप्राणा देवीमूर्त्ति तुम;
पति तव दयामय भगवान,	पति तुम्हारे दयामय भगवान्,
षड़ैश्वर्य्य मध्ये वैराग्य ऐश्वर्य्य ताँर,——	उनके षडैश्वर्यमेंसे वैराग्य ऐश्वर्य,——
शास्त्रे सर्व्वश्रेष्ठ बले।	सर्वश्रेष्ठ बताया जाता शास्त्रोंद्वारा।
देखाइते सेइ सर्व्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य्येर सीमा——	उस सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्यकी सीमा दिखानेको—
तोमा सने सखि !	तुम्हारे साथ, सखि !
ताँर एइ पादुका-दान-लीला-अभिनय।	उनका यह पादुका-दान-लीला-अभिनय।
तुमिओ त सखि ! ह'ये सर्व्वत्यागी,	तुम भी तो सखि ! होकर सर्वत्यागी
धरासन करेछ सम्बल।	पृथ्वीका लिया है अवलम्बन।
अनाहारे,——अनशने,——रात्रिदिन,	अनाहार,——अनाशी,——प्रतिदिन,
करिछ निशिदिन हाहाकार !	करती हो निशिदिन हाहाकार।
महा वैराग्यवान संन्यासी	महावैराग्यवान् संन्यासी
पतिधन तव,	पति तुम्हारे,
तुमि ओ सखि, महा विरागिनी	तुम भी सखि, महाविरागिणी,
संन्यासिनी,	संन्यासिनी;
एकइभावे,——दुइजने,	समान भावसे दोनों जने,
देखाइतेछ, वैराग्य ऐश्वर्य्य,	दिखा रहे हो वैराग्य ऐश्वर्य,
जीवेर शिक्षार तरे।	जीवोंको शिक्षा देनेके लिये।
कलिजीवेर कठिन हृदय,	कलियुगके जीवोंका कठिन हृदय,
करिवारे द्रव,	करनेको द्रवित,
मिलि दुइजने, करि परामर्श,	मिलकर दोनों जने, परामर्श करके,
करिछ एइ करुण लीलाभिनय !	कर रहे हो करुण लीलाका यह अभिनय।
जाहा कह तुमि,——सकलि सत्य,	कहती हो जो तुम, सभी सत्य,
करेन जाहा तिनि, सकलि कर्त्तव्य,	करें जो कुछ, वे सभी कर्त्तव्य;
सत्य ओ कर्त्तव्य पथे,	सत्य एवं कर्त्तव्य-पथकी
जीव शिक्षा तरे,——	जीवोंको शिक्षा हित,——
कठोर भावे,——	कठोरता अपनाकर,——
चलेछ बुक बाँधि दुइ जने,	चल रहे हो कमर कसकर तुमदोनों,
अदम्य उत्साहे।	अदम्य उत्साहसे।
मोरा हीनबुद्धि नारी,	हीनबुद्धि नारी हम,

मर्म्म कि बुझिब निगूढ़ रहस्यपूर्ण
एइ करुण लीलार ?

समझेंगी मर्म क्या निगूढ़, रहस्यपूर्ण
इस करुण लीलाका ?

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने !
कथातेइ बाड़े कथा,
आत्मकथा ल'ये,—क'रे वादानुवाद,
काने शुने आत्मप्रशंसा,
आत्मग्लानि भिन्न आर,
किछु नाहि लाभ ।
सखि ! आन् कथा छाड़ि
कह गौर गुणमणिर कथा मोर;
गौर-गुण गाथा शुनि आमि,
पराण जुड़ाइ ।

श्रीविष्णुप्रिया--

सखि काञ्चने !
बातसे ही बढ़ती है बात,
स्वार्थचर्चा लेकर ही होता है वादानुवाद,
कानोंसे सुननेसे अपनी प्रशंसा,
आत्मग्लानि छोड़ और,
कुछ नहीं लाभ ।
सखि ! अन्य चर्चा छोड़,
कहो मेरे गौर गुणमणिकी बात;
गौर-गुण-गाथाको सुन मैं,
प्राणोंको करूँ शीतल ।

गीत

सजनि ! आर कि
शुनव उपदेश ?
सब उपदेश सार,
गौरकथार हार,
नव नव ताहाते
रचना कर वेश ।
कर्णेर भूषण कर,
गौरकथा सुमधुर,
श्रुतिमूले कर सखि,—
नाम उपदेश ।
नयने अञ्जन कर,
गोरारूप सुधाकर,
गोरा अनुराग तैले,—
बान्धि देह केश,
लिख भाले गोरा नाम,
अलका तिलका दाम,
नाना रङ्गे अलंकार,—
रचह विशेष ।

सजनी री ! अब और
सुनूँगी क्या उपदेश ?
सब उपदेशोंका है सार,
गौर कथाका सुन्दर हार,
रचो उसीके द्वारा
अभिनव नूतन वेश ॥
कानोंका भूषण अभिराम,
गौर-कथा सुमधुरता-धाम,
श्रवण-मूलमें आलि !
नामका कर उपदेश ।
नयनोंमें दो अंजन आँज,
गौररूप-शीतल उडुराज,
गौर स्नेह सुरभितको
लगा सँवारो केश ॥
सिरपर लिखो गौरहरि नाम,
अलकावलि-पत्रावलि दाम,
नाना रङ्गोंसे
विरचो शृङ्गार विशेष ।

गौर - चरण - धूलि,
राशि-राशि तुलि तुलि,
माखाइये दाओ सखि !
राखि अवशेष।
ओगो सखि माथा खाओ,
अञ्चले बाँधिये दाओ,
बुके धरि पदरज,—
अनुरोध शेष।
गौरकथा शुनाइये,
जुड़ाओ तापित हिये,
ना फिरव ढुंडि ढुंडि,—
देश - विदेश।
तुमि वल, आमि शुनि,
गौरकथा सुधा - वाणी,
ना कर संदेह चिते,
पाव हृदयेश।
सखिर चरण धरि,
विरहे कान्दये हरि,
गौरकथा, गौरगाथा,
कह गो विशेष ॥

गौर-पदाम्बुज पावन धूरि,
उठा-उठाकर लेकर भूरि,
तनमें सजनि ! रमाओ,
रख लो कुछ अवशेष ॥
अरी सखी ! सिरकी सौगन्ध,
अञ्चलमें रख दो देवन्ध,
छातीपर धर पद-रज
यही निवेदन शेष।
गौर-कथा कानोंमें ढाल,
शीतल कर उरदाह कराल,
भटकूँगी मैं नहीं खोजती
देश-विदेश ॥
सुनूँ अहर्निश, सदा कहो,
गौर-कथामृत मधुर अहो,
मनमें संशय न कर,
मिलेंगे ही हृदयेश।
सखी-चरण गह बारंवार,
'हरि' वियोग करती चीत्कार,
गौरचन्द्र-गुण, गौर-कथा
गाओ सविशेष ॥

अमिता—

सखि ! एइ त्रिजगत माझे,
पतिप्राणा रमणीर शिरोमणि तुमि;
शास्त्रे बले—पतिभक्ति-बले,
हय लाभ सर्व्वसिद्धि,
सफल हय सर्व्व मनस्काम।
एइ प्रेमेर जगते
प्रेम-पारावार तुमि सखि !
विस्तारिते जीव-हृदे,
प्रेमभाव—महान,—उज्ज्वल—
प्रचारिते प्रेमभक्ति,
ए मर जगते
ल'ये वक्षे प्रेमसिन्धु,—
विरहेर करि छल,

अमिता—

सखि ! इस त्रिभुवनमें
पतिव्रता-नारियोंकी शिरोमणि तुम;
शास्त्र कहते हैं,—पतिभक्ति-बलसे
सर्वसिद्धि होती है;
फलीभूत होती हैं सभी मनोकामनाएँ।
इस प्रेम-जगमें
प्रेम-पारावार सखि ! तुम
विस्तार करनेको जीवोंके हृदयमें,
महान्,—उज्ज्वल—प्रेमभाव,
प्रचारित करनेको प्रेमभक्ति,
इस मर्त्यलोकमें
छिपाकर छातीमें प्रेमसिन्धु,
विरहके मिससे

उठाइछ जीवहृदे प्रेमेर	जीवोंके हृदयमें प्रेमकी उठा रहीं
तरङ्ग अभिराम ।	तरङ्ग अविराम ।
उठेछे प्रेमेर तुफान नदीयाय,	उठ रहा है प्रेमका तूफान नदियामें,
भेसे जावे जगत संसार	मग्न हो जायगा विश्व-जगत्
एइ प्रेमेर तुफाने;	प्रेमके इस तूफानमें;
विश्वप्रेमेर उठिबे निशान ।	ध्वजा फहरायेगी विश्वप्रेमकी ।
जयडङ्का तव घोषिबे जगते ।	जयडंका बजेगा जगत्में तुम्हारा ।
प्रेममय नवद्वीपचन्द्र	प्रेममय नवद्वीपचन्द्र
एवं प्रेममयी श्रीविष्णुप्रियार प्रेमभावे	एवं प्रेममयी श्रीविष्णुप्रियाके प्रेमभावसे
उज्ज्वल हइबे विश्व,—शीतल हइबे पृथ्वी,	उज्ज्वल जगत् होगा,—शीतल धरा होगी,
पवित्र हइबे धरातल ।	होगा पवित्र पृथ्वीतल ।
प्रेमेर भाण्डारी तुमि सखि,	कोषाध्यक्षा प्रेमकी तुम, सखि !
प्रेमेर भिखारी मोरा सबे,	प्रेमकी भिखारिणी हम सब,
तव प्रेम-महासमुद्रेर	तव प्रेम-महासिन्धुकी
एक बिन्दु यदि मोरा पाइ,	एक बूंद पावें यदि हम सब,
हबे जीवन सार्थक,——	जीवन हो जायगा सार्थक,——
धन्य हब मोरा ।	धन्य होंगी हम सब ।
प्रेममयी सखि विष्णुप्रिये !	प्रेममयी सखि ! विष्णुप्रिये !
कृपा करि अकपटे कर प्रेमदान,	कृपा करके अकपट भावसे करो प्रेमदान,
तव अनुगत सखिगणे ।	अपनी अनुगत सखीवृन्दको ।
श्रीविष्णुप्रिया——	**श्रीविष्णुप्रिया**—
सखि अमिते ! सखि काञ्चने !	सखि अमिते ! सखि काञ्चने !
नदीयावासिनी तुमि सबे	नदियावासिनी तुम सब
नागरीर गण, महा भाग्यवती ।	नागरीगण, महा भाग्यवती हो ।
नदीयावासीर प्राण नवद्वीपचन्द्र,	नदियावासियोंके प्राण नवद्वीपचन्द्र,
आमि ताँर चरणेर दासी ।	मैं उनके चरणोंकी दासी ।
प्रेममय, प्रेमिक, परमपुरुष तिनि,	प्रेममय, प्रेमिक, परमपुरुष वे,
ताँर सङ्गे तिलमात्र सङ्ग हय जार,	उनके साथ तिलमात्र सङ्ग होता जिसका,
से हय रसिक भक्त ताँर	बनता वह रसिक भक्त उनका ।
प्रेम भक्ति देवी,	प्रेम-भक्ति-देवी

ताँरे करेन आश्रय ।	रहती हैं आश्रयमें उनके ।
तुमि सबे नदीया नागरीर गण,	तुम सब नदियाकी नागरीगणने,
प्रेम डोरे, प्रीतिर बन्धने,—	प्रेमकी डोरीसे, प्रीतिके बन्धनसे,—
बेंधेछ प्रेममय परम पुरुषे ।	बाँध रखा है प्रेममय परमपुरुषको ।
तोमादेरइ प्रणय-सम्बन्धे,	तुम्हीं सबके प्रणय-सम्बन्धसे,
प्रेमरसे,	प्रेमरससे,
वशीभूत प्रेमेर ठाकुर नवद्वीपचन्द्र ।	वशीभूत प्रेममय ठाकुर नवद्वीपचन्द्र ।
ह'ये तोमादेर अनुगा,	होकर तुमलोगोंकी अनुगता,
क'रे चरणाश्रय तोमादेर,	ले चरणाश्रय तुम सबका,
जे भजिबे प्रेमवशे प्रेमेर ठाकुरे,	भजेगा जो प्रेमके वशीभूत प्रेमठाकुरको,
भाग्य तार सुप्रसन्न अतिशय;	अतिशय सुन्दर भाग्य उसका;
गौर-कृपालाभ तार पक्षे	उसके लिये गौर-कृपा-लाभ
अत्यन्त सुलभ ।	अत्यन्त सुलभ ।
प्रेमपात्री तुमि सबे,	प्रेमपात्री तुम सब,
जगज्जीवे प्रेमधन पाबे,	जगज्जीव प्रेमधन पायेंगे
तोमादेर हात दिये ।	हाथसे तुम सबके ।
प्रेमधाम एइ नवद्वीपे	प्रेमधाम इस नवद्वीपमें
प्रेममय श्रीगौराङ्गेर प्रेमपूजा	प्रेममय श्रीगौराङ्गकी प्रेमपूजा
हबे घरे-घरे ।	घर-घर होगी ।
तुमि सबे नदीया-नागरी,—	तुम सब नदिया-नागरी,—
प्रेमेर गागरी,—	प्रेमकी गागरी,—
पूर्व्वलीलाय व्रजबालार गण—तुमि सबे,	पूर्वलीलाकी व्रजबालागण तुम सब,
कर प्रेमदान अकातरे,	करो प्रेमदान संकोच बिना,
नदीयार घरे-घरे गिये;	नदियाके घर-घरमें जाकर;
कर गौरनाम,—कह गौरकथा,—	बोलो गौरनाम, कहो गौरकथा,
धरि जने-जने ।	पकड़कर एक-एक व्यक्तिको ।
प्रेम-वितरण,—कार्य्य तोमादेर	प्रेम-वितरण, कार्य तुम सबका—
प्रभुर आदेश इहा भक्तगण प्रति,—	प्रभुका आदेश यही भक्तोंके प्रति,—
तुमि सबे भक्त-शिरोमणि,	तुम सब भक्त-शिरोमणि,
नदीयार नरनारी,	नदियाके नर-नारी,

बड़ प्रिय ताँर;
देख सखि ! वञ्चित ना हय जेन केह
गौरप्रेम धने ।

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये !
तोमार गुणमणिर मत,
अनुगत जनेर,—आश्रितेर—
बाड़ाइते सन्मान,
राखिते मर्य्यादा,
गाइते तादेर गुणगान,
शतमुखी हओ तुमि ।
मोरा सखि ! तोमा भिन्न
किछु नाहि जानि,–
किछु नाहि बुझि,—
तोमा ह'ते चिनेछि
नदीयार चाँदे;
तव कृपाबले पेयेछि
दरशन ताँर ।
प्रेमधन—गोलोकेर
सम्पत्ति तोमादेर—
शुनेछिनु काने मात्र,—
एबे बुझिलाम कि जे वस्तु हय; —
प्रेमधन—
स्वयं आचरिये दिले शिक्षा तुमि—
कारे बले प्रेमभक्ति,—
कि मर्म्म इहार ?
शिखिलाम तोमा ह'ते मोरा,—
अनुराग-भजन-पद्धति,
दीक्षागुरु—शिक्षागुरु,—जाहा किछु

अति प्रिय उनके;
देखो, सखि ! वञ्चित न हो जिससे कोई
गौर-प्रेम-धनसे ।

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये !
अपने गुणमणिके समान ही
अनुगत जनका —आश्रितजनका,
वर्द्धन करनेको सम्मान,
रखनेको मर्य्यादा,
गानेको उनका गुणगान,
शतमुखी बनो तुम ।
सखि ! हम सब सिवा तुम्हारे
कुछ नहीं जानती हैं,—
कुछ नहीं समझती हैं,—
तुम्हारे द्वारा ही पहचान पायी हैं
नदियाके चाँदको;
तुम्हारे कृपा-बलसे
दर्शन किया है प्राप्त उनका ।
प्रेमधन—गोलोककी
सम्पत्ति तुम्हारे—
केवल सुना था कानोंसे,—
अब हमने समझा वस्तु क्या है वह—
प्रेमधन—
स्वयं आचरण कर शिक्षा दी तुमने—
किसे कहते प्रेम-भक्ति ?—
क्या इसका मर्म ?
सीखी हमलोगोंने तुमसे,—
अनुराग-भजन पद्धति,
दीक्षागुरु—शिक्षागुरु—जो कुछ भी

सकलि मोदेर तुमि सखि ।	सभी हमलोगोंकी सखि ! तुम ।
बृहत् वस्तु,—श्रीगौराङ्ग	बृहद्वस्तु श्रीगौराङ्ग,
तत्व ताँर निगूढ़ अतिशय—	तत्व उनका अतिशय निगूढ़—
कृपा करि, तुमि यदि	कृपा करके तुम यदि
दाओ शिक्षा गौरतत्व-सुधारस,	गौर-तत्त्व-सुधा-रसकी शिक्षा दो,
तबे ताहा हबे परिस्फुट,	तभी होगा वह परिस्फुट,
हृदये मोदेर ।	हृदयमें हमारे ।
कृपामयी तुमि, कृपा करि,	कृपामयी तुमने, कृपा करके
करेछ सङ्गिनी;	सङ्गिनी बनाया है;
एबे दया करि, कह तत्व-उपदेश ।	अब दया करके करो तत्त्वोपदेश ।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया**—
सखि ! गौरतत्त्व,	सखि ! गौरतत्त्व
आमि नाहि जानि,	मैं नहीं जानती,
ए बड़ निगूढ़ वस्तु	यह बड़ी निगूढ़ वस्तु,
गभीर रहस्यपूर्ण, परतत्व इहा;	गम्भीर रहस्यपूर्ण, परतत्त्व यह;
शुधु मात्र,—	बस, केवल,—
महाजन गौरभक्तगणेर वेद्य	महाजन गौराङ्गभक्तोंका बोधगम्य
एइ निगूढ़ विषय ।	यह अति गूढ़ विषय ।
ए सम्पत्ति,—एइ गुप्त वित्त,—	यह सम्पत्ति,—यह गुप्त धन,—
निजस्वधन ताहादेर;	अपना निज धन उनलोगोंका;
इथे अन्य कारओ नाहि अधिकार ।	अन्य किसीका भी नहीं इसमें अधिकार ।
दयामय गौरभक्तवृन्द	दयामय गौरभक्तवृन्द
कृपा करि कहिबेन गौरतत्त्व	कृपाकर कहेंगे गौरतत्त्व,
एकान्तमने लह शरण यदि	लो एकान्तमनसे शरण यदि
दीनभावे ताँदेर चरणे ।	दीन बन चरणोंकी उनके ।
(आलुखालुवेशे शचीमातार प्रवेश)	(अस्त-व्यस्त वेशमें शचीमाताका प्रवेश)
शचीमाता—	**शचीमाता**—
काञ्चने ! अमिते ! देख देखि	काञ्चने ! अमिते ! देखो तो—
कत वेला ह'ल ।	कितनी धूप चढ़ आयी ।

गङ्गास्नाने गेछे मोर
सोनार निमाइचाँद,
विष्णु-गृहे नाहि देखि
पूजार आयोजन;
एखनि आसिबे बाछा गङ्गास्नान करि,
शून्य पड़े आछे पाकशाला
नाहि देखि रन्धनेर उद्योग,—
आमार बौमा कोथाय ?

(श्रीविष्णुप्रियादेवीर शचीमाताके प्रणाम, विनत वदने लज्जितभावे सन्मुखे दण्डायमान)

शचीमाता—

(भाव-संवरण करिया)

बौमा ! बौमा आमार !
हेरे तोर विरस वदन,
देखे तोर जीर्ण-शीर्ण कलेवर,
कालिमा-माखा वदन-कमल,
प्राण मोर फेटे जाय ।
निमायेर अदर्शन ज्वाला,
बड़इ भीषण,—
भूलेछि आमि चेये तोर मुखखानि;
तुइ मा ! बलिस् यदि दु'टि
हेसे कथा मोरे,
दूरे जाय सब ज्वाला मोर ।
तोर मुख हेरिले मलिन,
जगत आँधार हेरि आमि;
पूर्व्वस्मृति एके-एके,
मने जेगे उठे ।
तुंसेर आगुन ज्वले,
हृदये परदे-परदे ।
सन्मुखे ना हेरिले तोरे तिलार्द्धेक,—

गङ्गास्नानके लिये गया है मेरा
सोनेका निमाईचाँद,
विष्णुमन्दिरमें देखती नहीं हूँ
पूजाकी तैयारी;
आयेगा अभी लाल गङ्गास्नान करके,
सूनी पड़ी है पाकशाला,
देखती नहीं हूँ रसोईका उपक्रम,—
मेरी बहूरानी कहाँ ?

(श्रीविष्णुप्रियाका शचीमाताको प्रणाम करना एवं विनतवदन तथा सलज्ज भावसे सम्मुख खड़े रहना)

शचीमाता—

(भाव संवरण करके)

बहूरानी ! बहूरानी मेरी !
देखकर विरस वदन तुम्हारा,
देखकर कलेवर तव जीर्ण-शीर्ण
झँवराया मुखकमल,
प्राण मेरे फटे जाते ।
निमाईको नहीं देख पानेकी ज्वाला,
भीषण बड़ी ही—
भूल गयी हूँ मैं देखकर तुम्हारा मुख;
तू बेटी ! बोले यदि दो
बात बस, हँसकर मुझसे,
हट जाय सब ज्वाला मेरी ।
देखकर तुम्हारा मलिन मुख
जगत् अँधेरा मुझे दीखता;
पूर्वकी स्मृतियाँ एक-एक करके
जाग उठती मनमें ।
तुषानल जलता है
प्रत्येक तहमें हृदयके ।
सम्मुख न देखनेपर तुम्हें तिलार्ध भी,—

आनमना हइ,—	अनमनी हो जाती,—
आर निमाइके पड़े मने ।	और याद आती है निमाईकी ।
ताइ कहि प्रलापेर वाक्य समुदय ।	इसीसे लगती हूँ बकने प्रलाप-वचनावली ।
(पुनराय भावावेशे आनमना हइया)	(पुनः भावावेशमें अनमनी होकर)
प्राणेर निमाइ मोर,	प्राणधन निमाई मेरा
गेछे गङ्गास्नाने बहुक्षण,	गया है गङ्गास्नानके लिये बहुत देरसे,
एखनि फिरिवे घरे,	अभी घर लौटेगा;
स्नेहभरे मधुभावे	स्नेभरी मधुमयी भावामें
डेके मा-मा ब'ले,	पुकारकर, "माँ ! माँ !"
जड़ाइये धरि गलदेश,	गलेसे लिपट,
दुयारे दाँड़ाये मोर,	द्वारपर मेरे खड़ा हो,
"बड़ क्षुधा पेयेछि	"बड़ी भूख लगी है,
प्रसाद दे मा" ब'ले ।	प्रसाद दो माँ"—कहेगा ।
जाइ एवे शीघ्र करि,	जाऊँ अब शीघ्रता करके
ठाकुर-भोगेर करि आयोजन ।	करूँ आयोजन भगवान्के भोगका ।
(पाकगृहेर प्रति चाहिया)	(पाकशालाकी ओर देखकर)
आजि पाठाइयेछे पण्डित श्रीवास	भेजा है आज पण्डित श्रीवासने
नानाविध शाक,—	नानाविध शाक,—
गर्भ मोचा,—	केलेके फूलका अन्तर्भाग—
गर्भ थोड़	केलेके तनेका अन्तर्भाग—
निमाइचाँदेर प्रिय वस्तु सब—	निमाइचाँदकी प्रिय वस्तुएँ सभी,—
आर बले गेछेन मोरे तिनि,—	और मुझे कह गये हैं वे,—
महोत्सव हवे गृहे मोर;	महोत्सव होगा घर मेरे;
भक्तगण करिबेन नाम-संकीर्त्तन ।	भक्तगण करेंगे नाम-संकीर्त्तन ।
निताइ गौर मिलि दुइ भाये	निताई-गौर दोनों भाई मिलकर
मोर आङ्गिनाय आज करिवे नर्त्तन ।	मेरे आँगनमें आज नर्तन करेंगे ।
जाइ,—सकल उद्योग करि गिये ।	जाऊँ—सभी तैयारी करूँ जाकर ।
बौमा ! बौमा ! कोथा तुमि ?	बहूरानी ! बहूरानी ! कहाँ तुम ?
कोथा तुमि ? कोथा गेले तुमि ?	कहाँ तुम ? कहाँ गयीं तुम ?
आय मा !	आ बेटी !

तोरे धरि बुके	तुझे लगा छातीसे
जुड़ाइ जीवन ।	शीतल करूँ जीवन ।
(आङ्गिनाय पतन)	(आँगनमें गिर पड़ना)
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
(शचीमातार सेवा करिते-करिते)	(शचीमाताकी सेवा करते-करते)
मागो ! देखे तव दशा,	माँ ! देख तव दशा,
मोर हृत्‌कम्प हय;	हृत्कम्प होता मुझे;
जाय बुक फेटे,	जाती है छाती फटी,
प्राण हय विकल, अस्थिर ।	प्राण होते विकल, अस्थिर ।
इच्छा हय, झाप दिया	इच्छा होती है, कूदकर
डुबि गङ्गा-गर्भे,	डूबकर गङ्गाकी गोदीमें
जीवन जुड़ाइ,—	जीवनको शीतल करूँ—
ए जनमेर मत ।	इस जन्म भरके लिये ।
गुणमणि पुत्र तव,	गुणमणि पुत्र तव,
दिये गेछेन ताँर वृद्धा जननीर	दे गये हैं निज वृद्धा जननीकी
सेवाभार, आमार उपर ।	सेवाका भार मुझको ।
स्वेच्छामय स्वतन्त्र पुरुष तिनि,—	स्वेच्छामय स्वतन्त्र पुरुष वे—
जननीर शेष दशा,	जननीकी अन्तिम अवस्था,
वृद्ध जराजीर्ण कङ्कालमय	वृद्ध, जराजीर्ण, कङ्कालमय
देहयष्टि ताँर,	देहयष्टि उनकी,
जेन दग्ध काष्ठ एकखानि,—	मानो एक दग्ध काष्ठ,—
मासेर मध्ये विशदिन,	महीनेमें बीस दिन
उपवासे दिन जाय जाँर,—	जाता उपवासमें ही दिन जिनका,—
ए दृश्य,—	यह दृश्य,—
देखिते ह'ल ना पुत्रेर ताँर,—	देखना पड़ा न उनके पुत्रको,—
भाग्यवान तिनि,—	भाग्यवान् वे,—
पुत्र-विरह-दग्ध जननीर	पुत्र-विरह-दग्धा जननीका
तप्त दीर्घश्वास,	तप्त दीर्घ श्वास,—
पुत्र-पागलिनीर	पुत्र-शोकमें हुई पगलीकी
सकरुण विलापोक्ति,—	सकरुण विलापोक्ति,—

पुत्र-विरहाकुला	पुत्र-विरहाकुला
जननीर करुण आर्त्तनाद	जननीका करुण आर्तनाद
किछुइ,—देखिते, शुनिते, वा सहिते	कुछ भी,—देखना, सुनना, या सहना
हल ना ताँर ।	पड़ा न उन्हें ।
अभागिनी आमि,	अभागिनी मैं
बसिया निर्ज्जने, भाग्य-विधाता मोर,	बैठकर निर्जनमें, भाग्यविधाताने मेरे,
लिखिछेन मनसाधे,—	लिखी है जी भरकर
मोर अदृष्टेर लिपि;—	भाग्य-लिपि मेरी,—
अदृष्टेर निर्ब्बन्ध खण्डिते के पारे ?	भाग्यका विधान बदल कौन सकता है ?
(ऊर्द्ध्वे चाहिया)	(ऊपर देखकर)
ओहे ! दयानिधि !	अहो ! दयानिधि !
मातृभक्त-शिरोमणि !	मातृभक्त-शिरोमणि !
नवद्वीपचन्द्र !	नवद्वीपचन्द्र !
ओहे ! कृपानिधि !	अहो ! कृपानिधि !
नदीयावासीर प्राण शचीर नन्दन !	नदियावासियोंके प्राण शचीनन्दन !
एक बार एसे जाओ देखे,	एकबार आकर देख जाओ,
कि दशा हयेछे तव,	क्या दशा हुई है तुम्हारी
स्नेहमयी वृद्धा जननीर ।	स्नेहमयी वृद्धा जननीकी ।
कि सेवा करिब आमि ताँर ?	क्या सेवा करूँगी मैं उनकी ?
कि करिले हय प्राणरक्षा ताँर ?	किस उपायसे हो उनकी प्राणरक्षा ?
ओहे, शचीमार अञ्चलेर निधि,	अहो ! शचीमाताके अञ्चल-निधि,
देखा दिये एक बार,	दर्शन दे एकबार,
बले दिये जाओ तुमि;	कहकर जाओ तुम,—
कि भावे तव चरणेर दासी—	किसभाँति चरणोंकी दासी तुम्हारी
मातृसेवा तव करिबे एखन ।	तव मातृसेवा करेगी इस समय ।

गीत

ओहे नदीयार चाँद ।	अहो नदियाके चाँद ।
तुमि यदि आमि हओ,—	समझ सकोगे मुझको तुम
वुझिवे तवे ।	केवल 'मैं' बनकर ।
आमार दुःखेर कथा	जब हो मेरी दुःख-कथा
शुनिवे जवे ॥	तुमको श्रुति-गोचर ॥

दिये गेछ सेवाभार,
तोमार ए बुड़ा मार,
कि सेवा करिले ताँर,—
ए दुख जावे ।
तुमि ता, विचार करे,
देखा दिये बल मोरे,
ताइ करि, काटाइब,—
जीवन भवे ।
तोमार मायेर सेवा,
ए भाग्य वा पाय केवा,
अभागिनी बलि वुझे,—
दियेछ भेवे ।
तुमि यदि आमि हश्रो,—
वुझिवे तवे ।

सेवा-भार गये हो देकर,
अपनी वृद्धा माँका मुझपर,
करूँ कौन सेवा उनकी,
जो ले यह दुख हर ?
तुम ही कर विचार अब इसपर,
मुझे बता दो दर्शन देकर,
भवमें जीवनको काटूँगी
वैसाही कर ॥
तव जननी-सेवाका अवसर
मिले, भाग्य ऐसा हो क्योंकर,
जान अभागिन मुझको है
यह दिया मनन कर ।
समझ सकोगे मुझको तुम
केवल 'मैं' बनकर ॥

शचीमाता--

बौमा ! कि जे बलितेछ तुमि,
किछुइ ना बुझि;
निमाइ आसिबे आज नितायेर साथे,
ल'ये भक्तवृन्द,
आङ्गिनाय मोर हइबे कीर्त्तनः–
बहुदिन परे ।
महोत्सव आजि मोर गृहे,—
चल मागो ! कर गिये रन्धन-उद्योग,—
आमि जाइ गङ्गास्नाने ।
(ईशानेर प्रति)
ईशान ! आङ्गिनाय आज हइबे कीर्त्तन,
आमार निमाइचाँद आसि,
नित्यानन्द सने करिबे नर्त्तन ।
शुनि नाइ बहुदिन ताहार कीर्त्तन,
देखि नाइ तार मधु नृत्य मनोहर;
बलेछेन मोरे श्रीवास पण्डित

शचीमाता--

बहूमाँ ! क्या तो कहती हो तुम,
कुछ भी समझती नहीं;
आयेगा निमाई आज साथ निताईके,
लेकर भक्तगणको,
आँगनमें मेरे होगा कीर्तन,--
बहुत दिनों बाद ।
महोत्सव आज मेरे घरमें,--
चलो बेटी ! करो जाकर रन्धन-उद्योग,
मैं जाऊँ गङ्गास्नानको ।
(ईशानके प्रति)
ईशान ! आँगनमें आज होगा कीर्तन,
मेरा निमाईचाँद आकर
नित्यानन्दके साथ करेगा नर्तन ।
सुना नहीं बहुत दिनोंसे उसका कीर्तन,
देखा नहीं उसका मनोहर मधुर नृत्य;
कहा है मुझसे पण्डित श्रीवासने,

आज नदीयार चाँद,	आज नदियाका चाँद
उदय हइबे नदीयाय;	उदय होगा नदियामें;
ईशान !	ईशान !
तुमि कर परिष्कार आङ्गिना ओ बाहिर,	तुम करो परिष्कार आँगनका, बाहर भी,
उद्योग कर कीर्त्तनेर ।	करो तैयारी कीर्तनकी ।
पाइबेन प्रसाद आजि,	पायेंगे प्रसाद आज,
भक्तवृन्द मोर गृहे ।	भक्तवृन्द मेरे घर ।
ईशान—(स्वगत)	**ईशान**—(स्वगत)
पागलिनी हयेछेन गौराङ्गजननी;	पगली हो गयी हैं गौराङ्ग-जननी;
उन्मादिनी तिनि गौर-विरहे;	उन्मादिनी वे गौर-विरहमें हुई;
ह'ये मत्त गौरभावे,	होकर मत्त गौर-भावमें,
तिनि देखिछेन जगत गौरमय ।	देखती हैं वे जगत्‌को गौरमय ।
बले गेलेन ताँके सान्त्वना-छले,	कह गये हैं उनको सान्त्वनाके मिससे,
पण्डित श्रीवास,	पण्डित श्रीवास,
नवद्वीपचन्द्र शची-आङ्गिनाय	शचीके आँगनमें नवद्वीपचन्द्र
करिबेन नर्त्तन-कीर्त्तन,	करेंगे नर्तन, कीर्तन;
गौरगतप्राणा गौराङ्ग-जननी	गौरगतप्राणा गौराङ्गजननीने
ताँर वाक्ये करिया विश्वास,	कर विश्वास उनकी बातका,
करेछेन सकल उद्योग	करली है तैयारी सारी
संकीर्त्तन-यज्ञ-अनुष्ठानेर ।	संकीर्तन-यज्ञ-अनुष्ठानकी ।
पण्डितेर किवा दोष दिब ?	पण्डितको भला, दोष क्या दूँ ?
सकलि मोर निज करमेर फल ।	सब फल मेरे निज कर्मोंका ।
करितेछि वास आमि,	कर रहा हूँ वास मैं,
गौरशून्य नदीयाय,	गौर-शून्य नदियामें
शुधु गौर-जननीर ओ घरणीर	केवल गौर-जननी और गृहिणीका
चेये मुखपाने;	देख मुख;
देखि पोड़ा चोखे सब,	देखता हूँ सबकुछ झुलसे नयनोंसे,
शुनितेछि सकलि कानेते,	सुनता हूँ सबकुछ कानोंसे,
मुखे किछु वलि ना काहारे ।	मुखसे कुछ कहता नहीं किसीको ।
किंतु, शचीमार देखे दशा,	किंतु, शचीमाताकी देख दशा

मुख बुजे थाका चले ना त आर ।	मुख बंद किये रहना अब चल सकता नहीं ।
जाइ पण्डितेर काछे एक बार,	जाऊँ पण्डितके समीप एक बार,
आसि पुछे ताँके,––	आऊँ पूछ उनसे,––
पागलिनीके करिया पागल	पगलीको पागल बना
ताँर किवा हय सुख ।	उनको मिलता है सुख क्या ?
गौरभक्त-चूड़ामणि तिनि,––	गौरभक्त-चूड़ामणि वे,––
पूज्य तिनि––	पूज्य वे––
किंतु ए कि काज ताँर ?	किंतु यह क्या काम उनका ?
सत्य कि नवद्वीपचन्द्र,	सच क्या नवद्वीपचन्द्र,
आसिबेन निजगृहे आज	अपने घर आयेंगे आज
करिते कीर्त्तन ?	करनेको कीर्तन ?
(शचीमातार प्रति)	(शचीमातासे)
मागो ! शान्त हओ तुमि,	माँ ! शान्त होओ तुम,
स्थिर कर मन ।	स्थिर करो मनको ।
जाइतेछि आमि श्रीवासभवने,	जाता हूँ मैं श्रीवासके घर,
ए संवाद सत्य कि मिथ्या	यह संवाद सत्य अथवा मिथ्या ?—
जेने आसि आगे ।	जानकर आता हूँ पहले ।
शचीमाता––	**शचीमाता––**
ईशान ! कभु मिथ्या नाहि कहे	ईशान ! झूठ नहीं कहते कभी
श्रीवास पण्डित;	श्रीवास पण्डित ।
आमार निमाइ आजि	मेरा निमाई आज
करिबे कीर्त्तन आङ्गिनाय;	करेगा कीर्तन आँगनमें;
कर शीघ्र सकल उद्योग तुमि ।	करो शीघ्र सारी तैयारी तुम ।
ईशान––	**ईशान––**
मागो ! तव आज्ञा पालिब यतने,	माँ ! तव आज्ञा पालूँगा यत्नसे,
जावे तुमि गङ्गास्नाने,	जाओगी गङ्गास्नान करने तुम
सङ्गे जाइ आमि ।	जाऊँगा साथ मैं ।
(मने-मने)	(स्वगत)

ना जानि श्रीवास पण्डित आजि
घटाबेन किवा सर्व्वनाश ।
गौरभक्त-चूड़ामणि तिनि;
आकुल आह्वाने ताँर,
संकीर्त्तन-यज्ञेश्वर—
भक्तवाञ्छाकल्पतरु श्रीगौराङ्गसुन्दर
पारेन आसिलेओ आसिते
संकीर्त्तन माँझे ।
आज विषम परीक्षार दिन;
हउक सफल गौरभक्तेर वाक्य,
पूर्ण हउक मनोरथ गौराङ्गजननीर

(प्रस्थान)

(श्रीवासादि गौरभक्तवृन्देर सहित कीर्त्तन करिते-करिते श्रीनित्यानन्द प्रभुर प्रवेश)

न जाने श्रीवास पण्डित आज
क्या दुर्घटना घटायेंगे ?
गौरभक्त-चूड़ामणि वे;
आकुल आह्वानसे उनके,
संकीर्तन-यज्ञेश्वर—
भक्तवाञ्छाकल्पतरु श्रीगौराङ्गसुन्दर
आयें तो आ भी सकते हैं
संकीर्तनके बीच ।
विषम परीक्षाका दिन आज;
हो सफल गौरभक्त-वाणी,
पूर्ण हो मनोरथ गौराङ्गजननीका ।

(प्रस्थान)

(श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द सहित कीर्तन करते-करते श्रीनित्यानन्द प्रभुका प्रवेश)

कीर्त्तन

सोनार गौराङ्ग आमार,
(ऐ) नेचे चले जाय ।
(तोरा) देखवि यदि आय ॥
नदेर पथे,—निताई साथे,
(ऐ) नेचे चले जाय ।
हेमदण्ड वाहु तुले
हरे कृष्ण हरि वले,
पराण गौराङ्ग आमार
(ऐ) नेचे चले जाय ।
नवीन नाटुया साजे,
चरणे नुपुर वाजे,
नदीयानागर गोरा
(ऐ) नेचे चले जाय ॥
परणे कोंचान धुनि,
कटिते उड़ानि वाँधि,

कञ्चन-काय निमाई मेरा,
(वह) चला नाचता जाये ।
तू देखेगा यदि आये ।
नदिया-पथपर सहित निताई,
(वह) चला नाचता जाये ।
स्वर्ण-दण्ड सम वाहु उठाये,
"हरे कृष्ण, हरि वोल", सुनाये,
गौर प्राण-जीवन मेरा,
(वह) चला नाचता जाये ।
अभिनव वर नटवर-वेश सजे,
चरणोंमें नूपुर मञ्जु बजे,
नदिया-नागर, नवद्वीप-गौर,
(वह) चला नाचता जाये ।
तन धोती चुन्नटदार लसे,
कटि-तट उपरैना रुचिर कसे,

प्रेमेते विभोर गोरा	प्रेममें छका हुआ गौराङ्ग,
गङ्गातीरे धाय।	गङ्गा - तट दौड़ा जाये।
संकीर्त्तन-रस - रङ्गे,	संकीर्तनके रस-सने रङ्ग-
अन्तरङ्ग भक्त सङ्गे,	में अन्तरङ्ग भक्तौघ सङ्ग,
संकीर्त्तनेर पिता गौर	संकीर्तनका पिता गौर-हरि,
(ऐ) नेचे चले जाय।	(वह) चला नाचता जाये।
मालतीर माला गले,	गले मालतीकी माला वर,
पवन-हिल्लोले दोले,	जिससे पवन रहा क्रीडा कर,
ऊर्द्ध बाहु ह'ये गोरा,	दोनों वाहु उठाये गौरा,
हरिनाम गाय।	(हरि) नाम सुनाये गाये।
चन्दन - चर्चित देहे,	चन्दनसे चर्चित काया है,
कुसुमेर गन्ध बहे,	सुमनावलि-सौरभ छाया है,
जगजन मुग्ध ताँर	हैं मुग्ध जगतके जन उसकी,
वदन - शोभाय।	मुख - छविपर, सभी लुभाये।
सोणार गौराङ्ग आमार	कञ्चन-काय निमाई मेरा,
(ऐ) नेचे चले जाय।	(वह) चला नाचता जाये।

शचीमाता—	**शचीमाता**—
(उन्मादिनीर मत कीर्त्तनेर मध्ये आसिया)	(उन्मादिनीकी भाँति कीर्त्तनमें आकर)
ऐ जे आमार सोनार निमाइचाँद,	वही तो मेरा सोनेका निमाई चाँद,
आय बाप ! एक बार कोले आय !	आरे तात ! एकबार गोदीमें आ।
बुके ध'रे तोरे	छातीसे लगा तुमको
जीवन जुड़ाइ।	शीतल करूँ जीवनको।

पुनः कीर्त्तन

हरे कृष्ण हरे बलि,	"हरे कृष्ण, हरि" वोल-वोलकर,
दु'टि बाहु ऊर्द्ध्वे तुलि,	उठा युगल बाँहोंको ऊपर,
पतित जीवेरे डाकि	पतित जीवोंको—आओ, आओ
आय आय आय।	आओ चले—बुलाये।
प्रेम भरे डेके-डेके,	प्रेम सहित कर-कर आवाहन,
(से जे) देय कोल जाके ताके,	प्रति जनको करता आलिङ्गन,

(तार) नयनेते धारा वहे
प्राण फेटे जाय।
पराण गौराङ्ग आमार,
(ऐ) नेचे चले जाय॥
(तोरा) देख्‌वि यदि आय।
प्रेमेते पागल पारा,
जीव दुखे काँदे गोरा,
क्षणे हासे, क्षणे काँदे
(पुनः) धराते लुटाय।
(से जे) हुंकार करिया वले,
पापी-तापी आय रे च'ले,
गोलोकेर धन दिव
(तोरा) आय, चले आय।
सोनार अङ्गे धूलि मेखे,
सोनार गौराङ्ग आमार,
(ऐ) नेचे चले जाय।
नदेवासी नर-नारी,
देख्‌वि यदि आय॥
(गौर आमार वले रे)
प्रेमधन एनेछि आमि,
असाधन चिन्तामणि,
गोलोक ह'ते तोदेर तरे,
आय सवे आय।
(ऊर्द्ध) वाहु हये डाके,
(वले) विलाइव जाके-ताके,
गोलोकेर धन प्रेम
दिव सवे आय॥
(जे) वल्‌वे हरि एकटि वार,
सेइ पावे सुधाधार,
(ओरे) मिट्‌वे तारे भवक्षुधा
घूच्‌वे हाय-हाय॥
सोनार गौराङ्ग वले
आय, सवे आय।
(गौर आमार वले रे)
हरे कृष्ण हरे राम,

नयनोंसे बहती जलधारा,
यह देख प्राण फट जाये॥
गौराङ्ग प्राण-जीवन मेरा,
(वह) चला नाचता जाये।
तू देखेगा यदि आये॥
प्रेम छका सुध-बुधसी खोये,
जीव-दुःखसे गोरा रोये,
क्षणमें हँसता, क्षणमें रोता,
पुनः लोट भूपर जाये॥
बुला रहा वह कर-कर गर्जन,
आओ चले, तप्त-पापी जन
दूँगा मै गोलोक - विभव
आओ रे। कदम बढ़ाये।
धूल रमाये स्वर्ण - देहमें,
कञ्चन-काय निमाई मेरा,
(वह) चला नाचता जाये।
नवद्वीप-निवासी नर-नारी,
जो दर्शनेच्छु, वह आये॥
कह रहा गौरहरि है मेरा—
लाया हूँ मैं प्रेम-रूप धन,
चिन्तामणि दुष्प्राप्य, असाधन,
सुरभि-लोकसे लिये तुम्हारे,
आओ, न एक रह जाये।
भुजा उठाकर टेर रहा है,
जन-जनको दूँगा—कहता है,
प्रेम-रूप गोलोक - विभव
दूँगा सब जनता आये।
जो एकवार ले हरि पुकार,
वह पायेगा पीयूष-धार,
होगी उसकी भव-क्षुधा शान्त,
सब हाय-हाय मिट जाये॥
कहता कञ्चन-काय निमाई,
आये, समाज सब आये।
(सुनो, कहता मेरा गौराङ्ग)
जय हरे कृष्ण, जय हरे राम,

बल्वे मुखे अविराम,
परमायु अल्प जीवेर
समय ब'ये जाय।
दु'हात जुड़ि बले 'हरि',
भजिले गौराङ्ग हरि,
कलिर जीवे अनायासे
प्रेमधन पाय।
(ताँर) चरणे शरण निले,
गोलोकेर धन मिले,
त्रितापेर जाय ज्वाला,
जाय हाय-हाय॥
सोनार गौराङ्ग आमार,
(ऐ) नेचे चले जाय।
(तोरा) देख्बि यदि आय।
(कीर्तन लइया नगरे गमन)

बोलो मुखसे, मत लो विराम,
परमायु अल्प ही जीवोंकी,
नित समय बीतता जाये।
'हरि' कहता है कर जोड़ युगल,
गौराङ्ग-भजनका है यह फल,
अनायास कलियुगका प्राणी
दिव्य प्रेमका धन पाये।
जो चरण-शरण उनकी जाये,
गो-लोक-सम्पदा वह पाये,
हो दूर त्रितापोंकी ज्वाला,
हा, हाय, हाय मिट जाये॥
कञ्चन-काय निमाई मेरा
(वह) चला नाचता जाये।
तू देखेगा यदि आये॥
(कीर्तन करते नगरमें जाना)

शचीमाता--

पण्डित श्रीवास !
श्रीपाद नित्यानन्द ! गौरभक्तवृन्द !
देखितेछि दिव्य चक्षे आमि,
सोनार निमाइचाँद,
बाहु तुले हरि बले,
करिछे मधुर नृत्य,--नयन रञ्जन,--
संकीर्तन माझे।
देख देख, कि सुन्दर,--
सेइ तार चाँचर चिकुरराशि;
पड़ेछे सुन्दर बदन झापि;
सेइ तार परिसर वक्षःस्थले,
शोभिछे अपूर्व्व मालतीर माल;
परिधाने सेइ तार
कोँचान धुति लाल पेड़े;
सूक्ष्म उड़ानि दृढ़बद्ध,

शचीमाता--

पण्डित श्रीवास !
श्रीपाद नित्यानन्द ! गौरभक्तवृन्द !
देखती हूँ मैं दिव्य चक्षुओंसे,--
सोनेके निमाईचाँदको,
बाहु उठा 'हरि बोल' कहते
करता है मधुर नृत्य--नयन-रञ्जन,--
संकीर्तनमें।
देखो तो सही, कितना सुन्दर,--
वह उसकी बिथुरी, कुञ्चित चिकुर-राशि,
लटक रही सुन्दर बदनको झाँप
वही उसके विशाल वक्षःस्थलपर
शोभित अपूर्व मालती-माला,
पहने हुए वही अपनी
चुनी हुई धोती लाल पाड़की
महीन उपरैना बँधा कसके

क्षीण कटिदेशे तार ।	क्षीण कटिदेशमें उसके ।
नवीन नाटुया वेश तार,	नवीन नटवर वेश उसका,
राङ्गा चरणे तार वाजिछे नूपुर ।	अरुण चरणोंमें उसके बज रहा नूपुर ।
ऐ नदीयार पथे,—भक्तवृन्द साथे,—–	इस नदियाके पथपर––भक्तवृन्द साथ,—
बाछा मोर,—धूलि-धूसरित अङ्गे	छौना मेरा,––धूलि-धूसरित देहसे,
नाचिया चलेछे प्रेमरङ्गे ।	नाचता चल रहा है प्रेमरङ्गमें ।
एइ जे से,—–	वही तो बस,––
अङ्गने नाचितेछिल मोर,—–	आँगनमें नाच रहा था मेरे अभी,
नितायेर साथे,—–	साथ निताईके,––
नाचिते-नाचिते राजपथे गेल च'ले,	नाचते-नाचते चला गया राजपथपर,
अगणन लोक सङ्गे तार ।	अगणित लोग साथ उसके ।
'बोल हरि बोल' रवे,	'बोल हरि बोल' की ध्वनिसे
क'रे दिगन्त कम्पित,	करता दिगन्त कम्पित,
सोनार निमाइचाँद—–	सोनेका निमाई चाँद––
सोनार गौराङ्ग तोमादेर—–	स्वर्ण-गौराङ्ग तुमलोगोंका–––
संकीर्त्तन-रणरङ्गे मातियाछे आज ।	संकीर्तन-रणरङ्गमें मत्त हो उठा आज ।
(श्रीवास पण्डितेर हस्तधारणकरिया)	(श्रीवास पण्डितका हाथ पकड़कर)
पण्डित श्रीवास ! क'रे संकीर्त्तन	पण्डित श्रीवास ! करता संकीर्तन
प्राणेर निमाइ मोर,	प्राणोंका निमाई मेरा,
पुनः आसिबेन फिरे घरे ?	पुनः तो आयेगा लौट घर ?
सङ्गे आछे नदीयार भक्तवृन्द जत,	सङ्ग हैं भक्तवृन्द नदियाके जो,
तारा फिराये आनिबे अवश्यइ	वे अवश्य ही लौटा लायेंगे
पुनः गृहे तारे ।	पुनः घर उसको ।
देखेछि प्राण भरे, तारे आमि,	देखा है जीभर उसे मैंने,
परितृप्त हयेछे मोर प्राण-मन—–	परितृप्त हुए हैं मेरे प्राण-मन––
बौमाओ देखेछे ताहारे;	बहूरानीने भी देखा है उसको;
द्विधा नाइ किछुमात्र मने आमादेर ।	कुछ भी संदेह नहीं मनमें हमारे ।
बहु दिन परे,	बहुत दिन बाद,
निताइ एनेछे ध'रे तारे नदीयाय ।	निताई पकड़ उसे लाये हैं नदियामें ।
मोर सब दुःख गेल दूरे,	मेरे सब दुःख हुए दूर,

मृत देहे आसिल पराण	लौट प्राण आये मृत देहमें,
देखिय बाछारे;	देखकर अपने लालको;
हारा धन फिरे पानु आमि	खोया धन फिर मैंने पाया।
मालिनी दिदि ! सर्व्वजया ! बौमा !	मालिनी दीदी ! सर्वजया ! बहूरानी !
कर गिये रन्धनेर उद्योग।	करो जाकर तैयारी रसोईकी।
महोत्सव हबे आजि गृहे मोर;	महोत्सव आज होगा घर मेरे;
ल'ये भक्तगण,	लेकर भक्तगणको,
फिरि आसि संकीर्त्तन ह'ते,—	लौट संकीर्तनसे,
निमाइ आमार,	मेरा निमाई,
भोजन करिबे आजि,	भोजन करेगा आज,
भक्त-सङ्गे आङ्गिनाय ब'से।	भक्तोंके साथ बैठ आँगनमें।
मालिनी—	**मालिनी**—
दिदि ! सुस्थ कर मन,—	दीदी ! स्वस्थ करो मन,—
स्थिर कर चित्त।	स्थिर करो चित्त।
गुणमणि पुत्र तव जगतेर नाथ।	गुणमणि पुत्र तव जगन्नाथ।
अनुरागे डाकिले ताँरे,	सानुराग उनको पुकारनेसे,
संकीर्त्तन-यज्ञे आराधिले ताँरे,	संकीर्तन-यज्ञ द्वारा आराधना करनेसे,
ताँर हय आविर्भाव।	उनका प्राकट्य होता—
बलेछेन ए कथा श्रीमुखे तिनि;	कही है यह बात श्रीमुखसे उन्होंने;
अनुराग भरे,	अनुरागमें भर,
डाकिछ निशिदिन तुमि ताँरे।	निशिदिन पुकारती हो तुम उन्हें।
ह'ये सर्व्वत्यागिनी,	होकर सर्वत्यागिनी,
श्रीविष्णुप्रिया करिछेन तुष्ट ताँरे	श्रीविष्णुप्रिया करती हैं तुष्ट उन्हें
अनुराग-भजने।	सानुराग-भजनसे।
ताइ तिनि एसेछिलेन	इसीलिये आये थे वे
देखा दिते तोमादेर।	दर्शन देने तुमलोगोंको।
भाग्यवती तुमि दिदि !	भाग्यवती तुम दीदी !
भाग्यवती विष्णुप्रिया देवी,	भाग्यवती विष्णुप्रिया देवी,
भाग्यवान गौरभक्तवृन्द,	भाग्यवान् गौरभक्त-वृन्द;
तोमादेर अनुरागेर डाके,	तुम सबके सानुराग आह्वानसे,

प्रीतिर भजने,—	प्रीतियुक्त भजनसे,—
आर प्रेमेर सम्बन्धे,—	और प्रेमके सम्बन्धसे,
नीलाचल ह'ते नदीयार चाँद,	नीलाचलसे नदियाके चाँद
आसिलेन नदीयाय पुनः	पुनः पधारे नदियामें
नदीयानागर-वेशे दरशन दिते—	दर्शन देनेको नदियानागरके वेशमें,—
तांर अनुरागी भक्तजने।	अनुरागी भक्तोंको अपने।
तोमादेर कृपाबले,	तुम सबके कृपाबलसे,
आज दरशन पानु मोरा तांर।	आज दर्शन पाया उनका हम सबने।
कोटि प्रणिपात तव पदे, दिदि !	कोटि प्रणिपात तव चरणोंमें, दीदी !
जगत-जननी तुमि, मूर्त्तिमती भक्ति तुमि,	जगज्जननी तुम, मूर्तिमती भक्ति तुम,
जगतेर नाथ,—त्रिलोकेर नाथ,	जगन्नाथ,—त्रिलोकनाथ,
पुत्र तव।	पुत्र तव।
श्रीविष्णुप्रिया साक्षात् भक्तिस्वरूपिणी,	श्रीविष्णुप्रिया साक्षात् भक्तिस्वरूपिणी,
प्रेमेर सुदृढ़ बन्धने,—	प्रेमके बन्धन सुदृढ़में,—
प्रीतिर सुदृढ़ डोरे,—	प्रीतिकी डोरी सुदृढ़में,—
बेंधेछ जगतेर नाथे,	बाँध लिया है जगन्नाथको,
तोमा दुइ जने।	तुम दोनोंने।
चिरदिन प्रेमे बाँधा तोमादेर गृहे,	चिरकालके लिये प्रेमबद्ध घरमें तुम्हारे,
प्रेमेर अवतार प्रेममय नवद्वीपचन्द्र।	प्रेमावतार प्रेममय नवद्वीपचन्द्र।
चल, दिदि ! गृहे चल,	चलो दीदी ! घर चलो,
विश्राम कर किछु क्षण।	करो विश्राम कुछ समय।
शचीमाता—	**शचीमाता—**
(भाव-संवरण करिया अन्यमनस्क भावे)	(भावको संवरण करके अन्यमनस्क भावसे)
ताइ त !	यही तो !
मालिनी दिदि बलेछेन ठीक।	मालिनी दीदीने ठीक ही कहा।
दिये देखा एकबार संकीर्त्तन माझे	देकर दिखायी संकीर्तनमें एकबार
चले गेल आचम्बिते	चला गया यकायक
निमाइ आमार स्वपनेर मत।	मेरा निमाई स्वप्नके समान।
ठिक बलेछेन मालिनी दिदि मोर,	ठीक तो कहा है मालिनी दीदीने मेरी—

काँदिया डाकिले अनुरागभरे,	रोकर पुकारनेसे सानुराग,
श्रीभगवाने	श्रीभगवान्‌को
आसेन तिनि,--देन देखा तिनि ।	आते हैं वे,--दर्शन देते हैं वे ।
आमार निमाइके लोके भगवान् बले,	मेरे निमाईको लोग भगवान् कहते हैं,
आमि किंतु बुझिते ना पारि,	मैं किंतु समझ नहीं पाती,
के से ?	कौन वह ।
आमि तार माता,	मैं उसकी माता,
गर्भे धरेछि ताहारे,	गर्भमें रखा है उसको,
से पुत्र मोर,--जीवन-सर्व्वस्वधन,	वह पुत्र मेरा,--जीवन-सर्वस्वधन,
स्नेहेर वस्तु,--दुलालिया मोर,	स्नेहकी वस्तु,--दुलारा मेरा,
इहा भिन्न अन्यभाव,	इसके सिवा अन्य भाव,
मने नाहि भाय ।	नहीं रुचता मनको ।
श्रीभगवानेर हय आविर्भाव,	श्रीभगवान्‌का आविर्भाव होता है,
लोके बले,--शास्त्रे कहे,	कहते हैं लोग,--कहते हैं शास्त्र,
मालिनी दिदि ओ बलिलेन ताइ,	मालिनी दीदीने भी वही कहा है,
ए कथा,--सम्भव बटे,--सत्य ओ बटे;	यह बात,--सम्भव ही है,--सत्य ही है;
किंतु देखिनु जे आमि आजि	किंतु देखा जो मैंने आज
स्वचक्षे आमार सोनार	निज नयनोंसे अपने सोनेके
निमाइ चाँदे,--	निमाई चाँदको,--
सेइ तार रूपराशि अपरूप,--	वही उसकी रूपराशि अभूतपूर्व,--
सेइ तार स्नेहेर स्वभाव,--	वही उसका स्नेही स्वभाव,--
सेइ तार प्रेमराशि अपूर्व्व ओ अद्‌भुत,--	वही उसकी प्रेमराशि अद्‌भुत अपूर्व और,
सेइ तार मधुकण्ठे नाम-संकीर्त्तन,--	वही उसका नाम-संकीर्तन मधुकण्ठसे,-
नयन-आनन्दकर मधु नृत्य तार,--	नयनानन्द-दायक मधुर नृत्य उसका,
सेइ तार सुवलन बाहुर दोलनि ।	वही उसका सुगठित बाँहोंका दोलन ।
देखि नाइ चक्षे श्रीभगवान,	देखा नहीं आँखोंसे श्रीभगवान्‌को,
शुनेछि रूप वर्णन ताँहार,--	सुना है रूपवर्णन उनका,--
साधु मुखे,--शास्त्रेर वचने ।	साधुओंके मुखसे,--शास्त्रकी उक्तियोंमें ।
शङ्ख चक्र गदा पद्मधारी तिनि	शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी वे
नारायण परम पुरुष,	नारायण परम पुरुष,

वैकुण्ठविहारी ।
लोके बले,—निमाइ आमार
सेइ वैकुण्ठविहारी नारायण हरि ।
ना,—ना,—ताहा कखनइ नहे—
से आमार अञ्चलेर निधि,
नयनेर मणि,—पुत्र-रतन ।
ध'रेछि गर्भे तारे आमि,
त्रयोदश मास,—
करियाछि तारे
लालन-पालन शिशुकाले;
ताड़न-भर्त्सन किशोर-वयसे ।
दियेछि विवाह तार दुइ बार ।
ताके,—भगवान,—कि क'रे बलिब ?
मालिनि दिदि !
आर तुमि हेन कथा बल ना आमाय ।
निमाइ मोर पुत्र,
आमि तार दुखिनी जननी ।
प्राणेर आवेगे,—स्नेहेर आधिक्ये
अनुरागभरे,
निशिदिन केंदे-केंदे डेकेछिनु तारे,
से एसे देखा दिये गेछे ।
विष्णुप्रिया साध्वी-सती
विरहिणी पत्नी तार
क'रेछे तुष्ट पतिधने जे
प्राणभरा अनुरागेर भजने,
ताइ दरशन दिये गेछे तारे,—
तार साधनार धन ।
भगवान कृपामय,—एइ आमि जानि,—
नारायण मङ्गलमय,—
एइ शुधु बुझि,—

वैकुण्ठविहारी ।
लोग कहते हैं,—मेरा निमाई
वही वैकुण्ठविहारी नारायण हरि ।
नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं,—
वह मेरे आँचलकी निधि,
नयन-मणि,—पुत्ररत्न ।
रखा है उसे मैंने गर्भमें,
तेरह महीने;
किया है उसका
लालन-पालन शिशुकालमें,
किशोरावस्थामें ताड़ना-भर्त्सना ।
किया है विवाह उसका दो बार ।
उसको—भगवान,—कैसे मानूँ ?
मालिनी दीदी !
ऐसी बात और तुम कहो न मुझसे ।
निमाई मेरा पुत्र,
मैं उसकी दुःखिनी जननी ।
प्राणावेगसे,—प्रणयातिरेकसे
सानुराग,
निशिदिन रो-रोकर उसको पुकारा मैंने,
आकर वह दर्शन दे गया ।
विष्णुप्रिया साध्वी-सती
विरहिणी पत्नी उसकी,
करती है तुष्ट प्राणधनको जो
अनुराग-पूरित प्राणोंके भजनसे;
अतएव दर्शन दे गया है उसको,—
उसका साधन-धन ।
भगवान् कृपामय,—यही मैं जानती हूँ,—
नारायण मङ्गलमय,—
यही बस समझती हूँ;

कृपा करि तिनि,	कृपा करके वे
राखुन कुशले मोर निमाइचाँदेरे,	सकुशल रखें मेरे निमाई चाँदको--
एइ भिक्षा पदे ताँर चाइ ।	यही भीख माँगती हूँ उनके चरणोंमें ।
(गृहदेवताके प्रणाम एवं भूमितले शयन)	(गृहदेवताको प्रणाम करना और पृथ्वीपर सोना)
मालिनी—(स्वगत)	**मालिनी**—(स्वगत)
शुद्ध वात्सल्य-भावमयी गौराङ्गजननी,	शुद्ध वात्सल्य-भावमयी गौराङ्गजननी,
ताँके बुझान कठिन;	उनको समझाना कठिन;
श्रीगौराङ्गहरि,	श्रीगौराङ्गहरि,
कृपा करि निज तत्व बुझाबेन ताँके ।	कृपा करके निज तत्त्व उनको समझायेंगे ।
जाइ, एखन श्रीविष्णुप्रियाके डाकि,---	जाऊँ, पुकारूँ श्रीविष्णुप्रियाको इस समय;
एइ वृद्धा शोकातुरा	इस वृद्धा शोकातुरा
पुत्रहारा पागलिनी जननीर	पुत्र-वियोगिनी पगली जननीका
दियेछेन सेवाभार,	सौंपा है सेवाभार,
श्रीगौराङ्ग, ताँहार उपर ।	श्रीगौराङ्गने उसके ऊपर ।
(प्रस्थान)	(प्रस्थान)
(अदूरे वंशीध्वनि श्रवण करिया शचीमाता आचम्बिते उठिया बहिर्द्वारे गमन)	(पास ही वंशीध्वनि सुनकर शचीमाताका एकाएक उठकर बाहरी द्वारपर जाना)

गीत

शचीमाता--	शचीमाता--
ओगो मालिनी दिदि ।	अरी मालिनी दीदी ।
शुन्बि यदि आय ।	आओ, यदि है सुननेका मन ।
आमार निमाई आजि—	आज निमाई मेरा है
मुरली वाजाय ॥	कर रहा मुरलिका - वादन ॥
घरे शुयेछिनु आमि,	मै थी निद्रागत अपने घर,
आचम्बिते ध्वनि शुनि,	हुई अचानक ध्वनि श्रुति-गोचर,
आइनु बाहिर द्वारे,—	आयी घरके बाहर, देखूँ
के वाँशी वाजाय ।	किसका वंशी - वादन ।
हासी मुखे हेले बामे,	अधर हँसी, शिर सव्य झुकाये,
त्रिभङ्ग बङ्किम ठामे,	ललित त्रिभङ्गी रूप बनाये,
(देखि) दुयारे दाँड़ाये	देखा—खड़ा द्वारपर करता
से जे,—मुरली वाजाय ॥	वही वंशिका - वादन ॥

अलका तिलका भाले,
गाय गान माने ताले,
नूपुर परान राङ्गा,—
चरण नाचाय।

मस्तक अलक-तिलक-छवि छाये,
गान तान - लय बाँधे गाये,
नचा रहा वह नूपुर-मण्डित
अपने अरुनाभ चरन।

शिखिपुच्छ शिरे धरे,
मोहन मुरली करे,
बाँका नयने चेये,—
भुरु नाचाय॥

शिरपर शिखी-किरीट सुशोभित,
करमें मोहन वेणु विराजित,
तिरछे नयनोंसे निहारता
है करता भ्रू - नर्तन।

परिधाने पीताम्वर,
गले शोभे गुञ्जाहार,

पीताम्वर - परिधान मनोहर,
गुञ्जाहार गलेमें सुन्दर,

मुनि-ऋषि मन हरे—
वदन शोभाय।
ए कि देखि अपरूप,
श्यामसुन्दर रूप,
आमार निमाये हेरि,—
पराण जुड़ाय।
नन्दनन्दन हरि,
क'रे बुझि वर्ण चूरि,
उदित ह'लेन आसि,—
एइ नदीयाय।
दास हरिदास भने,
(मागो) जा भेवेछ मने-मने,
ठिक ताइ, तोमार निमाइ,—
के तारे लुकाय।
नदीयार चाँद गोरा,—
व्रजेर कानाइ ॥

मुख-पङ्कजकी शोभा हरतो
मुनिजन-ऋषियोंका मन।
रूप देखती कैसा अनुपम,
सुन्दर श्याम स्वरूप मनोरम,
होते शीतल प्राण
निमाईका मेरे कर दर्शन ॥
नन्दलाल हरि नटवर गिरिधर,
मानो अपना रूप दुराकर,
आ नदियामें प्रगट हुए
गौराङ्ग निमाई बन।
करते हैं हरिदास निवेदन,
माँ। जो सोच रहा तेरा मन,
सत्य निमाई वही, कौन
कर सकता उनका गोपन ॥
गौरचन्द्र ही नदियाके
व्रजके माधव मनमोहन ॥

मालिनी—

दिदि ! बुझिले त एखन
के तव पुत्रवर ?
कि हेतु ताँर एइ अवतार नदीयाय ?
के तुमि ? के तव पुत्रवधु ?
कृपाबले तव पुत्रतत्व
किछु-किछु बुझियाछि मोरा।
तुमिओ त बुझेछ दिदि !
तबे केन आन्मना हओ,
तबे केन दुःखे, शोके, अनशने—
देह कर पात।
करेछे मुग्ध पुत्र तव मोदेर
ताँर वैष्णवी मायाय,—
ताँर लीला पुष्टि तरे।
बुद्धिमती तुमि दिदि।

मालिनी—

दीदी ! समझीं तो अब,
कौन हैं तुम्हारे पुत्रवर,
किस हेतु उनका यह नदियामें अवतार,
कौन तुम, कौन तव पुत्रवधू ?
कृपाके बलसे तव पुत्रतत्वको
कुछ-कुछ समझ पायी हैं हम।
तुमने भी तो समझा है, दीदी !
तब किसलिये अनमनी होती हो ?
तब किसलिये दुःखसे, शोकसे, अनशनसे,
करती हो देहपात ?
किया है मुग्ध हम लोगोंको पुत्रने तुम्हारे
अपनी वैष्णवी मायासे,—
निज लीला-पुष्टि हेतु।
हो बुद्धिमती दीदी ! तुम,

तत्व-ज्ञाने परिपूर्ण हृदय तोमार;
तबे केन उन्मादिनी मत
निशिदिन भाव अकारण ।

शचीमाता—

मालिनी दिदि !
सब बुझि,—सब जानि,—
तबू माने ना जे मन,
करेछि गर्भेते धारण,
निमाइ चाँदेरे आमि,—
कि क'रे भगवान बलि तारे ?
ना—ना—पारिब ना ताहा आमि ।
पुत्र मोर निमाइ—
आमि तार माता—
एइ सम्बन्धइ भाल तार सने ।
पुत्रभावे आमि चाइ तारे,
मातृभावे सेओ मोरे चाय ।
हय हउक, भगवान निमाइ आमार;
किंतु मोर चक्षे,
से आमार स्नेहेर पुतलि,
आदरेर धन,—ममतार वस्तु;
बाप् निमाइ ! बाप् विश्वम्भर !
पुत्रभावे देखा दिओ मोरे
बाप् रे ! निमाइ रे !
तव अदर्शने प्राण मोर जाय,
एकबार देखा दिये बाप्,
कोथाय लुकाले तुमि !

(प्रस्थान)

तत्त्व-ज्ञान-परिपूर्ण हृदय तुम्हारा,
तब क्यों उन्मादिनीकी भाँति
निशिदिन करती हो चिन्ता अकारण ।

शचीमाता—

मालिनी दीदी !
सब हूँ समझती,—सब जानती हूँ,—
तब भी नहीं मन जो मानता ।
किया है गर्भमें धारण,
निमाईचाँदको मैंने,—
क्योंकर भगवान् कहूँ उसको ?
नहीं, नहीं, सकूँगी न कर वह मैं ।
निमाई मेरा पुत्र—
मैं उसकी माता—
यही सम्बन्ध प्रिय उसके साथ ।
चाहती उसे मैं पुत्रभावसे,
वह भी मुझे चाहता मातृभावसे ।
यदि है तो हो भगवान् निमाई मेरा;
किंतु मेरी आँखोंमें
वह मेरा प्रेमका पुतला,
आदरका पात्र,—ममताकी वस्तु;
तात निमाई ! तात विश्वम्भर !
देना दिखाई मुझे पुत्रभावसे
तात रे ! निमाई रे !
तुझको बिना देखे प्राण मेरे विदा हो रहे,
एकबार दर्शन देकर तात !
कहाँ हो छिपे तुम ?

(प्रस्थान)

पञ्चम अङ्क ।

(तृतीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवने श्रीविष्णुप्रियार भजन-कक्ष, श्रीविष्णुप्रिया जप-मग्ना—सन्मुखे प्रभुदत्त काष्ठ-पादुकाद्वय ।

(काञ्चनार प्रवेश)

काञ्चना—(स्वगत)

अतीत हइल वेला तृतीय प्रहर,
तबुओ सखिर भजन ना हल शेष:
उठि चारि दण्ड रात्रि शेषे,
बसि पति-देवतार शयन-मन्दिरे
पतिदत्त काष्ठ-पादुका दुखानि,
धरि सन्मुखेते,—
जपमग्ना गौर-विरहिणी ।
धरासने आसीना सति,
निष्पन्द शरीर,—
दिये गले वस्त्र,—
दु'टी नयन करिया मुद्रित,
ध्यानमग्ना गौराङ्ग-घरणी ।
दुइ पार्श्वे मृत्‌भाण्ड दु'टि,—
पूर्ण आतप तण्डुले;
धारा बहितेछे दु'नयेने ताँर;
मध्ये-मध्ये तप्त दीर्घश्वासे
हइतेछे आलोड़ित गृह,—
धरि हस्ते हरिनामेर माला,
जपमग्ना श्रीविष्णुप्रिया देवी ।

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवनमें श्रीविष्णुप्रियाका भजनकक्ष, श्रीविष्णुप्रिया जपमग्ना, सामने प्रभुदत्त दोनों काष्ठ-पादुका विराजित हैं ।

(काञ्चनाका प्रवेश)

काञ्चना—(स्वगत)

बीत गयी वेला पहरकी तीसरे,
तब भी सखीका भजन न हुआ समाप्त;
उठकर चार घड़ी रात रहते,
बैठ पति-देवताके शयनमन्दिरमें
पतिदत्त काठके खड़ाऊँ दोनों
रखकर सामने,—
जप-मग्ना गौर-विरहिणी ।
पृथ्वीपर बैठी सती,
निष्पन्द देहसे,—
गलेमें लपेटे वस्त्र,—
नयन दोनों मुद्रित किये,
ध्यानमग्ना गौराङ्ग-गृहिणी ।
दोनों ओर मिट्टीके पात्र दो,—
भरे अरवा चावलसे;
धारा बह रही नयनोंसे उभय उनके;
बीच-बीचमें तप्त दीर्घश्वाससे
हो रहा आलोड़ित घर,—
लेकर हाथमें माला हरिनामकी,
जपमग्ना श्रीविष्णुप्रिया देवी ।

जपिछेन संख्या नाम देवी	जप रही हैं गिन-गिनकर नाम देवी
नाम-नामी क'रे एक;	नाम और नामीको करके एकाकार;
षोल नाम बत्रिश अक्षर शेषे,	बत्तीसअक्षरोंसे बने सोलहनामलेनेके बाद,
ल'ये एकटि तण्डुल, बाम हस्ते,	लेकर एक चावल, बायें हाथमें,
ह'ते एक मृत्भाण्ड	एक मृद्भाण्डसे
राखितेछेन अन्य मृत्भाण्डे	रखती हैं दूसरे मृत्पात्रमें
अति-सयतने ।	अत्यन्त यत्नसे ।
सहाय ताँर एइ संख्या नाम जपेर	गिनतीके इस नाम-जपमें सहायक उनके ये ही
आतप तण्डुलगुलि ।	अरवा चावलके दाने ।
अतीत हइले तृतीय प्रहर,	बीतनेपर तीसरा पहर,
देवी विष्णुप्रिया,	देवी विष्णुप्रिया,
एइ जपशुद्ध आतप तण्डुलगुलि	इन्हीं जपशुद्ध अरवा चावलके दानोंको
करिबेन निज हस्ते पाक्,	राँधेगी हाथोंसे अपने;
ठाकुरेर भोग हबे तबे ।	भोग भगवानको लगेगा तब ।
सेइ प्रसाद श्रीविष्णुप्रियार	वही प्रसाद श्रीविष्णुप्रियाका
जीवन-उपाय ।	जीवनावलम्ब ।
तार मध्ये अर्द्धेकांश	इसमेंसे लगभग आधा अंश
वण्टनेते जाय,	बँटनेमें चला जाता;
पड़े आछेन मृतप्राय भक्तगण——	पड़े रहते हैं मृतप्राय भक्तगण——
बहिर्वाटी-द्वारे;	भवनके बाहरी द्वारपर,
गौरवक्षविलासिनी-दत्त,——	गौरवक्षविलासिनीके दिये हुए
एक कणा प्रसादेर तरे ।	एक कण प्रसादके हेतु ।
शचीमातार अप्रकटेर पर ह'ते	शचीमाताके दिवंगत होनेके बादसे
हयेछे रुद्ध वाटीर बहिर्द्वार;	हो गया है बंद भवनका बाहरी द्वार
सखिर आदेशे द्वार माना सकलेर ।	सखीके आदेशसे द्वार बंद सबके लिये ।
एकमात्र पण्डित दामोदर,	एकमात्र पण्डित दामोदर,
भग्न पञ्जर,——वृद्ध जराजीर्ण,——	भग्न-पञ्जर,——वृद्ध, जराजीर्ण,——
देवीर आदेशे,	देवीके आदेशसे
आनेन शेषरात्रे गङ्गाजल	लाते हैं पिछली रातमें गङ्गाजल

सुरधुनि ह'ते , सखीर स्नानेर जन्य ।	सुरधुनिसे, सखीके स्नानके लिये ।
सिडि दिये,	सीढ़ीसे
लंघिये अन्दरेर उच्च प्राचीर,	लाँघकर भीतरका उच्च प्राचीर,
करि स्कन्धे जलेर कलश,	कंधेपर रखकर जल-कलश,
अति सयतने तिनि,——	अत्यन्त यत्नसे वे,——
राखेन आङ्गिनाय ।	रखते हैं आँगनमें ।
करि स्नान सेइ जले सखि,	कर स्नान उसी जलसे, सखी !
ब्राह्ममुहूर्त्ते ब'सेन भजने ।	ब्राह्ममुहूर्त्तमें बैठ जाती हैं भजनमें ।
अनिद्राय,——अनाहारे,——	बिना सोये,——बिना खाये,——
सोनार वरण सखिर	सखीका कञ्चन-वर्ण
हयेछे कालिमाखा जेन ।	हो गया है मानो साँवला-फीका ।
रूक्ष केश,——रूक्ष देह, मलिन वसन,	रूखे केश,—रूखा तन, मलिन वसन,
सेजेछेन संन्यासिनी आज,——	बनी हैं आज संन्यासिनी,——
नदीयार राणी ।	नदियाकी रानी ।
देखेछि विष्णुप्रिया-वल्लभेर	देखी है विष्णुप्रिया-वल्लभकी
संन्यास मूरति मोरा,—	संन्यासमूर्त्ति हम सबने,——
महा ज्योतिर्म्मय—	महाज्योतिर्मय——
महा महिमामय——महा ऐश्वर्यपूर्ण——	महामहिमामय,——महान् ऐश्वर्यपूर्ण,——
आर देखितेछि,	और देख रही हूँ,
गौराङ्गघरणीर एइ,——	गौराङ्गगृहिणीकी यह,——
महा ज्योतिर्म्मयी,——महा गरिमामयी,—	महाज्योतिर्मयी,——महा गरिमामयी,——
गम्भीर,——महासमुद्र मत,——	गम्भीर——महासमुद्रके समान,——
धीर,——स्थिर,——अटल,	धीर,——स्थिर,——अटल,
संन्यासिनी,——महती मूरति मनोहर ।	संन्यासिनी——महती मूर्त्ति मनोहर ।
देखे भय हय मने,——	देखकर भय होता मनमें,——
करे प्राण दुरु-दुरु,——	प्राण करते थर-थर——
सम्भाषिते सखि ब'ले,	सखी कहकर सम्भाषण करनेमें,
मने लागे डर ।	लगता है मनमें डर ।
हा गौराङ्ग ! हा नदीयानागर !	हा गौराङ्ग ! हा नदियानागर !
ए कि काज तव ?	कैसा यह तुम्हारा काम ?

निजे,——साजिया संन्यासी——	स्वयं,——संन्यासी बननेपर
पुरे नाइ साध बुझि तव,	लगता है——साध नहीं पूरी तुम्हारी हुई,
सुख बुझि पूर्ण नाहि ह'ल,—	प्रतीत होता है——सुख नहीं पूरा मिला,–
आनन्द बुझि अपूर्ण रहिल,——	भान होता है——आनन्द अधूरा रहा,——
ताइ तव वक्षविलासिनीके	इसीलिये वक्षविलासिनीको अपनी
साजाइले संन्यासिनी तुमि ।	बना दिया संन्यासिनी तुमने ।
जानि मोरा भालबास तुमि तारे;	जानती हैं हम सब, तुम उसे करते हो प्यार;
किंतु ए केमन भालबासा,	किंतु यह भला, कैसा प्यार
पागलिनी क'रे निज प्रियतमा ।	कि पगली बना दिया अपनी प्रियतमाको ?

गीत

ओहे नदीयार चाँद !	अहो नदियाके चाँद !
तोमार रमणी आछे	प्रिया तुम्हारी जीवित ही है
जीयन्ते मरे ।	यथा गयी मर ।
ए केमन भालवासा,—	कैसा तो यह प्रेम भला,
पागल क'रे ॥	देना पागल कर ॥
(यदि) वाँचाइते तारे चाओ,	यदि है उसका रखना जीवन,
ऐसे तुमि देखे जाओ,	तो आकर दे जाओ दर्शन,
दिवानिशि काँदे से जे,—	भरी वेदनासे रोती है
वेदन भरे ।	वह निशि-वासर ।
हयेछे पागल पारा,	वनी परम पगली वह दीना,
विरहे आपन हारा,	विरह-व्यथासे सुध-वुध-हीना,
विष्णुप्रिया आछे देख,—	विष्णुप्रिया देखो, जीवित ही
जीयन्ते मरे ।	यथा गयी मर ।
ए केमन भालवासा,—	कैसा तो यह प्रेम भला,
पागल करे ॥	देना पागल कर ॥

श्रीविष्णुप्रिया——	**श्रीविष्णुप्रिया——**
(जप-समापनान्ते काँदिते-काँदिते कर जोड़े प्रार्थना)	(जप समाप्त होनेपर रोते-रोते कर जोड़े प्रार्थना)
प्राणवल्लभ हे ! जीवनकान्त हे !	प्राणवल्लभ हे ! जीवनकान्त हे !
चरण-कमले तव,	चरणकमलोंमें तुम्हारे
अधिनीर एइ निवेदन;	अधीनाका यही निवेदन——
देखा दिये एकवार शिखाओ आमारे	दर्शन दे एकबार सिखाओ मुझको

रीति तव कठोर भजनेर ।	प्रणाली भजनकी कठोर अपने ।
शुनेछि आमि लोकमुखे,	सुना है मैंने लोगोंके मुखसे,
लयेछ तुमि कठोर भजन-पथ,	अपनाया तुमने है कठोर भजन-पथ,
भ्रमितेछ देशे-देशे,—	घूम रहे हो देश-देशम,—
धरि भिखारीर वेश,—	धरकर भिखारी वेश—
ना जानि कत ना पाइतेछ क्लेश ।	न जाने कितना पाते हो क्लेश !
शीततापे वृक्षतले वास तव,	शीतमें, आतपमें विटप तले वास तव,
अयाचित भिक्षालब्ध, फलमूल आहार ।	अयाचित भिक्षासे प्राप्त, फलमूल आहार ।
आमि त गृहे ते ब'से,	में तो भवनमें रह,
आछि सुखे,—भजनेर नाहि गन्ध मोर,—	सुखसे हूँ,—भजनका नहीं लेश मुझमें,—
मने ह'ले तव कथा,	याद आनेपर तुम्हारी बात,
ज्वले हृदि माझे विषम अनल;	जलता हृदयके बीच विषम अनल;
भजनेते नाहि लागे मन ।	भजनमें लगता नहीं मन ।
देखा दिये तुमि नाथ ! बले दाओ मोरे,	दर्शन दे नाथ ! तुम बता दो मुझको—
बसि तव गृहे	रहकर तुम्हारे घरमें
कि क'रे भजन करि आमि ?	करूँ भजन किस भाँति में ।
तोमार ए घरबाड़ी;	तुम्हारा यह घरद्वार
मोर पक्षे वैकुण्ठ समान;	मेरे लिये तुल्य वैकुण्ठके;
शयनेर कक्ष तव,—देवमन्दिर मोर,—	शयनका कक्ष तव,—देवमन्दिर मेरा,—
तव दत्त पादुकाद्वये,	तुम्हारे द्वारा प्रदत्त उभय पादुकामें
पूर्णभावे अनुभवि	पूर्णरूपसे करती हूँ अनुभव
कृपा तव आमि,—	कृपा तुम्हारी में ।
छाड़ि नवद्वीप,—चले गेछ तुमि,—	छोड़ नवद्वीप,—चले गये तुम,—
आमि जे छाड़िते नारि,	में तो छोड़ सकती नहीं,
ए घरबाड़ी तव ।	यह घरबार तुम्हारा ।
दियेछिले दया करे तुमि मोरे	दिया था दया करके तुमने मुझे
श्रेष्ठ कार्य्य मातृसेवा तव;	निज मातृसेवारूपी श्रेष्ठ कार्य;
भाग्यदोषे मोर,	मेरे भाग्यदोषसे,
तिनि गेछेन गोलोकधामे,	वे गयीं पधार गोलोक धाम,
वञ्चित ह'येछि ताँर सेवाकाजे आमि ।	वञ्चित हो गयी हूँ उनके सेवा-कार्यसे में ।

एखन शुधुमात्र जपि नाम तव,	अब केवल जपती तुम्हारा नाम,
करि ध्यान रातुल चरण तव,	करती हूँ ध्यान तव अरुण चरणोंका,
गाइ निशिदिन गुणगाथा तव ।	गुणगाथा गाती निशदिन तुम्हारी ।
किंतु नाथ ! ध्यानभङ्गे,	किंतु नाथ ! ध्यान भङ्ग होनेपर,
मध्ये-मध्ये शून्य हेरि सब,	बीच-बीचमें सूना सब देखती हूँ,
नीरव,—आँधार,—	नीरव,—तमसाच्छादित,—
सब दुःखमय,	सबकुछ दुःखमय,
गौरशून्य गृह हेरि केंदे मरि आमि ।	गौरशून्य गृह निहार रो-रोकर मरती मैं ।
(नीरवे क्रन्दन)	(चुपचाप रोना)
काञ्चना—	**काञ्चना—**
सखि ! बहुक्षण ह'ते	सखि ! दीर्घ कालसे
दुयारे दाँड़ाये आछि तव;	द्वारपर खड़ी हूँ तेरे;
जपमग्ना हेरि तोमा,	जपमग्ना देख तुमको
कत कि जे भावितेछि मने,	क्या-क्या हूँ सोच रही मनमें,
ताहा बलिब काहारे ? शुनिबे वा के ?	वह सब कहूँगी किसे ? सुनेगा भी कौन ?
एकटि कथा,—एसेछि बलिते,—	एक बात,—आयी हूँ कहने,—
जाइतेछि आमि नीलाचलधामे	जा रही हूँ मैं नीलाचल धाम
रथयात्रा उपलक्षे	रथयात्राके उपलक्षमें
नदीयार भक्तगण साथे ।	नदियाके भक्तोंके साथ ।
यदि किछु बलिवार थाके तव	यदि कुछ करना हो निवेदन तुम्हें
संन्यासी ठाकुरे,	संन्यासी ठाकुरको,
निःसंकोचे वल ताहा मोरे,	निःसंकोच कहो वह मुझसे;
दुती ह'ये तव,—जाव आमि सेथा ।	दूती बन तुम्हारी,—जाऊँगी मैं वहाँ ।
मर्म्मी सखि आमि तव,	अन्तरङ्ग सखी मैं तुम्हारी,
मरमेर कथा तव वल सखि मोरे ।	मर्मकी बात अपनी कहो सखि ! मुझसे ।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया—**
सखि काञ्चने !	सखि काञ्चने ।
तुमि जावे नीलाचले ?	जाओगी तुम नीलाचल ?
नाम करिते नीलाचलेर	नाम नीलाचलका लेनेसे
सखि ! मोर हृत्कम्प हय,	सखि ! हृत्कम्प मुझे होता है ,

मस्तक घूर्णित हय मोर;	घूमने लगता है सिर मेरा;
आछेन सेथाय गुणमणि मोर,	गुणमणि मेरे हैं वहाँपर,
जाय सेथा नदीयार सर्व्वलोके,	नदियाके सब लोग जाते वहाँ,
देखिबार सचल जगन्नाथे !	दर्शन करनेको सचल जगन्नाथका।
किंतु मोर पक्षे निषेध--	किंतु मेरे लिये निषिद्ध,--
जेते सेथा,--	जाना वहाँ,--
अभागिनी आमि,	अभागिनी मैं,
वञ्चिते दरशने जगतेर नाथे।	वञ्चिता जगन्नाथ-दर्शनसे।
नीलाचले जेते माना मोर,	नीलाचल जाना है वर्जित मेरे लिये,
दूर ह'ते,--देखितेओ ताँरे माना,--	दूरसे भी,--दर्शन है मना उनका,--
नाम मोर करिते माना,--ताँर काछे,-	नाम मेरा लेना मना,--उनके समीप,-
सखि ! भाग्यवती तुमि,--	सखि ! भाग्यवती तुम,--
आमार ह'ये देखे एस तुमि,	बनकर हमारी देख आओ तुम,
मोर गुणमणि सचल जगन्नाथे।	मेरे गुणमणि सचल जगन्नाथको।
ताँरे बलिबार कत कथा आछे,--	उनको कहनेके लिये बातें हैं कितनी,--
शत व्यथा हृदयेर,	शत व्यथा हृदयकी,
मरमेर शत-शत ज्वाला,	मर्मस्थलकी ज्वालाएँ सैकड़ों,
आछे बलिते ताँहारे।	करनी निवेदित उन्हें।
किंतु सखि ! बलिबे के ?	किंतु सखि ! कहेगा कौन ?
कार हेन शक्ति आछे,	किसकी ऐसी शक्ति है,
गिये ताँर काछे,	जाकर पास उनके,
मोर कथा बले ? नाम करे मोर ?	मेरी बात कहे ? नाम ले मेरा ?
(क्रन्दन)	(क्रन्दन)

काञ्चना--	**काञ्चना--**
सखि विष्णुप्रिये ! भय नाइ,	सखि विष्णुप्रिये ! चिन्ता नहीं,
बलिब ताँहारे सब कथा आमि,	कहूँगी उनको सब बात मैं--
जा' थाके कपाले !	भाग्यवश जो भी परिणाम हो।
ल'ये तव नाम,	लेकर तव नाम,
जाइतेछि आमि नीलाचलधामे।	जा रही हूँ मैं नीलाचल धाम।
पूर्ण शक्ति तुमि ताँर सखि !	सखि ! तुम पूर्ण शक्ति उनकी,

तव कृपाबले,	तव कृपा-बलसे,
नाहि डरि, आमि संन्यासी ठाकुरे।	डरती नहीं मैं संन्यासी ठाकुरसे।
बेंधे श्रीविष्णुप्रिया नामेर जयडंका,	बाँध श्रीविष्णुप्रिया-नामका जयडंका,
जाब आमि नीलाचले,	जाऊँगी मैं नीलाचल,
नदीयानागरीगण साथे,——	नदियाकी नागरीगणके साथ,——
देखि, कार साध्य रोधे,——	देखती हूँ, किसकी सामर्थ्य है रोक दे,
विष्णुप्रियागणे,	विष्णुप्रियागणको,
विष्णुप्रिया-वल्लभ-दरशने ?	विष्णुप्रिया-वल्लभके दर्शनसे।
गुणमणि तव,——	गुणमणिने तुम्हारे,——
श्रीपाद नित्यानन्दे,——	श्रीपाद नित्यानन्दको,——
करेछिलेन निषेध जेते नीलाचले,	किया था मना नीलाचल जानेको,
दियेछिलेन उपदेश,	दिया था उपदेश,
गौड़े बसि प्रचारिते नामप्रेम	गौड़में रहकर प्रचार करनेका——नामप्रेम
सर्व्वजीवे।	प्राणियोंमें सब।
किंतु जेतेछेन श्रीपाद पुनः नीलाचले	किंतु जाते हैं श्रीपाद फिर भी नीलाचल——
लङ्घि आज्ञा ताँर;	लाँघकर उनकी आज्ञा;
अनुरागी भक्त, लङ्घि आज्ञा,	अनुरागी भक्त, आज्ञोल्लङ्घन करके,
प्रीत करेन भगवाने।	करते हैं प्रसन्न भगवानको।
शास्त्रवाक्य इहा,——	शास्त्र-वचन ऐसा,——
प्रमाण नित्यानन्द तार।	इसके प्रमाण नित्यानन्द हैं।
नदीयानागरी मोरा,—	नदियाकी नारियाँ हम,——
निज जन ताँर	निजजन उनकी,
निःसंकोचे बल तुमि सखि,	बिना संकोच कहो तुम सखि !
जाहा किछु आछे बलिबार;	जो कुछ भी कहना है;
इच्छा यदि कर चित्ते	चित्तमें हो चाहती यदि,
साथे मोर चल नीलाचले।	साथ मेरे चलो नीलाचल।
कोन भय नाइ।	कोई भय नहीं।
श्रीविष्णुप्रिया—	**श्रीविष्णुप्रिया——**
सखि ! जाओ तुमि नीलाचले;	सखि ! जाओ तुम नीलाचल;
छाड़ि ताँर गृह,——	छोड़ उनका घर,——

छाड़ि ताँर नवद्वीप,—
जाब ना कोथाओ आमि।
बसि ताँर गृहे,—
धरि बुके
ताँर चरण-पादुका,—
केंदे-केंदे निशिदिन डाकिब ताँहाके।
पाओ यदि सखि! देखा ताँर,—
आर यदि कथा कहिबार,
हय योगायोग,
ब'ल सखि! ताँरे,—
ब'ल एक बार,—
चरणेर दासी ताँर विष्णुप्रिया,
रेखेछे जीवन,—
शुधुमात्र आर एकटिबार,
हेरिते ताँर रातुल चरण;
आर एकबार चाहे विष्णुप्रिया
दरशन ताँर
जनमेर मत;
आर किछु बलिबार नाइ तार।

छोड़ उनका नवद्वीप,—
जाऊँगी न कहीं भी मैं।
उनके घरमें रह,—
छातीपर धारणकर
उनकी चरण-पादुका,—
रो-रोकर निशिदिन उनको पुकारूँगी।
पाओ यदि सखि! देख उनको,—
और यदि बात कहनेका,
लगे संयोग,
कहना सखि! उनको,—
कहना,—एकबार,
चरणोंकी दासी विष्णुप्रिया उनकी,
रख रही है जीवनको,—
केवल बस एकबार,
देखनेको उनके अरुण चरण;
और एकबार विष्णुप्रिया चाहती है
दर्शन उनका
सम्पूर्ण जीवनमें।
और कुछ कहना नहीं उनको।

गीत

नाथ हे!
आर कत दिने,
कोथा कोन स्थाने,
दरशन दिवे वल ना।
आर कत काल,
बाँधि मायाजाल,
(तुमि) करिवे आमाय छलना॥
युग - युगान्तरे;
पावे कि तोमारे,
दया करि मोरे वल ना।

नाथ हे!
कितने दिनोंमें और,
कहाँपर, कव, किस ठौर,
बोलो अरे! वताओ, दर्शन दोगे।
और कितने कालतक,
वीच माया-जाल ढक,
छलते मुझको इसी प्रकार रहोगे?
युग-युगान्तर उपरान्त,
भी क्या मिलोगे कान्त,
पूछ रही, उत्तर कर कृपा न दोगे?

वल, वल, शुनि,—
श्रीमुखेर वाणी,
आर किछु आमि चाहि ना॥
असाधन तुमि,
अभागिनी आमि,
डाकिते तोमाय जानि ना॥
निज गुणे एस,
काछे मोर व'स,
रस-कथा दु'टि कह ना॥
नयने नयन,
राखि अनुक्षण,
पुराइ मनेर वासना॥
विष्णुप्रियार
जीवनेर सार,
(कवे) दरशन दिवे, वल ना॥

सुनूं मैं—बोलो, कहो,
श्रीमुखके वचन अहो,
एक चाह-घट मेरा क्या न भरोगे?
साधनोंके तुम परे,
मैं अभागिन हूँ अरे,
कैसे करूँ पुकार, जिसे सुन लोगे?
आ निज गुणके प्रेरे,
बैठो समीप मेरे,
बैठ बात रसकी दो तो बोलोगे।
नयनोंमें नयन युगल,
लीन किये रह प्रतिपल,
पूर्ण करूँगी साध, साथ तो दोगे।
विष्णुप्रिया - कर्णधार,
जीवन-आधार सार।
अरे! भला, बोलो—कब, दर्शन दोगे॥

काञ्चना—

सखि! उतला तुमि हइओ ना एत,—
स्थिर कर चित्त;
जाइतेछि सवे मोरा नीलाचले,
जेतेछेन मालिनी ओ सीतादेवी
सङ्गेते मोदेर।
उठाइव तव कथा आमि
ताहादेर सङ्गे वसि;—
ब'ले दिव शेष कथा,
शुने ल'व शेष कथा,
एबार संन्यासी ठाकुर मुखे,
तोमार सम्बन्धे।
नाम तव करिया सम्बल,
जाइतेछि आमि विष्णुप्रियानाथेर सदने।
नाम-नामी एक,—भिन्न नहे—
शास्त्रे बले;

काञ्चना—

सखि! व्याकुल तुम हो न इतनी,—
स्थिर करो चित्त;
नीलाचल जा रही हैं हम सब,
जा रही हैं मालिनी तथा सीतादेवी
साथ हमारे।
चलाऊँगी बात तुम्हारी मैं
साथमें उनके रह;—
कह दूँगी अन्तिम बात,
सुन लूँगी अन्तिम बात,
इस बार संन्यासी ठाकुरके मुखसे,
त्वद्विषयक।
नामको तुम्हारे बना सम्बल,
जाती हूँ मैं विष्णुप्रियानाथ-सदन।
नाम-नामी एक,—भिन्न नहीं—
कहते हैं शास्त्र;

शास्त्रवाक्य यदि सत्य हय,
तुमिओ सखि ! जाइतेछ मोर सङ्गे ।
देह मात्र तव रहिबे हेथाय ।
फिरिब शीघ्र नीलाचले ह'ते आमि ;
राखि एकाकिनी तोमारे नदीयाय
प्राण मोर रहिल हेथाय ।
निशिदिन अमिता सखि
रहिबे तव पाशे ;
तोमारि आदेशे,—
तव काजे,—
जाइतेछि आमि नीलाचले ।
सखि ! सुस्थ कर मन,—दाओ अनुमति ।

श्रीविष्णुप्रिया—

जाओ सखि काञ्चने !
जाओ नीलाचले,—
देखे एस मोर गुणमणिर चरणकमल ;
ल'ये एस ताँर चरणेर धूलि मोर तरे ।
ब'ल ताँरे ए दासीरे दिते देखा
आर एकटिबार एइ नदीयाय ;
ताँर दरशन तरे,
रेखेछि ए छार प्राण एत दिन,—
ता' ना ह'ले,—ब'ल ताँरे सखि,
ताँर जननीर अन्तकाले,
त्यजिताम ए तुच्छ पराण,
गङ्गाय डुबिया आमि ।
आसिबेन गुणमणि, पुनः नदीयाय—
हेरिब प्राण भरि, ताँर चरणकमल,
बड़ साध मने,—
राखि सन्मुखे ताँहारे,

शास्त्र-वचन यदि सत्य है,
तुम भी सखि ! जाती हो मेरे साथ ।
देहमात्र रहेगी तुम्हारी यहाँ ।
लौटूँगी शीघ्र नीलाचलसे मैं ;
छोड़ एकाकिनी तुम्हें नदियामें
प्राण मेरे टिके यहीं ।
निशिदिन अमिता सखी
रहेगी तुम्हारे पास ;
तुम्हारे ही आदेशसे,—
तुम्हारे कामके लिये,—
जा रही हूँ मैं नीलाचल ।
सखि ! स्वस्थ करो मन,—अनुमति दो ।

श्रीविष्णुप्रिया—

जाओ, सखि काञ्चने !
जाओ नीलाचल,—
देख आओ मेरे गुणमणिके चरण-कमल ;
ले आना उनकी चरण-धूलि मेरे लिये ।
कहना उन्हें दर्शन देनेको इस दासीको
और एकबार इस नदियामें ;
उनके दर्शनके लिये,
रखा है इन दग्ध प्राणोंको इतने दिन,—
होती जो न बात यह-कहना, सखि ! उनसे,
उनकी जननीके आँख मूँदते समय
तज देती इन तुच्छ प्राणोंको,
गङ्गामें डूब मैं ।
आयेंगे गुणमणि, पुनः नदियामें—
देखूँगी जीभर चरणकमल उनके,
बड़ी साध मनमें,—
सम्मुख बैठाकर उन्हें,

नाम तार जपिते-जपिते,--
बसि तार एइ गृहे,--त्यजिब पराण।
नाहि चाहि गङ्गा आमि,--
ह'ते जार रातुल चरणतल,
हयेछेन आविर्भूत सुरधुनि--
शिव-विरिञ्चि-देवेन्द्रादि
जार चरण-भिखारी,
त्रिलोकवाञ्छित सेइ चरणेर तले,
एक बिन्दु स्थान चाइ आमि।
बल तारे सखि!
ए सकल मरमेर कथा मोर,--
आर नाहि किछु बलिबार।

जपते-जपते नाम उनका,--
उनके इसी घरमें रह,--तज दूँगी प्राण।
नहीं मुझको आवश्यकता गङ्गाकी,--
जिनके अरुण चरणतलसे,
हुई हैं आविर्भूत सुरधुनी--
शिव, विरिञ्चि, देवेन्द्रादि
भिखारी जिनके चरणके,
त्रिलोकवाञ्छित उन्हीं चरणोंके नीचे,
स्थान चाहती मैं एक बिन्दु भर।
कहना सखि! उनसे
सारी यह मर्म-कथा मेरी,--
और नहीं कहना कुछ।

काञ्चना--
सखि!
तव कथा सकलि बलिब आमि,
प्राणवल्लभे तव;
एइ काजे जाइतेछि आमि,
तीर्थयात्रा-पुण्य-आश,
नाहि हृदे मोर।
तबे विदाय हइ सखि!
तुमि कर'ना रोदन।

(प्रस्थान)
(श्रीविष्णुप्रिया पुनराय जपमग्ना)

(ईशानेर प्रवेश)

काञ्चना--
सखि!
बात सब तुम्हारी मैं कहूँगी,
तव प्राणवल्लभको;
इसी कामके लिये जा रही हूँ मैं,
तीर्थयात्रा-पुण्यकी आशा
हृदयमें मेरे नहीं।
तो विदा होती हूँ सखि!
रुदन करो न तुम।

(प्रस्थान)
(श्रीविष्णुप्रिया फिर जपमग्न हो जाती हैं)
(ईशानका प्रवेश)

ईशान--(स्वगत)
आज ए कि हल,--संध्या आगतप्राय,
ठाकुराणीर भजन ना ह'ल शेष;
उपवासे, ओ अनिद्राय,
ह'येछे भग्न,--तार देहयष्टिखानि।

ईशान--(स्वगत)
आज हुआ यह क्या,--संध्या आगतप्राय,--
स्वामिनीका भजन हुआ पूरा नहीं;
उपवास एवं अनिद्रासे
हो गयी है भग्न,--उनकी देहयष्टि।

शीर्णकाया ह्येछेन तिनि,
प्राण मात्र रेखेछेन माता;
निशिदिन शुनि मुखे ताँर--
"हा गौराङ्ग ! गौरहरि" ध्वनि,
मध्ये-मध्ये दीर्घश्वास,--
आर कातरोक्तिपूर्ण
प्राणघाती करुणार स्वर--
"हा नाथ ! हा प्राणवल्लभ !
देखा कि दिबे ना एक बार ?"
मुखे सदा लेगे आछे,--एइ कथा ताँर;
बसि प्रभुर शयन-कक्षेते,
चेये आछेन एक दृष्टे--मा आमार,
ताँर प्राणावल्लभेर
श्रीचरणपादुकार प्रति ।
कोन कथा नाइ,-कारओ सङ्गे,--
आसिते ना पाय केह,--
अन्तःपुरे ताँर;
एक मात्र काञ्चना दिदि
आसितेन मध्ये-मध्ये काछे ताँर ।
तिनिओ त चलिलेन नीलाचले,
के आर देखिबे ताँरे ?
के आर शुनाइबे गौर-कथा,
विरहिणी गौराङ्ग-घरणीके ।
नराधम आमि,--
ए वाटिर पालित कुक्कुर,--
कृतघ्न पामर,--
आमा ह'ते कि वा ह'ते पारे ?
आमि कि सेवा करिते पारि ताँर ?
ना कहेन कथा तिनि मोर साथे,
अधिकार नाइ मोर,

शीर्णकाय हो गयी हैं वे,
प्राणमात्र धारण किये हैं माँ;
निशिदिन सुनता हूँ उनके मुखसे--
"हा गौराङ्ग ! गौरहरि" ध्वनि
तथा दीर्घश्वास बीच-बीचमें
तथा कातरोक्तिपूर्ण
प्राणघाती करुण स्वर--
"हा नाथ ! हा प्राणवल्लभ !
दर्शन क्या दोगे नहीं एकबार ।"
मुखमें सदा बसी है,-यही बात उनके;
बैठकर प्रभुके शयन-कक्षमें,
देखती रहती हैं एकटक--माँ मेरी,
अपने प्राणवल्लभके
श्रीचरणपादुकाके प्रति ।
कोई चर्चा नहीं,-साथ किसीके भी,--
आ नहीं पाता कोई,--
अन्तःपुरमें उनके;
एकमात्र काञ्चना दीदी
आतीं पास उनके बीच-बीचमें ।
वे भी तो चलीं नीलाचल,
कौन और उनको सँभालेगी ?
कौन और सुनायेगी गौर-कथा,
विरहिणी गौराङ्ग-गृहिणीको ?
नराधम मैं,--
इस घरका पालतू कुत्ता,--
कृतघ्न, पामर,--
मेरे द्वारा तो पार पड़ेगा क्या ?
मैं क्या कर सकता हूँ सेवा उनकी ?
नहीं बात करती हैं वे मेरे साथ,
अधिकार नहीं मेरा,

ताँर सन्मुखे जाइते ।	सम्मुख उनके जानेका ।
काहाके वा बलि आमि,	किसे भला, कहूँ मैं,
ए सकल दुःखकथा मोर ?	यह सब दुःखकथा अपनी ?
गौराङ्ग-विरहानले,	गौराङ्ग विरहानलमें
एके ज्वले मरि निशिदिन ।	एक तो मैं जलता हूँ निशिदिन;
भाग्यदोषे हइनु वञ्चित	भाग्यके दोषसे वञ्चित हुआ हूँ
गौराङ्ग-जननी-सेवाय ।	गौराङ्ग-जननीकी सेवासे ।
चले गेलेन गोलोकेते शचीमाता,--	चली गयीं गोलोक शचीमाता,--
दिये सेवाभार,--	देकर सेवाभार,--
ताँर विरहिणी पुत्रवधूर	अपनी विरहिणी पुत्रवधूका
आमार उपर ।	मुझपर ।
आमि जे अयोग्य एइ काजे,--	मैं जो अयोग्य इस काममें,--
नाइ जे भाग्ये मोर,	नहीं जो मेरे भाग्यमें,
गौर-घरणी-सेवा,-सर्वोच्च साधन,--	गौर-गृहिणीकी सेवा—सर्वोच्च साधन,-
तिनि नाहि बुझिलेन ताहा;	उन्होंने समझा नहीं इसको;
एखन कि जे करि आमि,	इस समय भला, क्या करूँ मैं,
किछु बुझिते ना पारि ।	कुछ भी समझ नहीं पाता हूँ ।
ठाकुराणी जपे मग्ना निशिदिन,	स्वामिनी निशिदिन जपमग्ना,
पड़ि बहिर्द्वारे भक्तगण--	पड़े हुए बाहरी द्वारपर भक्तगण,--
करितेछेन विषम हाहाकार ।	कर रहे हैं विषम हाहाकार ।
नवीन वयस,-	नव-वयस्क,--
नधर गठन एक	हृष्टपुष्ट--सुगठित-शरीर एक
सुन्दर ब्राह्मण-कुमार,	सुन्दर ब्राह्मण-कुमार,
श्रीगौराङ्गेर जेन द्वितीय कलेवर,,--	श्रीगौराङ्गका ही मानो द्वितीय रूप,--
पड़ि गङ्गातीरे,	पड़ा गङ्गातटपर
हये धुलाय लुण्ठित,	लोटा हुआ धूलमें,
हा गौर ! गौराङ्ग ! बलि	"हा गौर ! गौराङ्ग !" उच्चारणकर
काँदितेछे अनुक्षण पागलेर मत ।	रो रहा है अनुक्षण पागलकी भाँति ।
गिये गङ्गास्नाने आज,	जानेपर आज गङ्गास्नानके लिये,
शुनि ब्राह्मण-बालकेर,	सुन ब्राह्मण-बालककी

सेइ करुण कातर क्रन्दन-ध्वनि,
प्राण जेन फेटे गेल,—
हृदये विंधिल जेन शेल;
मने ह'ल,–धरि चरण दुखानि,—
बलि दयामयी ठाकुराणीके मोर,
एइ विप्र-कुमारेर दुखकथा।
किंतु कि क'रे,–बलि ए कथा,—
जपमग्ना तिनि,–रुद्ध गृहद्वार,—

(गृहद्वारे सतर्के चाहिया)

ओइ बुझि
भजन साङ्ग ह'ल तार,—
उठिलेन तिनि आसन ह'ते,
तुलसी-सेवन तरे;
जाइ,–पड़ि पदतले,
कर जोड़े ब्राह्मण-बालकेर कथा
निवेदि चरणे तार।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीर तुलसी-सेवन ओ परिक्रमा एवं ईशानेर साष्टाङ्ग प्रणाम)

ईशान—
मागो! कृपामयि! जगतजननि!
आछे किछु निवेदन मोर
चरणकमले तव—
एक ब्राह्मणकुमार,–आज तिन दिन ह'ते
"हा गौर! गौराङ्ग!" बलि,
करितेछे हाहाकार, गङ्गातीरे पड़ि;
फिरितेछे नदीयार पथे-पथे—
काँदिया-काँदिया;
आर बलितेछे,—
पदे धरि जने-जने,—

वह करुण कातर क्रन्दन-ध्वनि
प्राण मानो हो उठे विदीर्ण,—
हृदयमें चुभ गया मानो शेल;
मनमें आया,—पकड़कर दोनों चरण,—
कहूँ अपनी दयामयी स्वामिनीसे
इस विप्रकुमारकी दुःखकथा।
किंतु क्योंकर—कहूँ यह बात,—
जपमग्ना वे,—रुद्ध गृहद्वार;—

(गृहद्वारको ध्यानसे देखकर)

हाँ! जान पड़ता है
भजन हुआ पूरा उनका,—
उठी हैं वे आसनसे,—
तुलसी-सेवन निमित्त;
जाऊँ—पड़ पदतलमें
हाथ जोड़ ब्राह्मण-बालककी कथा
निवेदन करूँ चरणोंमें उनके।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीका तुलसी-सेवन और परिक्रमा एवं ईशानका साष्टाङ्ग प्रणाम करना)

ईशान—
माँ! कृपामयि! जगज्जननि!
है कुछ मेरा निवेदन
तव चरण-कमलोंमें—
एक ब्राह्मणकुमार—आज तीन दिनसे
"हा गौर! गौराङ्ग!" कहता हुआ
कर रहा है हाहाकार गङ्गाकिनारे पड़ा;
घूम रहा नदियाके पथ-पथपर
रोते-बिलखते,
और कह रहा है,—
जन-जनका पैर पकड़,—

'देखाइय दाओ मोरे गौराङ्गभवन ।'
मागो ! भय हय बलिते तोमाय,—
यदि हय अनुमति,
कृपा कर, कृपामयि ! ब्राह्मणकुमारे
आनि गृहद्वारे तव ।

श्रीविष्णुप्रिया—(अधोवदने)
स्वप्नादेश पेयेछि प्रभुर,
ल'ये एस विप्रकुमारे गृहे मोर;
नाम तार श्रीनिवास,
नामप्रेम, भक्तिधर्म्म हबे प्रचारित,
गौड़देशे एइ बालकेर द्वारा ।

ईशान—
मागो !
जाइ तबे ल'ये आसि ताँरे आमि ।

(प्रस्थान)

श्रीविष्णुप्रिया—(स्वगत)
स्वपने आदेश पेनु ताँर,
श्रीनिवासे करिते दया;
बलिलेन प्रभु, एइ शेष कार्य्य मोर,—
ताँर शेष अनुरोध ।
मर्म्म इहार किछु नाहि बुझिलाम आमि ।
देखि नाइ जन्मावधि,
पर पुरुषेर मुख;—
बद्ध करि गृहद्वार,
आछि ब'से गृहे एकाकिनी,—दिये व्यथा
मोर दरशन-भिखारी भक्तवृन्द-मने ।
किंतु आज्ञा बलवान ताँर,—
विचारेर नाहि प्रयोजन ।

'मुझको दिखा दो गौराङ्ग-भवन ।'
माँ ! भय होता कहते हुए तुमको—
यदि हो अनुमति,
कृपा करो कृपामयि ! ब्राह्मणकुमारको
लाऊँ तुम्हारे गृहद्वारपर ।

श्रीविष्णुप्रिया—(नीचे मुख किये हुए)
स्वप्नादेश मिला है प्रभुका,
ले आओ विप्रकुमारको मेरे घर;
नाम उसका श्रीनिवास,
नाम-प्रेम, भक्ति-धर्म होगा प्रचारित
द्वारा इस बालकके गौड़देशमें ।

ईशान—
माँ !
जाता हूँ तब उनको लेकर आता हूँ मैं ।

(प्रस्थान)

श्रीविष्णुप्रिया—(स्वगत)
स्वप्नमें आदेश मिला उनका,—
करनेको दया श्रीनिवासपर;
बोले प्रभु, यही शेष कार्य मेरा,—
अन्तिम अनुरोध उनका ।
इसका रहस्य कुछ समझी नहीं मैं ।
देखा नहीं जन्मसे
मुख पर पुरुषका;
बंद कर गृहद्वार,
रहती हूँ घरमें एकाकिनी,—व्यथा भर
मम दर्शनयाची भक्तोंके मनमें ।
किंतु आज्ञा बलवान उनकी,—
नहीं आवश्यकता विचारकी ।

(ईशानेर श्रीनिवासके लइया पुनरागमन एवं श्रीनिवासेर आङ्गिनाय पतन एवं आर्त्तनाद,—श्रीविष्णुप्रिया देवीर आङ्गिनाय आविर्भाव)

(ईशानका श्रीनिवासको लेकर फिर आना एवं श्रीनिवासका आँगनमें गिरना तथा आर्तनाद करना,—श्रीविष्णुप्रियादेवीका आँगनमें आना)

श्रीविष्णुप्रिया--

ब्राह्मणकुमार !
श्रीनिवास नाम तव,
श्रीवृन्दावने तुमि करह गमन ।
करिबेन कृपा तोमा
कृपामय गौरभक्तगण ।
भक्ति-धर्म्म प्रचार ह'बे तोमा ह'ते ,
एइ गौड़ देशे;
हइबे आचार्य्य तुमि वैष्णवेर,
एस बाप् ! कर प्रसाद ग्रहण ।

श्रीविष्णुप्रिया--

ब्राह्मणकुमार !
श्रीनिवास नाम तव,
श्रीवृन्दावनके लिये करो प्रस्थान तुम ।
करेंगे कृपा तुमपर .
कृपामय गौराङ्ग-भक्तगण ।
होगा प्रचार भक्ति-धर्मका तुम्हारे द्वारा,
इस गौड़देशमें;
होओगे आचार्य तुम वैष्णवोंके,
आओ तात ! करो प्रसाद-ग्रहण ।

श्रीनिवास--

(काँदिते-काँदिते विह्वल हइया कर जोड़े जानु पातिया)

मागो ! नवद्वीपेश्वरि !
भक्तिस्वरूपिणी तुमि;
कृपाबले तव, पाव आमि,--
सुनिश्चित,
सुशीतल गौराङ्गचरण-छाया ।
अकृती संतान आमि,--
अधम, पतित आमि,--
वहि शिरे महापातकेर भार ।
शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित तव
श्रीचरण-रेणु,
मागो पतितोद्धारिणी !
दाओ यदि कणमात्र एइ पातकीर शिरे;
धन्य हब आमि,--

श्रीनिवास--

(रोते-रोते विह्वल होकर हाथ जोड़े, घुटना टेके)

माँ ! नवद्वीपेश्वरि !
भक्तिस्वरूपिणी तुम;
तुम्हारे कृपाबलसे, पाऊँगा मैं,--
सुनिश्चित,
सुशीतल गौराङ्ग-चरण-छाया ।
निकम्मा संतान मैं,--
अधम, पतित मैं,--
ढोता हूँ सिरपर भार महापातकका ।
शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित तव
श्रीचरण-रेणु,
माँ पतितोद्धारिणी !
कणमात्र दो यदि सिरपर इस पातकीके,
धन्य हूँगा मैं,--

धन्य हबे चौद्द पुरुष मोर,—
बाञ्छा मोर हइबे पूरण ।
श्रीगौराङ्ग मोरे करिबेन कृपा
तव कृपाबले ।
मागो पतितपावनि !
कर दया दयामयि ! पतित अधमे,—
दिये तव पदधूलि शिरे मोर ।
कृपामयी तुमि,—दयामयि तुमि,
कर कृपा अधम संताने;
के कबे हयेछे वञ्चित मागो !
मातृस्नेह ह'ते ?

(चरणे पतन ओ रोदन)
(श्रीविष्णुप्रियादेवीर वामपदेर वृद्धाङ्गुष्ठ श्रीनिवासेर शिरे स्पर्शन)

धन्य होंगी पीढ़ियाँ चतुर्दश मम,—
अभिलाषा मेरी होगी पूर्ण ।
श्रीगौराङ्ग कृपा करेंगे मुझपर
तुम्हारी कृपाके कारण ।
माँ पतितपावनि !
करो दया, दयामयि ! पतित-अधमपर,
देकर तव चरणधूलि माथेपर मेरे ।
कृपामयी तुम,—दयामयी तुम,
करो कृपा अधम संतानपर;
कौन कब वञ्चित हुआ, माँ !
मातृस्नेहसे ?

(चरणोंमें गिरना और रोना)
(श्रीविष्णुप्रिया देवीका बायें पैरके अँगूठेको श्रीनिवासके सिरसे स्पर्श कराना)
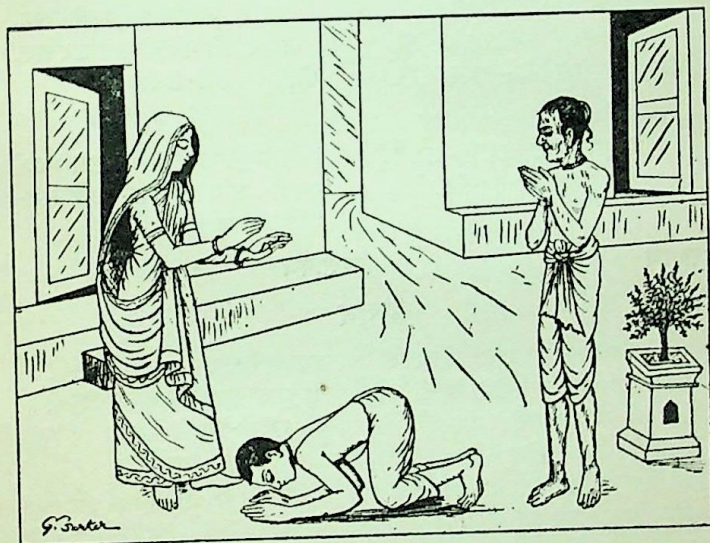
श्रीविष्णुप्रिया—

श्रीनिवास ! करि आशीर्व्वाद—
मनवाञ्छा पूर्ण ह'क तव ।

(गृहाभ्यन्तरे गमन)

श्रीविष्णुप्रिया—

श्रीनिवास ! देती हूँ आशीर्वाद—
मनोवाञ्छा पूर्ण हो तुम्हारी ।

(घरके भीतर जाना)

श्रीनिवास—

(प्रेमानन्दे नृत्य व कीर्त्तन)

श्रीनिवास—

(प्रेमानन्दमें नृत्य और कीर्तन)

गीत

दयामयी मायेर आजि दया पेयेछि ।
नवद्वीपमयी देवीर चरण छूँयेछि ।।

आर कि भावना आछे,
गौर मोरे देखा देछे,
मायेर कृपा सर्व्वोपरि,—सार बुझेछि ।

जय नवद्वीपेश्वरी,
जय गौराङ्गहरि,
बल सवे प्रेमानन्दे,—वदन भरि ।

चिर दयामयी माँकी करुणाका
दर्शन आज किया है ।
नदिया-अधीश्वरीदेवीका
छू चरण-सरोज लिया है ।।

अब कोई सोच रहा शेष न,
दे रहे गौर मुझको दर्शन,
सर्वोपरि माँ-कृपा सार
यह जाना, समझ लिया है ।

जय हे नवद्वीप-अधीश्वरि जय,
जय जयति गौरहरि जय जय जय,
बोलो सब कोई ले-लेकर
स्वर आनन्द-प्रेम-मय ।।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीर आदेशे भक्तगणेर आङ्गिनाय प्रवेश ओ नाम-संकीर्त्तन)

(श्रीविष्णुप्रियादेवीके आदेशसे भक्तगणका आँगनमें प्रवेश और नाम-कीर्तन करना)

भक्तगण—

भक्तगण—

कीर्त्तन

जय शचीनन्दन जय गौरहरि ।
विष्णुप्रियार प्राणधन नदीया विहारी ।।
नदीयाविहारी गौर
(तोमार) जय होक् हे ।
शचीनन्दन गौर तोमार जय होक् हे ।।
विष्णुप्रियार प्राण गौर जय होक् हे ।

जय शचीनन्दन, जय गौर हरि ।
विष्णुप्रिया-प्राणधन नदिया-विहारी ।।
नदिया-विहारी गौर,
जय हो तुम्हारी ।
गौर शचीनन्दन हे! जय हो तुम्हारी ।
विष्णुप्रिया-प्राणगौर! जय हो तुम्हारी ।।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीर सर्व्वाङ्ग वस्त्रा-वृत करिया पिड़ाय उपवेशन, केवल-मात्र श्रीचरणकमलेर अङ्गुलिर अग्रभाग देखा जाइतेछे ; भक्तगणेर प्रणाम एवं प्रसाद ग्रहण,—ईशानेर प्रसाद-वण्टन)

ईशान--

धन्य ब्राह्मणकुमार !
धन्य गौरभक्तवृन्द ।
ठाकुराणी मोर,--
नवद्वीपेर अधिष्ठात्री देवी मोर,--
करिलेन पूर्ण आजि भक्तमनस्काम;
ह'ल पूर्ण नवद्वीप प्रेमानन्दे आजि !
भक्तवशी भगवान,--
भक्ताधीना भगवती--
दुँहे मिलि,–बुझालेन आजि,
भक्तवृन्दे भक्तिर माहात्म्य ।
कृपामयी नवद्वीपेश्वरी,
देखालेन जे कृपार निदर्शन आजि,
दरिद्र ब्राह्मणकुमारे,
अज-भव-देवन्द्रादि,
कणमात्र नाहि पाय तार ।
वसि ध्याने मुनि-ऋषिगणे
युग-युगान्तर,--
जे चरणकमल करेन धेयान,--
जे राङ्गा चरणेर
अनुभवि छायामात्र,
उन्मत्त नारद ऋषि,--
हरि गुणगाने,--
सेइ शिव-विरिञ्चि-देवेन्द्र-वाञ्छित,

(श्रीविष्णुप्रियादेवीका सारे शरीर को वस्त्रसे ढँककर पीढेपर बैठना, केवल मात्र श्रीचरणाङ्गुलिका अग्रभाग दिखायी देता है; भक्तगणका प्रणाम करना एवं प्रसाद ग्रहण करना,—ईशानका प्रसाद बाँटना)

ईशान--

धन्य ब्राह्मणकुमार !
धन्य गौर भक्तवृन्द !
मेरी स्वामिनीने,--
मेरी नवद्वीपकी अधिष्ठात्री देवीने
की है पूर्ण आज भक्त-मनोकामना ।
हुआ नवद्वीप प्लावित प्रेमानन्दसे आज
भक्तके वश भगवान्,--
भक्ताधीना भगवती--
दोनोंने मिलकर,--समझाया आज,--
भक्तवृन्दको भक्तिका माहात्म्य ।
कृपामयी नवद्वीपेश्वरीने
कृपाका उदाहरण किया जो प्रदर्शित आज
दरिद्र ब्राह्मणकुमारपर,
अज-भव-देवेन्द्रादि,
पाते नहीं कणमात्र उसका ।
ध्यानमें बैठ मुनि-ऋषिगण
युग-युगान्तरतक,--
जिन चरणकमलोंका करते ध्यान,--
जिन अरुण चरणोंकी
अनुभव कर छायामात्र,
उन्मत्त हो जाते नारदऋषि,--
हरि गुणगानमें,--
उसी शिव-विरिञ्चि-देवेन्द्र-वाञ्छित,

श्रीचरणस्पर्श,--
शुधु भक्तिबले आर कृपाबले,
आज पाइल श्रीनिवास ।
सेविनु आजन्म आमि
गौराङ्ग-गोष्ठी,–
पालित कुक्कुर आमि जाँर गृहे चिरकाल,
गौर-गोष्ठीर उच्छिष्ठ,--
आछे विद्यमान जार प्रति लोमकूपे,--
तार भाग्ये नाहि ह'ल
हेन कृपा बरिषण;
धन्य श्रीनिवास तुमि,
धन्य तव भाग्यबल,--कर्म्मफल,--
आर साधनार बल ।
कोटि-कोटि प्रणिपात ठाकुर !
चरणे तोमार ।

(श्रीनिवासके साष्टाङ्ग प्रणाम)

श्रीचरणोंका स्पर्श,--
केवल भक्तिबलसे और कृपाबलसे,
आज किया प्राप्त श्रीनिवासने ।
सेवा की है आजन्म मैंने
गौराङ्ग--कुटुम्बकी,--
पालतू कुत्ता मैं घरका जिनके चिरकालसे
गौर-परिवारका उच्छिष्ट,--
विद्यमान जिसके प्रतिलोमकूपमें है,--
हुई नहीं भाग्यमें उसके
ऐसी कृपाकी वर्षा;
धन्य श्रीनिवास तुम,
धन्य तव भाग्यबल,--कर्मफल,--
और साधन-बल ।
कोटि-कोटि प्रणिपात स्वामिन् !
तव चरणोंमें ।

(श्रीनिवासको साष्टाङ्ग प्रणाम)

श्रीनिवास--

चौद्द भुवन माझे,
महा भाग्यवान तुमि,
भक्तिमान भक्तश्रेष्ठ तुमि,
गौराङ्गेर प्रियतम दास तुमि;
शुधु कृपाबले तव,--
एइ जीवाधम-भाग्ये,--
मिलिल आजि,--
शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित धन,
गौराङ्ग-घरणीर श्रीचरण-परशन ।

(ईशानेर कर्णे अँगुलि-प्रदान)

कृपा तुमि,–करिले मोरे आगे,
तबे मिलिल ए निधि;

श्रीनिवास--

चौदहो भुवनमें,
महाभाग्यवान् तुम,
भक्तिमान् भक्तश्रेष्ठ तुम,
गौराङ्गके प्रियतम दास तुम;
केवल कृपाबलसे तुम्हारे,--
इस जीवाधमके भाग्यमें,
मिला आज,--
शिव-विरिञ्चि-वाञ्छित धन,--
गौराङ्ग-गृहिणीका श्रीचरण-स्पर्श ।

(ईशानका कानोंमें अँगुली देना)

कृपा तुमने,--की मुझपर प्रथम,
तभी मिली यह निधि;

कृपा ह'ले गौरभक्तेर,	कृपा हो गौर-भक्तकी,
तबे मिले गौराङ्गधने ।	तभी मिलता गौराङ्गधन ।
गौरवक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीर	गौरवक्षविलासिनी श्रीविष्णुप्रिया देवीके
सेवक तुमि,——	सेवक तुम,——
दियेछेन स्वयं प्रभु तोमाय	दिया है तुमको स्वयं प्रभुने
उपयुक्त बुझि,——एइ उच्च पद;	उपयुक्त जानकर,——यह उच्च पद;
तोमा हेन भाग्यवान	तुम समान भाग्यवान्
के आछे जगते ?	कौन है जगत्में ?
ईशान ! कोटि-कोटि प्रणिपात	ईशान ! कोटि-कोटि प्रणिपात
करि तव पदे आमि,	करता तुम्हारे पैरोंमें मैं,
कृपा कर मोरे,—अभाजन ब'ले,	कृपा करो मुझपर,—जानकर अपात्र;
गौराङ्गेर दासानुदास ह'ते	गौराङ्ग-दासानुदास होनेकी
बड़ वाञ्छा मोर ।	बड़ी वाञ्छा मेरी ।
ईशान ! कर आशीर्व्वाद तुमि,	ईशान ! दो आशीर्वाद तुम,
जेन पूर्ण हय मोर मनस्काम ।	जिससे मनोकामना हो पूरी मेरी ।
(ईशानके प्रणाम करिते उद्यत एवं "हरे कृष्ण हरे कृष्ण" बलिते-बलिते ईशानेर द्रुतवेगे पलायन)	(ईशानको प्रणाम करने चलना एवं "हरे कृष्ण हरे कृष्ण" कहते-कहते ईशानका द्रुतवेगसे भाग जाना)
(सकलेर प्रस्थान)	(सबका प्रस्थान)

षष्ठ अङ्क ।

(प्रथम गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—श्रीविष्णुप्रिया-देवीर भजन-कक्ष—श्रीविष्णुप्रिया देवी ध्यानमग्ना ।

(अमितार प्रवेश)

अमिता—(मने-मने)

सखि काञ्चना बले गेछे मोरे,
थाकिते निशिदिन,
श्रीविष्णुप्रियार काछे ।
दिवानिशि आछि ब'से काछे ताँर,
छाड़ि सर्व्व कर्म्म;
किंतु सखिर नाइ अवसर,
कथा कहिते मोर सने ।
अटल,—नीरव—स्थिर
महासमुद्रेर मत गम्भीर तिनि;
तपस्विनी गौराङ्ग-घरणी
निशिदिन जपे मग्ना ।
नयनेते निद्रा नाहि ताँर,
"हा नाथ ! हा गौराङ्ग !
गौरहरि" ध्वनि
प्रतिक्षणे मुखे ताँर शुनि ।
गौर-विरहिणी,—गौरवक्षविलासिनी—
गौरनाम जपि निरन्तर
गेछेन हये,—गौरमयी एके बारे ।
नाहि शुनेन अन्य कथा काने,—

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—श्रीविष्णुप्रिया-देवीका भजन-कक्ष,—श्रीविष्णुप्रिया देवी ध्यानमग्ना ।

(अमिताका प्रवेश)

अमिता—(स्वगत)

सखी काञ्चना कह गयी है मुझको,
रहनेको निशिदिन,
श्रीविष्णुप्रियाके पास ।
दिवानिशि रहती हूँ बैठी पास उनके,
छोड़ सब कामधाम;
किंतु नहीं सखीको अवकाश,
बात करनेका साथ मेरे ।
अटल—नीरव—स्थिर
महासागर समान गम्भीर वे;
तपस्विनी गौराङ्ग-गृहिणी
निशिदिन जप-मग्ना ।
नींद नहीं आँखोंमें उनके;
"हा नाथ ! हा गौराङ्ग !
गौरहरि !" की ध्वनि
प्रतिक्षण सुनती हूँ मुखसे उनके ।
गौर-विरहिणी—गौरवक्षविलासिनी—
गौरनाम जपकर निरन्तर
हो गयी हैं,—गौरमयी सर्वथा ।
अन्य बात सुनती नहीं कानोंसे,—

नाहि बलेन अन्य कथा मुखे,——
ना चाहेन कारओ पाने तिनि,
पतिपादपद्मध्याने मग्न दिवानिशि ।
काञ्चना गेयेछे नीलाचले,
एकाकिनी राखि मोरे हेथा,——
कि करि बुझिते ना पारि ।
ब'से आछि तार आशापथ चेये,——
बुक फेटे जाय मोर,
देखे सखिर कठोर भजन-रीति;
प्राण काँदे
विरहेर हा हताश ध्वनि शुने ।
सखि काञ्चने !
ए कि काज दिये गेले मोरे ?
शीघ्र आसि फिरे, नीलाचल ह'ते,——
लह भार सखिर तोमार ।
ए काज हबे ना आमा ह'ते;
दिन गेल, मास गेल,
एकटि कथा ना कहिल सखि !
मोर सने,——
मौनी हयेछेन नदीयार राणी,——
ए कथा एखन,—काके दिये ब'ले पाठाइ
आमि काञ्चनार काछे ?
कि जे करि आमि,—बुझिते ना पारि ।
एक मात्र आछे गृहे
पुरातन भृत्य——वृद्ध ईशान,
मुख देखे तार,—भय हय मने,——
अशीतिपर वृद्धेर वयस,
जराजीर्ण देह,——
बसि शची-आङ्गिनाय,
शुधु गौरनाम जपे निरन्तर,

कहती नहीं और बात मुखसे,——
देखती किसीकी ओर वे नहीं,
पति-पाद-पद्म-ध्यान-मग्ना दिवानिशि ।
काञ्चना गयी है नीलाचल,
रखकर अकेली मुझे यहाँपर,——
क्या करूँ समझ नहीं पाती ।
आशापथ उसका निहारती हुई बैठी हूँ,——
छाती फटी जाती मेरी,
देखकर सखीकी कठोर भजन-रीति;
रोते हैं प्राण
सुन विरहकी हताश हाहाकार-ध्वनि ।
सखि काञ्चने !
यह क्या काम दे गयी हो मुझको ?
शीघ्र आकर लौट नीलाचलसे,——
सँभालो सखीका भार अपनी ।
यह काम होगा नहीं मुझसे;
दिन बीते, मास बीते,
एक भी न बात की सखीने,
मुझसे,——
मौन हुई हैं नदियाकी रानी,——
यह बात इस समय,——कहकर किसे भेजूं
मैं काञ्चनाके पास ?
करूँ क्या भला मैं,——समझ नहीं पाती ।
घरमें है एकमात्र
पुरातन भृत्य——वृद्ध ईशान,
मुख देख उसका,—भय होता मनमें;——
अस्सीसे ऊपर वृद्धकी अवस्था,
जराजीर्ण देह,——
बैठकर शचीके आँगनमें,
केवल गौरनाम जपता निरन्तर;

आर अझोर नयने झुरे निशिदिन ।
तार ओ मुखे नाहि कथा,
उदरेते नाई अन्न,–
धूलि लुण्ठित देह,––
परणे वसन नाइ, मलिन वदन ।
देह मात्र राखियाछे शुधु
गौराङ्ग-घरणीर सेवा तरे ।
से देय गड़ागड़ि,
गौराङ्ग आङ्गिनाय,–दिने शतवार ।
पण्डित दामोदर ओ ठाकुर वंशीवदन
करेन शयन मृतवत् दुइ जने
बहिर्बाटी गृहे ।
दु'जनार निद्रा नाहि चोखे,
"हा गौर, गौराङ्ग" नाम
रात्रिदिन सदा मुखे शुनि;
गौरहारा हये ताँरा
काँदिछेन दिवानिशि दुखे ।
नदीयार पडेछे विषम हाहाकार;
नदेवासी नरनारीर
विषम दुर्द्दिन,––
दुखेर नाहिक सीमा ।
तादेर प्राण-गौराङ्ग-घरणीर––
विष्णुप्रियार,–तारा ना पाय दरशन;
सकलेर मुखे एकइ कथा––
हा विष्णुप्रियावल्लभ ! हा विष्णुप्रिये !
एइ कि उचित काज तोमादेर ?

अविरल झरते हैं और नयन निशिदिन ।
उसके भी मुखमें वचन नहीं,
पेटमें अन्न नहीं,––
रजलुण्ठित देह,––
पहरना वसन नहीं, मलिन वदन ।
केवल देहमात्र धारण कर रखा है
गौराङ्ग-गृहिणीकी सेवा-हेतु ।
तड़फड़ाता रहता वह
गौराङ्ग-आँगनमें,––दिनमें सैकड़ोंबार ।
पण्डित दामोदर और ठाकुर वंशीवदन
करते शयन मृतवत् दोनों जने
भवनके बाहरवाले कमरेमें ।
निद्रा नहीं आँखोंमें दोनोंके,
"हा गौर, गौराङ्ग" नाम
रातदिन सदा सुनती हूँ मुखसे;
गौर-रहित होकर वे
रोते हैं दिवानिशि दुःखसे ।
नदियामें मचा है विषम हाहाकार;
नवद्वीपवासी नरनारियोंका
विषम दुर्दिन,––
दुःखकी सीमा नहीं ।
अपने प्राण गौराङ्गकी गृहिणी––
विष्णुप्रियाका,–पाते वे दर्शन नहीं;
सभीके मुखमें एक ही बात––
हा विष्णुप्रियावल्लभ ! हा विष्णुप्रिये !
यह क्या उचित तुम्हारा व्यवहार ?

श्रीविष्णुप्रिया—

(ध्यानभङ्गे कर जोड़े प्रार्थना)

श्रीविष्णुप्रिया—

(ध्यानभङ्ग होनेपर हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हैं)

गीत

नाथ हे !
करुणार अवतार
नाम तोमार ।
करुणा करिया लह
प्राण आमार ।
कि काज जीवने मम;
ओहे प्राण-प्रियतम,
नाइ जे जीवने आशा,—
तोमारे पावार ।
दयार सागर तुमि,
करुणार पात्री आमि,
कृपा करि प्राण लह,—
ओहे प्राणाधार ॥
सकलि लयेछ तुमि,
आछे मात्र प्राणखानि;
तोमारि चरणे ताहा—
दिनु उपहार ।
करुणार अवतार
नाम तोमार ॥

नाथ हे !
करुणाके अवतार
तुम्हारा नाम विदित है ।
ले लो मेरे प्राण;
यही करुणा वाञ्छित है ॥
भला काम जीनेसे क्या मम,
हे मेरे प्राणोंके प्रियतम !
पुनर्मिलनकी तुमसे जब
आशा वर्जित है ।
हो उदार तुम करुणा-अर्णव,
हूं पात्री मैं करुणाकी तव;
कृपया प्राणाधार !
प्राण ले लो, मम हित है ॥
ले ली है तुमने वस्तु सभी,
पर प्राण-मात्र हैं बचे अभी,
चरणोंमें उपहार तुम्हारे
यह अर्पित है ।
करुणाके अवतार
तुम्हारा नाम विदित है ॥

(ऊर्द्ध दृष्टे)

प्राणवल्लभ हे ! प्राणकान्त हे ।
तव विरहेर विषम गुरुभार,—
आर ना सहिते पारि आमि ।
क्षणमात्र मने हय,—
युग-युगान्तर,
कत जे वरष गेल,—
के करे गणना;
प्रति पले मने हय,—
एसे तुमि देखा देबे मोरे
एइ नदीयाय ।

(ऊर्ध्व दृष्टिसे)

प्राणवल्लभ हे ! प्राणकान्त हे !
तुम्हारे विरहका विषम गुरुभार,—
और नहीं सह पाती मैं ।
मनमें प्रतीत होता एक क्षण—
युग-युगान्तर-सा,
कितने भला, बरस बीते,—
कौन करे गणना;
प्रतिपल मनमें होता,—
आओगे तुम मुझे दर्शन देनेको
इसी नदियामें ।

तिले-तिले,–पले-पले,
निराश हइये ग्रामि,
करि नीरवे क्रन्दन ।
प्राणवल्लभ हे ! जीवनकान्त हे !
ग्रन्तर्य्यामी तुमि,––
सकलि जानिते पार,––
सर्व्वद्रष्टा तुमि,–पाग्रो सकलि देखिते ।
व्यथार व्यथी तुमि—
दरदेर दरदिया तुमि;
पार सकलि बुझिते ।
तबे केन नाथ ! एत ग्रकरुण
चरणेर दासी प्रति तुमि ?
बले तोमा दुःखहारी,––भक्तजने,
बले तोमा व्यथाहारी,––सर्व्वलोके,
मोर व्यथा,–मोर दुःख,–हृदय-वेदन
दुःख बले कि तव मने नाहि भाय ?

ए दासी कि तव सृष्ट वस्तु नय ?
गण्य नहे कि जगतेर जीव माझे
दुखिनी विष्णुप्रिया तव ?
जीवेर जीवन तुमि,–प्राण तुमि,
जीव-बन्धु तुमि;
दुखी-तापीर जीवन-सम्बल,––
तव सुशीतल चरणकमल ।
भूले जाग्रो, नाथ !
पूर्व्व सम्बन्ध मोर सने,
कर मने कीटानुकीट तव
ग्रधमा दासीरे
वहि शिरे ग्रामि
तव विरह-दुखसिन्धु,––

तिल-तिल,–पल-पल,––
होकर निराश मैं,
नीरव क्रन्दन किया करती हूँ ।
प्राणवल्लभ हे ! जीवनकान्त हे !
ग्रन्तर्यामी तुम,
जान पाते सब कुछ,––
सर्वद्रष्टा तुम,–पाते हो देख सब ।
व्यथाकी व्यथा तुमको,
पीड़ाकी पीड़ा तुम्हें;
समझ सकते हो सब कुछ ।
तब भी, क्यों नाथ ! इतने ग्रकरुण
चरणोंकी चेरीके प्रति तुम हुए ?
कहते तुम्हें दुःखहारी,––भक्तजन,
कहते तुम्हें व्यथाहारी,––सब लोग,
मेरी व्यथा,–मेरा दुःख,––हृदय-वेदना
दुःख जान पड़ती नहीं
मनको तुम्हारे क्या ?

यह दासी क्या तुम्हारी सृष्ट वस्तु नहीं ?
नहीं गिनने योग्य क्या जगज्जीवोंके बीच
दुःखिनी विष्णुप्रिया तव ?
जीवोंके जीवन तुम,–प्राण तुम,
जीवोंके बन्धु तुम;
दुःखी तथा संतप्तोंके जीवनका संबल,––
तव सुशीतल चरणकमल ।
भूल जाग्रो, नाथ !
पहलेका सम्बन्ध मेरे साथ;
समझो कीटानुकीट मनमें तव
ग्रधमा दासीको ।
सिरपर मैं ढोती हूँ
तव विरह-दुःख-सिन्धु,––

अकूल पारावार
दीना हीना दुखिनी अति,
शत अपराधिनी आमि;
त्रिताप-ज्वालाय जर्ज्जरित
सतत ए देह ।
अनुतप्त जीवाधमा ब'ले
कृपामय ! कर कृपा मोरे,
देखा दिये एक बार अन्तिम समय;
आर किछु नाहि चाहि आमि ।

अकूल पारावार ।
दीना-हीना-दुःखिनी अति,
शतापराधिनी मैं;
त्रिताप-ज्वालासे जर्ज्जरित
सतत यह देह ।
अनुतप्ता, जीवाधमा जानकर
कृपामय ! करो कृपा मुझपर,
दर्शन दे एकबार अन्तिम समय;
और कुछ चाहती नहीं मैं ।

गीत

नाथ हे ।
आमार साधन - धन
चरण तव ।
ना पान धेयाने जाहा,—
विरिञ्चि-भव ॥
से धन हाराये आमि,
ह'येछि गो पागलिनी;
दुख-ज्वाला सहितेछि,—
नित्य नव ।
शेष कथा ब'ले राखि;
अन्तिमें दिओ ना फाँकि,
दासीरे चरणे रेख,—
हे भव-धव ।
जगतेर नाथ तुमि,
अबला बालिका आमि,
मरम यातना आर,—
कत वा कव ?
आमार साधन धन
चरण तव ॥
(क्रन्दन)

नाथ हे ।
देव । तुम्हारा चरण-कमल
मेरा साधन-धन ।
नहीं ध्यानमें जिसको पाते
शिव-चतुरानन ॥
खो करके मैं वह अपना धन,
हूं अब गयी परम पगली बन;
दुःखानल सहती रहती हूं
निरवधि नूतन ।
करती अन्तिम बात निवेदन,
अन्त समय करना न प्रवञ्चन;
भवधव । चरणोंमें रखना
अनुचरी अकिञ्चन ।
तुम स्वामी जगतीके सारी,
मैं अबला बालिका विचारी,
मर्म-व्यथाका कितना
और करूँगी वर्णन ?
देव । तुम्हारा चरण-कमल
मेरा साधन-धन ॥
(क्रन्दन)

अमिता—

(द्वारे दाड़ाइया अतिशय भीत-चकित भावे)

सखि ! संवर रोदन,
काञ्चना एसेछे आजि नीलाचल ह'ते;
से दाँड़ाये दुयारे,
तव दरशन तरे।

श्रीविष्णुप्रिया—

(फिरे चाहिया)

कइ ? सखि काञ्चना कइ ?
कोथाय से ?

(काञ्चनार प्रवेश)

सखि काञ्चने ! एस;
कइ ? मोर प्राणवल्लभ, कइ ?
तुमि ब'ले गियेछिले,
आनिबे नवद्वीपचन्द्रे नदीयाय पुनः;
कइ तिनि ? देखाओ मोरे एकबार।
कोथाय रेखे एले तुमि मोर प्राणधने ?
जाब आमि तथा,—
ताँर चरण-दरशन तरे।

(क्रन्दन)

काञ्चना—

सखि ! कुशले आछेन,
गुणमणि तव;
बलेछेन तिनि भक्तगणे
आविर्भाव हबे ताँर नदीयाय पुनः।
विलम्ब नाहिक तार।
करि रुद्ध गम्भीरा-मन्दिर-द्वार,
तोमारि मतन तिनि,
विषम विरह भरे,

अमिता—

(द्वारपर अतिशय भीत एवं चकित भावसे खड़ी होकर)

सखि ! शान्त करो रोदन,
काञ्चना है आयी आज नीलाचलसे;
खड़ी है द्वारपर वह,
तुम्हारे दर्शनके लिये।

श्रीविष्णुप्रिया—

(घूमकर देखकर)

कहाँ ? सखि काञ्चना कहाँ ?
किस जगह वह ?

(काञ्चनाका प्रवेश)

सखि काञ्चने ! आओ;
कहाँ ? मेरे प्राणवल्लभ, कहाँ ?
तुम कह गयी थीं,—
लाओगी नवद्वीपचन्द्रको पुनः नदियामें;
कहाँ वे ? दिखाओ मुझे एकबार।
कहाँ छोड़ आयीं तुम मेरे प्राणधनको ?
जाऊँगी मैं वहीं,—
उनके पद-दर्शन निमित्त।

(क्रन्दन)

काञ्चना—

सखि ! कुशलसे हैं,
गुणमणि तव;
कहा है उन्होंने भक्तगणसे
आविर्भाव होगा उनका नदियामें फिर ?
विलम्ब नहीं उसमें।
रुद्धकर गम्भीरा मन्दिर-द्वार
तुम्हारे ही समान वे,—
विषम विरहमें भरकर,

"हा राधे ! हा राधे" बलि,	"हा राधे ! हा राधे !" कहते हुए,--
करेन रोदन निशिदिन;	करते हैं रोदन निशिदिन;
ना जान कोथाओ तिनि,	नहीं जाते कहीं भी वे,
ना कहेन कथा,–कारओ साथे,–	नहीं करते बात,–साथ किसीके भी,--
तोमारि मतन सखि !	तुम्हारे समान सखि !
पति-विरह-विधुरा विरहिणी मत,--	पति-विरह-विधुरा विरहिणी सम,--
"हा कृष्ण करुणासिन्धु !	"हा कृष्ण करुणासिन्धु !
दरशन दाओ एकबार"	एकबार दर्शन दो ।"
एइ बलि,–सतत करेन आर्तनाद ।	यही कह-कह,–सतत करते आर्तनाद ।
तोमार ओ ताँहार भजने सखि !	तुम्हारे और उनके भजनमें सखि !
नाहि किछु देखिलाम भेद ।	नहीं कुछ देखा भेद ।
काँद तुमि ताँर तरे,	रोती तुम उनके लिये,
तिनि काँदेन तोमा तरे ।	रोते वे तुम्हारे लिये ।
भीषण विरहे--वाणविद्ध हरिणीर मत,	भीषण विरहमें बाणविद्ध हरिणी सम,
तुमि करितेछ छट्पट्--	तुम छटपटा रही,--
बसि निज गृहे,–ज्वलितेछ निशिदिन ।	बैठ निज घरमें,–जल रही निशिदिन ।
गुणमणि तव,--हये जर्ज्जरित,	गुणमणि तुम्हारे,–होकर जर्जरित
कृष्ण-विरह-दहने--	कृष्ण-विरह-ज्वालामें--
ज्वलिछेन सर्व्वक्षण ।	जल रहे सर्वक्षण ।
ह'ये ज्ञानशून्य, गभीर रात्रिते,--	होकर ज्ञानशून्य, गहन रात्रिमें
कृष्ण-अन्वेषणे जेते,	कृष्णान्वेषणके लिये जानेके लिये,
पथ नाहि पेये,–मन्दिरेर भिते,--	पथ नहीं पाकर,–मंदिरकी भीतसे,--
घसि मुखारविन्द ताँर,--	रगड़ निज मुखारविन्द,--
चाँदवदने करेछेन क्षत ।	चन्द्र-मुखमण्डलपर कर लिया है घाव ।
देखे प्राण फेटे जाय,	देख प्राण फटे जाते,
चेना नाहि जाय ताँरे,--	पहचाने जाते न वे,--
जीर्ण-शीर्ण कलेवर,--	जीर्णशीर्ण कलेवर,--
आँखि छल-छल,--	नयन करते छल-छल,--
म्रियमाण सदा वदन-सरोजे ।	परिम्लान वदनसरोज सदा ।
निद्रा नाइ रात्रे ताँर,	नींद नहीं रातमें उनको,

महादुखी जेन देखिलाम तारे ।
सखि ! ए बड़ रहस्यपूर्ण
लीला तोमादेर,
मर्म्म नाहि बुझि मोरा ।
तिनि राधा-नामे जान मूर्च्छा अनुक्षण,
तुमि सखि ! हओ आपनहारा,
गौरनाम शुने काने;
अबोधिनी नारी मोरा,
मर्म्म नाहि बुझि ए लीलार ।
तिनि चान तोमा,—तुमि चाओ तारे——
इथे नाहिक संशय ।
मने हय मोर,——
करि विरहेर भान,——
अन्तरेते मिलनेर सुख,
कर अनुभव तोमा दोंहे ।
दुख तव, दुख ब'ले
मने नाहि हय ।
विचित्र ए भजनपन्था,——
अकथ्य कथन,
शिखाइले कलिजीवे तोमा दुइजने
जीव-शिक्षा तरे,
ए सब लौकिकी लीला अभिनय;
इहार मर्म्म बुझा भार ।
बुझितेछि तबे किछु किछु——
कृपाबले तव;
श्रीकृष्ण-प्राप्तिर,
विरहइ उत्कृष्ट उपाय ।
भजनेर उच्च अङ्ग इहा,——
शेष सीमा इहा,——
स्वयं आचरिया दुइ जने,

महादुःखी समान देखा मैंने उनको ।
सखि ! यह अतिशय रहस्यपूर्ण
लीला तुमदोनोंकी,
मर्म न समझतीं हम ।
वे राधा-नामसे होते मूर्च्छित अनुक्षण,
तुम सखि ! अपनी सुध खो देती,
गौरनाम कानसे सुन;
अबोध बालाएँ हम,
मर्म नहीं समझतीं इस लीलाका ।
वे भजते तुमको,—तुम भजतीं उनको——
इसमें नहीं संशय ।
मनमें आता मेरे,——
कर अनुभव विरहका,——
अन्तरमें मिलन-सुख,
करते हो अनुभव तुम दोनों ।
दुःखको तुम्हारे, दुःख संज्ञा देनेको
मन नहीं करता ।
विचित्र यह भजन-पद्धति,——
अनिर्वचनीय चरित्र,——
सिखायी कलिजीवोंको तुम दोनों जनने ।
जीवोंके शिक्षा-हेतु,
यह सारा अभिनय लौकिकी लीलाका;
इसका मर्म समझना दुरूह ।
कुछ-कुछ समझती हूँ तब भी——
तव कृपाबलसे;
श्रीकृष्ण-प्राप्तिका,
विरह ही उत्कृष्ट उपाय ।
भजनका मूर्धन्य अङ्ग यह,——
चरम सीमा यही,——
स्वयं आचरणकर दोनों जनने,

शिखाइले कलिहत जीवे	सिखायी कलिहत जीवोंको
अनुराग-भजन-पद्धति ।	अनुराग-भजन-पद्धति ।
शिखाइले रसेर भजन, सखि !	सिखाया रसात्मक भजन, सखि !
रसिक भकत जने ।	रसिक भक्तजनोंको ।
एइ रसेर भजने, सखि !	इस रसात्मक भजनमें सखि !
"श्रीविष्णुप्रिया-गौर" नाम	"श्रीविष्णुप्रिया-गौर" नाम
कलिजीवेर हृदे,	हृदयमें कलिजीवोंके,
हल दृढ़ाङ्कित;	हो गया अंकित दृढ़ रूपसे;
नदीयायुगल भजन-अंकुर	नदियायुगल-भजनांकुर
रोपिले तुमि निज हस्ते सयतने ।	रोपा है तुमने निज हाथोंसे यत्न सहित ।
"रसराज-महाभाव दुइ एकरूप"	"रसराज-महाभाव,—दोनों एकरूप"
—शिखाइले एइ महत्तत्त्व,	—इस महान्‌तत्त्वकी शिक्षा दी,
तुमि कलिजीवे ।	तुमने कलिजीवोंको ।
नवद्वीप धामे,	नवद्वीप-धाममें,
हवेन आविर्भाव गुणमणि तव,	होंगे आविर्भूत गुणमणि तुम्हारे,
मूर्त्तिरूपे ।	प्रतिमारूपमें ।
वसिबे युगले तुमि सखि !	युगलरूपमें बैठोगी तुम सखि !
ताँर सने,	उनके साथ,
प्राण भरि हेरिब मोरा	जी भर निहारेंगी हम सब
नदीयायुगल ।	नदिया-युगलको;
नदेवासी नरनारी प्रेमभरे,	नदियानिवासी नरनारी, भर प्रेममें
करिबे आरति;	करेंगे आरती,
प्रेमानन्दे हवे पूर्ण नवद्वीप ।	प्रेमानन्दसे भर जायगा नवद्वीप ।
गौराङ्गेर युगल-भजन,	युगल-भजन गौराङ्गका,
हवे इहा ह'ते प्रचारित,—गृहे गृहे;	होगा इससे प्रचारित,—घर-घरमें;
उठिबे उथलि नवद्वीप-रससिन्धु,	उछल उठेगा नवद्वीप-रससिन्धु,
भक्तवृन्द-हृदे ।	भक्तवृन्द-हृदयमें ।
पाइबे परमानन्द सर्व्वजीवे,	सब जीव पायेंगे परमानन्द,
गौर-विष्णुप्रिया युगल मूरति,	गौर-विष्णुप्रिया-युगल-मूर्त्ति
गृहे-गृहे हइबे पूजित;	पूजित होगी घर-घरमें;

हबे परिपुष्ट नदीयानागरी भाव
कलिजीव हृदे ।
सखि ! तव कृपाबले,
पाबे पूर्ण अधिकार स्त्री-शूद्रे,
ए महासाधनाय–ए महापूजाय ;——
वैष्णवगृहिणी हबे पूजारी ठाकुर ।
वैष्णवेर शक्ति तारा,
भक्तिरूपिणी नारी,——अयाचितभावे
बिलाबेन गृहे गृहे
प्रेम-भक्ति निधि ।
आमि दिव्य चक्षे देखितेछि इहा
बलिनु तोमारे सखि !
श्रीविष्णुप्रिया—(अन्यमनस्कभावे)
हा नाथ ! हा प्राणवल्लभ !
बुक जे फेटे गेल,
शुनि तव कठोर भजनकथा ;
गृहे ब'से आमि–तुमि वृक्षतले,
सहितेछ कत कष्ट
कलिहत जीव उद्धारेर तरे ।
हतभागिनी आमि,——
हयेछि वञ्चित,
श्रीचरण-सेवा-कार्य्ये तव ।
हा अदृष्ट ! मृत्यु मोर छिल भाल
इहा ह'ते ।
सखि काञ्चने !
कि कथा शुनाले तुमि मोरे आजि ?
हा नाथ ! हा गौराङ्ग !
हा हतविधि !
एइ मोर लिखेछिले भाले ?
(मूर्छा ओ भूतले पतन)

नदियानागरी-भाव होगा परिपुष्ट,
कलियुगी जीवोंके हृदयमें ।
सखि ! तव कृपासे,
पायेंगे पूर्ण अधिकार स्त्री-शूद्र
इस महासाधनमें–इस महापूजामें ;——
वैष्णवगृहिणी होगी ठाकुर-पुजारिणी ।
वैष्णवोंकी शक्ति वे
भक्तिरूपिणी नारी,——अयाचित भावसे
वितरण करेंगी घर-घरमें
प्रेमभक्ति-निधिको ।
मैं दिव्य चक्षुओंसे देख रही हूँ यह,
कह दिया तुमको सखि !
श्रीविष्णुप्रिया——(अन्यमनस्क भावसे)
हा नाथ ! हा प्राणवल्लभ !
छाती तो फट गयी,
तुम्हारे कठोर भजनकी बात सुनकर,
घरमें विराजती मैं–तुम नीचे वृक्षके,
सह रहे कितना कष्ट
कलिहत जीवोंके उद्धारके लिये ।
हतभागिनी मैं——
हो गयी हूँ वञ्चित,
तव श्रीचरण-सेवा-कार्यसे ।
हा अदृष्ट ! मृत्यु मेरे लिये अच्छी थी
इससे ।
सखि काञ्चने !
कैसी बात मुझे आज तुमने सुनायी ?
हा नाथ ! हा गौराङ्ग !
हा हतविधि !
यही लिखा था तुमने भालमें मेरे ?
(मूर्छा और भूतलपर गिरना)

(काञ्चना ओ अमिता दुइ पार्श्वे उपवेशन एवं व्यजन)	(काञ्चना और अमिताका दोनों पार्श्व-में बैठना और पंखेसे हवा करना)
काञ्चना—(निज मने)	**काञ्चना**—(स्वगत)
भाल काज करि नाइ आमि,—	अच्छा काम किया नहीं मैंने,—
ब'ले कठोर भजन कथा ताँर,	कहकर कठोर भजन-कथा उनकी,
विरहिणी विष्णुप्रिया काछे;	विरहिणी विष्णुप्रियाको;
लेगेछे आघात कोमल प्राणे ताँर,	लगा है आघात कोमल प्राणोंमें उनके,
ताइ सखि मोर हलेन मूर्च्छित।	इसीसे सखी मेरी मूर्च्छित हुई है।
किंतु कि करिब आमि ?	किंतु क्या करूँ मैं ?
जानि,—बलिबार कथा नहे ताहा;	जानती हूँ,—कहनेकी बात नहीं वह;
श्रीविष्णुप्रिया पूर्ण शक्ति ताँर,	श्रीविष्णुप्रिया पूर्ण शक्ति उनकी,
अविदित किछु नाइ ताँर;	अविदित कुछ नहीं उनको,
मोरे दिये बला'लेन सखि	मेरे द्वारा कहलाया सखीने,
ताँर गुणमणिर कठोर भजन कथा।	अपने गुणमणिके कठोर भजनकी बात।
साजाइये दुती मोरे,	बनाकर दूती मुझे,
पाठालेन नीलाचल धामे	भेजा नीलाचल धाम
कठोर भजनकथा ताँर,	कठोर भजन-कथा अपनी
बलिते प्राणवल्लभे;	सुनाने प्राणवल्लभको;
एबे करि उपलक्ष्य मोरे	अब बना निमित्त मुझको
शुनिलेन स्वयं	श्रवण किया स्वयं
ताँर प्राणवल्लभेर कठोर भजन वार्त्ता	निज प्राणवल्लभकी कठोर भजन-वार्त्ता
सब एके-एके।	सब एक-एक।
दुँहे जाने दुँहु मनोभाव,	दोनों जानते हैं मनोभाव दोनोंका,
दोंहार भजन-रीति;	दोनोंकी भजनरीति;
माझखान थेके,	बीचमें रख
दोषेर भागी करिलेन मोरे।	दोषका भागी बनाया मुझे।
इहा मोर करमेर फल,	यह मेरा कर्म-फल,
अदृष्टेर दोष;	भाग्य-दोष;
अपराधिनी आमि,	अपराधिनी हूँ मैं,

ताइ एत उद्वेग दिनु दुइ जने ।

(क्रन्दन)

अमिता–

सखि ! क'र ना क्रन्दन एखन ;
कर मूर्च्छाभङ्ग सखीर
क'ये गौरकथा-रसमयी वाणी ।
गौर-गुणगान गेये,
कर प्राणदान ताँर,
एखन वृथा आलापने नाइ प्रयोजन ।

(उभये समवेत)

गीत

गौर-गौराङ्ग ब'ले
डाक देखि मन,
एकटि बार ।
डाक्‌ले ताँरे, जाबि त'रे
भवसिन्धु पारावार।
त्रितापेर जावे ज्वाला,
(तोदेर) जावे हाहाकार ।
गौर - गौराङ्ग ब'ले—
नाच् देखि मन बाहु तुले,—
देखा देवे गौर एसे,
जावे दुखभार ।
गौर आमार
एमनि अवतार
(दयार अवतार)
अनुरागे डाक्‌ले तारे;
आदर क'रे कोले क'रे
प्रेम दिवे हृदि भ'रे,
(गौर आमार)
प्रेम-पारावार ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(मूर्छाभङ्गे काँदिते-काँदिते)
सखि काञ्चने ! सखि अमिते !

इसीसे इतना उद्वेग दिया दोनोंको ।

(क्रन्दन)

अमिता–

सखि ! करो न क्रन्दन इस समय;
सखीकी मूर्च्छा दूर करो,
बोलकर गौर-कथा-रसमयी वाणी ।
गौर-गुणगान गाकर
करो प्राणदान इनको;
इस समय व्यर्थ चर्चाका प्रयोजन नहीं ।

(दोनोंका एक साथ गाना)

गौर बोल गौराङ्ग उचार,
करले। मन अवलोकन केवल,
उन्हें एक ही बार ॥
उन्हें बुलाकर, जायेगा तर
संसृति-पारावार अपार ।
त्रयतापानल होगा शीतल,
विगत तुम्हारा हाहाकार ॥
गौर बोल गौराङ्ग उचार,
भुजा उठा मन ! नाच निहार
गौर स्वयं आ दर्शन देंगे ।
होगा विलय दुःख गुरु-भार ॥
मेरे गौर-चन्द्रमाका है,
यही रूप ऐसा अवतार,
करुणाके वे हैं अवतार ।
उनको सस्नेह बुलाने पर,
गोदीमें भर लेते सादर ॥
फिर देंगे प्रेम हृदयमें भर ।
मेरे गौर चन्द्रमा अनुपम;
परम प्रेमको पारावार ॥

श्रीविष्णुप्रिया—

(मूर्छाभङ्ग, होनेपर रोते-रोते)
सखि काञ्चने ! सखि अमिते !

तोमरा दुइजने,	तुम दोनोंने
शुनाइये मोरे गौरनाम अनुक्षण,	सुनाकर गौर-नाम मुझको अनुक्षण,
ब'ले दिवानिशि गौरकथा,	कहकर गौरकथा दिवानिशि,
रेखेछ प्राण मोर;	रखा है प्राणोंको मेरे,
किनिया रेखेछ मोरे, चिरदिन तरे।	लिया है खरीद मुझे, चिर दिनके लिये,
ऋण तोमादेर,	ऋण तुमलोगोंका,
शोधिते नारिब आमि, ए जीवने;	सकूंगी उतार नहीं मैं इस जीवनमें;
गौर-कथार अफुरन्त उत्स	गौरवार्ताका झरना अटूट,
तोमा दोहाकार हृदयकमल।	हृदयकमल तुम दोनोंका।
गौरलीला-सहायिनी तोमा दोहे,—	गौरलीला-सहायिका दोनों तुम,—
नवद्वीप-रससिन्धु प्रवाहित अविरत	नवद्वीप-रससिन्धु अविरत प्रवाहित
हृदे तोमादेर।	हृदयमें तुम्हारे।
एक बिन्दु तार,—केह यदि पाय,—	एक बूंद उसकी,—कोई यदि पाये,—
हबे तारा प्रेमिक सुजन,—	होगा वह प्रेमिक सुजन,—
हबे तारा पतितपावन;	होगा वह पतितपावन;—
तारा तारिबे त्रिभुवन	तारेगा त्रिभुवन वह,
तोमादेर कृपाबले।	तुम्हारी कृपाशक्तिसे।
हबे प्रचारित प्रेमभक्ति कलियुगे—	होगी प्रचारित प्रेमभक्ति कलियुगमें—
नदीया-नागरी ह'ते;	नदियानागरीसे;
हबे नवद्वीप-रसपुष्टि	पुष्टि होगी नवद्वीप-रसकी,
तोमादेर द्वारा पूर्णभावे।	द्वारा तुम्हारे पूर्णभावसे।
ह'ये अनुगा तोमादेर	अनुगा तुम्हारी बन—
नदीया-नागरी-भावे	नवद्वीप-नागरी-भावसे
जे करिबे गौराङ्ग-भजन,	करेंगी जो गौराङ्ग-भजन,
तार प्राप्त हबे निश्चय गौराङ्गचरण;	प्राप्त होंगे उनको निश्चय गौराङ्ग-चरण;
प्रेमेर ठाकुर प्रेममय श्रीगौराङ्ग	प्रेमके ठाकुर प्रेममय श्रीगौराङ्ग
प्रेमे बाँधा रहे चिरदिन	प्रेममें बँधकर रहेंगे चिरदिन
गृहेते तादेर।	घरमें उसके।
प्रेममयी,—प्रेमवती नारी तुमि सबे,	प्रेममयी,—प्रेमवती नारी तुम सब,
प्रेमधन तोमादेर स्त्रीधनस्वरूप;	प्रेमधन तुम्हारा समान स्त्रीधनके;

अकातरे कर सखि ! निजधन-दान	खुले हाथ करो सखि ! निजधन-दान
अयाचित भावे जने जने ।	अयाचित भावसे जन-जनको ।
दाओ पूर्ण तृप्ति	दो पूर्ण तृप्ति
कलिजीवेर अतृप्त हृदये,--	कलियुगी जीवोंके अतृप्त हृदयको,--
दाओ पूर्ण शक्ति तादेर अशान्त पराणे;	भरो पूर्ण शक्ति अशान्त प्राणोंमें उनके;
पतितपावनी शक्ति आर प्रेमभक्ति	पतितपावनी शक्ति और प्रेमभक्तिका
परिपूर्ण भावे करह संचार	परिपूर्णभावसे करो संचार
प्रति कलिजीव हृदे ।	प्रति कलियुगी जीवके हृदयमें ।
कलिहत जीव नानाभावे	कलिहत जीव नाना भावसे
उपद्रुत बड़;	पीड़ित अति;
शोक-ताप-दुखे नियत	शोक, ताप, दुःखमें जकड़े हुए,
जर्ज्जरित तारा ।	जर्जरित वे ।
शान्तिदान कर प्राणेते तादेर ।	शान्ति-दान करो उनके प्राणोंमें ।
नीच, दरिद्र, मूर्ख, पतित	नीच, दरिद्र, मूर्ख, पतित,
दीन, दुखीजने	दीन, दुःखी जनोंको
कृपा करि कर प्रेमदान;	कृपा करके करो प्रेमदान;
नाम-प्रेम-दान-कार्य	नाम-प्रेम-दान-कार्य
साधिबेन मोहान्त वैष्णवगणे----	सम्पादित करेंगे महन्त वैष्णवगण--
एइ कलियुगे तोमादेर हात दिये ।	इस कलियुगमें तुम्हारे हाथोंके द्वारा ।
तुमि सबे श्रीवैष्णव-गृहिणी	तुम सब श्रीवैष्णव-गृहिणी,
श्रीवैष्णवी शक्ति तुमि सबे	श्रीवैष्णवी शक्ति तुम सब
धर जने-जने;	मूर्त्त हो जाओ जन-जनमें;
सेइ शक्तिर प्रभावे, गौराङ्ग-कृपाय	उसी शक्तिके प्रभावसे गौराङ्ग-कृपा ले
हबे विश्वजयी नदीया-नागरी-गणे ।	होंगी विश्वजयी नदियानागरीगण ।
गौर-लीला-सहायिनी ब'ले,	गौरलीला-सहायिनी जान,
मोहान्त महाजनगणे,--	महन्त महाजनगण,--
आचार्य्य-संतान सबे,--	सब संतान आचार्योंके,--
करिबेन सन्मान तोमादेर;	सम्मान करेंगे तुमलोगोंका;
नदीयानागरी सबे	नदियानागरी सब
पाबे उच्च स्थान व्रजनारी मत	पायेंगी उच्च स्थान व्रजललना सम

गौरभक्तमण्डल माझे ।
प्रीति-भालबासा-डोरे,
बेंधेछ तुमि सबे प्रेमेर ठाकुरे;
तुमि सबे मूर्त्तिमती प्रेम;
ल'ये ताँके विकि-किनि,
करिते पार प्रेमेर हाटेते अनायासे ।

काञ्चना—
सखि ! कहिओ ना अत कथा तुमि,—
नाहि बल देहे तव,
पेटे नाइ अन्न;
मूर्च्छित हइबे तुमि पुनः ।
शान्त कर चित,—सुस्थ कर मन—
सखि ! ल'ये तव नाम मोरा,
हब विश्वजयी,—से कथा निश्चित्;
श्रीविष्णुप्रिया-माहात्म्य
हबे प्रचारित एइ कलियुगे ।
गौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजने
त्रितापदग्ध कलिहत जीवेर प्राणे
चिरशान्ति विराजिबे ।
बुझियाछे तारा गौरतत्व,—
गौरलीला,—
एखन श्रीविष्णुप्रिया-तत्व
एवं लीला ताँर, बुझाइते हबे;
गौर-विष्णुप्रिया-युगलभजने
अधिकार पाबे सर्व्वजीवे ।

(प्रस्थान)

गौरभक्त-मण्डलमें ।
प्रीति-अनुरागकी डोरीमें
बाँध लिया तुम सबने प्रेमके ठाकुरको,
तुम सभी हो मूर्त्तिमान प्रेम,—
ले जाकर उनको, क्रय-विक्रय
कर सकती हो प्रेमके हाटमें अनायास ।

काञ्चना—
सखि ! करो न बात इतनी तुम,—
बल नहीं तनमें तव,
अन्न नहीं पेटमें;
मूर्च्छित हो जाओगी पुनः तुम ।
शान्त करो चित्त,—स्वस्थ करो मन—
सखि ! ले तुम्हारा नाम हम सब,
विश्वजयी होंगी,—यह बात निश्चित;
श्रीविष्णुप्रिया-माहात्म्य
होगा प्रचारित इस कलियुगमें ।
गौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजनसे
त्रितापदग्ध, कलिहत जीवोंके प्राणोंमें
विराजेगी चिर शान्ति ।
समझा है उन्होंने गौर-तत्त्व,—
गौर-लीला,
इस समय श्रीविष्णुप्रिया-तत्त्व
तथा लीला उनकी, समझानी होगी;
गौर-विष्णुप्रिया-युगल-भजनमें
अधिकार पायेंगे सब जीव ।

(प्रस्थान)

षष्ठ अङ्क ।

(द्वितीय गर्भाङ्क)

दृश्य—श्रीगौराङ्ग-भवन—श्रीविष्णुप्रिया-
देवीर शयन-मन्दिर—देवीर भूमि-
शय्या हइते उत्थान ।

(काञ्चनार प्रवेश)

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि ! एसेछ,
ब'स काछे मोरे;
मने बड़ पाइ सुख देखिले तोमारे ।
बलि, शुन आजिकार स्वप्नेर कथा—
गुणमणि मोर,
नदीयानागरवेशे, हइये प्रकाश,
सन्मुखेते मोर,—एइ गृहे,—
कहिलेन मोरे, धीर-गम्भीर स्वरे—
"कर मूर्त्तिपूजा तुमि मोर,—
स्वरूपज्ञानेते ।
जन्म मोर निम्बवृक्ष तले,—
सेइ निम्बवृक्ष दिये,
प्रतिमूर्त्ति मोर करह गठन;
हब आविर्भाव ताते आमि ।"
सखि ! एखनओ से कण्ठध्वनि
बाजिछे कानेते मोर,
गीतेर रागिणी मत सुमधुर;
आरओ बलिलेन तिनि
दिते एइ कार्य्यभार
ताँर प्रियजन वंशीवदनेर उपर ।

दृश्य—श्रीगौराङ्गभवन—श्रीविष्णुप्रियादेवी -
का शयन-मन्दिर—देवीका भूमिकी
शय्यासे उठना ।

(काञ्चनाका प्रवेश)

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि ! आयी हो,
बैठो पास मेरे;
मनमें होता सुख बहुत देखकर तुमको ।
कहती हूँ, सुनो आजके स्वप्नकी कथा;
मेरे गुणमणिने,—
होकर प्रकट, नदियानागरवेशमें,
सम्मुख मेरे,—घरमें इसी,—
कहा मुझसे, धीर-गम्भीर स्वरमें,
"करो मूर्त्ति-पूजा तुम मेरी,—
स्वरूप-ज्ञानपूर्वक ।
जन्म मेरा निम्ब वृक्ष-तलमें,—
उसी निम्बवृक्षसे
प्रतिमा गढ़ाओ मेरी,
होऊँगा मैं आविर्भूत उसमें ।"
सखि ! अब भी वह कण्ठध्वनि
गूँज रही है कानोंमें मेरे,
गीतकी रागिनी-सी सुमधुर;
और भी बोले वे—
रखनेको भार इस कामका,
उनके प्रियजन वंशीवदनके ऊपर ।

सखि ! जाओ तुमि, काछे ताँर अविलम्बे,
कहि स्वप्न–वृत्तान्त मोर,–ब'ल ताँके,–
कार्य्यसिद्धि हय जेन,
एक पक्ष मध्ये ।

काञ्चना—

सखि ! बुझिनु आमि
गुणमणिर वाक्य तव हइल सफल;
हबे आविर्भाव ताँर,
नदीयाय अविलम्बे,——
मूर्त्ति उपलक्ष्य मात्र ।
सखि ! जाइ आमि,
ठाकुर वंशीवदनेर काछे,
दिये गिये ए शुभ संवाद ।
(प्रस्थान)

(वहिर्वाटीते वंशीवदन ओ काञ्चना)

काञ्चना—

ठाकुर वंशीवदन !
एसेछि तव काछे,
सखीर आदेशे आमि,——
शुन मन दिया
नवद्वीपेश्वरीर आदेश तव प्रति;
देखेछेन स्वप्न तिनि
आजि रात्रिशेषे,–
हबेन आविर्भाव नवद्वीपचन्द्र
नदीयाय मूर्त्तिरूपे ।
जन्म ताँर निम्बवृक्ष-मूले,
ताइ हयेछे आदेश——
हइबे गठन दारुमूर्त्ति ताँर

सखि ! तुम जाओ पास उनके अविलम्ब,
वृत्तान्त स्वप्नका मेरे कह,–बोलो उन्हें,–
कार्य-सिद्धि हो जिससे,
एक पक्षमें ।

काञ्चना—

सखि ! समझ गयी मैं,
वाणी तव गुणमणिकी हो गयी सफल;
होगा आविर्भाव उनका,
अविलम्ब नदियामें,——
मूर्त्ति उपलक्ष मात्र ।
सखि ! जाती हूँ मैं,
ठाकुर वंशीवदनके पास,
दूँ जाकर यह शुभ संवाद ।
(प्रस्थान)

(वाहरी घरमें वंशीवदन और काञ्चना)

काञ्चना—

ठाकुर वंशीवदन !
आयी हूँ तुम्हारे पास,
सखीके आदेशसे मैं,——
सुनो ध्यानपूर्वक
नवद्वीपेश्वरीका आदेश तुम्हारे प्रति;
स्वप्न उन्होंने देखा है
आज पिछली रातमें,——
होंगे प्रकट नदियाचाँद
मूर्त्तिके रूपमें नदियामें ।
जन्म उनका निम्बवृक्ष-मूलमें,
इसीसे आदेश हुआ——
दारुमूर्त्ति उनकी गढ़ी जायगी

सेइ वृक्ष ह'ते ।	उसी वृक्षसे ।
मूर्त्ति-निर्म्माण ओ प्रतिष्ठार भार	मूर्त्ति-निर्माण और प्रतिष्ठाका भार
दियेछेन सखि मोर तोमार उपर	रखा है सखीने मेरी ऊपर तुम्हारे
गौराङ्ग-आदेशे ।	गौराङ्ग-आदेशसे ।
डाकिया भास्कर उत्तम,—	बुला उत्तम मूर्त्तिकार,--
कर समाधान तुमि,–शुभ कार्य्य एइ,	करो सम्पन्न तुम,–शुभ कार्य यह,
एक पक्ष मध्ये ।	एक पक्षमें ।
वंशीवदन--	**वंशीवदन--**
देवी काञ्चने !	देवि काञ्चने !
आमिओ देखेछि रात्रिशेषे आजि	मैंने भी देखा है पिछली रात आज
अविकल एइ स्वप्न ।	सर्वथा यही स्वप्न ।
मरि केंदे स्वप्न देखे आमि,	मरता हूँ रो-रोकर स्वप्न देख मैं,
भावितेछिनु मने प्रतिक्षणे,	सोच रहा था मनमें प्रतिक्षण--
कखन आसिबे तुमि,—बलिब तोमाय,	कब आओगी तुम,--कहूँगा तुमको
समाचार दिते अन्तःपुरे ।	समाचार देनेको अन्तःपुरमें ।
बड़ शुभ दिन आजि मोर;	बड़ा शुभ दिन आज मेरा;
शिरे धरि नवद्वीपेश्वरीर आदेश,	सिर धर आदेश नवद्वीपेश्वरीका,
जेतेछि आमि अविलम्बे,	अविलम्ब जाता हूँ मैं,
भास्करेर काछे ।	पास मूर्त्तिकारके ।
हबे कार्य्यसिद्धि देवीर कृपाय	होगी कार्यसिद्धि कृपासे देवीकी,
चिन्ता नाहि ताँर;	चिन्ता नहीं करें वे;
चाहि ताँर आज्ञामात्र,–	आज्ञामात्र उनकी अपेक्षित,--
एइ आशाय,–ब'से ब'से गृहे ताँर	इसी आशासे--बैठे-बैठे घर उनके
काँदितेछि निशिदिन ।	रो रहा हूँ रात दिन ।
हयेछेन भक्तगण ओ अत्यन्त व्याकुल,	हो गये हैं भक्तगण भी व्याकुल अत्यन्त,
श्रीविष्णुप्रियावल्लभेर श्रीमूर्त्ति-	श्रीविष्णुप्रियावल्लभकी श्रीमूर्त्तिके
प्रतिष्ठार तरे एइ नवद्वीपे ।	प्रतिष्ठा-हेतु इस नवद्वीपमें ।
किन्तु देवीर आदेश बिना,	आज्ञा बिना देवीकी किंतु,
कार साध्य करे एइ काज ?	किसकी सामर्थ्य, करे काज यह ?
एखन पेयेछि आदेश,	अब प्राप्त हुआ है आदेश,

जाइ,—दित ए शुभ संवाद
नदीयार भक्तगणे ।

प्रस्थान

(ईशानेर प्रवेश)

ईशान—(स्वगत)
शुनितेछि, नदीयाय
हबे मूर्त्तिपूजा नवद्वीपचन्द्रेर ;
मूर्त्ति लये ताँर कि करिब आमि ?
गृहेर पालित कुक्कुर आमि ताँर,
ह'ते अति शिशुकाल देखेछि ताँहारे;
बाल्य,—पौगण्ड,—कैशोर लीला ताँर
भासितेछे निशिदिन,
नयन उपरे मोर ।
देखेछि शुभ परिणय ताँर,—दुइबार,—
सेइ ताँर ढ्ल ढ्ल चञ्चल नयन,
कनक-केतकी सम—
सेइ ताँर भ्रमरकृष्ण
घन कुञ्चित कुन्तल
पड़ेछे चिरसुन्दर वदन उपर ।
सेइ ताँर सुवलित,
आजानुलम्बित बाहुर दोलनि,—
परिसर पीन वक्षस्थल,—
रातुल कमल-चरणद्वय,—
भासिछे मोर नयन उपरे निरन्तर;
रयेछे अङ्कित हृदयेर स्तरे-स्तरे ।
जग-जन-मनलोभा सेइ सुन्दर मूरति ,
भूलिबार वस्तु नहे ताहा,
गठनेर वस्तु नहे ताहा,
भास्करेर साध्य कि

जाऊँ,—शुभ संवाद देने यह
नदियाके भक्तगणको ।

प्रस्थान

(ईशानका प्रवेश)

ईशान—(स्वगत)
सुन रहा हूँ, नदियामें
होगी मूर्त्तिपूजा नवद्वीपचन्द्रकी;
मूर्त्ति लेकर उनकी क्या करूँगा मैं ?
घरका पालतू कुत्ता मैं उनका,
देखा है उनको शैशवारम्भसे;
बाल्य,-पौगण्ड,-कैशोर लीला उनकी
नाचती है निशिदिन,
नयनोंके आगे मेरे ।
देखा है शुभ परिणय उनका,—दो बार,—
वे ही उनकी छलछलाती चपल आँखें,
कनक-केतकी समान;
वही उनकी भ्रमरासित
घन कुञ्चित कुन्तल-राशि
झूलती हुई चिरसुन्दर वदनपर ।
वही उनकी सुगोल,
आजानुलम्बित भुजाओंका दोलन;
पीन, विशाल वक्षःस्थल,
अरुण कमल-चरणद्वय,—
नाचते हैं आगे मम नयनोंके निरन्तर,
रहते हैं अंकित हृदयकी तह-तहपर ।
जग-जन-मन-लोभी वह सुन्दर मूर्त्ति,—
भूलनेकी वस्तु नहीं वह,—
गढ़नेकी वस्तु नहीं वह;
भास्करकी शक्ति क्या

से मूर्त्तिर करिते गठन ?	गढ़ सके मूर्त्ति वह ?
श्राछे विधि मूर्त्ति-पूजा	है विधान मूर्त्ति-पूजाका
श्रप्रकटकाले ;	श्रप्रकटकालमें ;
जगतेर नाथ,–त्रिलोकेर नाथ––	जगत्के स्वामी,–नाथ त्रिलोकीके––
नवद्वीपचन्द्र प्रकट एबे नीलाचले,	नवद्वीपचन्द्र प्रकट इस समय नीलाचलमें,
तबे केन ताँर मूर्त्ति पूजार व्यवस्था ?	तब मूर्त्ति-पूजाकी उनकी व्यवस्था क्यों ?
के दिल ए विधि ?	किसने दिया यह विधान ?
किछु नाहि बुझि ।	कुछ नहीं जानता ।
शुनितेछि स्वप्नादेश इहा ;	सुनता हूँ है स्वप्नादेश यह ;
किन्तु शङ्का हय मने मोर,	किंतु, शङ्का होती है मनमें मेरे,
गणि श्रमङ्गल श्रामि एइ काजे ।	दीखता श्रमङ्गल मुझे इस काममें ।
किन्तु बलिते पारि ना किछु,––	किंतु, कह सकता हूँ कुछ नहीं,––
देवीर श्रादेश,––	देवीकी श्राज्ञा,––
बलितेछे सबे,––प्रभुरश्रो श्रादेश ।	कहते हैं सभी,––प्रभुका भी श्रादेश ।
एइ श्राङ्गिनाय,––श्रोइ घरे,––	इसी श्राँगनमें––उसी घरमें,––
श्रोइ गङ्गातीरे,––श्रीवास-श्रङ्गने,––	उसी गङ्गातटपर,––श्रीवास-श्राँगनमें,––
एइ नित्यधाम नदीयाय,––	इसी नित्यधाम नदियामें––
स्वयंप्रकाश श्रीनवद्वीपचन्द्र ;	स्वयं व्यक्त श्रीनवद्वीपचन्द्र ;
चक्षु श्राछे जार,	श्राँखें हैं जिसको,
भाग्यवान जेइ,––देखितेछे सेइ,	भाग्यवान् जो,––देखता है वही,
ह'ते श्रनादि श्रनन्तकाल	श्रनादिसे श्रनन्तकालतक
नित्यलीला ताँर प्रकट एइ नदीयाय ।	नित्यलीला उनकी प्रकट इस नदियामें ।
श्रामि श्रधम कुक्कुर ए वाटीर,	मैं श्रधम कुक्कुर इस घरका,
श्रस्पृश्य,––पामर–मूर्ख––	श्रस्पृश्य,––पामर,––मूर्ख,
के शुनिबे मोर कथा ?	सुनेगा कौन मेरी बात ?
देखितेछि दिव्य चक्षे श्रामि,	देखता हूँ दिव्य चक्षुश्रोंसे मैं,
एइ कार्य्य शेषे,–	यह कार्य होनेपर सम्पन्न,––
दयामयी ठाकुरानी मोर, हबेन श्रदर्शन ;	स्वामिनी दयामयी मेरी, होगी श्रंतर्धान ;
डुबिबे श्राँधार नदीया श्राँधारे पुनराय ।	डूबेगी श्रँधेरी नदिया पुनः श्रन्धकारमें ।
हे गौराङ्ग ! गुणनिधि !	हे गौराङ्ग ! गुणनिधि !

एइ वर दाओ तुमि मोरे;
तार अग्रे ए शरीर नाश जेन हय।
तव अदर्शन-दुःख,
तव वृद्धा जननीर मुख चेये,—
ठाकुरानीर श्रीचरण चेये
सहेछि अकातरे आमि।
पुण्यवती माता तव,
गेछेन चलिया स्वधामे,
एखन छले ओ कौशले
टानितेछ तुमि मोर दयामयी माके,
नित्यधामे;—इहा बुझितेछि आमि।
ह'ल तव लीला साङ्ग बुझि
ओहे लीलामय!
हे कौशलि!
ताइ विस्तारिछ तुमि,
ए कौशल-जाल;
जाहा कर तुमि,—
सर्व्वोत्तम,—मङ्गलमय।
किन्तु अबोध, पामर, अभाजन आमि,
तव गृहे उच्छिष्टभोजी,
कुक्कुर नरपशु,—
लीलामयेर लीलामर्म्म
कि बुझिब आमि?

(भास्कर-सङ्गे श्रीमूर्त्ति लइया वंशी-वदनेर प्रवेश)

वंशीवदन—

देख देख, चेये देख,
कि सुन्दर मूर्त्ति मनोहर,
श्रीनवद्वीचन्द्र जेन हलेन आजि,
मर्त्तिरूपे नवद्वीप-गगने उदय,

यही बर मुझको दो तुम—
पहले उनके जिससे हो नाश इस शरीरका।
तुम्हें न देख पानेका दुःख,
तव वृद्धा जननीका मुख देख,—
स्वामिनीके देख श्रीचरण,—
हुए बिना कातर सहा है मैंने।
पुण्यवती माता तुम्हारी,
चली गयीं निज धाम,
अब छल और कौशलसे
खींचते हो तुम मेरी दयामयी माँको,
नित्यधाममें,—इसको समझता मैं।
हो गयी लीला तव पूर्ण—समझ रहा,
हे लीलामय।
हे कौशलनिधान!
इसीलिये तुमने फैलाया है,
यह कौशल-जाल;
जो कुछ करते हो तुम,—
सर्वोत्तम,—मङ्गलमय।
किंतु अबोध, पामर, अपात्र मैं,
तव गृहका उच्छिष्टभोजी,
कुत्ता नरपशु,—
लीलामयका लीलारहस्य
समझूँगा क्या मैं?

(मूर्तिकारके साथ श्रीमूर्त्ति लेकर वंशीवदनका प्रवेश)

वंशीवदन—

देखो-देखो, देखो भली भाँति,
कैसी सुन्दर मूर्त्ति मनोहर;
मानो आज हुए हैं श्रीनवद्वीपचन्द्र,
उदित मूर्त्तिरूप धर नवद्वीप-गगनमें,

नवीन नागररूपे,––अपरूप वेश।
भुलाइते पुनः
नदीयावासीर मन,
नदीयानागररूपे
ह्'ल बुझि ताँर पुनः आविर्भाव।
धन्य तुमि भास्कर,
धन्य तव मूर्त्ति-निम्मर्माण-कौशल;
गौराङ्गेर नित्यदास तुमि,
परिकर तुमि प्रियतम,––
जन्म-जन्मान्तरेर पुण्यबले,
आर ताँर कृपाबले
हयेछ एइ कार्य्ये तुमि सम्पूर्ण सफल।

भास्कर––

ठाकुर ! किछु नाहि जानि आमि,
बुझि ना किछुइ;
जाँर कार्य्य,––करायेछेन तिनि,––
केशे धरि मोरे।
आज एक पक्ष ध'रे,
काँदियाछि निशिदिन आमि,
स्मरि भवाराध्य
चरणकमल ताँहार।
करि त्याग निद्राहार,
ध्यान करेछि ताँर
अपरूप रूप निरंतर,
रेखे सन्मुखे ताँहाके,
एँकेछि सयतने तुलि दिये,
ताँर श्रीमूर्त्ति मनोहर।
एखन देखि अदृष्टेर फल मोर।
मूर्त्ति यदि ठाकुरानीर हय मनोमत,––
विचारेर भार ताँर हाते।

नव नागररूपमें,––अनूप वेश।
भ्रमित करनेको पुनः
नदियावासियोंका मन,
नदियानागररूपमें,
मानो हुआ उनका पुनः आविर्भाव।
धन्य तुम मूर्त्तिकार,
धन्य तव मूर्त्ति-निर्माण-कौशल;
तुम नित्यदास गौराङ्गके,
प्रियतम परिकर तुम,––
जन्म-जन्मान्तरके पुण्यप्रतापसे,
और उनके कृपाबलसे
हुए हो पूरे-पूरे सफल इस कार्यमें तुम।

मूर्त्तिकार––

ठाकुर ! कुछ नहीं जानता मैं,
समझता न कुछ भी;
जिनका कार्य,–कराया है उन्हींने,––
केश पकड़ मेरे।
आज एक पक्षसे,
रो रहा हूँ निशिदिन मैं,
स्मरणकर शंकराराध्य
चरणकमल उनका।
निद्राहार त्यागकर,
ध्यान किया है उनके
अद्भुत रूपका निरन्तर;
रख सम्मुख उनको,
अङ्कित किया है यत्न सहित तूलीसे,
उनकी मनोहर मूर्त्ति।
इससमय देख रहा, अपने अदृष्टका फल।]
मूर्त्ति यदि स्वामिनीके मनोनुकूल हो,–
निर्णयका भार हाथ उनके।

वंशी—

ईशान ! जाओ अन्तःपुरे तुमि,
एसेछेन श्रीमूर्त्ति आङ्गिनाय—
दाओ गिये शीघ्र ए संवाद,
नवद्वीपमयी जगज्जननी माये !

ईशान—(स्वगत)

मूर्त्ति देखे भय हय मने,
करे हिया दुरु-दुरु;
हरि अमङ्गल-चिह्न चारिदिके;
जानि ना,—हय केन मन-उचाटन,
चित्त हय अस्थिर-विह्वल;
मूर्त्तिरूपे श्रीनवद्वीपचंद्र
आविर्भाव नदीयाय आजि;
केन ? किसेर कारण ?
थाकिते सचल नवद्वीपचन्द्र,
अचलेर किबा प्रयोजन ?
मूर्ख आमि—नीच आमि,
मर्म्म इहार किछु नारिनु बुझिते ।
ए कि लीलारङ्ग प्रभुर ?
ठाकुरानीर कि आछे मनेते,
किछुइ ना बुझि ।
आज्ञावह भृत्य आमि,—
जाइ काञ्चना दिदिके दिये
पाठाइ ए संवाद अन्तःपुरे ।

प्रस्थान

(भजन-कक्षे श्रीविष्णुप्रिया ओ काञ्चना)

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने ।
मन मोर बड़इ चञ्चल आजि;

वंशी—

ईशान ! जाओ अन्तःपुरमें तुम,
आयी है श्रीमूर्त्ति आँगनमें—
शीघ्र संवाद यह जाकर दो,
नवद्वीपमयी जगज्जननी माँको ।

ईशान—(स्वगत)

मूर्त्ति देख भय होता है मनमें,
करता हृदय धक्-धक्;
देखता अमङ्गल-चिह्न चारो ओर,
पता नहीं—किसलिये उचाट मन हो रहा,
चित्त होता अस्थिर-विह्वल ।
मूर्त्तिरूपी श्रीनवद्वीपचन्द्र,
आविर्भूत नदियामें आज;
किसलिये ? किस कारण ?
रहते हुए सचल नवद्वीपचन्द्रके,
भला, क्या प्रयोजन अचलका ?
मूर्ख मैं—नीच मैं,
जान नहीं पाया इसका रहस्य कुछ ।
प्रभुका यह कैसा लीलाविलास ?
मनमें क्या स्वामिनीके,
कुछ भी समझता नहीं ।
आज्ञावह भृत्य मैं,—
जाऊँ, काञ्चना दीदीद्वारा,
भेजूँ यह संवाद अन्तःपुरमें ।

प्रस्थान

(भजन-कक्षमें श्रीविष्णुप्रिया और काञ्चना)

श्रीविष्णुप्रिया—

सखि काञ्चने !
मन मेरा बड़ा चञ्चल आज;

तिले-तिले, दण्डे-दण्डे,
जाग्रते ओ सुषुप्तिते,
हेरितेछि स्वप्न आमि—
गुणमणि मोर,—नदीयानागर वेशे,—
दाँड़ाये सन्मुखे।
अपरूप रूप ताँर,—
मुखे मृदु हासि,—
करे धरि, प्रेमभरे कहिछेन रस-कथा,
काछे ब'से मोर।
कत स्नेह, भालबासा प्रीति,—
कत आशा, कत प्रेम,—
कत कथा मधु
दितेछेन कलसे-कलसे ढेले जेन,
आमार कर्णेते।
आर आमि,—धरि ताँर रातुल चरण दुँटि,
काँदितेछि शुधु अझोर नयने;
वाक्-शक्ति ह'रे गेछे मोर,
शरीर निष्पन्द—
देहभार जेन पड़े गेछे एलाइये,
रातुल चरण उपरि ताँर।
सखि! हेन दिन हबे कि आमार?
बड़ अभागिनी आमि,
राखि माथा ताँर पद तले,
नयने हेरिते-हेरिते
चाँदवदन ताँहार,
कबे आमि दिब विसर्ज्जन,
ए छार जीवन।
सखि! दुखिनी विष्णुप्रियार,
ए हेन सौभाग्य हबे कि कखन?
(क्रन्दन)

पल-पल, घड़ी-घड़ी,
जागते और सोते,
देखती हूँ स्वप्न मैं—
गुणमणि मेरे,—नदियानागर वेशमें,—
खड़े हैं सम्मुख।
अद्भुत रूप उनका,—
मुखपर मुस्कान मृदु,—
कर पकड़े, प्रेमभरे कर रहे रस-चर्चा,
पास बैठे मेरे।
कितना स्नेह, प्यार, प्रीति,—
कितनी आशा, कितना प्रेम,—
कथाका मधु कितना
मानो उँडेल रहे भर-भर कलश,
कानोंमें मेरे।
और, मैं,—पकड़ उनके अरुण चरण दोनों,
विलख रही हूँ केवल जलभरे नयनोंसे;
वाक्-शक्ति हरी गयी मेरी है;
शरीर निष्पन्द—
देह-भार मानो पड़ गया अवश होकर
उनके अरुण चरणोंपर।
सखि! ऐसा दिन आयेगा क्या मेरा?
बड़ी अभागिनी मैं,
रख मस्तक उनके पदतलमें,
नयनोंसे निहारते-निहारते
चन्द्रवदन उनका,
कब मैं विसर्जित करूँगी,
राख हुआ जीवन यह।
सखि! दुखिया विष्णुप्रियाका,
इस प्रकारका सौभाग्य होगा क्या कभी?
(क्रन्दन)

काञ्चना—
सखि ! कांदिश्रो ना,
गुणमणि तव,
मूर्त्तिरूपे दुयारे दाँड़ाये;
हयेछे सफल स्वप्नादेश ताँर,—
हइबेन ग्राविर्भूत श्रीमूर्ति रूपेते ।
नयन-रञ्जन सेइ मूर्त्ति मनोहर,
हृदि-मुग्धकर प्राण-रमण
अपूर्व्व दरशन,
देख सखि ! दाँड़ाए ग्राङ्गिनाय तव ।
दियेछिले ग्राज्ञा तुमि,
ठाकुर वंशीवदने;
दाँड़ाये दुयारे तिनि सर्व्वभक्तगण साथे;
हेरि श्रीमूर्त्ति मनोहर,
बलितेछे एकवाक्ये सर्व्वलोके,
श्रीनवदीपचन्द्र
ग्राजि उदित नदीयाय पुनः ।
सखि ! तोमार इच्छाय,
भ्राता तव यादवाचार्य्य,—
श्रीमूर्त्तिर सेवाभार करिबेन ग्रहण;
शची-ग्राङ्गिनाय गौराङ्गनागर-मूर्त्ति,
हइबे प्रतिष्ठा ग्राजि महा समारोहे ।
याचे अनुमति भक्तवृन्द सबे
तव काछे,
दाश्रो सखि ! अनुमति;
सकलि प्रस्तुत ।
नदीयाय महामहोत्सव ग्राजि,
बाल-वृद्ध-युवा नारी
हयेछे एकत्र सबे उत्सव-दर्शने ।
सखि ! देख देखि एक वार

काञ्चना—
सखि ! रोश्रो न,—
गुणमणि तुम्हारे,
द्वारपर खड़े हैं मूर्त्तिरूपमें;
हुआ है सफल उनका स्वप्नादेश,—
ग्राविर्भूत होंगे श्रीमूर्त्तिरूपमें;
नयन-रञ्जन वही मनोहर मूर्त्ति,
हृदय-मुग्धकर, प्राण-रमण,
दर्शन अभूतपूर्व
देखो सखि ! ग्राँगनमें तुम्हारे खड़ी ।
दी थी तुमने ग्राज्ञा,
ठाकुर वंशीवदनको;
द्वारपर खड़े वे साथ सब भक्तगणके;
निरखकर मनोहर श्रीमूर्त्तिको,
एक स्वरसे कह रहे सब लोग,—
श्रीनवद्वीपचन्द्र
ग्राज पुनः उदय हुए नदियामें ।
सखि ! तुम्हारी इच्छासे,
भ्राता तुम्हारे यादवाचार्य,—
श्रीमूर्त्ति-सेवा-भार करेंगे ग्रहण;
शचीके ग्राँगनमें गौराङ्ग-नागर-मूर्त्तिकी
होगी प्रतिष्ठा ग्राज महासमारोहसे ।
भक्तोंका समूह सब माँग रहा अनुमति
तुम्हारे निकट,
दो सखि ! अनुमति;
सब कुछ प्रस्तुत है ।
नदियामें महामहोत्सव ग्राज,
बाल-वृद्ध-युवा-नारी,
हुए हैं एकत्र सभी देखनेको उत्सव ।
सखि ! देखो तो एकबार,

आसि आङ्गिनाय;
प्राणवल्लभ तव, दुयारे दाँड़ाये,
एसेछेन देखा दिते
वा देखिते तोमाय,--
तुमिइ ता जान।
प्रेममयी प्रणयिनी प्रेमेर आह्वाने,
अनुरागेर करुण क्रन्दने
प्रेमावतार प्रेममय नवद्वीपचन्द्र,
ल'ये प्रेमसिन्धु,
एसेछेन नवद्वीपे पुनः।
नवद्वीपेश्वरी तुमि,–तिनि नवद्वीपचन्द्र।
मायापुर-योगपीठे नवद्वीपधामे
तोमादेर नित्यलीला वर्त्तमान--
अनादि अनन्तकाल ह'ते ;
लीलामयी तुमि--
लीलामय विग्रह तव,
प्राणवल्लभ नवद्वीपचन्द्र--
एस, सखि! ब'स युगले दुइजने--
हेरि युगलरूप भरिया नयन,
जुड़ाइ जीवन मोरा चिरतरे।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीर हस्त धारण करिया आगमन)

आँगनमें आकर;
द्वारपर खड़े हैं, तुम्हारे प्राणवल्लभ,
आये हैं दर्शन देने
किंवा तुमको देखनेके लिये,--
यह तुम्हीं जानो।
प्रेममयी प्रणयिनीके प्रेममय आह्वानसे,--
अनुरागके करुण क्रन्दनसे,
प्रेमावतार प्रेममय नवद्वीपचन्द्र,
लेकर प्रेमसिंधु,
पुनः नवद्वीपमें पधारे हैं।
नवद्वीपेश्वरी तुम,--वे नवद्वीपचन्द्र,
नवद्वीपधामके मायापुरस्थ योगपीठपर
नित्यलीला वर्तमान रहती तुम दोनोंकी
अनादिसे अनन्तकालतक;
लीलामयी तुम--
लीलामय विग्रह तव,
प्राणवल्लभ नवद्वीपचन्द्र--
आओ सखि! बैठो युगल दोनों जन--
निरखकर युगलरूप नयनभर,
शीतल करें जीवन हम चिरकालके लिये।

(श्रीविष्णुप्रियादेवीका हाथ पकड़कर आना)

श्रीविष्णुप्रिया—(काँदिते-काँदिते)

सखि काञ्चने!
कइ मोर प्राणवल्लभ, कइ?
कोथा तिनि?
जाब आमि आङ्गिनाय दरशने ताँर,
चल सखि! धरे निये चल मोरे।

(नदीयावासिनी नागरीवृन्देर प्रवेश)

श्रीविष्णुप्रिया—(रोते-रोते)

सखि काञ्चने।
कहाँ मेरे प्राणवल्लभ, कहाँ?
कहाँ वे?
जाऊँगी मैं आँगनमें दर्शनको उनके,
चलो सखि! पकड़े लिये चलो मुझे।

(नदीयावासिनी नागरीवृन्दका प्रवेश)

(वसन-भूषणे भूषिता करिया श्रीविष्णु-प्रियाके लइया सखि काञ्चना ओ अमितार प्रवेश)

(वसन-भूषणसे अलंकृत करके श्री विष्णुप्रियाको लिये हुए सखि काञ्चना और अमिताका प्रवेश)

काञ्चना—

सखि विष्णुप्रिये !
देख देखि ।
कि शोभा हयेछे आङ्गिनाय ?
शचीर दुलाल,--
विष्णुप्रियानाथ,--
नदीयावासीर प्राण,
दिये जलाञ्जलि सन्न्यासीर वेशे,
साजि मनसाधे नवीन नदीयानागरवेशे
पुनः हयेछेन उदय नदीयाय ।
सखि विष्णुप्रिये !
एस युगले दाँड़ाओ तुमि;
शची-आङ्गिनाय नदीयायुगलेर,
हबे प्रेमेर आरति आजि ।
ल'ये आरतिर सज्जा
ऐ देख, एसेछे नदीयानागरी सबे ।

काञ्चना--

सखि विष्णुप्रिये !
देखो तो !
कैसी शोभा हुई है आँगनमें ?
शचीके दुलारे लाल,--
विष्णुप्रियानाथ--
नदिया-वासियोंके प्राण,
देकर जलाञ्जलि संन्यासीवेशको,
धर मनोवाञ्छित नवीन नदियानागरवेश
पुनः हुए हैं उदित नदियामें ।
सखि विष्णुप्रिये !
आओ खड़े होओ तुम युगलरूप;
शचीके आँगनमें नदियायुगलकी
होगी आज प्रेममयी आरती ।
लेकर आरतीका साज,
यह देखो, आयी हैं नदियानागरी सब ।

श्रीविष्णुप्रिया--

(श्रीमूर्त्ति दर्शन करिया काँदिते-काँदिते)

सखि ! एइ त मोर प्राणवल्लभ,
जाँर तरे एतदिन मरिनु काँदिया;
दाँड़ाये आङ्गिनाय तिनि आजि,--
आनन्देर नाहि सीमा मोर ।
तोमादेर कृपाबले,
पाइनु आजि हाराधने पुनः ।

श्रीविष्णुप्रिया—

(श्रीमूर्त्तिका दर्शन करके रोते-रोते)

सखि ! ये ही तो मेरे प्राणवल्लभ,
जिनके लिये इतने दिन रोकर मरी;
खड़े हैं आँगनमें वे आज,--
आनन्दकी सीमा नहीं मेरे ।
कृपासे तुमलोगोंकी,
प्राप्त किया अपहृत धनको आज पुनः ।

(नदीया - नागरीवृन्द श्रीविष्णुप्रिया देवीके लइया श्रीमूर्त्तिर वामभागे दाँड़ कराइलेन,—शङ्ख-घण्टा-काँसरेर ध्वनि—धूप-दीपद्वारा युगल मूर्त्तिर आरति)

(नदिया नागरीवृन्दने श्रीविष्णुप्रिया-देवीको लेकर श्रीमूर्त्तिके वामभागमें खड़ा कर दिया,—शङ्ख, घण्टा, झालरकी ध्वनि—धूप, - दीपद्वारा युगलमूर्त्तिकी आरती)

(काञ्चनार आरतिर गीत)

(काञ्चनाका आरती-गान)

गान

जय श्रीशचीनन्दन,	जयति शचीनन्दन जय-जय,
जगजनवन्दन	जग-जन-वन्दित-चरणद्वय,
जगन्नाथनन्दन सर्व्वगुण-निधिया।	जगन्नाथ-नन्दन जय सर्वगुणालय।
जय सनातननन्दिनी	जयति सनातन-सुता जयति,
त्रिभुवन-वन्दिनी	जय त्रिभुवन-वन्दित मूरति,
गौर-सोहागिनी देवी विष्णुप्रिया॥	गौर-वल्लभा देवी विष्णुप्रिया जय॥
जय नदीया-पुरंदर	जय नवद्वीप-पुरंदर जय,
गौर विश्वम्भर,	जयति गौर विश्वम्भर जय,
रससागर नागर, नवद्वीप - इन्दु।	रससागर नागर नवद्वीप-सुधाकर।
जय नवद्वीपेश्वरी	जय नवद्वीपेश्वरी जयति,
त्रैलोक्य-सुन्दरी	जय त्रिलोक-सुन्दरी जयति,
पदयुगल धरि, देह करुणाबिन्दु॥	करूँ चरण-वन्दन, दो करुणा-सीकर॥
जय विष्णुप्रियावल्लभ,	जय विष्णुप्रिया-वल्लभ जय;
नवद्वीप-माधव,	जय नदिया-माधव रसमय,
कान्ति नव-नव; नट नर्त्तनकारी।	नित्यकान्तिधर नव-नव, नट नर्त्तनकर।
जय भक्तिस्वरूपिणी	भक्ति-स्वरूपा-भामिनि जय,
गौर-प्रेमदायिनी	गौरचन्द्र रति दायिनि जय
जीव-दुखहारिनी, ह्लादिनी वरनारी॥	दुःखहरा, ह्लादिनी शक्ति- रमणी-वर॥

नमो विष्णुप्रियानाथ नमस्ते शचिनन्दन । नमो विष्णुप्रियादेव्यै गौरशक्त्यै नमो नमः ।।
गौराय गौरचन्द्राय नवद्वीप विहारिणे । नमो लक्ष्म्यै महादेव्यै महासाध्व्यै नमो नमः ।।

N. P. Crafts

जय नटवर नागर,	जय-जय नटवर नागर जय,
गौराङ्ग सुन्दर	जयति गौरहरि सुन्दर जय,
सुवेश मनोहर, नवद्वीप - वनचारी।	वेश मनोहर अति, नवद्वीप-विहारी।
जय राजराज़ेश्वरी,	जय राजराजेश्वरी,
भरि भरि माधुरी,	जय अपूर्व माधुरी भरी,
गौराङ्ग चितहारी श्रीअवतार नारी॥	श्री अवतार गौरमनहरणी नारी॥
(संकीर्त्तन-सङ्गे गौर-भक्तगणेर प्रवेश)	(संकीर्त्तनके साथ गौर-भक्तगणका प्रवेश)

कीर्त्तन

जय गौर-विष्णुप्रिया,	जयति गौर-विष्णुप्रिया
प्रेमरस - कूप।	प्रेम-रस-कूप।
जय-जय शचीमाता,	जय जय शचीमाता
जय विश्वरूप॥	जयति विश्वरूप॥
जय - जय जगन्नाथ	जय जय जय जगन्नाथ
मिश्र पुरंदर।	मिश्र पुरंदर।
जय प्रभु नित्यानन्द,	जयति प्रभु नित्यानन्द,
जय गदाधर।	जयति गदाधर॥
जय - जय नरहरि	जयति-जयति-जय
प्रेमेर गागरी।	प्रेम-कलश नरहरि।
जय दास गदाधर	जय जयति दास गदाधर
प्रेमरस तरि॥	प्रेम-रस-तरि॥
जय वंशीवदन,	जयति वंशीवदन,
जय दामोदर।	जय-जय दामोदर।
विष्णुप्रिया दास ब'ले	दास विष्णुप्रियाके
ख्यात चराचर॥	विश्रुत चराचर॥
प्रभुर-सेवक जय	जयति प्रभु-सेवक
जय श्रीईशान।	ईशान पुण्यधाम।
चौद्द भुवन माझे	चौदहो भुवन जिनका
घोषे जार नाम॥	छा रहा नाम॥

जय-जय-जय सर्व्व
नदिया नागरी।
काञ्चना-अमिता आदि
नदीयार नारी॥
विष्णुप्रिया सखि जत
नदीयारमणी।
नवद्वीप - रसाश्रिता
रमणीर मणि॥
जय देवी विष्णुप्रिया
नवद्वीपमयी।
गौर - वक्षविलासिनी
देवी प्रेममयी॥
जय - जय नवद्वीप,
जय नित्यधाम।
जय नवद्वीपवासी
भकत प्रधान॥
जय - जय मायापुर
गौर - जन्मभूमि।
जय - जय सुरधुनी
पतितपावनी॥
आनन्दे वल जय
गौर-विष्णुप्रिया।
युगल-पिरीति गाओ
नाचिया-नाचिया॥
नदीया - नागर गौरा
रसेर आधार।
नदीया - नागरी सबे
प्रेम - पारावार॥
आनन्दे वल—जय
गौर-विष्णुप्रिया।
संसार-वासना जावे
शुद्ध हवे हिया॥
जय गौर-विष्णुप्रिया,
जय शचीमाता।

जयति - जय समस्त
नदियाकी नागरी।
काञ्चना - अमितादिक
ललना गुणभरी॥
विष्णुप्रिया सखीवृन्द
नदिया - नारी।
नदिया - रसाश्रिता
रमणीमणि सारी॥
जय विष्णुप्रिया देवी
नवद्वीपमयी।
प्रेममयी देवी
गौराङ्ग-उर-शयी॥
जयति जय जय नवद्वीप
धाम सनातन।
नदिया-निवासी जयति
प्रमुख भक्त-जान॥
जयति गौर-जन्म - भूमि
मायापुर जय।
जयति गङ्गा पावनी
पतित-जन-निचय॥
गौर-विष्णुप्रिया जय
बोलो सानन्द।
नाच-नाच युगल-प्रेम
गाओ अमन्द॥
नदिया-नागर गौर
रसके आधार।
नदिया - नागरिया
प्रेम-पारावार॥
गौर-विष्णुप्रिया प्रिय
बोलो सानन्द।
शुचि हो हृदय, कटे
भव-वासना-फंद॥
जय गौर-विष्णुप्रिया,
जय शचीमाई।

निताइ-जाह्नवा, जय	जय अद्वैत-सीता,
अद्वैत - सीता ॥	जाह्नवा-निताई ॥
जय सनातन मिश्र,	जय महामाया, सनातन
जय महामाया।	मिश्र सुमति।
जय श्रीवल्लभाचार्य्य,	जय वल्लभाचार्य
जय लक्ष्मीप्रिया ॥	लक्ष्मीप्रिया जयति ॥
जय - जय नवद्वीप,	जयति नवद्वीपधाम,
श्रीवास - अङ्गन।	श्रीवास आँगन।
जेखाने करिला प्रभु	किया जहाँ नाथने
नाम-संकीर्त्तन ॥	नाम-संकीर्तन ॥
जय नवद्वीपवासी	जयति नवद्वीपवासी
पशु-पक्षी-मीन ॥	शफरी पशु खग।
स्थावर-जंगम आदि	तृण-तरु-वल्लरी आदि
वृक्षलता - तृण ॥	सारा अग-जग।
जय नवद्वीप रजा,	जयति नवद्वीप-रेणु,
मस्तकेते धरि।	धारूँ सिर उपरि।
जय गौर-विष्णुप्रिया,	जयति गौर-विष्णुप्रिया,
जय गौरहरि ॥	जयति गौरहरि।
विष्णुप्रिया पादपद्म	विष्णुप्रिया-पदकी उरमें
हृदे करि आश।	आशा भर।
नाम - संकीर्तन करे	करता नामकीर्तन
दास हरिदास ॥	हरिदास चाकर ॥
बोल हरि बोल,	**बोल हरिबोल,**
गौर हरि बोल।	**गौरहरि बोल।**
इत्यादि	इत्यादि
(पटाक्षेप)	(पटाक्षेप)

सम्पूर्ण

(श्रीश्रीविष्णुप्रियावल्लभाय सर्मापितमस्तु)

श्रीगौरविष्णुप्रियाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

[१] श्रीगौरो [२] नदियानन्दो [३] गौराङ्गः [४] शचिनन्दनः ।
[५] विष्णुप्रिया [६] महासाध्वी [७] सनातनकुमारिका ॥१॥

[८] विष्णुप्रियाप्रियः [९] श्रीशो [१०] संकीर्तनप्रचारकः ।
[११] गौराङ्गवल्लभा [१२] धीरा [१३] प्रेमदा [१४] प्रेमदायिका ॥२॥

[१५] नवद्वीप[१६]विधुर्देवो [१७] गौरचन्द्रो [१८] गौरहरिः ।
[१९] नदियानागरी [२०] श्रेष्ठा [२१] गौरप्रिया [२२] सनातनी ॥३॥

[२३] विष्णुप्रियेश्वरो [२४] गौरो [२५] नारायणो [२६] नरोत्तम ।
[२७] विष्णुप्रिया [२८] गौरशक्ति[२९]र्भक्तिरूपा [३०] प्रभावती ॥४॥

[३१] जगन्नाथसुतो [३२] धीमान् [३३] रुक्माङ्गः [३४] पुरुषो [३५] हरिः ।
[३६] नवद्वीपेश्वरी [३७] रामा [३८] गौराङ्गी [३९] गौरवल्लभा ॥५॥

४० ४१ ४२
गुणसिन्धुर्गुणग्राही स्वनामगुणगायकः ।

४३ ४४ ४५ ४६
कल्याणी कमला ह्यार्या विष्णुभक्तिप्रदायिका ॥६॥

४७ ४८ ४९
निमाईपण्डितो वाग्मी सर्व्वशास्त्रविशारदः ।

५० ५१ ५२
नवद्वीपाधिदेवेशी सुशीला चारुशोभना ॥७॥

५३ ५४ ५५
विष्णुप्रियेशो लक्ष्मीशो जगदानन्ददायकः ।

५६ ५७ ५८ ५९
देवदेवी महादेवी विष्णुप्रिया चन्द्रानना ॥८॥

६० ६१
नित्यानन्दप्राणसखा अद्वैतहृदयेश्वरः ।

६२ ६३ ६४
जगत्पूज्या जगद्धात्री जगदानन्ददायिनी ॥९॥

६५ ६६ ६७
भक्तप्राणो भक्तवशो भक्तानुग्रहकारकः ।

६८ ६९ ७० ७१
विद्युद्गौरी सुवर्णाङ्गी जीवमाता शुभंकरी ॥१०॥

७२ ७३ ७४
अन्तःकृष्णः बहिर्गौरो राधाभावप्रकाशकः ।

७५ ७६ ७७
भक्तिरूपा कृष्णभक्तिर्भक्तानुग्रहकारिणी ॥११॥

७८ ७९ ८० ८१
गौराङ्गः श्रीहरिर्धन्यो हरिनामप्रचारकः ।

८२ ८३ ८४ ८५
देवेन्द्रवन्दिता नारी सर्वेश्वरी सर्वोत्तमा ॥१२॥

८६ ८७ ८८ ८९
नरश्रेष्ठो नरवरो नटेन्द्रः कीर्तनप्रियः ।

९० ९१ ९२ ९३
विश्वेश्वरी विश्वसेव्या विष्णुप्रिया सुनागरी ॥१३॥

९४ ९५ ९६ ९७
नागरेन्द्रो नटवरो गौरकैशोरको हरिः ।

९८ ९९ १००
प्रेमदात्री प्रेममयी गौरसुन्दरगेहिनी ॥१४॥

१ २ ३
नदियेशो लक्ष्मीकान्तो पूर्णानन्दस्वरूपकः ।

४ ५ ६ ७ १०८
गरिष्ठा गतिदा गौरी गौरजाया सुरेश्वरी ॥१५॥

इत्युक्तं युगलस्तोत्रं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय प्रेमभक्तिमवाप्नुयात् ॥१६॥

श्रीश्रीविष्णुप्रिया-प्राकट्य-उत्सव

वसन्त पञ्चमी वि० सं० २०२० के अवसरपर गीता वाटिका, गोरखपुरमें पढ़ी गयी कविता

रचयिता—श्रीराधेश्यामजी बंका

नीरव दिशि-दिशि नीरव निशीथ, नीरव था नभका तारकदल।
नीरव नभ-गङ्गाके कण-कण, नीरव था नभका नीलाञ्चल॥
उस नीरवतामें था स्पन्दित, नीरव संलाप मृदुल अविरल।
निशिका, निशीशका, नेह छके दो हृदयोंका अतिशय निश्छल॥

दो अधर हिले, चुपचाप खुले, नभ-गङ्गाके नव पनघटपर।
दो हृदय इधर उन्मुक्त खिले, नवद्वीप-पार्श्विनीके तटपर॥
था सजा शयन-गृह, शय्यापर विकसित पुष्पोंकी नव चादर।
शय्यापर पुष्पोंका वितान, शय्यापर पुष्पोंकी झालर॥

धूम-गन्धसे, शुचि शोभासे, मुखरित था शयनागार सकल।
शोभाकी शोभा बढ़ी और पा विमल स्नेहकी सुरभि विमल॥
दो स्नेही हृदयोंसे विकसित जो स्नेह-लहरियाँ थीं निर्मल।
उनकी सुषमांसे शयन-कक्षकी शोभा थी प्रतिपल बोझिल॥

उस शयन-कक्षकी शय्यापर थे परम सुशोभित नित्य युगल।
श्रीविष्णुप्रिया, चैतन्य गौर, प्रेमी-प्रेमास्पद नित्य नवल॥
दोनों ही दोनोंमें डूबे, दोनों ही सुखदाता अविरल।
थीं पैर दबाती विष्णुप्रिया, चैतन्य-हृदय पुलकित पल-पल॥

कुछ कौतूहल, कुछ उत्सुकता, कुछ जिज्ञासाकी मधुर लहर।
उभरी धीरेसे मन्द-मन्द श्रीविष्णुप्रिया-मुख-मण्डलपर॥
उस नीरवतामें छलक पड़ा झीना-झीना-सा नीरव स्वर।
प्राणोंने पूछा मौन-मौन—"क्या मैं ही राधा हूँ? प्रियवर!"

प्राणोंका नीरव प्रश्न सुना--नवद्वीप-पार्श्विनी सुरसरिने।
उस शयन-कक्षके कण-कणने, चैतन्य गौरके अन्तरने॥
मौन प्रश्नका दिया मौन उत्तर था अधर-अरुणिमाने।
चैतन्य गौरके अधर-विहारी, नित्य विलासी मधु स्मितने॥

"प्रियतमे! भूल क्या गयीं स्वयंको, मुझको, इतनी भोली तुम?
हम नित्य सङ्ग, सम्बन्ध नित्य, मैं माधव हूँ, हो राधा तुम॥"
प्राणोंने पूछा पुनः प्रश्न--"फिर कहाँ तरणिजा-धार परम?
त्यागी क्यों वह स्नेहिल यमुना? सुरसरिता-तीर बसे क्यों हम?"

मूक प्रश्नका मूकोत्तर था तुरत दिया फिर मधु स्मितने।
"पायी मुक्ति परम दुर्लभतम, सुरतरंगिणीसे जगने॥
उस मुक्तिदायिनी सत्ताके कण-कणमें आये हैं भरने।
क्रन्दन-ज्वाला, जिसमें जल-जल, नित ज्वलित ज्वालके स्नेह सने॥"

"तो क्या मुझको जलना होगा क्रन्दनकी ज्वालामें, प्रियतम?
क्या मुझको अब बहना होगा, आँसूकी धारामें हरदम?"
"हम तुम एक, अतः प्राणाधिक प्रियतमे जलो क्यों केवल तुम?
क्रन्दन-ज्वालामें साथ-साथ अनवरत जलेंगे दोनों हम॥"

शब्दातीत सरल जिज्ञासा व्यक्त हुई जो बिना शब्द ही।
सरस गरलमय समाधान भी प्राप्त हुआ जो अनायास ही॥
सुना शयनगृहने, शय्याने, सुरसरिने अंदर-अंदर ही।
निशि-निशीश, नभ-गङ्गा, नभके नीलाञ्चलने मौन-मौन ही॥

० ० ० ० ०

जाने कितने तारे टूटे नभके विस्तृत नीलाञ्चलसे?
जाने कितने अश्रु बह गये, सुरतरंगिणीके कपोलसे?
जाने क्यों कहता फिरता है, व्यथित समीरण अपने मुखसे,
व्यथा-तप्त करुणार्द्र कहानी, दो विरही हृदयोंकी जगसे?

नीलाचलमें नील उदधिके नील तीरपर व्यथित विराजित।
सुध-बुध सभी गौर सुन्दरकी, नील-धारमें बही अपरिमित॥

नीलकृष्णके एक चरणपर, सुख-दुख सब हो गया समर्पित।
"कृष्ण", "कृष्ण" के करुण रुदनसे दिशा-दिशा हो गयी निनादित।।

रुदन कण्ठमें, रुदन रोममें, रुदन नयनकी हर हलचलमें।
धधक उठी क्रन्दनकी ज्वाला गौर-हृदयके प्रति स्पन्दनमें।।
कृष्णान्वेषण दिनमें, निशिमें, जलमें, नभमें, जड-चेतनमें।।
कृष्ण-विरहकी चिता जल गयी व्यथित गौरके अङ्ग-अङ्गमें।।

एक बह चला सजा चिताको, नीलाचलकी नील धारमें।
एक गयी सम्पूर्ण डूब, अपने आँसूके गहन उदधिमें।।
गौर-हृदयकी नित विहारिणी, जली गौरके विरह-ज्वालमें।
जल-जल बुझना, बुझ-बुझ जलना, शेष यही था उस जीवनमें।।

कितने आँसू हुए प्रवाहित विष्णुप्रियाके तृषित नयनसे ?
कितनी भीगी साड़ी उतरी, गौर-विरहमें दग्ध बदनसे ?
कबसे हो रहा संगमन, सुरतरंगिणीकी धारासे,
सरस्वती-यमुनाका अविरल, निकल-निकलकर शून्य नयनसे ?

कैसी चाह मिलनकी भीषण, जली प्रियाके हृदय-सदनमें ?
कैसा हाहाकार मचा था, तनमें, मनमें और नयनमें ?
"हा-हा" भीतर, "हा-हा" बाहर, भीतर-बाहरके कण-कणमें।
"हा-हा"का रव व्याप्त हो गया, जलमें, थलमें और गगनमें।।

हाहाकार भरे घरमें था कहीं न कुछ भी स्वरका स्पन्दन।
सूनी आँखें, सूना जीवन, सूना घरका सारा आँगन।।
नीरव प्राङ्गणमें बैठी थी, विष्णुप्रिया अति ही नीरव मन।
नमित नयनकी व्यथित अश्रु-धाराने पूछा--"हे जीवन-धन !"

तुरत गौर सुन्दरकी मनहर गौर कान्तिसे नित संस्पर्शित।
नील लहरियोंसे ध्वनि आयी--"कहो, प्रियतमे ! क्या अभिवाञ्छित ?"
स्वप्न-देशके वीणा-रव-सी, नीरव ध्वनि सुन हुई विकम्पित।
अश्रु-धारकी परमाकुलता मौन-मौन ही हुई निवेदित।।

"कबतक मुझको बहना होगा ? क्या सत्य एक यह क्रन्दन है ?
जलना-बुझना, बुझना-जलना, क्या यही एक बस जीवन है ?
कबतक ये गीले नयन गलें ? क्यों दूर हृदयका चन्दन है ?
क्या आशा करूँ न दर्शनकी ? क्या दासी पूर्ण अभागन है ?"

नील लहरियोंकी नीरव ध्वनि हुई ध्वनित नीरव प्राङ्गणमें।
"हम तुम एक, सदा सङ्गी हैं दुसह विरहके भी प्रसङ्गमें।।
विरह मिलनका पोषक, हम-तुम जलें और भी, प्राण-प्रियतमे !
क्रन्दन और हास्यसे ऊपर पुनः मिलन होगा निकुञ्जमें।।"

आशा छूटी, बिजली टूटी कलित बेलपर गौर - मिलनके।
सम्बल छूटा, तारे टूटे, पूर्ण तिमिरमय नीलाम्बरके।।
धीरज छूटा, बन्धन टूटे भग्न हृदयके, नयन-कोषके।
टूट-टूटकर आँसू बिखरे, आँगनमें सम्पूर्ण विश्वके।।

डूब गया वसुधाका आँगन, डूब गया नभका नीलाञ्चल।
डूब गया नवद्वीप-पार्श्विनी सुरतरंगिणीका भी आँचल।।
आँचलकी सारी सत्ता भी डूब गयी आँसूमें गल-गल।
बची समयके दो कपोलपर शुभ्र अश्रुकी धार अनर्गल।।

वही समय साक्षी है जगमें, शुभ्र अश्रुकी शुभ धाराका।
वही समय साक्षी है अब भी, नव निकुञ्जकी शुभ शोभाका।।
जहाँ छिटकता शुभ प्रकाश है, पीली-नीली ललित शिखाका।
जिसके शुभ्रालोक-पुञ्जमें, डूबा कण-कण है अग-जगका।।

--::००::--

श्रीविष्णुप्रिया नाटकका शुद्धिपत्र

प्रथम स्तम्भ (बंगला)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२१	४	विथरिये	विथारिये
३५	१६	जीने	जीवे
४०	१०	भरि	धरि
६६	६	हते	हइते
८१	२५	आदर्शने	अदर्शने
८२	१३	खाना ते	खानेते
१०५	३	वाहिर्वारिते	वहिर्वाटिते
१११	१३	नदीयाय	नदीयार
१३५	२	माताके बाद विरामकी जगह संबोधन वाचक चिह्न चाहिये।	
१४३	५	बौमाके बाद सैमिकोलन नहीं होना चाहिये।	
१४८	२०	?	।
१६१	१७	सबंइ	सबाइ
१७१	२५	भरिभुरि	भारिभुरि
२२६	२६	पाते	पात
२३६	१८	द्रतवेगे	द्रुतवेगे

श्रीविष्णुप्रिया नाटकका शुद्धिपत्र

द्वितीय स्तम्भ (हिन्दी)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२१	१६	पाती	पाता
११०	अन्तिम	दासक	दासका
११४	२३	ह	हैं
११७	११	देने ी	देनेकी
१४७	२५	हो	होगा
१६१	२१	क्षमा-त्याग	क्षमा, त्याग
१७२	२	कपटकरोंके	कपटवरोंके
१९३	६	देबन्ध	दे बन्ध
२०६	२७	जीवोंको	जीवको
२१२	१६	ही	भी
२१२	१६	ही	भी
२२७	१५	।।	?

अब तकके प्रकाशित ग्रन्थ

- जगज्जननी श्रीराधा
- श्रीराधा गुणगान
- श्रीराधा सप्तशती
- व्रजलीलामें गाय
- व्रजलीलाके प्रमुख नारीपात्र
- श्रीराधाकृष्ण लीलाके परिकर
- पद-पुस्तिकायें
- नरसीजी रो माहेरो (राजस्थानीमें)
- श्री श्रीविष्णुप्रिया-विलाप-गीति
- श्री श्रीविष्णुप्रिया सहस्रनामस्तोत्रम्
- श्रीविष्णुप्रिया नाटक
- श्री श्रीनिताई-गौर श्रीविग्रहकी अद्भुत लीलाकथा
- प्रभुपाद श्रीहरिदास गोस्वामी (आत्म-कथा)
- श्रीरासपञ्चाध्यायी

आगामी प्रकाशन

- श्रीराधा स्तवमाला
- श्रीविष्णुप्रिया चरित
- श्रीकृष्णलीलाका चिन्तन
- श्रीगोपाल सहस्रनाम स्तोत्रम्
- श्रीश्रीलक्ष्मीप्रिया चरित